डिप्लोमैट
निमाइ भट्टाचार्य

प्रिय मित्रों

और

हृदयवान् पाठकों को—

—निमाइ

डिप्लोमैट

•

घर से दफ्तर और दफ्तर से घर—बस इन दोनों के बीच की दूरी नापते-नापते ही बेचारे मध्यमवर्गी व्यक्ति का जीवन समाप्त हो जाता है। हाँ, कुछ लोगों का विचरण क्षेत्र अवश्य इससे अधिक विस्तृत, अधिक रंगीन होता है। लेकिन भले ही वह विचरण क्षेत्र ज्यादा विस्तृत व रंगीन हो, पर होता है तट से बँधी नौका की तरह ठहरा हुआ। चौरंगी के गली-कूचों की सैर की अथवा लोगों की नज़रों से बचते हुए अलकापुरी के भ्रमण की मियाद अधिक नहीं होती। रात के दीपक जलने तक ही यह स्वाधीनता रहती है! भोर होते ही पक्षी अनन्त आकाश की ओर पंख फैला देता है। उड़ते-उड़ते बीत जाता है सारा दिन, लेकिन सूर्यास्त होते ही वापस अपने नीड़ को लौट आता है वह। स्वतन्त्रता का वास्तविक अर्थों में उपभोग तो कूटनीतिज्ञ करते हैं! समस्त विश्व उनका विचरण क्षेत्र होता है। संसार के न जाने कितनी भाँति के लोगों के साथ इनकी मित्रता होती है, लेन-देन होता है। देश-देशान्तर में अपनी स्मृति छोड़ आते हैं यह लोग। आज यहाँ तो कल वहाँ! उल्लास व उमंग से भरे, स्वप्न लोक में खोये, जी भरकर जीवन का उपभोग करते हैं। इतनी विविधता होती है कि एकरसता की ऊब का प्रश्न ही नहीं उठता।

तरुण मित्र ने फारेन सर्विस में प्रवेश लेकर कूटनीतिज्ञों की तालिका में जिस दिन अपना नाम लिखाया था, उस दिन वह वास्तव में तरुण थे। तब से अब तक मिसिसिपि, वोल्गा व गंगा से होकर न जाने कितना जल प्रवाहित हो गया है। उम्र बीतती चली गई और वह एक कुशल कूटनीतिज्ञ बन गये।

फायर प्लेस के किनारे राकिंग चेयर पर झूलते-झूलते अचानक ग्लास की पूरी ह्विस्की एक घूँट में पीकर उठ खड़े हुए तरुण मित्र। क्षण भर को खड़े रहकर न जाने क्या सोचा, फिर खाली ग्लास हाथ में लिये-लिये स्टडी में चले गये। दीवाल पर टँगे विश्व के मानचित्र के

सामने जा खड़े हुए और इधर से उधर, ऊपर से नीचे दृष्टि घुमाकर देखा एक बार। तदुपरान्त लैण्डिग एयरक्राफ्ट के कमांडर की तरह जैसे कोई रनवे ढूँढ़ने लगे। भूत की अगणित स्मृतियों का बोझा लिये मन के विमान को जैसे ही लैण्ड करने को तैयार हुए, अनेकों एयरपोर्टों के रनवे प्रकाश से जगमगा उठे—दिल्ली···कैरो····लंडन···मास्को··· न्यूयार्क····हांग कांग····टोकियो····और न जाने कितने ! मानों एक साथ सारे के सारे कन्ट्रोल टावरों से लैण्डिग सिगनल मिलने लगे हों।

कुछ देर यूँ ही स्थिर खड़े रहे वह, फिर दो कदम दाहिने खिसक गये। नजरों के समक्ष दिल्ली दिखाई पड़ रही थी।

'सो, यू हैड ऐन इण्ट्रेस्टिंग स्टे इन घाना' ····परराष्ट्र मंत्रालय के ज्वाइन्ट सेक्रेटरी एवं यूनाइटेड नेशन्स डिविजन के हेड परमेश्वरन् ने हँसते हुए मन्तव्य प्रकट किया।

'हाँ सर !' तरुण मित्र ने कहा।

कुछ देर चुप रहकर तरुण फिर बोला, 'आक्रा की पोस्टिंग होने पर बड़ा बुरा लगा था मुझे, पर अब लगता है कि अच्छा ही हुआ मेरे लिये·····'

वायरलेस ट्रान्सक्रिप्ट की फाइल एक ओर रखकर परमेश्वरन् बोले, 'ब्लैक अफ्रीका में पोस्टिंग हुए बिना कोई भी डिप्लोमेट पूरी तरह डिप्लोमेट नहीं बन पाता।'

'हाँ, अब तो इस बात को मैं भी मानता हूँ।'

····रंगून से घाना। तरुण सचमुच खुश नहीं हो पाया था। सोचा था कान्टिनेन्ट में कहीं पोस्टिंग मिलेगी। कुछ दिन पूर्व फारेन सर्विस इन्सपेक्टरेट के एक डिप्टी सेक्रेटरी रंगून इंडियन एम्बैसी विजिट करने आये थे तो बोले थे, ठीक याद नहीं है, पर किसी ने मुझसे कहा था कि इस बार तुम्हारी पोस्टिंग कान्टिनेन्ट में होगी।

फारेन सर्विस के दूसरे नये कूटनीतिज्ञों की तरह ब्लैक अफ्रीका का नाम सुनकर तरुण का भी खून खौल गया था। सीधे तो नहीं लेकिन घुमा-फिरा कर ऐम्बैसेडर तक को अपने मन की बात बताई थी। तरुण की बात सुनकर ऐम्बैसेडर मुस्कुरा दिये थे बस, बोले कुछ नहीं थे।

करीब महीने भर बाद एक दिन उसे बुला कर कहा था, 'स्पेशल सेक्रेटरी तुम्हें घाना ही भेजना चाहते हैं।'

अब इसके बाद कहने-सुनने को कुछ रह ही नहीं जाता था। चुपचाप बोरिया-बिस्तर समेट कर कोको व सोने के देश घाना चला गया था। गिनी उपसागर के तट पर बसे आक्रा शहर में तीन वर्ष व्यतीत किये थे।

सुन्दर, शान्त व विचित्र प्रकृति का एक नन्हा-सा काला पर महा शरारती बालक था घाना। समुद्र को छूता हुआ दूर तक बालूतट फैला हुआ था। वह सुन्दर, सुदीर्घ तट आगे जाकर घने जंगल में न जाने कहाँ खो गया था। इसी सीमाहीन अरण्य एवं बालुकामय तट में ही अगाध स्वर्ण-भंडार छिपा हुआ था—इसीलिये तो यह गोल्डकोस्ट कहलाता था! पश्चिम अफ्रीका के साम्राज्यवाद की समाप्ति के साथ-साथ डेनिश और डच आये—फेरीवालों के भेस में व्यवसाय करने अंग्रेज भी आ पहुँचे। और देखते-देखते एक दिन फेरी वाले ही मालिक बन बैठे।

इसके बाद करीब सौ सालों तक अंग्रेजों की लूटपाट चलती रही। जहाज भर-भरकर मैंगेनीज़ और कोको ले गये। प्रकृति के सहस्रों वर्षों का वरदान जो अरण्य था, वह भी काटकर ले गये। शत-शत सन्दूक भरकर सोना और हीरा भेजते रहे अपने देश को।

अंग्रेज जिस समय गोल्डकोस्ट की अनन्त सम्पदा लूटने में व्यस्त थे, चौबीस साल का एक स्कूल मास्टर सबकी आँखें बचाकर अमेरिका जा पहुँचा। निःसहाय दुबले-पतले इस रोमन कैथोलिक युवक ने निदारुण शीत की न जाने कितनी रातें पार्क में बेंच पर सोकर काटीं। 'ब्लैक निगर' कहकर द्वार-द्वार पर धिक्कार व अपमान मिला सफेद चमड़ी वालों के देश में। लेकिन उसकी साधना में कोई व्याघात नहीं डाल पाया। दो बैचेलर्स एवं दो मास्टर्स डिग्री लेकर अटलान्टिक के इस पार आ पहुँचा वह युवक और लंडन स्कूल आफ इकानामिक्स में भर्ती हो गया।

इस प्रकार बारह वर्ष के दीर्घ संग्राम व साधना के पश्चात छत्तीस वर्षीय नक्रूमा सन् १९४७ में अपनी जन्मभूमि लौट आये और सत्तर लाख देशवासियों को स्वाधीनता आन्दोलन के नशे में मदहोश कर दिया। सत्तर लाख दुबले-पतले सिंहों की वज्रमुष्टियों का प्रहार सहना अंग्रेज के लिये असंभव था—भागना ही पड़ा उसे अपनी जान लेकर।

उस दिन इन सत्तर लाख लोगों ने सहर्ष नक्रूमा को अपना राष्ट्र-

नायक बनाकर देश का भविष्य उसे सौंप दिया।

घाना के निवासी बहुत ही प्रसन्नचित्त होते हैं। खुशी में पागल होकर झूमने में इनकी बराबरी तो अफ्रीका का शायद कोई भी देश नहीं कर सकता। दूर से आये मनुष्य को यह लोग बड़ा स्नेह देते हैं; बड़ा आदर करते हैं। घाना जाये बिना क्या तरुण यह सब जान पाता? नहीं! घाना नहीं जाता तो और भी बहुत कुछ अनजाना रह जाता। घानावासियों को अपने ऐतिह्य पर यद्यपि अस्वाभाविक गर्व है, किन्तु उसके डर से पश्चिमी आधुनिकता को दूर नहीं रखा उन्होंने। आक्रा में 'ला रन्दि' जैसा विख्यात नाइट क्लब इसका जीता-जागता प्रमाण है।

तीन वर्षों का दीर्घकाल आक्रा में व्यतीत करने का लेशमात्र भी पछतावा नहीं है तरुण को।··

लाइटर से सिगरेट जलाते-जलाते अचानक मिस्टर परमेश्वरन् ने नजरें उठाकर तरुण की ओर देखा और मुस्कुराकर पूछा, 'प्रेसीडेन्ट नक्रूमा के बारे में क्या राय है तुम्हारी?'

'आफिशियली या अनआफिशियली?'

'तुम असली डिप्लोमेट बन गये हो। टेल मी योर पर्सनल ओपि-नियन।'

'वह एक असामान्य प्रतिभा हैं, इस संबंध में तो कोई सन्देह नहीं, लेकिन···'

'लेकिन क्या?'

'जिस तरह चल रहे हैं उसमें कुछ कहना कठिन है।'

'इसका मतलब?'

'करीब तीन सौ करोड़ रुपया उधार लेने के बाद भी जिस देश की अर्थनीति ढुलमुला रही है, उस देश का प्रेसीडेन्ट यदि उन्नीस-बीस लाख रुपया खर्च करके अपनी संगमर्मर की मूर्त्ति बनवाये—ऐसी बातें वहाँ की जनता कितने दिन बर्दाश्त करेगी कहना कठिन है।'

'यू आर राइट माई बॉय।'

इस बार मुस्कुराकर तरुण ने कहा, 'कुछ भी हो सर, लेकिन प्रेसी-डेन्ट नक्रूमा इज़ ए चार्मिंग पर्सनैलिटी। ऐसा व्यक्तित्व है कि भयंकर सर्प को भी वश में कर ले।'

'लेकिन सँपेरा सर्पदंश से ही मरता है, यह जानते हो न?'

'दैट्स राइट सर' !

तरुण मित्र के लिये परमेश्वरन् के हृदय में कुछ कोमलता है। अधीनस्थ सहकर्मी के रूप में तरुण को चाहने के बहुत से कारण हैं। तरुण स्मार्ट है, हैंडसम है, इन्टेलिजेन्ट है। किसी भी कार्य का दायित्व इसे सौंपकर निश्चित हुआ जा सकता है। इसके अलावा कूटनीतिक जगत् की गोपनीय खबरें मालूम करने में तरुण जैसे लोग इंडियन फारेन सर्विस में अधिक नहीं हैं।

क्यों, अभी हाल ही की तो बात है। टोकियो से पैन अमेरिकन फ्लाइट में दिल्ली लौटते हुए रास्ते में दो पाकिस्तानी डिप्लोमेट इसके सहयात्री थे। उन दोनों को इसका गुमान तक नहीं था कि उनके पीछे ही इंडियन फारेन सर्विस के तरुण मित्र बैठे हैं। उनकी बात-चीत से तरुण को पता चला कि यू० एस० एयरफोर्स के कुछ सीनियर आफीसर एक महीने के अन्दर-अन्दर पश्चिमी पाकिस्तान की सीमा का पर्यवेक्षण करने आयेंगे। इसके बाद कुछ दिनों में ही कई हजार अफसरों के क्वार्टर तैयार करना संभव हो जायेगा ? वह भी गिलगिट-पेशावर जैसी जगह !

जौहरी के लिये जैसे हीरे और काँच का पार्थक्य समझना बायें हाथ का खेल है, उसी प्रकार एक डिप्लोमेट के लिये ऐसी छोटी-छोटी बातें बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। तरुण को अनुमान हो गया कि पाकिस्तान में कुछ हो अवश्य रहा है।

पालम में जब लैंड किया तो शाम के सात बजे थे। आफिस बंद हो गया था। एयरपोर्ट से ही ज्वाइन्ट सेक्रेटरी को फोन किया, पर वह भी नहीं मिले। खबर का महत्त्व समझकर बिना किसी दुविधा के उसने सीधे फारेन सेक्रेटरी को फोन किया, 'सर, माफ करियेगा, वट देयर इज समथिंग वेरी इम्पार्टेन्ट। ज्वाइन्ट सेक्रेटरी नहीं मिले, इसलिये आपको तकलीफ देनी पड़ी।'

पालम से टैक्सी लेकर तरुण सीधे अकबर रोड फारेन सेक्रेटरी के घर गया। वहाँ उसने बताया, 'सर, उनकी बातें सुनकर ऐसा लगा कि मामला बहुत ही गुरुत्त्वपूर्ण एवं गोपनीय है। मेरा सन्देह और भी पुष्ट हुआ जब मैंने देखा कि वह लोग बैंकॉक उतरकर सिंगापुर का प्लेन पकड़ने के लिये दौड़े। आई ऐम स्योर वह लोग के०एल०एम० की

फ्लाइट में सिंगापुर से कोलम्बो होते हुए कराँची गये हैं ।'

यद्यपि डिनर का समय हो गया था, लेकिन डिनर विना खाये ही जाने के लिये झटपट तैयार हो गये फारेन सेक्रेटरी । ड्राइवर को गाड़ी लाने का आदेश देकर अन्दर के कमरे में गये और प्राइम मिनिस्टर को टेलीफोन करके कहा, 'बहुत ही जरूरी बात है। अभी मिलना चाहता हूँ सर ।'

तरुण को साथ लेकर फारेन सेक्रेटरी सीधे प्रधान मंत्री के पास गये । डिनर बीच में छोड़कर ही उठ आये प्रधान मंत्री । सब सुन कर काफी चिन्तित हो गये, बस इतना ही कहा कि 'इन्टेलिजेन्स सन्देह तो कर रहा था कुछ दिनों से ।'

उसी समय सेन्ट्रल इन्टेलीजेन्स ब्यूरो के डाइरेक्टर को बुलाया गया । तीनों के मिलकर सलाह-मशविरा करने से पहले ही तरुण ने विदा ली वहाँ से ।

फारेन मिनिस्ट्री के बहुत से लोगों को इस बात का पता काफी अरसे तक नहीं लगा था, बाद में अवश्य लग गया था । स्टालिन के राज्यकाल में मास्को की इंडियन ऐम्बैसी में जब परमेश्वरन् पोलिटिकल काउन्सलर थे तब उनके अधीन काम करते हुए तरुण ने एक बार नहीं वरन् अनेकों बार अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया था ।

परमेश्वरन् को सब से अधिक खुशी तरुण को अपने पास रखकर होती है, लेकिन हमेशा तो यह संभव नहीं होता । पर इस बार घाना से लौटने के पहले ही तरुण को यूनाइटेड नेशन्स भेजने की व्यवस्था कर ली थी उन्होंने ।

'जानते हो इस बार तुम यूनाइटेड नेशन्स जा रहे हो ?'

मुस्कुराते हुए तरुण ने जवाब दिया, 'हाँ सर ।'

दो-तीन साल वहाँ रहकर तुम एक अच्छे व पूर्ण कूटनीतिज्ञ बन जाओगे । जरा रुककर परमेश्वरन् फिर बोले, 'मेन पोलिटिकल कमेटी में काम करने पर अन्तर्जातीय राजनीति व कूटनीति तुम्हारे लिये दिन के प्रकाश के समान सहज सुगम्य हो जायेगी ।'

टेलीफोन बज उठा । बात करके रिसीवर रख दिया परमेश्वरन् ने ।

तरुण वोला, 'मेन पोलिटिकल कमेटी में तो पार्लियामेंट का भी एक मेम्बर रहेगा ।'

'हाँ, एक एम० पी० रहेगा। वह तो तुम लोगों की ही तैयार की हुई वक्तृता की रीडिंग करेंगे। उनको लेकर कोई झमेला खड़ा नहीं होता। वह लोग तो सरकारी खर्च पर कुछ महीने न्यूयार्क रहकर ही खुश हो जाते हैं। इस पर अखबार के पन्ने में दो पैरे भाषण के छप जायें तो कहना ही क्या।'

मन ही मन हँस रहा था तरुण। विदेश में इस तरह के कुछ व्यक्तियों का दर्शन-लाभ हो चुका था उसे।

जो भी हो, विश्व के टाप डिप्लोमेटों के साथ मिलने-बैठने का ऐसा सुयोग फिर नहीं मिलेगा उसे। लिफ्ट में चढ़ते-उतरते; कैफेटेरिया में चाय-काफी पीते व लंच खाते-खाते रोज ही दो-चार फारेन मिनिस्टरों से साक्षात् हुआ करेगा।

दिल्ली आये देर नहीं हुई और तरुण यूनाइटेड नेशन्स जा रहा है। इस खबर ने चौंका दिया बहुत से लोगों को। बहुत बड़ी बात थी यह! बहुत मर्यादा थी इस पद की।

संध्या के बाद कान्स्टिट्यूशन हाउस के एक कमरे में तरुण ने पाँव रक्खा ही था कि टेलीफोन बज उठा।

'कांग्रेच्युलेशन्स।'

चौंक गया तरुण। इसी बीच खबर फैल भी गई? टेलीफोन का चोंगा रखते-रखते सोचा, शायद कल सुबह ही दलालों का झुंड आ धमकेगा। कहेंगे, एक्सक्यूज़ मी सर। आप तो फिर विदेश जा रहे हैं। अपना टेपरिकार्डर, ट्रान्जिस्टर, कैमरा, बाइनोक्यूलर, डिनरसेट, ओवर-कोट, नायलॉन शर्ट वगैरह सब सामान हम लोगों को दे दीजिये। अच्छी कीमत मिल जायेगी।

कल्पना से ही जी घिना गया।

पर कर भी क्या सकता है? इसका नाम दिल्ली है! दीवाल पर गांधी की फोटो लटकी होगी अच्छे-से फ्रेम में और फ्रिज बियर की बोतलों से भरा होगा—यह है यहाँ की सामाजिक मर्यादा का अन्यतम निदर्शन। पुराने जमाने में बंगालियों के घर के ड्राइंगरूम की आल-मारियाँ जिस तरह 'सब्जपत्र' के अंकों से भरी होती थीं, इसी तरह आजकल दिल्ली के सम्भ्रांत व्यक्तियों के ड्राइंगरूम में वाइन ग्लास व डिकेन्टरों की प्रदर्शनी दिखाई देती है। समस्त विश्व में दिल्ली एकमात्र

ऐसा शहर है जहाँ ड्राइंगरूम में फ्रिज रखकर ऐश्वर्य का प्रदर्शन किया जाता है।

यह सब देखकर हँसी आती है तरुण को। कूटनीतिज्ञों की कद्र सभी देशों में है, लेकिन भारतवर्ष के निवासी किसी कूटनीतिज्ञ अथवा एम्बैसी के किसी कर्मचारी को देखकर जरूरत से ज्यादा गद्गद हो जाते हैं। टाटा कम्पनी या वर्मा-शेल के अफसर या किसी डाक्टर-इंजीनियर की अपेक्षा रंगून अथवा वाशिंगटन के भारतीय दूतावास का एक क्लर्क यहाँ अधिक इज्जत पाता है और फिर अगर कहीं वास्तविक डिप्लोमेट हुआ तो कहना ही क्या। और भला ऐसा क्यों न हो? वह लोग देश-विदेश घूमते हैं, टेपरिकार्डर, ट्रांजिस्टर, नायलॉन शर्ट—बहुत कुछ ला सकते हैं। यों तो भारतीय त्याग-तितिक्षा के आदर्श के अनुयायी होते हैं; लेकिन एक स्विस घड़ी या जापानी कैमरा देखकर ज्यादातर लोगों के मुँह में पानी आ जाता है।

लगता है दिल्ली में जैसे यह लोलुपता कुछ अधिक ही है।

'गुड मार्निंग।'

'गुड मार्निंग।'

'मिस भारद्वाज बोल रही हूँ! पहचाना नहीं?'

'माइ गॉड! जिनको देखकर ऐम्बैसेडर तक गाड़ी रोककर लिफ्ट देते हैं, उनको तरुण मित्र भूल जायेगा?'

कोई उत्तर नहीं दिया मिस भारद्वाज ने। लेकिन यह समझने में देर नहीं लगी कि खुश हो गई वह। मधुर हँसी सुनाई दे रही थी टेलीफोन में।

तरुण ने कहा, 'कहिये क्या खबर है? कैसी हैं?'

'मेनी थैंक्स! ठीक ही हूँ।'

इटालियन ऐम्बैसी की एक कॉकटेल पार्टी में तरुण प्रथम बार मिस भारद्वाज से मिला था। इन्टीरियर डेकोरेटर मिस भारद्वाज ऐसे-वैसे ग्राहकों का काम करना पसंद नहीं करतीं, केवल विदेशी डिप्लोमेटों का काम करती हैं। इटालियन ऐम्बैसेडर का सिटिंग रूम व ड्राइंगरूम इन्हीं का डिजाइन किया हुआ था। इनका यह काम कोई बहुत पुराना नहीं है। नये बिजनेस की आशा में आजकल उन्होंने कूटनीतिक जगत् में विचरण करना शुरू किया है।

दिल्ली के इन्टीरियर डेकोरेटर मात्र ड्राइंगरूम या ऑफिसरूम ही नहीं सजाते, वरन् ऐसा प्रतीत होता है कि ग्राहक अच्छा हो तो उसके मन रूपी अन्त:पुर को भी खुशी-खुशी सजा देते हैं। इसके अलावा देशी-विदेशी कूटनीतिज्ञों के साथ जरा घनिष्ठता होने से उनकी तथा उनके साथ और भी बहुतों की सामाजिक मर्यादा बढ़ जाती है। मिस भारद्वाज इस पथ की नई-नई पथिक हैं—मिस प्रमीला कौल जैसा नाम, यश, अर्थ व प्रसिद्धि होने में अभी बहुत समय लगेगा।

मिस कौल के लिये कितने विदेशी डिप्लोमेट विनिद्र रजनीयापन करते हैं, इसका हिसाब देना मुश्किल है। जंगपुरा में बीरबल रोड पर मिस कौल के फ्लैट में सुबह, दोपहर, शाम जब भी चाहे जाकर देखिये—दो-चार डिप्लोमेट हमेशा मिलेंगे। हाँ, शाम के बाद गये तो फिर मिस कौल दिखाई नहीं देंगी। पार्टी, कॉकटेल, डिनर। सब निपटाकर घर लौटते-लौटते बहुत रात हो जाती है—एक, डेढ़ और कभी-कभी तो दो-ढाई भी बज जाते हैं। वीक एंड की पार्टियों से लौटने में तो और भी देर हो जाती है। मिस्टर पार्कर, मिस्टर वर्गमैन अथवा और बहुत से अजन्ता, एलोरा या खजुराहो की निर्जीव मूर्त्तियाँ देखने जाते हैं तो मन-प्राणों को तरंगित, उल्लसित करने वाली सजीव मिस कौल को साथ पाकर कला का वास्तविक आनन्द लेते हैं।

दिल्ली में रहने वाले विदेशी डिप्लोमेटों में अधिकतर गर्मियों में अपने-अपने देश उड़ जाते हैं और उनकी अवस्था दर्शनीय हो उठती है जो अहर्निश उनके चारों ओर उपग्रह की भाँति चक्कर काटते रहते हैं। मिस कौल की तरह जो लोग पार्कर के साथ एक ही प्लेन में समर कोर्स ज्वायन करने के लिये सुदूर सागर पार के उस अनजाने देश को नहीं जा पाते उन्हें इन दिनों चेम्सफोर्ड क्लब में बिजनेस-मैन एवं कन्ट्रैक्टरों का संगलाभ करते देखा जा सकता है। शायद मसूरी या नैनीताल घूम-फिर आते हैं।

मिस भारद्वाज अवश्य अभी विदेशी यूनिवर्सिटी का समर कोर्स ज्वाइन करने का आमन्त्रण पाने लायक 'योग्य' नहीं हुई हैं। लेकिन—। जाने भी दो वह सब।

कभी एपाइन्टमेन्ट लेकर और कभी बिना किसी खबर के मिस भारद्वाज ने तरुण के पास आना-जाना शुरू कर दिया।

'बात क्या है ?' अभ्यर्थना करते-करते तरुण ने प्रश्न किया।

'क्यों, डिस्टर्ब कर दिया क्या ?'

'माइ गाड ! बैचेलर तरुण मित्र के फ्लैट में आप जैसी अतिथि का आगमन कोई बारबार तो होता नहीं, इसलिये....?

'सो ह्वाट ?'

तरुण ने आदर सहित मिस भारद्वाज को ड्राइंगरूम में बैठाया और गढ़वाली नौकर को काफी लाने का आदेश दिया।

तरुण की धारणा थी कि दिल्ली की लड़की और मक्खी जितना असभ्य व बेशर्म और कोई नहीं हो सकता। कहाँ से किसके जीवाणु-बीजाणु लाकर छोड़ जायें और किसी को पता भी न लगे। मिस भार-द्वाज यद्यपि घनिष्ठ रूप से मिलना चाहती हैं, पर तरुण घनिष्ठ नहीं हो पाता। साधारण बातचीत, हँसी-मजाक तथा काफी के बाद ही वह खत्म कर देना चाहता है। 'एक्सक्यूज़ मी मिस भारद्वाज, एक अपाइन्ट-मेन्ट है....। सी यू अगेन।'

लेकिन इतने पर भी मिस भारद्वाज तरुण के आसपास भनभनाना नहीं छोड़तीं। सुयोग मिलते ही हाजिर हो जाती हैं। और आखिर एक दिन असलियत सामने आ ही गई।

'आइ वाज़ टॉइंग विथ द आइडिया आफ गोइंग टु द स्टेट्स।'

'अमेरिका जायेंगी ? यह तो बड़ी अच्छी खबर है।' खुश होकर तरुण बोला।

'किन्तु....।'

'अब किन्तु क्या ?

'यू मस्ट हेल्प मी।'

'बताइये ना, क्या कर सकता हूँ मैं ?'

'इंडियन डेलीगेशन में एक टेम्परेरी अपाइन्टमेन्ट....।'

'आइ ऐम सारी मिस भारद्वाज, यह मेरे बस के बाहर है। इसके अलावा....।'

'इसके अलावा और क्या ?'

तरुण मित्र तो खुश नहीं कर पाया मिस भारद्वाज को। परन्तु साल भर बाद वह न्यूयार्क पहुँच ही गई।....

दिल्ली की पिछली बातें याद आती हैं तो मन-ही-मन हँसी आती

है तरुण को। तब तक कर्जन रोड पर आसपास के एम० पी० के बँगलों का उपहास उड़ाता ऐक्सटर्नल आफीसर्स होस्टल नहीं बना था। कर्जन रोड की गंदी व सीलन से भरी बैरक कान्स्टिट्यूशन हाउस का नाम धारण किये आभिजात्य की रक्षा कर रही थी। हर तरह के लोगों का वास था इस कान्स्टिट्यूशन हाउस में। रात को दस-साढ़े दस बजे डाइनिंग हाल की सर्विस बन्द हो जाती थी, लेकिन कमरों में उस समय अमृतरस पान का उत्सव शुरू हो जाता था। साधारण मनुष्यों का आना जाना बंद हो जाता और शुरू होता अस्वाभाविक रूप से असाधारण लोगों का आविर्भाव। सामने पड़ते रिसेप्शन काउण्टर से बचकर आधी रात के मद्धिम प्रकाश में वह लोग आते-जाते। रात के उस अँधेरे में जाने कितनों का सौभाग्य-सूर्य उदित होता और जाने कितनों का अस्त हो जाता।

चेक नेशनल डे की पार्टी अटेंड करके मिस्टर भोंसले के घर डिनर खाकर लौटते-लौटते तरुण को काफी रात हो गई थी। कान्स्टिट्यूशन हाउस की बड़ी-बड़ी बत्तियाँ बुझ गई थीं, सोई हुई सूनी-सूनी दिल्ली किसी गाँव-सी निश्चल—निस्तब्ध लग रही थी। धुँधले प्रकाश में कमरे का ताला खोल रहा था कि कानों में किसी की हँसी सुनाई दी। साँप सूँघ गया तरुण को—

'दाउ टू ब्रूटस !' मिस भारद्वाज बोलीं।

'इसका मतलब ?' जल्दी से स्वयं को सँभाला तरुण ने।

'इतनी सीधी सी बात भी नहीं समझ पाये ?'

'आइ ऐम सॉरी मिस भारद्वाज।'

उस धीमे प्रकाश में भी मिस भारद्वाज के ओठों पर आई विद्रूप भरी मुस्कुराहट डिप्लोमेट तरुण की नजरों से छुप नहीं सकी। कारीडोर के पिलर के सहारे टिककर मिस भारद्वाज बोलीं, 'तो आप भी आधीरात के ग्राहक हैं।'

बात को बिना बढ़ाये सीधे-सीधे कहा तरुण ने—'नहीं, आप गलती कर रही हैं मिस भारद्वाज। मैं आपकी तरह आधी रात का ग्राहक नहीं हूँ, मैं तो दुकानदार हूँ। ग्राहक आता है, लेकिन लौटा देता हूँ...। अच्छा, गुडनाइट !'

उस रात इसके बाद क्या हुआ यह तो तरुण को नहीं मालूम, पर

यह विश्वास तो उसे हो ही गया था कि मिस भारद्वाज अमेरिका पहुँच अवश्य जायेंगी, चाहे जैसे हो।

क्या करेंगी मिस भारद्वाज ! शेरवानी-पायजामा पहने पॉलिटिशियन आदमी के रूप में चीते हैं, शिकार पकड़ने में इनका जोड़ीदार सारे भारत में नहीं मिलेगा। जिस प्रकार जोर्डन के जल के बिना ईसाइयों का कोई शुभ कार्य सम्पन्न नहीं होता, हमारे देश में उसी प्रकार पॉलिटिशियन न हो तो कोई कर्म या अपकर्म संभव नहीं होता। एक्ज़ीबिशन ओपेन करने आये बनबिहारी लाल मिस भारद्वाज की पीठ ठोककर बोले, 'यह वन्डरफुल डेकोरेशन इस छोटी-सी स्वीट लड़की ने किया है ?'

बहादुरशाह के बाद बिहारीलाल ही मानो दिल्ली का सर्वेसर्वा था। उनकी इस प्रशंसा को सुनकर जनरल सेक्रेटरी मिसेस खातून भला कैसे चुप रहतीं। हाँ में हाँ मिलाते हुए बोलीं, 'जी हाँ, इसी लड़की ने किया है, 'अकेले' सब कुछ...

यहाँ से तो शुरू हुआ ! लेकिन अंत ? वह तरुण को नहीं मालूम। जिस देश में वेश्यालय और धर्मशाला दोनों एक से हों, उस देश की पवित्र धरती पर मिस भारद्वाज की कहानी कहाँ खत्म होगी, यह तरुण नहीं जानता। वह तो मन ही मन सोचता है कि डिप्लोमेसी का अभ्यास करने के लिये पैसा खर्च करके जेनेवा जाने का क्या लाभ है ? देश की अनगिनत लड़कियों का सर्वनाश करके भी जो देश-नेता के रूप में पूजे जाते हैं, बेबीफूड में मिलावट करने के बाद भी जो लोग एक धर्मशाला बनवाकर सम्मान प्राप्त कर लेते हैं, उनसे बड़ा डिप्लोमेट और किस देश में मिल सकता है !

# दो

योरोप के सबसे गरीब देश पुर्त्तगाल में एक कानून यह है कि वहाँ की राजधानी लिसबन में हर व्यक्ति के लिये जूता पहनना आवश्यक है। लेकिन जूते के लिये पैसे कहाँ हैं? हजारों आदमी ऐसे हैं, जिनकी जूते खरीदने की सामर्थ्य नहीं है। लेकिन जूते जैसी कोई चीज जेब में लिये घूमते-फिरते हैं ऐसे लोग। दूर से पुलिस के सिपाही को देखते ही पहन लेते हैं और सिपाही के नजरों से दूर होते ही फिर उतारकर जेब में रख लेते हैं।

आँखें खोलकर चारों ओर देखो तो यह सब तुरत दिखाई दे जाता है, समझ में आ जाता है। टूरिस्टों की तरह केवल बाह्य-दृष्टि से देखना डिप्लोमेट का काम नहीं है। और भी वहुत कुछ देखना पड़ता है, जानना पड़ता है, और ऊपर के अफसरों को बताना पड़ता है। सुबह दस बजे से शाम पाँच बजे तक आफिस में काम करके डिप्टी सेक्रेटरी का दायित्व तो पूरा हो जाता है, लेकिन केनसिंग्टन या फिफ्थ एवेन्यू की कॉकटेल पार्टी में जाने पर छह पेग-आठ पेग ह्विस्की पीने के बाद भी डिप्लोमेट को गोपनीय रूप से खबरें जानने के लिये सतर्क रहना पड़ता है। चाहे कुछ भी कहा जाये पर डिप्लोमेट एक मर्यादा-सम्पन्न व स्वीकृत गुप्तचर के अलावा और कुछ नहीं होता। फ्रेंडशिप, अंडरस्टैंडिग यह सब तो कहने की बातें हैं। क्लोज़ कल्चरल टाइज़--मक्खन लगाकर बातें जानना है, बस। दूसरे देशों का रंग-ढंग समझकर अपने देश के लिये सुविधा उत्पन्न करना अर्थात् दूसरे शब्दों में स्वार्थ-रक्षा ही डिप्लोमेसी का एकमात्र धर्म है। ये सब बातें संसार के समस्त डिप्लोमेट जानते हैं, इंडियन डिप्लोमेट भी जानते हैं।

सब कुछ जानते-बूझते हुए भी चोरी-छिपे का यह खेल चलता है। हर देश में भिन्न प्रकार की लुका-छिपी चलती है। मास्को या वाशिंग-

टन के किसी डिप्लोमेटिक मिशन में चले जाइये तो देखेंगे कि कोई भी महत्त्वपूर्ण आलोचना कमरे में बैठकर नहीं होती। भले ही बाहर बर्फ पड़ रही हो लेकिन बातचीत अन्दर के गार्डेन में ही होगी। क्यों ? क्यों क्या, भूत का डर ! जाने कब कैसे कोई सब कुछ टेपरिकार्ड कर ले ! आजकल तो पैसे खर्च करने से वाच-रिकार्डर तक मिल जाते हैं और फिर डिप्लोमेटों के पीछे गुप्तचर तो लगे ही रहते हैं। टेलीफोन पर बातचीत करना भी निरापद नहीं है। बड़े-बड़े देश बहुत सामर्थ्यवान हैं, बहुत कुछ कर सकते हैं वे। परन्तु वह छोटा-सा देश अफगानिस्तान ! ऐसा डर छाया हुआ है वहाँ कि काबुल में रहने वाले सारे डिप्लोमेट टेलीफोन का प्लग निकालकर रख देते हैं।

और भी जाने क्या-क्या है ! लेकिन ऐसे वातावरण में भी डिप्लोमेट्स मुस्कुराते हुए काम करते रहते हैं। सुन्दर युवती और शराब विश्व के प्रायः समस्त देशों के पुरुषों की दुर्बलता है। विशेषतः जब उपहार व सौजन्यता के रूप में यह सब मिलता है तो लोभ संवरण नहीं कर पाते। शराब अथवा लड़कियों का वर्जन करके डिप्लोमेसी करना बहुत कुछ नल के पानी से काली पूजा-करने जैसा है। काम-काज के ही तकाजे से रोज शाम को डिप्लोमेट्स की कॉकटेल होती है—लाउंजसूट पहनकर शराब पीनी पड़ती है, औरतों के साथ नाचना पड़ता है, खेलना पड़ता है, हँसना पड़ता है। बारूद हाथ में लेकर खेल खेलते हुए भी इसकी आग से जल नहीं पाते डिप्लोमेट। और भी बहुत-सी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं। पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट या सिविल सप्लाई आफीसर अथवा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के घूस खाने से क्षति तो होती है पर देश रसातल को नहीं जाता। लेकिन डिप्लोमेटिक मिशन का थर्ड सेक्रेटरी या एक अत्यन्त साधारण अटैची घूस खाये तो देश रसातल को जा सकता है। इस तरह बहुत-से देशों की बहुत क्षति हुई है और आगे भी अवश्य होगी।

बड़े-बड़े देशों की तुलना में इंडियन डिप्लोमेटों का वेतन व अलाउन्स बहुत कम होता है, इस पर भी सारी दुनिया के डिप्लोमेटों के साथ कदम मिलाकर चलना पड़ता है उन्हें। चारों ओर से कम प्रलोभन नहीं आते।

यूनाइटेड नेशन्स के कॉरीडोर या कैफे में अक्सर एक सज्जन का

'फारमोसा क्राइसिस को लेकर व्यस्त हैं आपके ?'

बात वहीं खत्म करने के विचार से उस दिन तो नन्दा जल्दी से उठे लेकिन दो-तीन दिन बाद वह सज्जन सचमुच ही टेप-रिकार्डर लेकर कार्डनिकल डेस्ट पर, बने नन्दा के फ्लैट पर हाजिर हो गये। डाइरेक्ट रेकार्डिंग चैनल में रिकार्डर फिट करके बातें करने लगे। काफी देर इधर-उधर की व्यर्थ की बातें करने के बाद फिर अपने पुराने प्रश्न पर आये, पूछा—'इतने बड़े क्राइसिस में आप लोग निश्चिन्त हो चुप नहीं बैठे होंगे ?'

'दूसरे देशों की तरह हम भी चिन्तित हैं।' नन्दा ने जवाब दिया।

'दैट्स ट्रू, लेकिन इंडिया की तो एक स्पेशल पोजीशन है। बोथ अमेरिका और चाइना दोनों का मित्र एकमात्र इंडिया ही है।'

'और भी अनेक देश हैं।'

'तब भी......।'

'वर्ल्ड-वार होने से हम लोगों की तरफ के बहुत से देशों का नुकसान होगा। इसलिये हम चाहते हैं मामला ऐसे ही सुलझ जाये।'

अत्यन्त उत्साहित होकर वह सज्जन बोले, 'यू आर परफेक्टली राइट सिस्टर नन्दा। आइ एम श्योर तुम लोग चुप नहीं बैठोगे। क्यों ठीक है न ?'

उदासीन भाव से नन्दा ने उत्तर देते हुए कहा, 'मालूम नहीं। मेरे जैसे छोटे-मोटे डिप्लोमेट को भला यह खबरें कैसे पता लग सकती हैं ?'

नन्दा इंडियन मिशन के एक विशेष महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी हैं, यह बात वह सज्जन अवश्य जानते थे। नहीं तो अपने मिशन की पार्टी में आने के लिये नन्दा से उतना आग्रह नहीं करते और 'सीटो' का रिकार्ड करने के लिये उनके फ्लैट पर भी नहीं आते।

अवस्था और भी जटिल हो गई। वाशिंगटन की हुंकार और पीकिंग की नजरअन्दाजी समान रूप से चलने लगी। जल्दी से अमरीका ने फारमोसा के साथ युद्धसंधि की, और अपनी नौसेना का सेवेन्थ फ्लीट उसकी रक्षा के लिये भेज दिया। लेकिन इतने पर भी चीन पर कोई असर नहीं हुआ। बल्कि वह बार-बार अमेरिका को आगाह करता रहा।

डलेस-मैकार्थी के सिद्धान्त का असर जब कम होना शुरू हुआ तो

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के आकाश पर मँडराते उन काले बादलों से अमेरिका और भी उत्तेजित हो उठा। अब भारतवर्ष को सचमुच चिन्ता हुई। एशिया की शांति में विघ्न पड़ने की आशंका से भारत के प्रधान-मंत्री के चिन्तित होने की सुर्खियाँ विश्व के अखबारों में छपीं। बहुतों को तो यह आशा थी कि यूनाइटेड नेशन्स में भारत कुछ करेगा और इस बात का तो उन्हें पक्का निश्चय था कि पीकिंग के साथ उसकी बातचीत हुई है।

समय बीतता रहा। यूनाइटेड नेशन्स के सेक्रेटरी जनरल दाग़ हैमर-शोल्ड पीकिंग गये। जनवरी की भयंकर सर्दी में भी चीनी नेताओं के साथ कई दिनों तक बात की। अवकाश निकाल कर छह मील दूर स्थित दुःसाहसी महारानी की स्मृति से जुड़ा 'समर पैलेस' देखा! लेकिन इस किले से लगी सुन्दर झील के स्वच्छ जल में अपने मुख का प्रतिबिम्ब निहारने का अवकाश शायद हैमरशोल्ड को नहीं मिला। अगर अपना प्रतिबिम्ब देख पाते तो अपने अन्तर की अस्थिरता व द्वन्द्व को अवश्य समझ पाते। रीते हाथों न्यूयार्क लौट आये सेक्रेटरी जनरल। किसी-किसी ने कहा कि वह आश्वासन लेकर आये हैं। अमेरिका को थोड़ा सबक सिखाकर चीन रोके हुए विमान-चालकों को मुक्त कर देगा।

अब सबकी नजरें दिल्ली की ओर घूमीं।

इसी समय नन्दा की बदली हांगकांग मिशन में हो गई। 'सांटो' के प्रेमिक उन सज्जन जैसे कुछ कूटनीतिज्ञों ने अनुमान लगाया कि नन्दा स्पेशल असाइन्मेन्ट पर हांगकांग जा रहे हैं।

सहकर्मियों के सहयोग से मकान ढूँढ़कर गृहस्थी जमाने से पहले कुछ दिन होटल में रहे। मैन्डरिन या हांगकांग हिल्टन में ठहरने लायक जोर किसी इंडियन डिप्लोमेट की जेब में नहीं होता—नन्दा की जेब भी इस क़ाबिल नहीं थी। विनर हाउस में आश्रय लिया उन्होंने।

एक के बाद एक कई दिनों तक रोज रात को डिनर खाते समय पास की टेबिल पर एक ही व्यक्ति को देखकर नन्दा को सन्देह हुआ। फिर एक दिन जब इंडियन मिशन के एक सहकर्मी के साथ कमर्लिंग कैस्टनिज़ रेस्टोरेन्ट में गये तो वहाँ भी डाइनिंग हाल के एक कोने में वह व्यक्ति मौजूद था। इसके बाद पुनः जब विंधम स्ट्रीट में मार्केटिंग

करते समय उन महानुभाव के दर्शन हुए तो नन्दा को सन्देह नहीं रहा।

नन्दा स्वयं यद्यपि सतर्क हो गये पर किसी को मालूम नहीं होने दिया। मिशन के दो एक व्यक्तियों को अवश्य सारी बातें बता दीं। आखिर एक दिन डिनर-टेबिल पर उन महानुभाव से प्रथम आलाप हुआ।

'तुम लोगों के इंडिया जैसी चार्मिंग तथा फ्री सोसायटी की कोई तुलना नहीं है।'

'मैनी थैंक्स फॉर द कॉम्प्लीमेन्ट्स।'

'सच मानिये, इन्टरनेशनल ट्रेड के सिलसिले में कितने ही देशों में गया, बट इंडिया इज़ इडिया।'

फ्राइड-चिकन, राइस और पोर्क खत्म करके कॉफी का प्याला हाथ में आते-आते बातचीत राजनीति पर आ गई।

'आइ ऐम श्योर इन्टरनेशनल अफेयर्स में इंडिया. यूनिक रोल प्ले करेगा।'

'अन्तर्राष्ट्रीय मामले में तो आजकल सभी देश हैं·····।' छोटा-सा उत्तर दिया नन्दा ने।

कुछ दिनों में ही दोनों काफी घनिष्ठ हो गये, एक ही समय डिनर खाने लगे।

एक दिन वह सज्जन जल्दी-जल्दी कॉफी के घूंट भरकर उठ खड़े हुए। 'एक्सक्यूज़ मी, सिंगापुर से एक टेलीफोन आने वाला है!'

उनके जाने के बाद नन्दा की नज़र टेबिल पर पड़ी तो देखा उनका सिगरेट केस, लाइटर व पर्स वहीं पर पड़ा रह गया था। कॉफी पीकर नन्दा ने तीनों चीजें उठा लीं और लौटाने को उनके घर की ओर चले।

दरवाजे पर नन्दा को देखकर प्रशंसायुक्त स्वर में वह बोले, 'मैनी मैनी थैंक्स ! पर्स में बहुत से डालर थे ! कहीं और छूटा होता तो मिलने की कोई आशा नहीं थी।'

नन्दा जानते थे कि दिल्ली से पीकिंग व पीकिंग से दिल्ली जाने वाले डिप्लोमैटिक बैग के देखने-भालने एवं लेन-देन का दायित्व जिन कूटनीतिज्ञों पर होता है, उन्हें बहुत से लोग ऐसा मुकुट पहनाना चाहते हैं।

प्रलोभन क्या केवल बाहर से आता है ? विदेश में हर मनुष्य की कुछ न कुछ कमजोरी दिखाई देती है इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं

है। पटवाटोले के गिरीश बाबू जैसे व्यक्ति भी जब पूजा की छुट्टियों में सपरिवार बनारस जाते थे तो दो-चार बार गाना-बजाना सुनकर आधी-रात को धर्मशाला लौटते थे और लोग बुरा नहीं मानते थे। किसी की कमजोरी खाने-पीने के मामले में देखी जाती है—कलकत्ते में जो चाय-सिगरेट नहीं पीते वही विलायत जाने पर शराब में स्वयं को डुबो लेते हैं। परिचित समाज से मुक्त होने पर सभी व्यक्ति बदल जाते हैं। शुरू-शुरू में फॉरेन पोस्टिंग मिलने पर बहुत से डिप्लोमेट आत्मगर्व से विभोर हो उठते हैं, दायित्व व कर्त्तव्य पालन में शिथिलता दिखाई देती है। यों तो और भी बहुत सी बातों की कमजोरी सामने आती है, परन्तु यदि कहीं सुन्दरी युवती के चक्कर में पड़ गये तब तो भगवान् ही मालिक होता है।

'मे आइ कम इन ?'

दरवाजा जरा-सा खोलकर एक लम्बी तन्वंगी भारतीय युवती ने अप्रत्याशित रूप से झाँककर पूछा तो थर्ड सेक्रेटरी सेनगुप्त चौंक पड़े। पल भर में हृदय में आनन्द की एक लहर दौड़ गई।

एक झलक देखकर सेनगुप्त ने उत्तर दिया, 'येस प्लीज़।'

कमरे में प्रवेश करके युवती ने हाथ से बड़ा सा ट्रैवेलिंग बैग नीचे उतारते हुए पूछा, 'एक्सक्यूज़ मी, आर यू मिस्टर सेनगुप्ता ?'

'दैट्स राइट।'

इस बार शुद्ध बँगला में नमस्कार किया उसने।

सेनगुप्त ने बैठे-बैठे प्रति-नमस्कार किया, लेकिन उनका मन आनन्द, उल्लास, उच्छ्वास से नाच उठा।

मुस्कुराकर युवती ने पूछा, 'बैठ सकती हूँ ?'

सौजन्यता दिखाने में त्रुटि हो जाने पर लज्जित हुए सेनगुप्त बोले—'आई ऐम सॉरी, बैठिये, बैठिये।'

योरोप में सेनगुप्त की यह पहली पोस्टिङ्ग थी। रंगून थे तो भारतीयों का सान्निध्यलाभ इतना दुर्लभ नहीं था, लेकिन बेल्जियम में इस एक वर्ष में किसी भारतीय से मिलना नहीं के बराबर हुआ था। लंदन इंडियन हाई कमीशन में जो नौकरी करते हैं, वे भारतीय को देखकर विरक्त होते हैं। ब्रुसेल्स, दि हेग या स्कैन्डेनेविया में कहीं जो नौकरी करते हैं, वह भारतीय मात्र को देखकर खुश होते हैं, बंगाली या बँगला-

करते समय उन महानुभाव के दर्शन हुए तो नन्दा को सन्देह नहीं रहा।

नन्दा स्वयं यद्यपि सतर्क हो गये पर किसी को मालूम नहीं होने दिया। मिशन के दो एक व्यक्तियों को अवश्य सारी बातें बता दीं। आखिर एक दिन डिनर-टेबिल पर उन महानुभाव से प्रथम आलाप हुआ।

'तुम लोगों के इंडिया जैसी चार्मिंग तथा फ्री सोसायटी की कोई तुलना नहीं है।'

'मैनी थैंक्स फॉर द कॉम्प्लीमेन्ट्स।'

'सच मानिये, इन्टरनेशनल ट्रेड के सिलसिले में कितने ही देशों में गया, बट इंडिया इज़ इंडिया।'

फ्राइड-चिकन, राइस और पोर्क खत्म करके कॉफी का प्याला हाथ में आते-आते बातचीत राजनीति पर आ गई।

'आइ ऐम श्योर इन्टरनेशनल अफेयर्स में इंडिया यूनिक रोल प्ले करेगा।'

'अन्तर्राष्ट्रीय मामले में तो आजकल सभी देश हैं····।' छोटा-सा उत्तर दिया नन्दा ने।

कुछ दिनों में ही दोनों काफी घनिष्ठ हो गये, एक ही समय डिनर खाने लगे।

एक दिन वह सज्जन जल्दी-जल्दी कॉफी के घूंट भरकर उठ खड़े हुए। 'एक्सक्यूज़ मी, सिंगापुर से एक टेलीफोन आने वाला है!'

उनके जाने के बाद नन्दा की नज़र टेबिल पर पड़ी तो देखा उनका सिगरेट केस, लाइटर व पर्स वहीं पर पड़ा रह गया था। कॉफी पीकर नन्दा ने तीनों चीजें उठा लीं और लौटाने को उनके घर की ओर चले।

दरवाजे पर नन्दा को देखकर प्रशंसायुक्त स्वर में वह बोले, 'मैनी मैनी थैंक्स! पर्स में बहुत से डालर थे! कहीं और छूटा होता तो मिलने की कोई आशा नहीं थी।'

नन्दा जानते थे कि दिल्ली से पीकिंग व पीकिंग से दिल्ली जाने वाले डिप्लोमैटिक बैग के देखने-भालने एवं लेन-देन का दायित्व जिन कूटनीतिज्ञों पर होता है, उन्हें बहुत से लोग ऐसा मुकुट पहनाना चाहते हैं।

प्रलोभन क्या केवल बाहर से आता है? विदेश में हर मनुष्य की कुछ न कुछ कमजोरी दिखाई देती है इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं

है। पटवाटोले के गिरीश बाबू जैसे व्यक्ति भी जब पूजा की छुट्टियों में सपरिवार बनारस जाते थे तो दो-चार बार गाना-बजाना सुनकर आधी-रात को धर्मशाला लौटते थे और लोग बुरा नहीं मानते थे। किसी की कमजोरी खाने-पीने के मामले में देखी जाती है—कलकत्ते में जो चाय-सिगरेट नहीं पीते वही विलायत जाने पर शराब में स्वयं को डुबो लेते हैं। परिचित समाज से मुक्त होने पर सभी व्यक्ति बदल जाते हैं। शुरू-शुरू में फॉरेन पोस्टिंग मिलने पर बहुत से डिप्लोमेट आत्मगर्व से विभोर हो उठते हैं, दायित्व व कर्त्तव्य पालन में शिथिलता दिखाई देती है। यों तो और भी बहुत सी बातों की कमजोरी सामने आती है, परन्तु यदि कहीं सुन्दरी युवती के चक्कर में पड़ गये तब तो भगवान् ही मालिक होता है।

'मे आइ कम इन ?'

दरवाजा जरा-सा खोलकर एक लम्बी तन्वंगी भारतीय युवती ने अप्रत्याशित रूप से झाँककर पूछा तो थर्ड सेक्रेटरी सेनगुप्त चौंक पड़े। पल भर में हृदय में आनन्द की एक लहर दौड़ गई।

एक झलक देखकर सेनगुप्त ने उत्तर दिया, 'येस प्लीज़।'

कमरे में प्रवेश करके युवती ने हाथ से बड़ा सा ट्रैवेलिंग बैग नीचे उतारते हुए पूछा, 'एक्सक्यूज़ मी, आर यू मिस्टर सेनगुप्ता ?'

'दैट्स राइट।'

इस बार शुद्ध बँगला में नमस्कार किया उसने।

सेनगुप्त ने बैठे-बैठे प्रति-नमस्कार किया, लेकिन उनका मन आनन्द, उल्लास, उच्छ्वास से नाच उठा।

मुस्कुराकर युवती ने पूछा, 'बैठ सकती हूँ ?'

सौजन्यता दिखाने में त्रुटि हो जाने पर लज्जित हुए सेनगुप्त बोले—'आई ऐम सॉरी, बैठिये, बैठिये।'

योरोप में सेनगुप्त की यह पहली पोस्टिङ्ग थी। रंगून थे तो भार-तीयों का सान्निध्यलाभ इतना दुर्लभ नहीं था, लेकिन बेल्जियम में इस एक वर्ष में किसी भारतीय से मिलना नहीं के बराबर हुआ था। [illegible] इंडियन हाई कमीशन में जो नौकरी करते हैं, वे भारतीय को [illegible] विरक्त होते हैं। ब्रुसेल्स, दि हेग या स्कैन्डेनेविया में कहीं जो [illegible] करते हैं, वह भारतीय मात्र को देखकर खुश होते हैं, बंगाली को देख-

भाषी की तो बात ही क्या है। वेल्जियम का स्पेशल स्टील खरीदने के लिये जो डेलीगेशन आया था उसमें एक बंगाली भी थे। ब्रुसेल्स की इंडियन एम्बैसी में काम करते हुए सेनगुप्त को किसी बंगाली का साक्षात् नहीं हुआ था अभी तक। बहुत दिन बाद एक बंगाली लड़की के आविर्भाव से सेनगुप्त ने सचमुच स्वयं को धन्य समझा।

'जानती हैं, कितने दिन वाद बंगाली में बात करने का मौका मिला ?'

साधारण बुद्धि से ही सेनगुप्त को यह बात समझ लेनी चाहिये थी कि इस प्रश्न का उत्तर उस सद्यःपरिचित युवती के लिये जानना संभव नहीं था। तब भी।

'बहुत दिन वाद ?' प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया युवती ने।

'कम से कम छह महीने हो गये होंगे।'

'क्यों, ब्रुसेल्स में बंगाली नहीं हैं क्या ?'

'सुना है कि कुछ लोग हैं, लेकिन अभी तक किसी से साक्षात् नहीं हुआ है।'

यहाँ से तो शुरुआत हुई। इसके वाद ! अनेकों भारतीय युवक-युवतियों की तरह चित्रलेखा सरकार भी लंदन आई तो पढ़ने के लिये थीं पर करने लगीं नौकरी। देखते-देखते तीन साल बीत गये। गत वर्ष कुछ हिन्दुस्तानी लड़के लड़कियाँ मिलकर एक कोच में कान्टिनेन्ट घूमने निकले तो वह भी साथ हो ली थी, लेकिन मन नहीं भरा। फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड तथा जर्मनी देखकर ही लौट गईं। इसके अलावा ग्रुप में तो विभिन्न स्वभाव एवं प्रकृति के लड़के-लड़कियाँ होते हैं और उनमें दो-चार का व्यवहार तो सहन करना ही पड़ता है। विशेषकर म्यूनिख में बेवेरियन फोक डान्स देखते समय प्रदीप सरकार, बड़ाल व रायचौधरी का···

'विश्वास करिये मिस्टर सेनगुप्त, वहाँ के वह बड़े-बड़े दो-तीन जग वियर पीने के बाद तो उन लोगों ने ऐसी असभ्यता शुरू की कि क्या बताऊँ।'

हँसते-हँसते सिगरेट का धुआँ छोड़कर सेनगुप्त बोले, 'आप जैसी यंग एंड अट्रेक्टिव लड़कियाँ साथ हों तो भला लड़के क्या बवेरिया में जाकर भी मस्ती नहीं करेंगे ?'

सिगरेट का धुआँ गोल छल्ले बनाता न जाने कहाँ विलीन हो गया। अचानक नटराजन ने कमरे में आकर सेनगुप्त को एक चिट्ठी पकड़ाते हुए कहा, 'हियर इज़ ए क्लोज़्ड लेटर फार यू।'

'क्लोज़्ड लेटर बट कान्ट एक्सपोज़ एनीथिंग' हँसते-हँसते पलटकर जवाब दिया सेनगुप्त ने।

बात को दूसरी ओर मोड़ते हुए नटराजन ने कहा, 'ऐम्बैसेडर कल ग्यारह बजे हम लोगों से मिल रहे हैं, जानते हो न ?'

'जानता हूँ।'

नटराजन ने बिदा ली।

चित्रलेखा बोली, 'थोड़ी-सी सहायता के लिये एम्बैसी में आई थी, आपकी नेमप्लेट देखकर अन्दर घुस आई।'

'बोलिये न, क्या कर सकता हूँ ?'

'अपने एक पुराने मित्र को स्टेशन पर एक्सपेक्ट कर रही थी पर वह आया नहीं। स्टेशन से टेलीफोन किया तो पता चला कि अब वह वहाँ नहीं रहता। जबकि....।'

'नया पता मालूम नहीं है। अतः यदि एम्बैसी में लोकल इन्डियन्स के पते हों, तो ....?'

'हाँ हाँ ! बिल्कुल ठीक ! बस यही तो मालूम करना था।' सन्तोष की साँस ली चित्रलेखा ने।

'आइ ऐम प्लीज़्ड टु इन्फॉर्म यू मिस सरकार कि इंडियन एम्बैसी में केवल इंडिया एवं इंडियन्स के अलावा बाकी सब खबरें मिल सकती हैं।' हँसते हुए चरम सत्य कह डाला सेनगुप्त ने।

बहुत आशा लेकर मिस सरकार एम्बैसी में आई थीं। इस उत्तर के मिलने की तो कल्पना भी नहीं थी। बड़ी मुश्किल में पड़ गईं। मुश्किल में पड़ने की बात ही थी। सारा साल परिश्रम करने के बाद तो यह दो हफ्ते की छुट्टी मिली थी। साल भर में जो कुछ बचा पाई थीं उसे लेकर घूमने-फिरने निकल पड़ी थीं औरों की तरह। इस सामान्य संचित पूँजी में होटल अथवा मोटेल में रहना उनके लिये संभव नहीं है—यह सब सेनगुप्त जानते थे। कुछ सोचा, कुछ दुविधा में पड़े; शायद मन ही मन कुछ तय भी किया। बोले, 'यदि बुरा न मानें तो एक प्रस्ताव करूँ।'

'नहीं-नहीं, बुरा क्यों मानूँगी।'

'यदि कोई आपत्ति न हो तो मेरे फ्लैट में रह सकती हैं। किसी तरह का असम्मान या असुविधा नहीं होगी।'

सेनगुप्त की बात पूरी होने से पहले ही मिस सरकार बोलीं, 'नहीं, यह बात नहीं है, लेकिन....!'

हँसकर सेनगुप्त ने कहा, 'जग पर जग वेवेरियन बियर पीकर फोक डान्स नहीं दिखाऊँगा ! पर हाँ, मेरे हाथ का खाना अवश्य खाना पड़ेगा।'

कलकत्ता शहर में इस तरह का प्रस्ताव करना अथवा प्रस्ताव ग्रहण करना केवल अनुचित ही नहीं असंभव भी है। लेकिन ब्रुसेल्स शहर में ऐसे प्रस्ताव की उपेक्षा करना आसान नहीं है। इसके अलावा तीन साल विदेश में रहने के बाद हमारे देश की लड़कियों को भी पुरुषों के साथ मिलने में एलर्जी नहीं होती।

चित्रलेखा ने सेनगुप्त का निमन्त्रण तो स्वीकार कर लिया, परन्तु खाना बनाने की बात जैसे एक समस्या बन गई। चित्रलेखा बोली, 'मेरे रहते हुए आप खाना पकायेंगे ? असंभव। यह तो किसी भी तरह नहीं हो सकता।'

'दो-चार दिनों के लिये अपना अतिथि बनाकर आपको काम में जोतूँ ? यह भला कैसे हो सकता है।'

तर्क-वितर्क के बाद अंत में यह तय हुआ कि दोनों में से कोई भी रसोई नहीं बनायेगा : बाहर रेस्टोरेंट में खा लिया करेंगे। सारा शहर घूम-घूम कर देखा दोनों ने—ग्रांड पैलेस देखा, टाउन हाल की सीढ़ियों पर बैठकर बातचीत की, ओपेन-एयर फ्लावर मार्केट में विस्मृत घंटों घूमते रहे, रेस्टोरेंट में बेल्जियमवासियों के प्रिय खाद्यों का जायका लेते रहे।

ब्रुसेल्स छोड़ने के एक दिन पहले शाम को चित्रलेखा ने अपने हाथ से खाना बनाया। खाने के बाद सेनगुप्त ने कहा था, 'क्यों आपने मेरी आदत बिगाड़ दी भला ?'

चित्रलेखा बोली थी, 'आपने भी क्या मेरा कम नुकसान किया है ?'

'इसका मतलब ?'

'संगे-संबंधियों से दूर विदेश में अकेली किसी तरह अपने मन को भुला पाई थी। यह आत्मीयता बढ़ा कर क्यों मेरा मन खराब कर दिया अपने ?'

और सेनगुप्त ? नाते-रिश्तेदारों से, यार-दोस्तों से इतनी दूर विदेश में पड़ा सचमुच कितनी हृदय विदारक अवस्था में दिन व्यतीत कर रहा था, यह कोई भुक्तभोगी ही समझ सकता था। दूर से देखने पर प्रतीत होता है कि विदेश में रहने वाले कूटनीतिज्ञ बहुत सुखी हैं, अशेष आनन्द का सुयोग प्राप्त है उन्हें। लेकिन सचमुच क्या ऐसा है ? साधारण मनुष्यों की तरह दिल खोलकर हँसने या रोने का क्या उनका मन नहीं होता ? जाने क्या-क्या करने को जी चाहता है।

इसीलिये तो दो दिन की कहानी दो दिन में खत्म नहीं हुई। दो दिनों की स्मृति के सुर दोनों के ही कानों में बजने लगे। डिप्लोमेट को बहुत कुछ करना पड़ता है लेकिन अपने मन के साथ लुकाछिपी का खेल खेलना, जबर्दस्ती करना कितना वेदनादायक एवं कितना दु:सह होता है यह सेनगुप्त जैसा नि:संग डिप्लोमेट ही समझ सकता है।

कुछ भी हो, है तो ह्यूमन मैटिरियल, डिप्लोमेट और डिप्लोमेसी यह भी तो मनुष्य को लेकर ही होते हैं। इसीलिये तो अनजाने मन उस चान्सरी बिल्डिंग से कहीं दूर उड़ जाता है और चित्रलेखा से जुड़ी छोटी-छोटी स्मृतियों के आकाश में उड़ता फिरता है। उड़ते-उड़ते जब पंख शिथिल होने लगते हैं तो फिर वापस अपने पिंजरे में लौट आता है।

तरुण यह सब समझता है, मन ही मन अनुभव करता है। ज्वाला-मुखी की आग जिस प्रकार अन्दर छुपी रहती है दिखाई नहीं देती, कूटनीतिज्ञों के मन का दुख, हृदय का क्रन्दन भी उसी प्रकार दृष्टिगत नहीं होता। स्मृति की ज्वाला में भले ही अहर्निश दग्ध होते रहो परन्तु कर्तव्य-पालन में त्रुटि होने पर क्षमा नहीं मिलती, कोई मार्जना नहीं होती। कोई गोपनीय खबर प्रकट हो सकती है, कोई गुप्त संवाद मिलने के बाद भी उचित जगह पहुँचाने में ढील या भूल हो सकती है। और भी बहुत कुछ हो सकता है, लेकिन शिकार हाथ से निकल जाने पर डिप्लोमेट की खैर नहीं।

# तीन

पहली बार जब कैरो एयरपोर्ट पर कुछ घंटे तरुण को रुकना पड़ा था तो उसने यह नहीं सोचा था कि अगली बार जब आयेगा तो इतना परिवर्तन दिखाई देगा। यह वही कैरो एयरपोर्ट है ? इतना बड़ा, इतना सुन्दर ? आश्चर्यजनक !

एयर इंडिया के प्लेन ने कैरो एयरपोर्ट के सुदीर्घ रनवे को पार किया ही था, खिड़की से बाहर तरुण की नज़र एयरपोर्ट टर्मिनल बिल्डिंग पर पड़ी। देखता ही रह गया वह। जैसे-जैसे बिल्डिंग पास आती गई, विस्मय बढ़ता ही गया। सुन्दरता से तराशे गये सैंड स्टोन का अपूर्व व आधुनिक स्थापत्य। लम्बी इतनी कि जितनी दूरी एसप्लेनेड-धर्मतल्ला से पार्कस्ट्रीट की दूरी ! किसने सोचा था कि स्फ़िंक्स व पिरामिडों का देश सारी दुनिया को इस तरह चमत्कृत कर देगा।

इतिहास के लिये भला-बुरा कुछ नहीं होता। मनुष्य के आवागमन की कहानी चिरन्तन है। नित्य घूर्णित पृथ्वी पर कुछ भी नित्य नहीं है।

रवाना होने से पहले तरुण ने तीन-चार सप्ताह हिस्टोरिकल डिविजन में काम किया था। केवल मिस्र या नासिर का नहीं, सारे मध्यपूर्व का इतिहास उल्टा-पल्टा था। इतिहास का द्रुतपट-परिवर्तन देखकर स्तम्भित रह गया था। विश्व के गत इतिहास की चतुर्थांश घटनाएँ भूमध्यसागर के चारों ओर घटीं थीं। धर्म, सभ्यता, संस्कृति के अलावा न जाने कितने राजा-वज़ीरों के आविर्भाव व बिदा का, सैकड़ों शक्तिशाली शक्तियों के उत्थान-पतन का नीरव साक्षी था यह शान्त, स्थिर सुन्दर भूमध्यसागर। सब कुछ बदल गया पर मनुष्य और प्रकृति, ये दोनों नहीं बदले। हमारे देश में जैसे सड़े भादों के बाद हँसता खिलता आश्विन नित्य है, उसी प्रकार भूमध्यसागर के चारों ओर कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मृत्यु के समान स्तब्ध अनन्त विस्तृत रेतीले मरुप्रान्त

की सीमा पर भूमध्य सागर को छूती हुई मधुर शीतल हवा, फल-फूल से लदे वृक्ष ज्यों के त्यों हैं। और मनुष्य ? विश्व की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियाँ युग-युगान्तर से भूमध्यसागर या नील नदी की लहरों से खेलती आई हैं। जैसे पहले इसका नीला जल लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता था, आज भी करता है।

मरुभूमि के देश भी कैसे होते हैं ! मरुप्रान्त में कोई प्रासाद जैसे चिरकालीन नहीं होता। केवल पिरामिड एवं निर्जीव ममी ही मानों उत्तरकाल का एकमात्र उपहार है।

दिल्ली में ब्रीफिंग के समय ज्वाइन्ट सेक्रेटरी मिस्टर रंगस्वामी ने कहा था, अतीत को जानो लेकिन अतीत के द्वारा हमेशा वर्तमान को मत सोचो-परखो। अलीबाबा का खुल-खुल सी-सेम नहीं मिलेगा अब मिडिल ईस्ट में। भविष्य की ओर दृष्टि रखते हुए सही तौर पर वर्तमान को जानना ही कूटनीतिज्ञों का मुख्य कर्तव्य है।

इसके आगे रंगस्वामी ने कहा था, 'देखो तरुण, हमारे जैसे डिप्लोमेटों के लिये सभी अच्छे हैं, कोई बुरा नहीं होता। इंडिया तो बिग पावर नहीं है जो अपना भला-बुरा जबर्दस्ती थोप देगा ! अरबों को प्यार करना, हृदय से प्यार करना, उनके विगत इतिहास को श्रद्धा से देखना।'

हिस्टोरिकल डिविजन के एक डिप्टी डायरेक्टर ने कहा था, 'स्वेज नहर केवल पश्चिम से पूर्व को जोड़ने वाली कड़ी नहीं है, वरन् कैरो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का महत्त्वपूर्ण स्थान है।'

सचमुच ऐसा ही तो है ! वह विराट पिरामिड मानों अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं शीत युद्ध के सिंहद्वार हैं। नील नदी की तटवर्त्ती वह सिंहमूर्ति मानो पाश्चात्य आधिपत्य के विरुद्ध सतर्क करने वाला संकेत है। किंग फारूक का वह विशाल शरीर देवस्थान की जीती-जागती प्रतिमूर्त्ति था। तीन करोड़ मनुष्यों की पशु के समान अवज्ञा करके क्लियोपैट्रा कल्पनालोक में खोई हुई थीं। कब नील नदी का जल धीरे-धीरे रिस कर प्रसाद की नींव में पहुँच गया इसकी खबर ही नहीं हुई उस मूर्ख साम्राज्ञी को।

इतिहास ने उसे भी बर्दाश्त नहीं किया, वैसे ही जैसे नेपोलियन, मुसोलिनी या हिटलर को नहीं किया था। मरुस्थल में तूफान उठा

और अतीत के बेदुयिनों की तरह सम्राट फारूक भी रेत के नीचे दबकर विलीन हो गये।

मुग्ध होकर तरुण ने इतिहास का यह निःशब्द सफर देखा है! जिन तीन करोड़ मनुष्यों ने कभी अमुक्त रहकर पीठ पर पत्थर ढोकर प्रासाद पर प्रासाद निर्मित किये थे, तिल-तिल करके स्वयं को मृत्यु के द्वार पर पहुँचाया था, सभ्य पाश्चात्य के सामने जो उपहास के पात्र थे, आज वही लोग बीसवीं शताब्दी के इतिहास के अन्यतम नायक थे। नील नदी वाले देश की जो सुन्दरियाँ युग-युगान्तर से पश्चिम के पुरुषों का दिल बहलाती रही थीं, वही आज मध्यपूर्व के इतिहास की नायिका थीं। सब देखकर, सोचकर अच्छा लगता है। कैरो जाकर बेली डांस देखना ही मानों इन बिन-बुलाये अथितियों का एकमात्र काम था, लेकिन आज वही पश्चिमवासी कैरों की सड़कों पर नायब-गुमाश्ते की तरह अरबों की मुसाहिबी करते नज़र आते हैं। केवल देश स्वाधीन नहीं हुआ, बल्कि अतीत के अत्याचार, अन्याय से भी मनुष्यों की मुक्ति हो गई है। सभ्यता के प्रथम सुप्रभात से लेकर अब तक के इतिहास के पन्ने-पन्ने पर मिस्र का उल्लेख है, लेकिन मिस्र के अरबों ने पहली बार आत्ममर्यादा का स्वाद चखा।

भारतीय दूतावास के कान्सुलर आफिस का ऐडमिनिस्ट्रेटिव अटैची जोसेफ मज़ाक करते हुए कहता है—'भारतवर्ष स्वाधीन है पर भारतवासी अभी भी पराधीन हैं।'

भले ही मज़ाक में कही गई हो, लेकिन बात सच है। जोसेफ और भी कहता है, 'लाल किले पर तिरंगा फहराने के बाद ही तो हमारे देशवासियों ने साहबों की पूजा करनी शुरू की है।'

और कैरो में? चोगा पहने अरबों को देखते ही साहब लोग रास्ता छोड़कर हट जाते हैं। कलकत्ते में तो रवीन्द्रजयन्ती पर भी दूसरे देशों के वाइस काउन्सुलों को सभापतित्व करने के लिये बुलाया जाता है।

कैरो को कभी नहीं भूल सकता तरुण। काम करने का ऐसा आनन्द अधिक देशों में नहीं आता। लंदन, वाशिंगटन, पेरिस, रोम या टोकियो के इंडियन मिशन में कदम रखते ही अभारतीय मनोभावना का परिचय मिल जायेगा। बात-बात में अपने देश के मनुष्यों की अवज्ञा करना कुछ इंडियन डिप्लोमेटों का एक फैशन सा बन गया है। पेन्सुलविनिया

एवेन्यू की इंडियन चान्सरी में सारे सप्ताह किसी अमेरिकन का आगमन नहीं होता, किन्तु जो दो-चार भारतीय भूले-भटके आ जाते हैं उनके साथ भी बात करने की फुर्सत नहीं होती इंडियन डिप्लोमेटों को। इसके विपरीत कैरो के इन्डियन मिशन में काले आदमियों की ही पूजा होती है।

जोसेफ कहता था, 'आँल ग्लोरी टु नासिर।'

बीच में जाने कौन पूछ बैठता, 'क्यों ?' तो बड़े नाटकीय ढंग से जोसेफ चिल्ला कर कहता, 'माइ डियर बेबीज़ ! तुम लोग नहीं जानते, मैं बयालिस वर्ष की उम्र में भी अपनी मिनिस्ट्री की कैन्टीन का सेक्रेटरी तक नहीं बन सका, और हमारे डियर डार्लिंग नासिर ने केवल चौंतीस साल की उम्र में संसार को नचा दिया।'

डियर डार्लिंग तो है ही नासिर ! केवल मिस्र के ही नहीं, सारी अरब दुनिया के यौवन की प्रतिमूर्ति हैं नासिर। लाखों करोड़ों नारी-पुरुषों के हृदय में उनका आसन है। वही तो है जिसने विश्व के सबसे घृणित मनुष्यों को सबके सामने मर्यादा के आसन पर बैठाया है। इसी लिये तो अरब देश में काले भारतीयों का सम्मान है।

कैरो के कूटनीतिक जगत् में इंडियन मिशन ने सचमुच एक अनन्य स्थान ग्रहण कर रक्खा है। बड़े-बड़े देशों में इंडियन मिशन को थोड़े ही कोई पूछता है। जब तक किसी फंदे में ही न पड़ जायें इंडिया के साथ सलाह-परामर्श करने का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता। कैरो में ऐसा नहीं है। समस्त महत्त्वपूर्ण मामलों में नासिर भारतवर्ष के साथ परामर्श अवश्य करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परिवार में भारत और मिस्र परम आत्मीय हैं।

और भी बहुत से ऐसे कारण हैं जो तरुण कैरो को नहीं भूल सकता।

इंडियन एम्बैसी के कुछ डिप्लोमेट व उनकी पत्नियाँ उस दिन 'कैरो टावर' रिवाल्विग रेस्टोरेंट में डिनर खाने गये थे। मिस्टर एंड मिसेस कल्हण, मिस्टर एंड मिसेस पुरी, मिस्टर एंड मिसेस मिश्र, दिल्ली के नार्दर्न टाइम्स के स्पेशल रिप्रेजेन्टेटिव व उनकी पत्नी सुनीता एवं इनके अलावा और भी तीन चार जनों ने मिलकर डिनर खाया। स्टीम्ड मीट और जोसेफ की कमेन्टरी—दोनों का एकसाथ उपभोग किया सबने।

डिनर खाने के बाद इजीप्शियन ब्लैक कॉफी पीते समय मिस्टर पुरी ने कॉफी का प्याला उठाकर प्रोपोज किया, 'आगामी जॉयेन्ट डिनर से पहले तरुण की शादी करनी ही पड़ेगी, नहीं तो····।'

'हाँ, नहीं तो इंडियन फॉरेन पालिसी बर्बाद हो जायेगी।' बड़े गंभीर स्वर में जोसेफ ने कहा।

रेस्टोरेंट से निकलते हुए अचानक मिस्टर कल्हण ने एक टेबिल के पास जाकर हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'हाउ आर यू हसन ?'

'फाइन, थैंक यू सर,' हसन ने भी खड़े होकर हँसते हुए हाथ बढ़ा दिया।

सौजन्यतापूर्ण दो-चार बातें करने के बाद मिस्टर कल्हण ने पूछा, 'हसन, हैव यू मेट आवर न्यू कलीग मित्र ?'

'कहाँ, नहीं तो ! बंगाली से मिलने के लोभ में टेबिल छोड़कर आगे बढ़ते हुए पूछा, वह हैं क्या आप लोगों के साथ ?'

तरुण का परिचय कराकर कल्हण बोले, 'दो बंगाली मिल गये हैं, अब तो तुम लोग सारी दुनिया को भूल जाओगे। सो कैरी आन माई ब्वायज़ ! गुड नाइट !'

इंडियन फारेन सर्विस में बंगाली जितने कम हैं, पाकिस्तान फारेन सर्विस में बंगालियों की उतनी ही अधिकता है। पाकिस्तान के ताना-शाहों का बंगालियों से अधिक प्रेम अवश्य इसका कारण नहीं है वरन् वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। बंगाली सीनियर अफसरों को देश में महत्त्वपूर्ण पदों पर बहाल रखना करांची-रावलपिंडी के पठान वीर निरापद नहीं समझते। इसी कारण पाकिस्तान के कृषि, मत्स्य अथवा रेडियो विभाग में छोटे-बड़े कुछ बंगाली अफसर मिल जायेंगे, सब डिप्टी मजिस्ट्रेट, पुलिस के डिप्टी सुपरिटेन्डेन्ट भी बंगाली हो सकते हैं, लेकिन इसके आगे····खबरदार ! जिला मजिस्ट्रेट या एस० पी० अथवा होम मिनिस्ट्री के गुप्तचर विभाग में अथवा देशरक्षा विभाग में ? नो एडमिशन फार ईस्ट पाकिस्तानीज़ ! इसीलिये पाकिस्तान की फारेन सर्विस में कुछ बंगालियों की भर्ती करके सारी दुनिया में उन्हें तितर-बितर करके करांची-रावलपिंडी स्टेटिसटिक्स बंगाली प्रेम का ढोल बजा रहे हैं।

जो भी हो, पाकिस्तानी मिशन में बंगाली दिखाई देते हैं। नौकरी

के लिये कुछ भी क्यों न करें, लेकिन पश्चिम बंगाल के किसी बंगाली का साथ मिलने पर यह लोग सारी दुनिया को भूल जाते हैं। राजनीति के बजाय पद्मा की इलिश मछली की बात करना अधिक पसन्द करते हैं। इंडियन फारेन सर्विस में जो बंगाली हैं, वे भी इन्हें पाकर और किसी को नहीं चाहते। तरुण भी नहीं चाहता। अभी पिछले दिनों ही तो रंगून में अब्बासउद्दीन साहब के घर कितना मजा किया था उसने।

वह भी एक दुर्घटना ही थी। रंगून चिड़ियाघर उस दिन लोगों से पटा पड़ा था। स्नेक किसिंग !—शंखचूड़ कोबरा साँप से सपेरा चुम्बन का खेल खेलेगा, यह सुनकर लोग उमड़ पड़े थे। अमेरिकन टूरिस्ट तो डर के मारे आगे ही नहीं आये।

कुछ बर्मी लड़के-लड़कियाँ, कुछ भारतीय तथा कुछ चीनी लोग ही सामने भीड़ लगाये हुए थे। चुम्बन का यह खेल देखते-देखते विमुग्ध होकर अब्बासउद्दीन अनजाने बंगाली में बोल उठा, 'बाप रे बाप !'

बस ! यह सुनते ही तरुण ने अब्बास के साथ परिचय कर लिया था। बातचीत के अंत में 'थैंक यू वेरी मच' कहकर ही अब्बास ने तरुण को नहीं छोड़ दिया था। खींचकर घर ले गया था और तारसप्तक में अम्मीजान को बताया था कि वह एक बंगाली पकड़ कर लाया है।

उस दिन के बाद अम्मीजान के स्नेहाकर्षण से खिंचकर स्वयं ही तरुण उनके यहाँ पहुँच जाता। छुट्टी के दिन कभी तरुण को स्वयं खाना नहीं बनाना पड़ा। अम्मीजान का कड़ा आदेश था, 'छुट्टी के दिन भी यदि यहाँ नहीं खा सकते तो फिर यहाँ आने की जरूरत नहीं है और मुझे भी कभी अम्मीजान कहकर मत बुलाना, समझे !'

कोई उत्तर नहीं दिया तरुण ने, बस मुँह नीचा किये मुस्कुराता रहा।

बड़े अच्छे कटे रंगून के वे दिन। कभी किचन के दरवाजे पर कुर्सी खींचकर अम्मीजान के साथ घंटों बातें करता तो कभी अब्बास की लुंगी लपेटकर सोफे पर लेटे-लेटे टेप रिकार्डर पर भटियाली गीत सुनता।

हसन के परिवार के साथ भी तरुण की घनिष्ठता होने में अधिक समय नहीं लगा।....

'देश की बात मत करो भाई, सुनकर मन बड़ा खराब हो जाता

है,' प्राय: छलछलाती आँखों से तरुण हसन से कहता।

मन खराब नहीं होगा भला ? ढाका के गली-कूचों के साथ उसके जीवन की अविस्मरणीय स्मृतियाँ जो जुड़ी हुई हैं। पोगोज स्कूल का पढ़ना, पुरानी पल्टन, रमना या बूढ़ीगंगा के किनारे शाम का भ्रमण, यार-दोस्तों की अड्डेबाजी आदि बातें याद आ जाती हैं तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। नाइल हिल्टन ग्रैंड डिनर की अपेक्षा मणि काकी के हाथ की नारियल की गांगचिल (एक व्यंजन विशेष) अथवा ढाकाई पराँठा कहीं अधिक अच्छा लगता था।

हसन की पत्नी रबिया करमन्नेसा स्कूल की पढ़ी हुई थी। करमन्नेसा स्कूल की याद आते ही एक और व्यक्ति याद आ जाता है। और पलक झपकते मन जैसे पद्मा-मेघना-धौलेश्वरी-बूढ़ीगंगा की तरह आलोड़ित होने लगता है।....

उयाड़ी में रामकृष्ण मिशन रोड के मोड़ पर तरुण का घर था। बूढ़े कहा करते थे, वरदा वकील का मकान और छोटी उम्र के लोग कहते कानाई वकील का मकान। तरुण के बाबा वरदाचरण मित्र उस जमाने के बड़े प्रसिद्ध वकील थे। पूरे ढाका-मैमनसिंह में मित्तिर की बराबरी का वकील नहीं था फौजदारी के लिये। बड़े-बड़े मुकदमों में तो चटगाँव-सिलहट तक से बुलावा आया करता था।

वरदाचरण की साध थी कि तीनों लड़कों को वकालत पढ़ायेंगे, लेकिन पूरी नहीं हुई। दोनों बड़े लड़के तो कोर्ट कचहरी के पास तक नहीं फटके। बड़ा लड़का पोस्ट आफिस की ओर, मँझला रेल कम्पनी की नौकरी लेकर शहर ही छोड़ गये। वरदा वकील की इच्छा पूर्ण हुई छोटे लड़के कानाई बाबू से। बाप के समान प्रसिद्धि तो नहीं मिली, परन्तु उयाड़ी में यह भी गणमान्य व्यक्तियों में माने जाते थे।

पिता कानाई बाबू की तरह तरुण भी पोगोज स्कूल में पढ़ता और रमना के मैदान में खेलता था। बाकी समय उसका टिकाटूली के गुहबाड़ी में बीतता था। शैशव से किशोर व किशोरावस्था से यौवन के संधिकाल तक के मधुरकाल में गुहबाड़ी ही उसके लिये प्रधान आकर्षण था। कहते हैं मध्याकर्षण शक्ति होने की वजह से ही मनुष्य पृथ्वी पर है, नहीं तो जाने कहाँ चला गया होता। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में भी एक अदृश्य शक्ति कार्य करती है, जो उसे प्रेरणा देती है,

शक्ति जुटाती है। जिसके जीवन में इस अदृश्य शक्ति की प्रेरणा का अभाव होता है, वह महाशून्य में विचरण करता है।

गुहवाड़ी की इन्द्राणी को लेकर ही तरुण ने जीवन के सारे स्वप्न संजोये थे। यह बात कोई जानता था और कोई नहीं। लेकिन वह दोनों जानते थे कि विधाता भी उन्हें विच्छिन्न नहीं करेंगे या कर नहीं पायेंगे। बूढ़ीगंगा का जल सूख सकता है पर तरुण के जीवन से इन्द्राणी विदा नहीं ले सकती—यही लगता था उन दिनों।

पर मन में तो जाने क्या-क्या कल्पनाएँ उठा करती हैं। कभी सोचा था क्या कि ऐसा सर्वनाशकारी दंगा होगा जिसमें उसके सारे स्वप्न टूटकर बिखर जायेंगे ? कोर्ट में एक बहुत बड़ा मुकदमा जीतकर तरुण की माँ के लिये इमरती का दोना लिये घर लौट रहे थे कानाई बाबू। लेकिन वह इमरती खा नहीं पाईं तरुण की माँ। एक छुरे के आघात से उनकी सारी खुशी चिरकाल के लिये समाप्त हो गई।

सारा ढाका शहर जैसे लपटों में घिर गया था! कितने घरों में वह आग लगी, कोई ठिकाना नहीं! कितने निरपराध व्यक्तियों के रक्त से बूढ़ीगंगा का पानी लाल हो गया इसका हिसाब भी किसी ने नहीं रक्खा।

पिता के शव का किसी तरह दाह करके तरुण घर लौट कर स्टडी रूम में पत्थर का बुत बना बैठा रहा। जिस समय होश आया सारा टिकाटूली श्मशान बन चुका था। पागलों की तरह चिल्लाते हुए सारा टिकाटूली छान डालने पर भी इन्द्राणी की शक्ल दिखाई नहीं दी थी तरुण को।....

टिकाटूली की वह आग आज भी उसके अंतर में आठों प्रहर जलती है। माँ को खोने के बाद निःसंगता जब बढ़ गई तो इन्द्राणी की याद उतनी ही तीव्र हो गई।

हसन की पत्नी रबिया की बातों में तभी तो तरुण अपने को खो बैठता है। भले ही हो डिप्लोमेट, है तो आखिर मानव। किसी तरह स्वयं को सँभालकर बोला, 'दीदी, वह सब बातें अब रहने दो। इससे तो मांस के गरम-गरम पकौड़े खिला दो।'

पकौड़ों के बाद कॉफी पीते-पीते हसन बोला, 'रबिया, अन्नदाशंकर की कविता पढ़ी है तुमने ?'

रबिया का उत्तर पाने के पहले ही हसन फिर कहता है—

भूल हो गई
बिल्कुल
और सब कुछ
बँट गया
नहीं बँटा केवल
नजरुल
एंड हसन एंड तरुण....

तरुण के मुँह पर भी हँसी फूट पड़ी। बोला, 'ऊँहूँ! नहीं हुआ।' हसन ने पूछा, 'हुआ नहीं, वह क्यों ?'

'वैसे नहीं, ऐसे होगा—नजरुल एंड रबिया एंड....'

मुस्कुराते हुए रबिया ने हसन से कहा, 'हार गये ना मेरे डिप्लोमेट भैया से।'

'अच्छा तुम उसे अगर डिप्लोमेट कहती हो तो मैं क्या कम हूँ।'

कितनी हँसी-खुशी बीत गये थे कैरो के वे दिन। राजनैतिक कूट-नीतिक क्षेत्र में अहर्निश हिन्दुस्तान पाकिस्तान की लड़ाई चलती थी। भारतवर्ष के मुसलमानों से प्रतिशोध लेने की झूठी कहानी प्रचारित करके पाकिस्तानी एम्बैसी अरबों का मन जीतने का प्रयत्न करती थी। और हिन्दुस्तानी दूतावास कदम-कदम पर अरबों के पश्चिमी आधिपत्य व शोषण के विरुद्ध अभियान एवं विजय के प्रति श्रद्धा व स्वागत प्रकट करता। बम्बई से जहाज भर-भर कर हजयात्री मक्का जाते हैं, बहुत से स्पेशल प्लेन भी बम्बई से जाते हैं। ऐसे ही एक हजयात्री जहाज की नजर अरब सागर में दूर एक पाकिस्तानी कार्गो जहाज पर पड़ी। कार्गो के क्रेटों को देखकर भारतीय जहाज के कुछ अफसरों को सन्देह हुआ। कैप्टन ने बेतार से बम्बई कोडमैसेज़ भेज दिया। कुछ दिन बाद काबुल रेडियो की एक छोटी सी खबर से सन्देह और भी दृढ़ हो गया। इसी बीच अम्मान से भेजी गई एक डिप्लोमेटिक डिसपैच से पता चला कि कुछ दिन पहले एक डिप्लोमेटिक पार्टी में जोर्डन फॉरेन मिनिस्ट्री के एक सीनियर अफसर ने इजराइल-अरब समस्या पर बात करते हुए मन्तव्य प्रकट किया था कि अगर मित्र मुस्लिम राष्ट्र भी उनकी सहायता करें तो क्या किया जा सकता है। यह सब छोटी-छोटी खबरें

जब इकट्ठी की गईं तो सन्देह नहीं रहा । कैरो इंडियन एम्बैसी में भी यह सब खबरें अविलम्ब पहुँच गईं ।

इस घटना को लेकर अरब देशों में तीव्र प्रतिवाद उठ खड़ा हुआ । पाकिस्तान और पाकिस्तानी एम्बैसी दोनों ही संकट में पड़ गये थे । फलस्वरूप भारत-पाक एम्बैसी में राजनैतिक व कूटनीतिक युद्ध के बादल मँडराने लगे, कभी वह बादल केवल गरज कर रह जाते और कभी बरस भी जाते । लेकिन उस स्थिति में भी हसन और तरुण बेसुरे स्वर में रवीन्द्रनाथ का 'आमार सोनार बाँगला, आमि तोमाय भालोबाशि' गाया करते । कर्मक्षेत्र में वह दो विरोधी देशों के प्रतिनिधि थे पर उसके बाहर मात्र बंगाली थे, जिन्हें अपने बंगाल के कण-कण से प्यार था । राजनीति, धर्म, सब विलीन हो जाता इस मित्रता में, अपनत्व में ।

गप्पें लड़ाते हुए दोनों ऐसे खो जाते कि दीन-दुनिया का होश नहीं रहता । रबिया आकर टोकती तो हड़बड़ा कर उठते और एक साथ कह उठते, 'बाप रे, इतना समय बीत गया और हमें पता ही नहीं चला ।'

तीनों मिलकर सिनेमा जाते, उमर खैयाम में डिनर खाते और गई रात घर लौटते ।

भूली जा सकती हैं क्या भला यह सब बातें ? तरुण किसी भी तरह नहीं भूल पाता कैरो को ! कैसे भूल जाये ? कारमान्नेसा स्कूल की छात्रा रबिया को देखते ही बीते दिनों की याद ने मन में एक उथल-पुथल जो मचा दी थी । इन्द्राणी की स्मृति की अग्नि में घृताहुति तो कैरो में ही पड़ी थी । जिसे भूलना चाहता था, वह उतनी ही ज्यादा याद आती है । क्या करे तरुण ?

## चार

वाइकाउन्ट के चारों के चारों इंजिन एक साथ गर्ज उठे, पंखे तेजी से घूमने लगे और उसके बाद कुछ ही क्षणों में दिल्ली की धरती छोड़कर प्लेन आकाश में पहुँच गया। काबुल की इंडियन एम्बैसी के सेकेन्ड सेक्रेटरी-डेजिग्नेट तरुण मित्र का मन भी उसके साथ-साथ अतीताकाश की क्रोड़ में उड़ चला....

ऐसे ही कभी अतीत में आर्य भी इसी रास्ते भारत आये होंगे। किसको मालूम कहाँ से आये थे। कोई कहता है पामीर से आये थे, तो कोई कहता है मध्य योरोप या जर्मनी से आये थे। मानव सभ्यता के आदिमतम सुप्रभात में अफगानिस्तान की पवित्र भूमि पर बैठकर ही ऋग्वेद लिखा था। कलकत्ते की सड़कों पर घूमते उन पगड़ीधारी काबुली वालों को देखकर यह विश्वास करना कठिन था कि इनके गृह-द्वार पर बैठकर ही हमारे व उनके पूर्वजों ने वेदों का निर्माण किया था। इतिहास के पन्नों में आर्यों की, हमारे पूर्वपुरुषों की कहानी लिखी हुई है। स्वयं को सभ्य आर्यों के वंशज मानकर हम गर्व का अनुभव करते हैं, लेकिन बाहर की दुनिया में स्वयं को आर्य कहने में कितनी कुंठा होती है हमें। और वह काबुली? मुसलमान अफगान? सारी दुनिया के सामने सीना तानकर कहते हैं कि वह आर्य हैं। उनके जितने विमान विश्वाकाश पर उड़ते हैं, सब पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'आर्याना अफगान एयरलाइन्स' लिखा होता है। काबुल के प्राचीनतम सरकारी होटल का नाम 'होटल आर्याना' है।....

वाइकाउन्ट की आयताकार बड़ी खिड़की से तरुण ने फिर एक बार नीचे की ओर देखा। कितने गिरि-पर्वत, नदी-नाले, घाट-मैदान पार करते हुए इसी रास्ते इतिहास के अनगिनत नायक गुजरे थे। अलेक्जेन्डर, इब्ने-बतूता मुहम्मद गोरी, तैमूर, बाबर, और भी जाने

कितने। कनिष्क आये थे, चीनी परिव्राजक आये थे। मार्को पोलो तक इस रास्ते का वर्णन लिख गया है। हिमालय की इस पर्वतमाला को पार करके ही भगवान् बुद्ध की वाणी अफगानिस्तान से चीन, जापान व दक्षिण-पूर्वी एशिया के दूसरे देशों में पहुँची थीं।

उल्टे-सीधे, छोटे-बड़े, सफेद-काले बादलों के बीच से गुज़रता हुआ भागा जा रहा था वाइकाउन्ट। तरुण की चिन्ताधारा भी बीच-बीच में उलट-पुलट जाती है। पर उससे क्या बनता-बिगड़ता है? उससे इतिहास का महत्त्व तो कम नहीं हो जाता अथवा रोमांच कम हो जाता है? ईरान के विख्यात कवि कह गये हैं, 'मा पि आघाष पि अंजाम-ए जहान बे-ख़बर-इम, आवाल ओ आख़ेर इ-इन कुहना केताव उफ्नाद आस्त।'.... ब्रह्मांड की इतिकथा के प्रथम व अंतिम पन्ने खो गये हैं, इसलिये आदि और अंत का हिसाब किताब-मिलना दुष्कर है।

मिस्टर योगी का ट्रांसफर टोकियो से काबुल किया गया था। जैसे ही ट्रांसफर आर्डर देखा; चक्कर आ गया उन्हें। टोकियो से काबुल! बोइंग सेवेन ज़ीरो सेवेन पर चढ़ने के बाद साइकिल रिक्शा! कम्पैशनेट ग्राउंड पर पत्नी के स्वास्थ्य एवं बच्चों की शिक्षा की दुहाई देते हुए परराष्ट्र मंत्रालय से अपील की योगी साहब ने।

केवल योगी नहीं, इंडियन फारेन सर्विस में बहुत से ऐसे लोग हैं जो काबुल जैसी छोटी-मोटी जगह नहीं जाना चाहते। लंदन, न्यूयार्क, वाशिंगटन, पेरिस, रोम या टोकियो के अलावा बाकी सारी दुनिया जैसे मनुष्य वास के अनुपयुक्त है उनके समक्ष। मास्को या योरोप की किसी राजधानी में तो दो-तीन साल किसी तरह काटे भी जा सकते हैं, लेकिन एशिया अफ्रीका में? उसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। कुछ भारतीय डिप्लोमेट ऐसे भी हैं जिन्होंने भूत में अंग्रेजों के समाज में आदर पाने के लोभवश अथवा यौवन के किसी क्षणिक आवेश में श्वेतांगिनी को जीवन-संगिनी बना लिया था—आजकल वह मेमसाहब लोग मैसूर सिल्क की साड़ी पहनती हैं, स्वतन्त्रता दिवस के स्वागत समारोह में पति की बगल में खड़े होकर हाथ जोड़कर 'नमस्ते' भी करती हैं लेकिन इंडिया आकर रहने की कल्पना से ही उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मक्खी, मच्छर, नंगे साधू, भिखारी—ओफ्.... हिन्दुस्तान भी कोई रहने की जगह है!

बारिसाल झालकाठि में जन्म लेने पर भी सरकार साहब ऐसी ही एक मेमसाहब के पल्ले से जुड़कर सोलह साल हिन्दुस्तान के बाहर-बाहर रहे थे। हिन्दुस्तान की नान-एम्लायमेंट एवं एफ्रो-एशियन बंधुत्व की नीति की रक्षा की खातिर एक बार दो साल कोलम्बो अवश्य रहे थे। बस! साउथ ब्लाक में आकर प्राइम मिनिस्टर के घर तो बिना किसी दुविधा के चले गये थे लेकिन फारेन सेक्रेटरी के घर जाने से पहले बेयरा चपरासी से पूछे बिना नहीं रह सके थे।

सरकार साहब को तरुण जानता है। शुरू-शुरू में तो वह इन बातों पर विश्वास नहीं करता था। फारेन मिनिस्ट्री के नियम-कानून की मोटी-मोटी किताबों में लिखा है कि तीन साल से ज्यादा कोई एक जगह नहीं रह सकता। एक ही रीजिअन में बार-बार पोस्टिंग नहीं होगी। दो टर्मों से अधिक एक-साथ विदेश में नहीं रक्खा जायेगा—और भी बहुत कुछ लिखा है····। लेकिन कुछ डिप्लोमेट डिप्लोमेसी करते हैं और कुछ तेल मालिश, कुछ ऐसे भी हैं जो काश्मीर में ससुराल बताकर इन सब नियमों का बड़े आराम से उल्लंघन करते रहते हैं।

सरकार साहब को छोड़ो। वह मिस्टर जौहर? बाईस साल से विदेश में है। बीच-बीच में ताजमहल देखने के लिये सरकारी खर्चे पर हिन्दुस्तान आते हैं, पर यहाँ पोस्टिंग? जौहर साहब से यह बात कहने का साहस तक नहीं है किसी में। कुछ लोग कहते हैं कि मिसेस जौहर के स्वर्गीय पिता और फारेन मिनिस्टर घनिष्ठ मित्र थे। कुछ कहते हैं, यह सब तो कहने की बातें हैं, असल बात तो है कि जौहर साहब ने फारेन सेक्रेटरी के लड़के को अपने लड़के की तरह पास रखकर बैरिस्टरी पढ़ाई है···। कुछ लोग आपस में यह भी कहते हैं कि मिसेस जौहर किसी समय की मशहूर अभिनेत्री हैं। आज भी इनके साहचर्य में दो एक पेग स्काच पीकर लोग अपने को धन्य समझते हैं।

जितने मुँह उतनी बातें। क्या झूठ है क्या सच, तरुण नहीं जानता। जानना चाहता भी नहीं। लेकिन इतना वह अच्छी तरह समझता है कि अन्तःसलिला फल्गु की तरह जौहर साहब के कुछ अंडरग्राउंड कनेक्शन हैं। हमारे टाप के ए वन एम्बेसेडर तक मिस्टर व मिसेस जौहर का जैसा आदर-सत्कार करते हैं, वह देखकर आश्चर्यान्वित हुए बिना नहीं रहा जा सकता।

छोड़ो भी यह सब। योगी के इतने हाई कनेक्शन तो नहीं है, परन्तु तेल मालिश वह अच्छी करता है। जापानी ट्रांजिस्टर, टेपरिकार्डर, खिलौने ! और फिर हांगकांग तो फ्री पोर्ट है ही !

इसके विपरीत है इन्दुरकर। तीन साल के लिये वह काबुल गया था लेकिन छह साल हो जाने पर भी वहाँ से जाना नहीं चाहा था उसने। इन्दुरकर भी तरुण का ही समसामयिक है, एक ही बैच के हैं वह दोनों। दोनों में अच्छी मित्रता है। पृथ्वी के दो छोरों पर हों भले ही वह दोनों, पर चिट्ठियों का नियमित आदान-प्रदान होता रहता है। विद्यार्थी जीवन में इतिहास पढ़ने की वजह से नहीं अपितु इन्दुरकर की चिट्ठियों से ही तरुण के मन में अफगानिस्तान के बारे में इतनी उत्सुकता पैदा हुई थी। उसी उत्सुकतावश बहुत दिन पहले मौका देखकर जॉयेन्ट सेक्रेटरी से कहा था, 'सर सुना है काठमांडू-काबुल बहुत से लोग नहीं जाना चाहते। आइ विल बी ग्लैड इफ आइ गेट ए चान्स टु सर्व देयर।'

तरुण की यह बात जॉयेन्ट सेक्रेटरी ने याद रक्खी थी। तभी तो मिनिस्ट्री की ट्रांसफर पोस्टिंग कमेटी की मीटिंग में योगी की अपील की बात उठते ही तरुण का नाम प्रस्तावित हो गया था।

योगी के बदले तरुण जा रहा था काबुल। हिन्दुकुश देखेगा, बमियान में विश्व की बृहत्तम बुद्ध की मूर्त्ति देखेगा, गजनी जायेगा, कंधार जायेगा। बहुत कुछ है देखने-समझने को। और फिर वीणा दि जो हैं।

'मे आइ हैव योर अटेंशन प्लीज़ !'

इंडियन एयरलाइन्स का वाइकाउन्ट काबुल पहुँच गया था।

विमान से बाहर आते ही फर्स्ट सेक्रेटरी मिस्टर मेहता को देखकर विस्मित हो गया तरुण। कुछ भी हो आखिर हैं तो सीनियर अफसर। कृतज्ञता दर्शायी उसने बार-बार, 'सो काइंड ऑफ यू...'

'डोन्ट बी टू फॉर्मल तरुण ! तुम आ रहे थे और मैं एयरपोर्ट न आता ? ऐसा कैसे हो सकता था ?'

थर्ड सेक्रेटरी, ऐडमिनिस्ट्रेटिव एवं कमर्शियल अटैची तथा और भी तीन-चार जने उसका स्वागत करने के लिये एयरपोर्ट आये थे। सबके साथ परिचय हुआ।

जो देश-विदेश घूमते रहते हैं वह एयरपोर्ट देखकर ही उस देश के

सम्बन्ध में एक धारणा बना सकते हैं। लन्दन व न्यूयार्क—ये दोनों ही एयरपोर्ट बहुत बड़े, सदा कर्मव्यस्त एवं आधुनिकतम हैं। लेकिन दोनों को देखकर साफ पता चल जाता है कि दोनों देशों के बीच अटलांटिक की दूरी है। फ्रैंकफर्ट व मास्को एयरपोर्ट भी अत्यन्त विराट व महत्त्व-पूर्ण हैं लेकिन क्षण भर में दोनों देशों के जनजीवन की भिन्नता का अनु-मान हो जाता है।

मास्को की तुलना में काबुल एयरपोर्ट बहुत छोटा होते हुए भी अच्छा सुन्दर है। रशिया की सहायता से बना काबुल एयरपोर्ट तो निर्जीव सा है पर तब भी अच्छा लगा तरुण को। तुरन्त दमदम, पालम आँखों के सामने घूम गया····कोई तुलना ही नहीं है।

यद्यपि एम्बैसी की तरफ से तरुण के लिये क्वार्टर तय किया हुआ था तथापि मेहता ने उसे किसी तरह नहीं छोड़ा—'अगर तुम्हें घर नहीं ले गया तो वीणा विल किल मी!'

एयरपोर्ट बिल्डिंग से बाहर निकलते हुए हँसते-हँसते तरुण बोला, 'दैट आइ नो'। लेकिन जानते हैं, एक बार वीणादि की ख़ातिर तवज्ज़ो में पहुँच गया तो फिर क्या कभी अपने क्वार्टर में जा पाऊँगा?'

ऐड अटैची डिप्लोमेटिक बैग लेकर चान्सरी चले गये। दूसरे लोग भी जहाँ जाना था चले गये।

मिस्टर मेहता की गाड़ी ने जैसे ही पख्तूनिस्तान एवेन्यू पर दौड़ना शुरू किया, तरुण को एक बहुत पुरानी बात याद आ गई।···· वीणादि और तरुण दोनों ने एक साथ ही नया जीवन शुरू किया था। शादी के बाद जिस दिन वीणादि ने मेहता की गृहस्थी सँभाली, उसी दिन तरुण ने भी फारेन पोस्टिंग पाकर काम शुरू किया था। यद्यपि दोनों जने एक ही प्लेन में दिल्ली से रोम गये थे, लेकिन तब तक परि-चय नहीं हुआ था। रोम एयरपोर्ट पर मिस्टर मेहता ने एक साथ दोनों का स्वागत किया था।

फारेन आफीसर या उनके परिवार के बारे में साधारण मनुष्यों की धारणा कुछ विचित्र सी होती है। बहुतों की धारणा है कि वह लोग दिनरात केवल शराब पीते हैं, चरित्र नाम की कोई वस्तु उनके पास नहीं होती। सामाजिक बंधनों से परे ये लोग बस मज़ा करते हैं। बात शत प्रतिशत गलत नहीं है, यह तरुण या वीणादि भी जानते हैं। किन्तु

इसका यह मतलव तो नहीं कि वह मनुष्य ही नहीं हैं ! फारेन सर्विस के आफीसर अथवा उनके परिवार के अन्य व्यक्ति भी तो रक्त-मांस से निर्मित होते हैं। औरों की तरह उनके भी तो हृदय, मन होता है, उन्हें भी माया-ममता होती है।

एक तो सौराष्ट्र के रहने वाले, उस पर भावनगर राज कालेज के भूतपूर्व लेक्चरार। मिस्टर मेहता वास्तव में अत्यन्त शान्त-शिष्ट व्यक्ति थे। लेकिन रोम की हवा और इटली की मिट्टी जैसे सवको चंचल सा बना देती है। फिर वीणादि जैसी सुन्दरी व विदुषी भार्या। मेहता सचमुच चंचल हो उठे। मारलोत् या मार्टिनी की बोतल खाली किये विना ही मेहता साहब पर खुमारी चढ़ी रहने लगी। स्वयं को केन्द्रित करके अपने पति का यह रोमान्टिक उन्माद वीणादि को अच्छा लगता। कुछ भी हो, काकरिया लेक—अपोलो बन्दर से भूमध्यसागर के किनारे योरोप के अन्यतम नगर में आकर और मेहता जैसा पति पाकर किसी भी भारतीय नारी के लिये ऐसा सोचना स्वाभाविक है।

वीकएंड में दोनों मिलकर फ्लोरेंस, साँ मरीनो, वेनिस, जेनेवा, मिलान, पडूया, पिसा घूमते-फिरते, आल्प्स पर चढ़ते, समुद्र की हवा खाते।

एक दिन वीणादि बोली, 'चलिये मिस्टर मित्र, कैपरी घूम आयें।'

वीणादि का यह आकस्मिक परिवर्तन देखकर तरुण मन ही मन हँसा था उस दिन। बुद्धिमान कूटनीतिज्ञ है वह ! दिमाग पर जरा सा जोर डालते ही कारण समझ लिया। इटली के जीवन का हर क्षण उपभोग करना चाहती है। अमेरिकन अपने अर्थ के नशे में पागल हैं, अँगरेज़ अपना राज्य-विस्तार करने में मस्त हैं, जर्मन शक्ति-सामर्थ्य दिखाने में व्यस्त हैं, लेकिन इटली निवासी जीवन का पूर्ण उपभोग करना चाहते हैं। लड़के-वच्चे हों, युवक-युवती हों या वूढ़े-वूढ़ी; सभी दिल खोलकर हँसना-रोना चाहते हैं। केवल हँसते-रोते ही नहीं, जी भरकर झगड़ते भी हैं। दुनिया में शायद एकमात्र इटली ही ऐसा देश है, जहाँ के लोग इस तरह लड़ते हैं। दर्शक वनना नहीं जानते यह लोग, दिन-प्रतिदिन के जीवन की प्रत्येक घटना के हिस्सेदार वन जाते हैं। रोम या मिलान की सड़क पर ट्रैफिक एक्सीडेंट हो जाने पर कलकत्ते के लोगों की तरह यह लोग केवल भीड़ इकट्ठी नहीं करते, अपितु मन्तव्य

प्रकट करते हैं, झगड़ा करते हैं, मारपीट करते हैं और इसके बाद झुंड बनाकर हँसते हुए कोर्ट-कचहरी भी जाते हैं। विचित्र है यह देश और इससे भी अधिक विचित्र हैं इसके लोग। इस तरह अंतःकरण की गहराइयों से प्यार करना, घृणा करना, दिल फाड़कर रोना—यही लोग कर सकते हैं, दूसरे नहीं !

'वीणादि भी क्या इस देश में आकर इन लोगों की तरह जीवन के रंग में रँग गई हैं ?'

ग्लास की मार्टिनी का एक सिप लेकर चहलकदमी करते हुए कहा तरुण ने। मेहता कुछ शर्मा से गये। बात को दूसरा मोड़ देकर तरुण बोला, 'कैपरी जाकर क्या होगा ? इससे तो चलिये ग्रांडस्विप जाकर बातें करते हुए बादाम चबाये जायँ।'

वीणादि ने जवाब देते हुए कहा, 'बेकार की बातें छोड़िए। सीधी सी बात समझ लीजिये कि अब के वीक एंड पर आप हमारे साथ कैपरी चल रहे हैं।'

आत्मसमर्पण करने से पहले तरुण बोला, 'ऐसी रोमान्टिक जगह मुझे साथ ले जाना ठीक होगा क्या ? आई ऐम गिविंग यू द लास्ट चांस टु थिंक इट ओवर।'

लेकिन किसी भी तरह नहीं मानी वीणादि। नेपल्स के पास कैपरी द्वीप जाना पड़ा था तरुण को भी उनके साथ। संगीत एवं काव्य के ख्याति प्राप्त इस छोटे से द्वीप में पहुँचकर तीनों आनन्दविभोर हो गये थे। फूल-पत्तों से भरे ब्लू ग्रोवो में तस्वीरें खींची थीं, तस्वीर जैसे खूबसूरत ऐनाकैपरी गाँव में घूमे थे, मोर्गानो खाया था, रस्सी के बने जूते खरीदे थे। लेकिन सारा दिन मस्ती में काटना जैसे भगवान् से देखा नहीं गया। मरीना पिकोलो बीच से होकर लौटते हुए रास्ते में एक अप्रत्याशित मोटर दुर्घटना में मेहता बड़ी बुरी तरह आहत हो गये थे।

बड़ी लम्बी कहानी है वह। लेकिन इस दुर्घटना के फलस्वरूप मेहता दम्पत्ति के जीवन में तरुण का एक प्रमुख स्थान बन गया था। वीणादि का कहना है कि तरुण की वजह से ही मेहता साहब को नई जिन्दगी मिली। इसीलिये वीणादि तरुण के प्रति इतनी कृतज्ञ हैं। मेहता साहब भी तरुण की वह सेवा-शुश्रूषा, देखभाल भूले नहीं हैं।

और तरुण ? उसके शुष्क जीवन में मेहता दम्पत्ति एक परम

निश्चिन्त आश्रयस्थल रूप हैं। वीणादि के एयरपोर्ट पर आने की आशा उसे पहले ही नहीं थी। वह निश्चित रूप से जानता था कि वे खाने-पीने की तैयारी में इतनी व्यस्त होंगी कि एयरपोर्ट आकर समय नष्ट करना उनके लिये संभव नहीं होगा।

तरुण को देखकर तो वीणादि को जैसे आकाश का चाँद मिल गया हो। 'तुमने आकर बचा लिया मुझे।'

'क्यों वीणादि ?'

'दो दिन रहने पर ही पता चल जायेगा, क्यों ?' दीर्घश्वास छोड़कर वीणादि ने प्रत्युत्तर दिया।

मेहता बोले, 'छोटी-छोटी बातों में हमारे कलीग अपने को व्यस्त रखते हैं, और वीणा को यह बर्दाश्त नहीं होता।'

आपत्ति दिखाते हुए तरुण बोला, 'यही तो हमलोगों की बीमारी है।'

बाद में लंच खाते समय वीणादि ने कहा था, 'जानते हो, करीब तीन महीने हो गये घर से निकले हुए।'

'क्यों ?'

'लंदन, न्यूयार्क, रोम या कोलम्बो जैसी सोसायटी नाम की कोई चीज ही यहाँ नहीं है। और इनके कलीगों के घर जाकर सिंगापुर से ड्यूटी फ्री इम्पोर्ट की बातें सुनना अच्छा नहीं लगता।'

सचमुच, विचित्र है हमारा देश और फारेन सर्विस के एक श्रेणी के अफसर और भी विचित्र हैं। सिर्फ फारेन सर्विस के अफसर ही नहीं वरन् सभी सर्विसों के अफसरों का एक सा हाल है। आज आई०सी० एस० गवर्नर होकर भी जिन लोगों को चैन नहीं है, वही अपने यौवन में डिप्टी सेक्रेटरी बनकर रिटायर होने का स्वप्न देखा करते थे। डेढ़ सौ वर्षों के अँग्रेजी राज्य की मियाद अगर थोड़ी और बढ़ गई होती तो आज वेलसली-शाहजहाँ-मथुरा रोड के बँगलों की कल्पना तक पहुँच पाते यह लोग ? गोल मार्केट के आस-पास की किसी अँधेरी गली में इनका जीवन समाप्त हो जाता। फारेन सर्विस के सीनियरों की कहानी तो और भी चौंकाने वाली है। जो पुरी साहब हाथरस या गोरखपुर के डिप्टी कमिश्नर के पद से रिटायर होने के बाद ड्राइंगरूम में बार तथा स्टडीरूम में फेयरवेल की ग्रुप फोटो टाँगने का स्वप्न देखते थे, वही

आज लंदन-वाशिंगटन-मास्को-टोकियो के अलावा कहीं पोस्टिंग नहीं लेते। क्यों ? क्यों क्या, सन् सैंतालीस में सजधज के साथ फारेन सर्विस जॉयन करके आज टाप के एक्सपर्ट जो बन गये हैं।

इस भानमती के कुनबे में जाने कहाँ-कहाँ के ईंट-रोड़े आ जुड़े हैं। मद्रास क्रिश्चियन कालेज के केमिस्ट्री-डिमान्सट्रेटर, लाहौर हेरल्ड के जूनियर सब-एडीटर, इर्विन अस्पताल के आफिस सुपरिटेन्डेन्ट, कनाट प्लेस के डिपार्टमेन्टल स्टोर के मैनेजर, केण्टोनगर कालेज के लाइब्रेरियन—तरह-तरह के लोगों ने एमर्जेन्सी रिक्रूटमेन्ट में फारेन सर्विस की प्रथम या द्वितीय पंक्ति पर दखल जमा लिया था।

तभी तो वीणादि की बात सुनकर तरुण को जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। ऐसे लोग सिंगापुर से ड्यूटी फ्री इम्पोर्ट का स्वप्न देखेंगे या भारत-अफगान मैत्री को दृढ़ करने का प्रयत्न करेंगे ?

वीणादि बोलीं, 'यह लोग अफगानिस्तान को समझे-बूझेंगे ? इतनी अक्ल या इच्छा है किसी में ?'

'नहीं, सारी अक्ल बस तुम्हारी खोपड़ी में ही तो भरी है विधाता ने।'—प्रतिवाद करते हुए मेहता ने जवाब दिया।

वीणादि को दो साल हो गये हैं अफगानिस्तान में रहते हुए। मात्र हिन्दुकुश की नई चैनेल ही नहीं देखी है उन्होंने, इंडियन एम्बैसी के अनेकों रथी-महारथियों की दुर्बलताओं का भी उन्हें पता चल गया है। तभी तो अविलंब पति की बात का खंडन करते हुए बोलीं, 'तुम लोगों जैसी अक्ल भले ही न हो पर मन में इच्छा-उमंग तो हैं···।'

पालिटिकल काउन्सलर को वीणादि मजाक में ड्राइ फ्रूट काउन्सलर क्यों कहती हैं, यह समझने में तरुण को देर नहीं लगी। कोई भी जान-पहचान का व्यक्ति काबुल से दिल्ली जाता होगा तो पालिटिकल काउन्सलर जायेन्ट सेक्रेटरी की बड़ी लड़की पलि के लिये पाँच किलो किशमिश, पाँच किलो काजू अवश्य भेजेंगे। अगर बहुत दिनों तक ऐसा कोई पैसेन्जर उन्हें नहीं मिलता तो प्लेन के पायलट के हाथों कुछ न कुछ भेजते हुए दिल्ली मैसेज भेजेंगे, पलि····शाहजहाँ रोड, न्यू देहली ····प्लीज़ कलेक्ट पैकेट···पायलट फ्लाइट····फ्राइडे···।

चान्सरी के क्लर्क तो जब भी उसके बारे में आपस में बात करते हैं तो डि०एफ०सी० (ड्राइ फ्रूट काउन्सलर) कहकर संबोधित करते हैं।

चान्सरी में तो दिन जबर्दस्ती को काटता तरुण। काम करने में जरा भी आनन्द नहीं आता उसे। जिस चान्सरी में कोई हलचल न हो, उत्तेजना न हो, किसी तरह की राजनैतिक रस्साकशी न हो, वहाँ कार्य करने में वास्तविक डिप्लोमेट को मज़ा नहीं आता। पख्तूनिस्तान को लेकर अफगानिस्तान पाकिस्तान में बराबर राजनैतिक संघर्ष चला आ रहा है। सन् सैंतालीस में जब पाकिस्तान बना था तभी से पश्तो भाषी अफगान उसके विरोधी रहे हैं और अफगानिस्तान की करीब साठ-सत्तर प्रतिशत जनता पश्तो भाषी है। लेकिन तब भी पाकिस्तान किसी तरह काम चला ही रहा है। और भारतीय दूतावास? स्वयं ऐम्बैसेडर ही यदि उदासीन हो एवं डिप्लोमेटिक रिसेप्शनों में वहाँ के राजा या प्राइम मिनिस्टर की बगल में खड़े होकर फोटो खिचवाना ही उनका एकमात्र स्वप्न व कार्य हो तो एम्बैसी-चान्सरी के और लोग क्या करेंगे। उधर पाकिस्तानी दूतावास का प्रचार विभाग धीरे-धीरे भारतवर्ष के विरुद्ध जहर उगल रहा है और इधर इंडियन ऐम्बैसी के प्रेस अटैची की कृपा से पेरिस में छपे फ्रेन्टि जर्नल तथा तेहरान में छपे फारसी भाषा के जर्नलों के बंडल स्टोर में ही पड़े रहते हैं। काबुल के होटलों में, रेस्टोरेंटों में, एयरपोर्ट पर—हर जगह पाकिस्तान का कुछ न कुछ नजरों में पड़ता है। काबुल यूनिवर्सिटी के रीडिंगरूम में पाकिस्तानी प्रचार पुस्तिकाओं की सदा बाढ़ आयी रहती है, लेकिन भारतवर्ष का कहीं कोई चिह्न तक दिखाई नहीं पड़ता।

तरुण या मेहता साहब ही क्या कर सकते हैं! अकेला चना तो भाड़ नहीं फोड़ सकता। आफिस की चहारदीवारी के अन्दर जब तक रहता है एक घुटन सी महसूस करता है अपने अन्दर! चान्सरी से बाहर आते ही उन्मुक्त पक्षी की तरह आनन्द-विभोर हो उठता है तरुण। काबुलवास का आफिस के बाहर का प्रत्येक क्षण उसने जी भर कर भोगा है। पठानों जैसी स्वाधीनता प्रिय जातियाँ इतिहास में विरल ही हैं। यह लोग सब कुछ बर्दाश्त कर लेंगे लेकिन अपने ऊपर किसी अन्य जाति का शासन नहीं सह सकेंगे। न कभी किया है और न ही शायद कभी सहेंगे। एक के बाद एक देशों पर कब्जा करता गया था अलेक्जेंडर, परन्तु अफगानिस्तान पहुँचकर पठानशक्ति से लोहा लेने में उसे भी छठी का दूध याद आ गया था। परवर्तीकाल में साम्राज्य-लोलुप

अरबों को भी पर्याप्त शिक्षा मिली थी इन लोगों से। और अँग्रेज ? तूफान की तरह एशिया-अफ्रीका के दर्जनों देशों पर उन्होंने कब्जा कर लिया, अपना झंडा फहरा दिया। लेकिन उन अँग्रेजों को भी एक बार दो बार नहीं, तीन-तीन बार पठानों के हाथों मुँह की खानी पड़ी। जब आमने-सामने प्रत्यक्ष रूप से उनसे नहीं जीत पाये तो षड्यन्त्र रचकर रात्रि के अंधकार में खिड़की की राह घुसकर काबुल को हथियाना चाहा था वीरजाति अंग्रेज ने, पर वह भी नहीं कर पाये। जागरूक, चौकन्ने पठानों ने एक न चलने दी उनकी।

इधर हाल में अफगानिस्तान ने अमेरिका-एशिया से सैकड़ों करोड़ों रुपयों की सहायता ली है, लेकिन उसके लिये सिर नहीं झुकाया उसने। गिड़गिड़ाया नहीं वह, वरन् सहायता लेकर जैसे उन्हें ही कृतार्थ किया है। काबुल में जितनी भी डिप्लोमेटिक पार्टियाँ होती हैं, अफगानिस्तान सरकार के हेड असिस्टेंट-हेड क्लर्क तक निमन्त्रित होते हैं और वह लोग नहीं आते हैं तो ऐम्बैसेडरों को अफसोस रहता है। वहाँ के लोगों का यह आत्मसम्मान देखकर तरुण अपने देशवासियों के बारे में सोचता है तो मन ही मन शर्मिन्दा हो जाता है ! चाय, डिनर, काकटेल की तो बात ही अलग है यहाँ तो किसी एम्बैसी या काउन्सुलेट में एक फिल्म 'शो' का निमन्त्रण-पत्र मिल जाये तो जमीन पर पाँव नहीं पड़ते लोगों के।

कलकत्ते और दिल्ली में तरुण ने कुछ लोगों को अफगानों की हँसी उड़ाते हुए देखा है, कहते सुना है कि वह लोग तो आज भी मध्ययुग में वास करते हैं।

कलकत्ता-दिल्ली-बम्बई के मिल्क बूथों की तरह सारे काबुल में सरकारी 'नान' की दुकानों की भरमार है। सरकारी लारियाँ इन दुकानों पर भर-भरकर आटा पहुँचा देती हैं और कर्मचारी 'नान' बनाते हैं। वही 'नान' काबुल के चार लाख निवासियों का भोजन है। गरीब-गुरबे से लेकर प्राइम मिनिस्टर के घर की डाइनिंग टेबल तक यह नान पहुँचती है, लेकिन किसी नान का वजन तोला भर कम-ज्यादा नहीं होता।

एक दिन आश्चर्य में भरकर तरुण ने पूछा था, 'वजन में जरा भी हेर-फेर नहीं होता ?'

हँस पड़ा था सहिदुल्ला खाँ उसकी बात सुनकर। प्रश्न के उत्तर में प्रश्न करते हुए उसने पूछा था—'वजन में हेरफेर क्यों होगा ?' लेकिन कुछ क्षण उपरान्त हँसी रुकने पर गम्भीर स्वर में उसने कहा था, 'एक बार वजन में फर्क करने के लिये दो जनों को फाँसी हो गई थी। तभी से·····'

'फाँसी ?'

'हाँ, सुना तो यही है।'

'कितने दिन पहले की बात है ?'

'यह तो नहीं मालूम। पर तब भी काफी दिन हो गये हैं।'

किंवदन्तियों की तरह ऐसी कहानियाँ घर-घर में सुनी जाती हैं। सही बात कोई नहीं जानता, लेकिन यह सब जानते हैं कि वजन कम करने का साहस किसी में नहीं है। और भी बहुत कुछ जानते हैं यह लोग। जानते हैं कि अर्धरात्रि की निर्जनता में भी सड़क पर जाती निःसंग अर्द्धनग्न युवती के साथ दुर्व्यवहार करने की क्षमता किसी अफगान में नहीं है। और चोरी-डकैती ! डाका डालने पर कैद नहीं होती, सीधे जोशन ग्राउंड में ले जाकर सर्वसमक्ष सूली पर चढ़ा दिया जाता है। तरुण ने बहुतों से प्रश्न किया है कि आपने किसी को सूली चढ़ाते अपनी आँखों से देखा है ? देखा किसी ने भी नहीं, लेकिन वह जानते हैं कि सूली पर चढ़ाया जाता है।

काबुल की सड़कों पर अपनी वर्दी में चुस्त पुलिस के सिपाही वायरलेस गाड़ी भगाते नहीं फिरते, सरकार को ऐन्टी करप्शन डिपार्टमेन्ट के प्रचार के लिये प्रेस नोट नहीं छापने पड़ते। अच्छे-अच्छे बड़े देशों के साथ इस अदना से मुल्क की तुलना करने पर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है तरुण को।

मरुभूमि एवं चिरतुषारावृत पर्वतों की समन्वयभूमि वाला अफगानिस्तान वास्तव में विचित्र देश है। दूसरे देशों में सीधे सच्चे आदमियों को भरपेट खाना भी नसीब नहीं होता, लेकिन अपराधी जेल जाकर सरकारी खर्चे पर खाते और मस्ताते हैं। परन्तु अफगानिस्तान में ऐसा नहीं होता ! अपराधियों को जेल सजा देने के लिये भेजा जाता है—सरकारी कोषागार खाली करके कैदियों का पालन-पोषण नहीं किया जाता, उनका भोजन उनके रिश्तेदारों को भेजना पड़ता है। जिन

कैदियों का कोई नहीं होता, उन्हें हथकड़ी-बेड़ी पहन कर हर शुक्रवार को सड़क के किनारे खड़े होकर भीख माँगनी पड़ती है और भिक्षा में मिले पैसों से गुज़ारा करना पड़ता है। यह व्यवस्था अच्छी है या बुरी, यह तो तरुण नहीं जानता, लेकिन यह अवश्य जानता है कि इसके पीछे तर्क है, कारण है जो समझ में आता है।

समुद्र की लहरों की तरह ही अफ़गान भी कभी शान्त रहते हैं तो कभी अशान्त हो उठते हैं, कभी सौजन्यता-भद्रता की साक्षात् मूर्त्ति होते हैं तो कभी निर्मम पाषाण जैसे बन जाते हैं। हँसते-हँसते विना परिणाम की अपेक्षा किये शत्रु का सिर उतार लेते हैं लेकिन यदि चरम शत्रु भी आश्रयप्रार्थी बनकर द्वार पर आये तो सन्तानवत् आदर-यत्न करते हैं। अपमान का बदला अपमान करके लेते हैं रामधुन गाकर नहीं।

अचानक ट्रांसफर आर्डर पाकर काबुल छोड़ने में मानों तरुण को कष्ट हो रहा था। उस रात सब कुछ एक साथ याद आने लगा। वर्ष के प्रथम हिमपात के समय अफगानों की तरह वीणादि के साथ 'बरफि' खेलते समय कितना आनन्द आया था। इटली की तरह यहाँ के दिन भी जैसे पंख लगाकर उड़ गये थे। ऐसा लग रहा था जैसे कल ही आया हो तथा देखने-सुनने को, समझने-बूझने को बहुत कुछ पड़ा हो।

फेयरवेल डिनर के अतिथियों में सभी एक-एक करके शुभकामना जता कर चले गये थे। उतने बड़े ड्राइंगरूम के तीन कोनों में तीन सोफों पर तीन जने चुपचाप बैठे रह गये थे बस!

काफी देर बाद उस निस्तब्धता को भंग करते हुए एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर वीणादि बोलीं, 'तुम्हारे साथ हमलोगों की इतनी घनिष्ठता न हुई होती तो अच्छा था! जिनके रहने का कोई समय ठिकाना न हो, जो आज काबुल तो कल कैलीफोर्निया या कोरिया में हो, वह क्यों किसी को इस तरह अपना बनाते हैं, समझ में नहीं आता।'

सान्त्वना देते हुए मिस्टर मेहता ने कहा, 'कोशिश करेंगे कि तीन साल में फिर हम लोग एक ही मिशन में रह सकें····।'

यह सुनकर तो जैसे आग ही लग गई वीणादि को। चिल्ला कर बोलीं, 'बेकार की बक-बक मत करो तुम! तुम्हारी ये बहकाने वाली बातें बहुत सुन चुकी हूँ।'

अब तरुण बोला, 'नित्य नये देश देख कर तथा तुम लोगों का प्यार

पाकर ही तो मैं जिंदा हूँ वीणादि । नहीं तो मेरे लिये क्या रक्खा है भला दुनिया में ?'

अब तक कई वार मन में उठने पर भी जो प्रश्न वीणादि ने नहीं पूछा था, आज अचानक पूछ वैठीं, 'ढाका की कोई खबर मिली ?'

दिल में हूक उठने पर भी हँसकर तरुण ने कहा, 'और क्या खबर मिलेगी अव ? अंतिम सर्वनाश का कन्फरमेशन ?'

'छिः छिः ऐसी वात क्यों मुँह से निकालते हो ?—' वीणादि इस वार उठकर तरुण के पास आ खड़ी हुईं और उसके कंधे पर हाथ रख कर ढाढ़स वँधाते हुए वोलीं, 'तुमने तो कोई अन्याय नहीं किया तरुण। देख लेना, भगवान् भी तुम्हारे साथ अन्याय नहीं करेगा । एक दिन तुम अवश्य उसे पाओगे ।'

दूसरे दिन सुवह कावुल एयरपोर्ट पर वाइकाउन्ट के चारों इंजिन फिर चल पड़े, पंखे तेजी से घूम उठे । आँखे डवडवा आईं थीं पर प्लेन की खिड़की से तरुण को वीणादि जैसे बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रही थीं । इंजिनों की उस तेज घरघराहट में भी उसे उनका वह शान्त स्वर सुनाई दे रहा था कि एक दिन तुम अवश्य उसे पाओगे ।

## पाँच

समाचार-पत्रों की अथवा चलती राजनैतिक डिक्शनरी की भाषा में जिन्हें 'बिग पावर' कहते हैं, उनकी एम्बैसियों के हालचाल ही अलग हैं। वहाँ क्या होता है और क्या नहीं होता, यह स्वयं सर्वदर्शी भगवान् भी नही जानता। इनकी तुलना मध्ययुगीन हरमों से की जा सकती है। थोड़ा बहुत समझा जा सकता है, कुछ देखा-सुना जा सकता है, कुछ अनुमान भी लगाया जा सकता है; लेकिन सब कुछ जान पाना असंभव है। उनके यहाँ कौन वास्तविक डिप्लोमेट है, कौन प्रेस आफीसर है अथवा कौन जासूस विभाग का व्यक्ति है यह अन्तर्यामी भी नहीं जानते फिर ऐम्बैसेडर का तो क्या कहना।

बिग पावर के ऐम्बैसेडरों की अवस्था बहुत कुछ बड़ी-बड़ी कम्पनियों के पब्लिक रिलेशन्स मैनेजरों जैसी है। जिस प्रकार कम्पनी को चलाने के लिये आर्थिक, औद्योगिक आदि महत्त्वपूर्ण मामलों में पब्लिक रिलेशन्स मैनेजर की कोई भूमिका नहीं होती लेकिन प्रचार बहुत अधिक होता है; उसी प्रकार ऐम्बैसेडर वक्तृता देता है, उसकी फोटो छपती है, एम्बैसी के अन्य कर्मचारी उसका आदर करते हैं, लेकिन राजनैतिक कुंजी अधिकतर किसी और ही के हाथ में होती है।

अच्छे से अच्छे कूटनीतिज्ञों के ऊपर भी कोई देखने-भालने वाला होता है, इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। किंतु बिग पावर के डिप्लोमेटों का तो उनके सहकर्मी ही छाया की तरह अनुसरण करते हैं—सहकर्मी तो दिखावे के होते हैं बस, होते तो जासूस हैं। और फिर इन जासूसों पर नजर रखने की भी व्यापक व्यवस्था होती है—काउन्टर इन्टेलिजेन्स!

बिग पावर्स की चान्सरियाँ हरम की बेगमों जैसी ही होती हैं बहुत कुछ। न तो कोई किसी पर विश्वास करता है और न ही कोई किसी

को छोड़ सकता है। फलस्वरूप हर एक के मन में सन्देह व अशान्ति होती है।

इंडियन डिप्लोमेटिक सर्विस में ये सब झंझट नहीं हैं। बिग पावरों के लुकाछिपी खेलने का तो कारण है। इनके देशों में चोरी-चोरी बहुत कुछ होता है। विरोधी पक्ष की खबरें जानने के लिये यह लोग निःसंकोच करोड़ों रुपया पानी की तरह बहा देते हैं। हमारे देश में तो जब लोगों के खाने-पहनने को ही नहीं जुटा पाते, तो छुप-छुप कर दूसरे का सर्वनाश करने के लिये अर्थव्यय करने का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता। हमारी चान्सरियों में कुछ लोग अहंकारी अथवा दायित्व ज्ञान-हीन तो होते हैं परन्तु अविश्वास का वातावरण नहीं होता कहीं भी। अधिकतर इंडियन डिप्लोमेटिक मिशनों के लोग एक वृहत्तर परिवार की तरह रहते-सहते हैं। एक-दूसरे का सुख-दुख बाँट लेते हैं आपस में।

फॉरेन सर्विस में प्रवेश लेने के बाद पहली फॉरेन पोस्टिंग मिलते ही दयाल की शादी हो गई। शादी के बाद मृणालिनी को साथ लेकर जब बॉन लौटा तो एक अपूर्व घटना घट गई।...

...अतिव्यस्त फ्रैंकफर्ट एयरपोर्ट के जो कर्मचारी काम की अधिकता के कारण सिर नहीं उठा पाते थे, वह भी कुछ क्षण के लिये ससंभ्रम खड़े हो गये। साड़ी पहने सिर पर पल्ला लिये औरतें पंक्तिबद्ध खड़ी हो गईं। किसी के हाथ में शंख था तो किसी के हाथ में आरती का थाल। मास्टर आफ सेरेमनीज श्रीवास्तव ने कोई कमी नहीं रखी थी। टर्मिनल बिल्डिग के बाहर, लैंडिंग ग्राउन्ड के पास इस अनन्य स्वागत के लिये एयरपोर्ट के कर्तृपक्ष की अनुमति ले ली थी उसने। टेलीविजन कम्पनी में खबर भेज दी थी कि ट्रेडिशनल इंडियन वेलकम सेरेमनी टेलीकास्ट करना चाहें तो आकर 'टेक' कर लें।

एयर इंडिया के प्लेन के आकर रुकते ही मास्टर आफ सेरेमनीज़ ने इशारा किया और पचासेक इंडियन स्टुडेंटों ने ताली बजाते हुए एक राजस्थानी लोकगीत गाना शुरू कर दिया जिसका अर्थ था—आओ राजपुत्र आओ, राजकन्या—आओ—नूतन जीवन के परिपूर्ण सुरापात्र का पान करो। जैसे ही प्लेन का दरवाजा खुला, शंखध्वनि शुरू हो गई। दयाल और मृणालिनी मंत्रमुग्ध रह गये यह सब देखकर! नीचे आते ही स्त्रियों ने नववधू का परछन किया। धोती-कुर्त्ता, शेरवानी-

चूड़ीदार पहने पुरुषों ने दयाल को फूलमालाएँ पहनाईं और मृणालिनी के हाथों में फूलों का गुलदस्ता पकड़ाया।

ऐम्बैसेडर जान-बूझ कर नहीं आये थे। पत्नी से जाने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा था, 'जाओ, जाओ, तुम जाओ। मेरे सामने शायद वह लोग जो करना चाहते हैं, सहज भाव से न कर सकें।'

स्वागत के इस अनुष्ठान के अंत में मास्टर आफ सेरेमनीज़ एम्बैसेडर-पत्नी को आगे ले गये। उन्होंने पुत्रवत् दयाल को आशीर्वाद दिया और नववधू को छाती से लगा लिया।

शाम को टेलीविज़न पर एयरपोर्ट का यह अनुष्ठान टेलीकास्ट किया गया। रातों रात दयाल और मृणालिनी प्रसिद्ध हो गये। महीनों तक लोग उनसे मिलने आते रहे।

बॉन एम्बैसी के जिन लोगों ने उस दिन दयाल व मृणालिनी को लेकर यह आनन्दोत्सव मनाया था, आज दुनिया के विभिन्न भागों में बिखर गये हैं। कोई आस्ट्रेलिया में है तो कोई वियतनाम में। किसी की पोस्टिंग वाशिंगटन में हो गई तो किसी की मास्को में। कितना कुछ हो गया इस बीच, कितने उत्थान और पतन हो गये। लेकिन तब भी दयाल और मृणालिनी को कोई नहीं भूल पाया। जिस मृणालिनी का उन्होंने नूतन सुखी जीवन के लिये आह्वान किया था, जिसे दूधों नहाओ पूतों फलों का आशीर्वाद दिया था, वह माँ नहीं बन पाई, यह जानकर सभी दुखी हैं, मर्माहत हैं। एक के बाद एक तीन सन्तानों को जन्म दिया उसने पर माँ कहने के लिये एक भी नहीं रही। कोई भी हँसता-खेलता बच्चा देखकर कंगालिनी की तरह अंक भरने को दौड़ी जाती है वह। चान्सरी के लोगों के बच्चों से मन बहलाकर दिन काट रही है वह आज!

मृणालिनी को देखकर दुखी हो उठता है तरुण! लेकिन उसकी पीड़ा के इतने भागीदार देखकर तसल्ली भी होती है उसे।

कभी-कभी मृणालिनी तरुण से कहा करती, 'शुरू-शुरू में स्वयं को सँभाल नहीं पाती थी मैं। जब भी अकेली होती कहीं बैठकर चुपचाप रोया करती। पार्टी-रिसेप्शन-काकटेल—सब में जाती थी किन्तु मन को शांति नहीं मिलती थी क्षण भर को भी। लेकिन आज?'

आज की बात तरुण जानता है। आगे नहीं बोलने देता वह मृणा-

लिनी को, बात का विषय बदल देता है। उसे मालूम है कि वह हर समय नायक, रंगस्वामी, चटर्जी, श्रीवास्तव आदि सहकर्मियों के बच्चों में खोई रहती है। आस्ट्रिया रहते समय जब मिसेज़ श्रीवास्तव बीमार पड़ गई थीं तो उनके दोनों बच्चे उसी के पास रहे थे ! छोटे बच्चे ने तो बाद को भी अपने माँ-बाप के पास जाने से इंकार कर दिया था। दयाल की बदली जहाँ की भी होती है, मृणालिनी अपनी दुनिया बसा लेती है।

एक दिन मृणालिनी तरुण से बोली, 'अच्छा दादा, तुम अपने बच्चे को मेरे पास छोड़ोगे ना ?'

मुस्कुरा दिया तरुण !

'हँस क्यों रहे हो दादा ?' अप्रतिभ हो गई मृणालिनी।

'हँसूँगा नहीं ?' और एक दीर्घ श्वास छोड़ा तरुण ने। कुछ क्षणों के लिये जैसे वह कहीं खो गया। बोला, 'यह सब बातें अब नहीं सोचता बहन, सोच नहीं पाता, और सोचना चाहता भी नहीं।'

क्या सचमुच यह सब नहीं सोचता तरुण ? अवकाश के क्षणों में जब भी अकेला होता है, अवश्य यह स्वप्न देखता है। जाने कितनी इच्छाएँ उभरती हैं, कितनी यादें स्मृति-पटल पर कौंध जाती हैं !....

'जानती हो माँ कालेज के एक लेक्चरार ने मेरा हाथ देखकर क्या बताया है ?'

'क्या बताया है ?' बड़ी उत्सुकता से पूछा था माँ ने !

'बताया है कि मेरा विवाह बहुत देर में होगा।'—मुस्कराते हुए तरुण ने माँ की ओर देखकर कहा था।

'हाँ....बाप-बेटे घर से निकल जाया करना और मैं अकेली बैठी इस भूत बँगले का पहरा दूँगी, यही ना ?' गुस्से में भरकर माँ ने कहा था।

गुस्सा नहीं आता ? उन्होंने सदा से स्वप्न जो देखा था कि बी०ए० पास करते ही लड़के की शादी करके इन्द्राणी जैसी बहू घर में ले आयेंगी। रसोई में काम करते-करते पचासों बार इन्द्राणी से कहा होगा उन्होंने, 'दस-पाँच नहीं, एक ही लड़का है मेरा। बड़ा मन होता है कि बेटे-बहू के साथ देश-विदेश देखूँ घूम-फिर कर। ढाका में तो अब मन ही नहीं टिकता जैसे।'

'क्यों मौसी, हम लोग तो हैं', मुस्कुराते हुए इन्द्राणी कहती।

'तुझे क्या सदा के लिये अपने पास रख पाऊँगी बेटी ? खूब बड़े घर में तेरा ब्याह होगा, कहाँ चली जायेगी इसका क्या ठिकाना ?' बात खत्म होने के साथ-साथ एक निःश्वास निकल जाता।

बाद में इन्द्राणी ने तरुण से कहा था, 'जानते हो, मौसी क्या कह रही थीं ?'

'क्या कह रही थीं ?'

'कह रही थीं कि मेरा ब्याह खूब बड़े घर में होगा और मैं जाने कितनी दूर चली जाऊँगी।'

किताब को उल्टी रखकर तरुण ने उदासीन भाव से जवाब दिया था, 'यह मुँह और मसूर की दाल ! ऐसी परीजादी को रमना के कोचवानों के अलावा कोई शहज़ादा मिलेगा तभी तो दूर जायेगी ?'

दोनों आँखें चढ़ाकर इन्द्राणी के कहा था, 'तुम क्या इस बार परीक्षा के बाद कोचवानगिरी शुरू करोगे ?'

इसके बाद कहने को कुछ नहीं रह गया था। हँसकर तरुण ने अपनी हार स्वीकार कर ली थी।

'इस सूझ-बूझ को लेकर कहाँ ठौर-ठिकाना मिलेगा तुम्हें, मैं तो यही सोचती हूँ। मैं न रही तो भगवान ही मालिक है तुम्हारा ! जाने क्या दुर्गति हो तुम्हारी ?' बड़े गम्भीर स्वर में इन्द्राणी ने कहा था।

शैशव से कैशोर्य और कैशोर्य से यौवन में पदार्पण तक के दिनों में हमेशा अपने पास पाया था उसने इन्द्राणी को, हर कदम पर उसकी सहायता ली थी।

उन दिनों का ढाका तरुण के जीवन से खो गया है लेकिन इन्द्राणी की याद दिल से दूर नहीं हुई। न जाने कितनी लड़कियों का सान्निध्य मिला तरुण मित्र को, पर इन्द्राणी की याद कोई नहीं मिटा सकी। वह आज भी उसकी प्रतीक्षा में बैठा है। अब तो लगता है कि विधाता ने उसके लिये प्रतीक्षा का ही विधान बना दिया है जैसे। बंधुबांधवों के, सहकर्मियों के हँसी-खुशी भरे संसार को देखकर आनन्दित होता है; उनके बच्चों को प्यार करता है। लेकिन रात को जब अपने सूने फ्लैट में लौटता है तो पिकेडिलि सर्कस—टाइम्स स्क्वेयर—गिंजा की सारी न्योन लाइटें एक साथ जलकर भी तरुण के अँधेरे मन में रोशनी

की एक धुँधली सी किरण तक नहीं फेंक पातीं। यह सच है कि इन्द्र-पत्नी इन्द्राणी जैसी सुन्दर नहीं थी उसकी इन्द्राणी, पर वह अपरूपा थी, अनन्या थी इसमें कोई सन्देह नहीं। मैट्रिक पास करके जब किशोरी इन्द्राणी ने ईडिन कालेज में ऐडमिशन लिया और साड़ी पहननी शुरू की तो जैसे रातों रात वह बिल्कुल बदल गई, अंग-अंग में बाढ़ आ गई जैसे। पलक झपकते जैसे पद्मा कुछ की कुछ हो जाती है, उसी तरह इन्द्राणी के सर्वाङ्गों में कल्पनातीत अन्तर आ गया। मेघ देखते ही जिस प्रकार मेघना की लहरें नाचने लगती हैं, उसी प्रकार इतने दिनों की परिचित बिलकुल अपनी, इन्द्राणी को देखकर तरुण के मन में तरंगें उठने लगीं उस दिन।

सर्दियों की शाम को विक्टोरिया एम्बैन्कमेन्ट पर घूमते-घूमते तरुण रुक गया एकाएक। फेंसिग पर झुक कर टेम्स की ओर देखने लगा। चारों ओर कुहरा जैसे हर वस्तु की तरह तरुण को भी ग्रसने लगा। ...इन कुछ वर्षों में इन्द्राणी और भी पूर्ण, परिपूर्ण हो उठी होगी, उसके उन दीर्घ काले नेत्रों की चमक और अधिक बढ़ गई होगी। उसके घने काले घुँघराले बाल जो कभी बंधन में नहीं रहते थे, वे अब और भी लम्बे, सुन्दर व आकर्षक हो गये होंगे।

कुहरा धीरे-धीरे छँटने लगा। उस पार के रायल फेस्टीवल हाल की बत्तियाँ स्पष्ट हो उठीं। तरुण के मन का स्वप्नमय कुहासा भी छँट गया। रूढ़, वास्तविक, निर्मम इन्द्राणीविहीन निःसंग जीवन में लौट आया वह।

इधर कई दिनों से मन उखड़ा-उखड़ा सा है। डिप्टी हाई कमिश्नर के साथ काम करने की लेशमात्र भी इच्छा नहीं होती। बुड्ढा-टुड्ढा हाई कमिश्नर देशसेवा के बदले में केनसिंगटन के उस विशाल प्रासाद एवं रोल्स रायस कार का उपभोग कर रहा है। कुछ कागज-पत्र अवश्य साइन करने पड़ते हैं, लेकिन दायित्व या कर्त्तव्यबोध नाम की कोई चीज उसमें नहीं है। इस परिस्थिति में डिप्टी हाई कमिश्नर सर्वेसर्वा हैं।

वैसे डिप्टी हाई कमिश्नर मिस्टर व्यास निस्सन्देह एक ऊँचे दर्जे के कूटनीतिज्ञ हैं। मोल-भाव करने में बनिया अंग्रेज भी उनके सामने हार मान बैठता है। इससे पहले जब वह आस्ट्रेलिया में थे, तब भारतीय प्रवासियों को लेकर एक बखेड़ा खड़ा हो गया था। आस्ट्रेलिया के कुछ

समाचारपत्रों एवं राजनीतिज्ञों ने ऐसा हाय-हल्ला मचाया कि क्या कहा जाये। उन्हें लगा कि अगर कुछ ब्लैक इंडियन्स को आस्ट्रेलिया में हमेशा रहने की अनुमति मिल गई तो आसमान ही टूट पड़ेगा शायद। उस समय मिस्टर व्यास ने उनके कानों में फुसफुसा कर कहा था कि मध्ययुगीन अधिवासियों को छोड़कर आस्ट्रेलियन नाम की कोई जाति ही नहीं है। तुम सभी कभी प्रवासी बनकर इस देश में आये थे। तो फिर भारतीयों से इतनी घृणा क्यों करते हो ?

इस छोटी-सी चिकोटी से ही आस्ट्रेलिया के वह समाचारपत्र तथा कूटनीतिज्ञ होश में आ गये थे और काम भी बन गया था।

कूटनीतिज्ञ व्यास साहब की निन्दा उनके परम शत्रु भी नहीं करते। पर हाँ, तब भी शाम के बाद या कामकाज के सिलसिले में किसी सुंदरी का सान्निध्य मिल जाता है तो व्यास साहब भला-बुरा उचित-अनुचित सब कुछ भूल जाते हैं। कुछ भी हो मनुष्य में आदिम भावना तो विद्यमान होती ही है—किसी में कम किसी में ज्यादा। लेकिन व्यास साहब शिकार शुद्ध भारतीय ही करते हैं।...

एडिनबरा फिल्म फेस्टीवल में भाग लेने के लिये भारतवर्ष से भी कलाकारों का एक प्रतिनिधि मंडल लंदन आया था। कलकत्ते की मिस वलाका राय एवं बम्बई की सुजाता भी आने वाली थीं। फेस्टिवल के प्रबंधकों ने जब उनके ठहराने की व्यवस्था करनी चाही तो मिस्टर व्यास ने बड़ी गम्भीरता से कहा 'डोन्ट बॉदर अबाउट आवर आर्टिस्ट्स ! अपने आर्टिस्टों के रहने की व्यवस्था हम ही करेंगे।'

इधर व्यास साहब ने आर्टिस्टों को लिख दिया कि 'यदि फेस्टिवल के प्रबंधकों ने ठहरने का इन्तज़ाम किया तो बड़े-बड़े होटलों में रहना पड़ेगा, और सीमित फॉरेन एक्सचेंज होने के कारण आप लोगों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी। अतः आप लोगों का इन्तज़ाम हम ही कर रहे हैं।'

कलकत्ते से मिस राय ने लिखा, 'मेनी-मेनी थैंक्स। समझ में नहीं आ रहा, किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूँ। फेस्टिवल के प्रबंधकों के इन्विटेशन को देखकर रिजर्व बैंक ने कुल सत्ताइस पाउंड एक्सचेंज मंजूर किया है। दस दिनों के लिये कुल सत्ताइस पाउंड। कल्पना मात्र से सिर घूम जाता है। मैंने तो सोचा था कि एस्कोर्ट के नाम पर छोटे भाई

को साथ ले लूँगी, लेकिन इस फॉरेन एक्सचेंज में...'

अंत में लिखा था, 'आपके भरोसे पर ही आ रही हूँ। कृपा करके यदि किसी को एयरपोर्ट पर लेने भेज देंगे तो सदा अनुग्रहीत रहूँगी।'

पत्र पढ़कर मन ही मन हँस दिये व्यास साहब। दूसरे दिन की लौटती डाक से उत्तर भेजा—'घबराइये मत मिस राय! आप लोगों की सहायता करना मेरा कर्त्तव्य है। समुचित व्यवस्था मिलेगी आपको। अगर आप इक्कीस को बी० ओ० ए० सी० फ्लाइट थ्री सिक्स वन से आने की कृपा करें तो अच्छा होगा।'

डिप्टी हाई कमिश्नर साहब ने प्रोग्राम इस तरह बनाया कि दोनों कलाकार एक साथ न आकर अलग-अलग फ्लाइट से आईं। इसके अलावा दोनों को विभिन्न होटलों में ठहराया। सुजाता का कमरा कार्लटन टावर में बुक किया और मिस राय का स्ट्रैंड पैलेस में। बम्बई से आये प्रेम कुमार को केन्सिंगटन पैलेस में जगह मिली।

सबको वही एक कैफियत—लंदन में इस वक्त टूरिस्ट सीजन चल रहा है। ट्रान्स-ऐटलान्टिक चार्टर्ड फ्लाइट से प्रतिदिन कई-कई हजार अमेरिकन व कैनेडियन आ रहे हैं। यह हम ही जानते हैं किस तरह होटलों में जगह रिजर्व हुई है।

बम्बई के बाजार में अपने दाम बढ़ाने के ख्याल से सुजाता देवी करीब तीन साल पहले बर्लिन फिल्म फेस्टिवल देखकर वापसी में दो दिनों के लिये लंदन आई थीं। और बाकी दोनों की तो यह प्रथम यात्रा थी। अतएव तीनों ही वहाँ के लिये नितान्त अजनबी थे। न्यूकमर्स का हाथ पकड़ना बड़ा आसान होता है। टालीगंज के फिल्मी मुहल्ले के चक्कर काटना अथवा पार्क स्ट्रीट के उन दो-चार रेस्टोरेंटों में जाकर बैठना कोई मुश्किल बात नहीं है, लेकिन लंदन जैसे महानगर में आकर स्वाधीन विचरण करने के लिये विशेष सूझ-बूझ की आवश्यकता होती है। पैसे की कमी न हो तो कोई बात नहीं, परन्तु अंटी में कुल सत्ताइस पाउंड फॉरेन एक्सचेंज हों तो दस दिन तो दूर की बात है तीसरे दिन ही भूखे रहने की नौबत आ जाती है।

हिथरो एयरपोर्ट पर दाहिना हाथ बढ़ाकर मिस्टर व्यास बोले, 'मिस राय! दिस इज़ व्यास।'

'गुड आफ्टरनून! गुड आफ्टरनून! आपने स्वयं एयरपोर्ट पर आने

का कष्ट किया ?'

केबिन वैग, हैंडबैग ठीक से कंधे पर लटकाते हुए मिस राय बोलीं, 'छिः छिः मेरे लिये आपको बिना बात इतनी तकलीफ उठानी पड़ी।'

ओठों के कोनों पर हास्य की ईषत् रेखा खिच गई व्यास साहब के। मन में बोले—कैसे नहीं आता ! तुम्हारे जैसी सुन्दरी और उस पर इग्नोरेंट गेस्ट का शिकार करने के लिये तो रोज एयरपोर्ट आने को तैयार हूँ। लेकिन प्रत्यक्ष में कहा—'कुछ भी हो—आखिर आप एक सेलीब्रेटेड आर्टिस्ट हैं। आप लोगों की सहायता करना तो मेरा कर्त्तव्य है।'

अपनी गाड़ी में स्वयं ड्राइव करके व्यास मिस राय को स्ट्रैंड पैलेस ले गये। गाड़ी से उतरने से पहले मिस राय के कोट के दो बटन बन्द करके बोले, 'बटन अच्छी तरह बन्द कर लीजिए। अचानक ठंड लग जायेगी और आपको पता भी नहीं चलेगा।'

भले ही फिल्म स्टार बन गई हों लेकिन थीं तो बंगाली लड़की ! व्यास के उस तरह अपना बनकर कोट के बटन लगाते समय बलाका राय के शरीर में सिहरन सी दौड़ गई। लेकिन एक तो लंदन और उस पर ऐसा परम हिताकांक्षी ! इसलिये आपत्ति करने का तो सवाल ही नहीं उठता था, बल्कि मुस्कुराकर धन्यवाद ही दिया था उन्होंने। इसके अलावा सिनेमा ऐक्ट्रेस होते हुए भी कलकत्ते में मिस राय को उचित सामाजिक मर्यादा अथवा स्वीकृति नहीं मिलती। हँसना-बोलना, साथ उठना-बैठना तो सभी पसन्द करते हैं पर आगे बढ़कर उचित स्थान देने को तैयार नहीं होते। अतः यहाँ लंदन में भारतीय डिप्टी हाई कमिश्नर के इस तरह सहज भाव से मिलने व सहायता करने पर मिस राय कृतज्ञ ही हुईं।

थोड़ा पानी, थोड़ी खाद पड़ जाये तो फसल हो ही जाती है। और अगर जमीन उर्वर हो तो फसल और अच्छी होती है।

इस सामान्य सौजन्यता की खाद डालकर ही व्यास साहब चुप नहीं बैठे। वेस्टमिन्स्टर, सेंट जेम्स पार्क, बकिंघम पैलेस, रीजेन्ट पार्क, हाइड पार्क, मार्बल आर्च, जूलॉजिकल गार्डेन, केन्सिंगटन गार्डेन—लंदन की कोई जगह नहीं छोड़ी उन्होंने, जो मिस राय को न दिखाई हो। तदुपरान्त जब मिस राय एडिनबरा से लौट आईं तो उन्हें नाइट क्लब

ले गये, वीक एंड में ब्राइटन के समुद्र तट पर भी ले गये।

मधुमक्खी केवल मधु के लोभ से फूल के पास जाती है, उसके सौन्दर्य या सान्निध्य उपभोग के लिये नहीं। व्यास साहब भी ठीक वैसे ही हैं। अपना काम-काज काउन्सलर एवं तरुण पर डालकर बेकार ही मिस राय के पीछे भागते नहीं फिरे, यह हाई कमीशन के सभी लोग जानते थे।

मिसेज़ व्यास के इन दिनों इंडिया में होने के कारण व्यास साहब की ये लीलाएँ बिल्कुल बेखटके चल रही थीं। बलाका को विदा करने के उपरान्त सुजाता को तो अपने ठिकाने पर ही ले गये थे। उनके ऑनर में डिनर काकटेल दिया था। डेली मिरर के फोटोग्राफर को बुलाकर फीचर छपवाने की फीस दी थी।

विदेश में सुजाता या बलाका राय जैसे जाने कितने आते हैं। भारतवर्ष के परिचित समाज से दूर आकर यह लोग अपनी सामाजिक रीति-नीतियों एवं संस्कारों से मुक्त से हो जाते हैं। सारे बंधन शिथिल पड़ जाते हैं। नया देश, नया परिवेश देखने की खुशी में पागल हो उठते हैं। और उसी निर्मुक्त आनन्द के किसी छिद्रपथ से व्यास साहब जैसे लोग प्रविष्ट हो जाते हैं।

जिस तरुण ने जीवन भर केवल इन्द्राणी को चाहा है, उसके सान्निध्य का स्वप्न देखा है, उसे भला व्यास जैसा व्यभिचारी व्यक्ति कैसे सुहा सकता है। यद्यपि उसे देखते ही नफरत से भर उठता है तरुण, तथापि सुबह से शाम तक हाई कमीशन में उसी के साथ काम करना पड़ता है। कूटनीतिक दुनिया की इस चकाचौंध में भी तरुण को जैसे हर ओर अंधकार ही नज़र आता है, प्रकाश की एक झलक के लिये भटकता रहता है वह। उसके कितने ही दिनों के अनगिनत स्वप्नों का साकार रूप है लंदन शहर, पर वह भी जैसे अच्छा नहीं लगता अब। इतने बड़े एवं इतने परिचित शहर में भी निःसंगता उसके हृदय को मथे डालती है।

# छह

केन्सिगटन गार्डेन्स व हाइड पार्क के बाईं ओर से जो सड़क गई है, उसका नाम बेज़वाटर रोड है। आगे बढ़कर एज़वेयर रोड तथा पार्क लेन के मोड़ पर मार्बल आर्च का स्पर्श करते ही बेज़वाटर रोड आक्सफोर्ट स्ट्रीट बन जाती है। और नाम ही नहीं बदलता बल्कि उसके गुण भी बदल जाते हैं। पार्कों की हरियाली, वह शान्त शून्य वातावरण कल्पनातीत हो जाता है। अति व्यस्त आक्सफोर्ड स्ट्रीट मानों मनुष्य की उन्मत्त आकांक्षाओं का तीर्थक्षेत्र हो। संसार की हर सम्पदा के उपभोग की प्रदर्शनी है यह आक्सफोर्ड स्ट्रीट। आक्सफोर्ड स्ट्रीट, बेकर स्ट्रीट, न्यू बौंड स्ट्रीट, रीजेन्ट स्ट्रीट, विगमोर स्ट्रीट, टौटनहम कोर्ट रोड, चेरिंग क्रास व इसके आस-पास मनुष्यों के सिर ही सिर दिखाई देते हैं। अंतहीन लालसाएँ लिये भागते-फिरते हैं लोग।

आक्सफोर्ड स्ट्रीट इससे भी आगे सीधी चली गई है। भीड़ कुछ कम हो जाती है। सड़क का नाम भी बदल जाता है—अब वह न्यू आक्सफोर्ड स्ट्रीट बन जाती है। फिर से परिचय एवं चरित्र बदल जाता है इस एक ही सड़क का—अब हो गया हाई होबर्न और अंत में रह गया होबर्न।

धनुष की तरह जैसे ही सड़क थोड़ा दाहिने घूमती है फिर अपना नाम-परिचय बदलना शुरू कर देती है। बड़ा मजा आता है तरुण को। कभी-कभी काम-काज के बीच सुयोग पाकर आफिस से निकल जाता है और स्ट्रैंड होकर चेरिंग क्रास पहुँचने पर जिधर पैर उठते हैं चल पड़ता है—खो जाता है इस सार्वजनीन महासमुद्र में। घूमते-घूमते जब थक जाता है तो टी सेन्टर में जा बैठता है।

केवल थकने पर ही नहीं, कभी-कभी जब मन बहुत खराब होता है

तो अनजाने भी जा पहुँचता है। काउन्टर के पास पहुँचने से पहले ही मिस बोस आगे आकर स्वागत करते हुए कहती है, 'आइये, आइये। कहाँ थे इतने दिन ?'

मुस्कुराकर तरुण मिस बोस के मुख की ओर देखता है और कहता है, 'जाऊँगा कहाँ ?'

वन्दना बोस पूछती है, 'आज भी क्या मनुष्यों का हुजूम देखने आये थे इधर ?'

'अगर कहूँ कि आप ही के पास आया हूँ ?'

रश आवर्स न होते हुए भी इस समय काफी कस्टमर थे वहाँ। तब भी वन्दना हँस पड़ी। दोनों भँवें चढ़ा कर बोली, 'फार गाड्स सेक, ऐसी झूठ बात मत बोलिये।'

'अच्छा चलिये, यह सब बेकार की बात छोड़िये। चलिये आपके घर चलूँ।'

'इस समय ?'

'तो क्या ? मिसेस अरोरा से कह दीजिये कि मुझे मछली बनाकर खिलाने के लिये....।'

हँसकर वन्दना मिसेस अरोरा के पास चली गई। और दो मिनट बाद ही आकर बोली, 'आपकी बहन जी आपको बुला रही हैं।'

हाई कमीशन के सभी लोगों की मिसेस अरोरा जरा अधिक खातिरदारी करती हैं। लेकिन तरुण पर उनका विशेष स्नेह है। हाई कमीशन का न तो कोई दूसरा उन्हें बहन जी कहता है और न ही वह किसी को भाई साहब कहती हैं। हालाँकि लंदन जैसे शहर में ये सब सम्पर्क कोई मायने नहीं रखते, पर आखिर मन तो भारतीय है।

जब भी तरुण इधर आता है वन्दना से अवश्य मिलता है। इस बार चर्च हाल में नववर्ष के उत्सव में परिचय होने के बाद से दोनों में अच्छा मैत्रीभाव हो गया है। वन्दना के वे घने घुँघराले बाल और वो चंचल नेत्र देखकर तरुण को बहुत-सी बीती बातें याद आती हैं, बहुत सी स्मृतियाँ पुनः लौट आती हैं। लेकिन उसने आज तक कभी यह बात प्रकट नहीं होने दी। इस पर भी वन्दना जानती है, समझती है कि तरुण उसे पसन्द करता है, शायद थोड़ा बहुत प्यार भी करता है। इस पसन्द या प्यार में अवश्य मलिनता का स्पर्श नहीं है। टी एक्सपोर्ट

ब्यूरो के चेयरमैन जैसा चरित्र नहीं है तरुण का, इस बात का वन्दना को पूर्ण विश्वास है।

उस बूढ़े चेयरमैन की बात याद आते ही वन्दना को घृणा से मतली आने लगती है।

विश्व के बाजार में इंडियन टी की माँग कम होती जा रही है। एक समय था जब सब देशों में केवल आसाम या दार्जिलिंग की चाय बिकती थी। आज उन्हीं बाजारों में सिंहल व साउथ अफ्रीका की चाय की माँग अधिक है। लंदन के नीलाम बाजार में कुछ वर्ष पहले तक यूरोप-अमेरिका के कस्टमर दार्जिलिंग की चाय खरीदने में एक दूसरे की होड़ करते थे। लंदन, न्यूयार्क बर्लिन, जेनेवा, ब्रुसेल्स, टोरेन्टो, जौनारियो के बड़े-बड़े रेस्टोरेन्टों में भारतीय चाय सर्व की जाती थी और इसमें वे गर्व का अनुभव करते थे। बड़े-बड़े न्योन साइनों द्वारा विज्ञापित करते थे, फॉर बेस्ट इंडियन टी, विज़िट···। लेकिन इधर कुछ सालों में सारे न्योन साइनों का प्रकाश बुझ गया।

कर्मरत भारतीय राजदूत व उनसे प्रतिभावान कर्मशियल अटैचियों ने इस ओर दृष्टिपात करने की कोई आवश्यकता ही नहीं समझी। कलकत्ते से बेस्ट इंडियन टी के सैम्पल पैकेट पाकर वह आगे का सब कुछ भूल गये।

दो-चार अखबारों में जब आलोचना शुरू हुई एवं पार्लियामेंट में प्रश्न हुए तब जाकर कहीं भारत की कुंभकर्ण सरकार की नींद टूटी और उद्योग भवन में नई फाइल ने जन्म लिया। जब तक यह सब हुआ, उन देशों के कई करोड़ निवासियों की आदत बदल गई। लंदन टी आक्शन में साउथ अफ्रीका व सिंहल हावी हो गये।

रोग ने जब कैंसर की शक्ल ले ली, तब सर्वरोगनाशिनी बूटी के आविष्कार के प्रयास में एक डिप्टी मंत्री तीन सप्ताहों में नौ देशों का भ्रमण करके दिल्ली लौट गये। इस भ्रमण से रोग का तो कोई उपचार नहीं हुआ, हाँ डिप्टी मंत्री के दोनों गाल अवश्य कश्मीरी सेव जैसे लाल हो गये।

प्रथम प्रिलिमिनरी रिपोर्ट एवं प्रेस कान्फ्रेन्स होने में विलम्ब नहीं हुआ। तीन महीनों के अन्दर ही मिनिस्टर-डिप्टी मिनिस्टर-सेक्रेटरी की मीटिंग हो गई। अगले चार महीनों में सेक्रेटरी, ज्वाइन्ट सेक्रेटरी व

डिप्टी सेक्रेटरी की दो-तीन मीटिंगें हुईं। इसके वाद दो डिप्टी सेक्रेटरी तथा एक ज्वाइन्ट सेक्रेटरी चाय निर्यात-कर्ताओं की समस्या व राय जानने के सिलसिले में छह-सात महीने कलकत्ता, दार्जिलिंग, गौहाटी, शिलांग घूमते रहे। ज्वाइन्ट सेक्रेटरी दार्जिलिंग गये तो गंगटौक का भी चक्कर लगा आये। वहाँ जाकर उन्हें लगा कि पंजाव के वेड कवरों की वहाँअच्छी डिमान्ड है। दिल्ली लौटने पर एक रिपोर्ट भी दे डाली कि वेड कवरों का निर्यात किया जाय तो सिक्किम में खपत अच्छी होगी एवं इंडिया सिक्किम के कल्चरल-सोशल-इकानॉमिकल संवंध और मज़वूत होंगे।

केरल के कोट्टायम जिले के एडिशनल सेक्रेटरी ने इस रिपोर्ट को पढ़कर कहा था, 'डिड आइ टेल यू कि वहाँ केरला की कॉयर-मैट्स की बहुत डिमांड है ?'

'सच ?'

'और क्या ? इस बार सिलिगुड़ी एयरपोर्ट पर सिक्किम पैलेस के एक उच्च अधिकारी से भेंट हुई थी। बातों-वातों में उन्होंने वताया था कि सिक्किम में कॉयर मैट-कार्पेट की अच्छी खपत हो सकती है।'

'क्वाइट नैचुरल।'

'इसीलिये तो कह रहा था कि आप एक वार केरल घूम आइये। और फिर एक कम्प्रिहेन्सिव रिपोर्ट दे दीजिए।'

चाय की समस्या तो वहीं रह गई और ज्वाइन्ट सेक्रेटरी केरल चल दिये।

जो भी हो, इस तरह एक हाथ से दूसरे हाथ से होती हुई जव चाय निर्यात समस्या पुन: मंत्री के पास पहुँची तो जीवन की अंतिम घड़ियाँ आ पहुँची थीं। सर्जिकल आपरेशन करके अनतिविलम्ब रोग का निदान करने के लिये मिस्टर बहुगुणा के नेतृत्व में सात व्यक्तियों की एक कमेटी बनाकर उसे आदेश दिया गया कि सरकारी खर्च पर विश्व भ्रमण करे और चटपट रिपोर्ट दे।

इस कमेटी के शिरोमणि बनकर ही बहुगुणा साहव लंदन आये थे। टी सेन्टर के मैनेजर का घर आफिस बना और निकटवर्ती माउन्ट रायल होटल उनका अस्थायी आवास स्थान वना।

दो-चार दिन टी सेन्टर का चक्कर लगाने के वाद वहुगुणा साहव वोले, 'इफ यू डोन्ट माइन्ड मिसेज़ अरोरा, तो मिस वोस जरा मेरे काम

में हेल्प कर दिया करें। हाँ, आपके यहाँ के काम का हर्ज नहीं होना चाहिये।'

मिसेज़ अरोरा ठहरीं एक अदना मैनेजर। चेयरमैन बहुगुणा साहब के अनुरोध की उपेक्षा करने की बात तो वह स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थीं। दिल्ली से विशेष सम्पर्क न होते हुए भी वह भूतपूर्व सेन्ट्रल मिनिस्टर बहुगुणा साहब के प्रभाव की बात अच्छी तरह जानती थीं। वह भले ही चाय के निर्यात बाजार की स्टडी करने आये थे, लेकिन एयर इंडिया के मैनेजर से लेकर हाई कमिश्नर तक उनके आगे-पीछे घूमते थे। मिसेज़ अरोरा तो भला किस खेत की मूली थीं। अतएव कृतकृत्य होकर बोलीं, 'अवश्य। यदि मेरी जरूरत हो तो निःसंकोच कह दीजियेगा।'

तुम्हारी जरूरत बहुगुणा साहब को नहीं है मिसेज़ अरोरा। तुम्हारा यौवन-बसन्त तो कब का बिदा हो चुका है। चैत के पतझड़ में ठूंठ हो गये पेड़ का क्या करेंगे वह।

'नहीं, नहीं, आपको तकलीफ नहीं देना चाहता। मिस बोस ही काफी हैं।'

'ऐज़ यू प्लीज़ सर। वी आर ऐट योर डिस्पोज़ल।'

'मैनी थैंक्स मिसेज़ अरोरा।'

कुछ दिन बाद कमेटी के अन्य सदस्य कान्टिनेन्ट चले गये। बहुगुणा साहब अकेले रह गये लन्दन में।

एक दिन वह वन्दना से बोले, 'मैं तो अब यहाँ अकेला ही काम करूँगा। अकेले टी सेन्टर में जाकर क्या करूँगा। अतः तुम्हीं होटल चली जाओ।'

चेयरमैन का आदेश शिरोधार्य कर लिया वन्दना ने।

पहला दिन तो ठीक गया।

लेकिन दूसरा दिन ?

'अब से मैं रोज सुबह केन्सिगटन हाई कमिश्नर के घर जाया करूँगा। इसलिये तुम शाम को आया करो।'—बड़े भोलेपन से बहुगुणा ने कहा।

'ऐज़ यू प्लीज़ सर।' चेयरमैन की बात मानने के अतिरिक्त चारा ही क्या था वन्दना के लिये।

दरवाजा खटखटाने से पहले एक बार घड़ी देख ली वन्दना ने। हाँ, ठीक है, चार ही बजे हैं।

'कम इन।'

आमन्त्रण सुनकर कमरे में जैसे ही पैर रक्खा उसने, बहुगुणा साहब ने मुस्कुराकर अभ्यर्थना करते हुए कहा, 'आओ, आओ। तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था।'

बगल के सोफे पर बैठते हुए वन्दना ने कहा, 'सो काइंड आफ यू सर।'

'देखो वन्दना, इतना फारमल मत होओ।'

और यह कहकर बहुगुणा साहब वन्दना के सामने जा खड़े हुए। फिर उसका हाथ पकड़ कर बोले, 'मेरे सामने इतना फारमल होने की आवश्यकता नहीं है। वी इन्फारमल, कम्फर्टेबल।'

बड़े सोफे पर बैठाकर स्वयं भी बगल में वैठ गये वह। फिर पूछा, 'बोलो कॉफी के साथ क्या खाओगी?'

'थैंक यू वेरी मच। इस समय मैं कुछ नहीं खाऊँगी!'

'फिर वही फारमेलिटी?' और दाहिने हाथ से वन्दना के कंधों को दबाते हुए बोले, 'विलायत में रहकर बिल्कुल ही विलायती बन गई? बताओ क्या खाओगी?'

'ओनली कॉफी सर।'

'ऐसा कैसे हो सकता है?'

टेलीफोन का डायल घुमाया बहुगुणा साहब ने और उधर से 'रूम सर्विस' सुनकर बोले 'प्लीज सेंड टू प्लेट्स आफ चिकेन सैंडविच, सम पेस्ट्री एंड कॉफी फार टू।'

ईशान कोण में काला बादल दिखाई देने लगा जैसे वन्दना को। मन में जाने कैसी-कैसी आशंकाएँ उठने लगीं। बहुगुणा साहब के मन में क्या है, यह समझते उसे देर नहीं लगी।

लेकिन आत्मविश्वास जैसे कूट-कूटकर भरा था वन्दना में—तभी तो मन ही मन मुस्कुरा उठी वह। लन्दन आने के वाद शुरू के कुछ महीनों में ऐसी कई विपत्तियों का सामना वह कर चुकी थी। शायद यही कारण था कि उसके होठों पर एक विद्रूप भरी मुस्कुराहट फैल गई थी।

''जानती हो वन्दना, इतनी बार तुम्हारे इस विलायत के चक्कर काटे हैं, पर हमेशा काम-काज में बुरी तरह व्यस्त रहने के कारण कुछ देख ही नहीं पाया।'

'अच्छा''''? सर !'

'और क्या ! ब्रिटिश म्यूजियम व विंडसर पैलेस के सामने से हजारों बार गुजरा होऊँगा, लेकिन अन्दर जाने का कभी अवसर ही नहीं मिला।'

'मन ही मन वन्दना ने कहा कि होटल के इस कमरे में बैठकर तुम्हारे आलिंगन व प्यार प्रदर्शन से तो बाहर घूमना कहीं अच्छा है। लेकिन प्रकट में बोली, 'मैंने भी सब कुछ तो नहीं देखा; पर तब भी सब दिखा दूँगी, चलिये।'

'दैट्स लाइक ए वंडरफुल गर्ल, कहकर बहुगुणा ने दाहिने हाथ से वन्दना को समीप खींच कर प्यार जताया।

और वन्दना एकदम लोहे सी कठोर हो गई; छाती पर दोनों हाथ रखकर छोटे-मोटे आक्रमण का प्रतिरोध करने की तैयारी कर ली उसने।

'ओह ! तुम बड़ी रिजिड हो, बहुत ही कंजरवेटिव। इतने दिन विलायत रहने के उपरान्त भी फ्रीली नहीं मिल पातीं ? और फिर मेरे जैसे बुड्ढे आदमी से भला क्या शर्म ?'

'नहीं-नहीं, शर्म की तो कोई बात नहीं है।

सुबह साढ़े ग्यारह बजे बकिंघम पैलेस के सामने भीड़ में घुसकर उसने बहुगुणा को 'चेंजिंग आफ द गार्ड' दिखाया। फिर नेशनल गैलरी तथा ब्रिटिश म्यूजियम ले गई।

म्यूजियम घूमते-घूमते बहुगुणा बोले, 'यह म्यूजियम नहीं पूरी एक अलग दुनिया है वन्दना। अच्छी तरह देखनी चाहिये। फिर किसी दिन आयेंगे। आज चलो रीजेन्ट पार्क या केन्सिंगटन गार्डन घूमा जाये।'

सप्ताह बीतते-बीतते बहुगुणा के और गुण भी प्रकट हो गये। एक दिन बोले—'सुना है तुम्हारे इस लंदन में वर्ल्ड फेमस नाइट क्लब हैं। जाने कौन बता रहा था कि 'फोर हंड्रेड क्लब', 'रिवर क्लब' वगैरह-वगैरह बहुत से क्लब हैं। कितनी ही बार आया पर देख ही नहीं पाया। चलो, तुम मुझे एक नाइट क्लब दिखा दो।'

लन्दन के नाइट क्लब विश्वविख्यात हैं - यह वन्दना ने भी सुना था। कभी दूर से, कभी पास से गुज़रते हुए उसने उनके न्योन साइन भी देखे हैं। हाथ में खर्च करने लायक पैसे होते और साथ जाने लायक कोई साथी मिल जाता तो शायद एक दिन अंदर भी चली जाती। लेकिन ऐसा सुयोग कभी आया ही नहीं। हाँ, इनके बारे में सुन उसने सब कुछ रक्खा है। वह जानती है कि यौवन लुटता है वहाँ। जवान-जवान लड़कियाँ स्वयं भी नाचती हैं और दर्शकों को भी नचाती हैं। ज्यों-ज्यों रात गहराती है, आदिमपना बढ़ता जाता है। नर्तकियाँ धीरे-धीरे शरीर से वस्त्रों का भार कम करती जाती हैं और दर्शकों की उन्मत्तता व मदिरता भी उसी अनुपात में बढ़ती जाती है। और भी वहाँ जाने क्या-क्या होता है।

बहुगुणा जैसे बुड्ढे-टुड्ढे आदमी के साथ ऐसे क्लब में जाने की कल्पनामात्र से वन्दना को उबकाई सी आने लगी। एक बार सोचा कि मिसेज अरोरा से कह दे सब कुछ लेकिन फिर ख्याल आया कि बहुगुणा के इन लक्षणों की चर्चा होने पर उसका नाम भी अवश्य जुड़ेगा और फिर एक सरस कहानी बन जाएगी। हर व्यक्ति अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ायेगा। कुछ क्षण यही सब सोचने-विचारने में निकल गये। फिर जैसे एकाएक किसी निर्णय पर पहुँच कर बोली—'ठीक है, मैं आपका रिजर्वेशन करा दूँगी।'

'यू नॉटी गर्ल! मुझे अकेले बाघ के मुँह में ठेलना चाहती हो?'

हँसी आने लगी वन्दना को।

नाइट क्लब गये बहुगुणा साहब। मिस वन्दना को बगल में बैठाकर नृत्य का उपभोग किया। अंतिम दृश्य में लाइट आफ हो जाने पर उत्तेजना की अधिकतावश वन्दना का हाथ भर दबाया बस उससे अधिक कुछ नहीं।

बारह बजने से पहले ही क्लब से चल दिये। लौटते समय जरा सट कर बैठे रहे।

कुछ देर बाद बोले—'अरे वन्दना, मैं तो बिलकुल ही भूल गया था। कल सुबह चार ब्रिटिश आक्शनर्स मुझसे मिलने आ रहे हैं। हाई कमिश्नर के आफिस ने जो ब्रीफ़ दिया है उसी की बेसिस पर तुम्हें आज ही रात को एक नोट तैयार करके देना पड़ेगा।'

'आज रात को ?' चौंक उठी वन्दना । नाइट क्लब से लौटने के बाद बहुगुणा साहब के साथ होटल में यह काम करना पड़ेगा ? घबरा गयी वह ! बोली—'मैं कल सुबह-सुबह आकर···।'

बात पूरी नहीं होने दी बहुगुणा ने, 'नॉट ऐट ऑल ! आज रात को ही तैयारी करनी पड़ेगी वह रिपोर्ट ।'

होटल के कमरे में प्रवेश करते ही बहुगुणा साहब ने स्वयं आगे बढ़-कर वन्दना के कोट के बटन खोले और उतार दिया । पल भर के लिये जाने कैसी तो दृष्टि से देखा । नथुनों से जैसे आग की लपटें निकल रही थीं । निहत्थी वन्दना पर बाघ जैसे झपटने की तैयारी कर रहा था ।

और थोड़ा आगे बढ़े वह और वन्दना के पीछे हटते ही दोनों हाथों से पकड़कर उसे बोले, 'प्लीज़ डोन्ट डिसीव मी टु-नाइट ।'

वन्दना के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला । झट से बत्ती बन्द कर दी बहुगुणा साहब ने और वन्दना को आलिंगन में कस लिया !

साथ ही साथ अचानक दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज हुई । कमरे की बत्ती जल उठी और काँपती हुई वन्दना एक ओर सरक कर खड़ी हो गई । बहुगुणा ने माथे का पसीना पोंछा और बोले 'कम इन ।'

दरवाजा खोलकर अप्रत्याशित रूप से तरुण ने एक गुलाबी कवर हाथ में लिये हुए अन्दर प्रवेश किया और बोला, 'एक्सक्यूज़ मी सर ! दिल्ली से एक अर्जेन्ट मेसेज़ आया है । आज रात को ही जवाब भेजना है ।'

'आज रात को ही ?'

'येस सर ।'

एक ब्रिटिश न्यूज़ पेपर की रिपोर्ट के आधार पर आठ-दस विरोधी पार्टी के एम० पी० सदस्यों ने पार्लियामेंट में प्रश्न उठाया था । उसी के बारे में वह तार था ।

लिफाफा बहुगुणा के हाथ में पकड़ाकर तरुण ने कहा—'मैं हाई कमी-शन के स्टाफ का आदमी साथ लाया हूँ सर । आप कृपा करके अपना रिप्लाई उसे डिक्टेट करके नीचे अपने दस्तख़त कर दें । वी विल सेंड ए केबल टु देल्ही !'

अब तरुण की नज़र वन्दना पर पड़ी । कुछ क्षण तो वह स्तब्ध सा देखता खड़ा रहा; फिर बोला, 'एक्सक्यूज़ मी मिस बोस, चलिये मैं

अपनी आफिस कार में आपको घर पहुँचा दूँगा ।'

मन ही मन कोटि-कोटि प्रणाम जताये थे इस दिन वन्दना ने भगवान को कि ठीक समय पर तरुण के रूप में प्रकट होकर उसने उसकी लाज बचा ली थी । कृतज्ञता से भर उठी थी वह तरुण के प्रति ।

तभी से वन्दना को तरुण के ऊपर असीम विश्वास व श्रद्धा है, शायद थोड़ा प्यार भी है । यह वह भी समझती है कि तरुण जाने क्या ढूँढ़ता फिर रहा है सारी दुनिया में । उस जैसी साधारण लड़की की आँखों के माध्यम से एक विराट् विश्व के दर्शन करना चाहता है। मानों कैमरे के छोटे से लैंस के द्वारा दूर-दूर तक प्रसारित अपरूप अरण्य-पर्वतों की तस्वीर खींच रहा हो। प्रकृति के उस अनन्य सौन्दर्य को बन्दी करके हर कैमरामैन सर्वक्षण उपभोग करना चाहता है और इसीलिये उसे कैमरा जान से भी प्यारा होता है—अपने प्राणों की तरह वह उसकी सार-सँभाल करता है । वन्दना जानती है कि वह तरुण के लिये कैमरे का लैन्स मात्र है, अपरूप प्रकृति नहीं । लेकिन तब भी उसे अच्छा लगता है, वह खुश है । जब कभी तरुण मछली खाने की इच्छा प्रकट करता है, पाउंड-डेढ़ पाउंड खर्च करके वह मछली पकाती है ।

मछली को ढककर सोफे पर बैठते-बैठते उस दिन वन्दना ने तरुण से पूछा, 'एक बात बतायेंगे ?'

'अवश्य !' आप किसको ढूँढ़ते फिर रहे हैं ?'

'मैं भला किसको ढूँढूँगा !'

'आप जानते हैं, मुझे आप पर श्रद्धा है । मुझे विश्वास है कि आप झूठ नहीं बोलते !'

'नहीं, नहीं, झूठ क्यों बोलूँगा ? किसी को भी तो नहीं ढूँढ़ता । पर तब भी बहुत पहले की, बचपन की, विद्यार्थी जीवन की बातें याद आ जाती हैं ।'

जरा सा घुलते-मिलते ही समझ में आ जाता है कि तरुण जैसे लुटा-सा घूम रहा है । इस पृथ्वी पर रहते हुए भी मानों महाशून्य में विचरण कर रहा हो । पुरुष की आँखों में धूल झोंकी जा सकती है पर औरत की आँखों में ? असंभव ।

तरुण के जीवन के, मन के दुख को जानने के कारण वन्दना उसे और भी चाहती है ।

तरुण भी वन्दना से स्नेह करता है। परिवार के उद्धार के लिये इधर कई सालों से बेचारी अपनी जान खपा रही है।

पिछले दो सालों में दोनों एक दूसरे के अत्यन्त निकट आ गये हैं।

'वन्दना, इस बार तो जाने की मेरी बारी है।'

'तुम्हारा ट्रांसफर आर्डर आ गया है ?'

'हाँ।'

अचानक जैसे वन्दना की वाक्शक्ति विलुप्त हो गई।

तरुण ने उसे करीब खींच लिया और सिर पर हाथ फिरा कर बोला, 'मेरी एक बात मानोगी वन्दना ?'

'जरूर मानूँगी।'

'तुम शादी कर लो।' लंदन के मेघाच्छन्न आकाश से दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखता हुआ बोला। 'मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम्हारी शादी में मैं हो-हुल्लड़ मचाऊँ, धूम-धाम करूँ। मन की निकाल लूँ।'

'और एक साल बाद। छोटा भाई यादवपुर से आ जाय। तब तुम लड़का देख लेना, मैं शादी कर लूँगी।'

वन्दना के इस आत्मसमर्पण पर मुग्ध हो उठा तरुण। इस तरह का अधिकार कितनी आधुनिक तरुणियाँ किसी अपरिचित डिप्लोमेट को दे पाती हैं ?'

'ठीक है ! मैं लड़का ढूँढ़ दूँगा। पर यह समझ लो कि किसी विलायती बंदर के साथ तुम्हारा ब्याह नहीं करूँगा।'

मुँह नीचा करके मुस्कुरा दी वन्दना।

दो दिन बाद हीथरो एयरपोर्ट से विदा ली तरुण ने। चलते समय सी आफ करने आये लोगों की भीड़ में ही प्रणाम करके वन्दना बोली, 'मुझे भूल मत जाना।'

'पगली कहीं की।'

# सात

उन्नीस सौ साठ साल की तीसरी मई को तुर्किस्तान में स्थित मार्किन विमानवाहिनी के हेड आफिस से एक छोटी-सी खबर प्रसारित हुई कि अदन एयर बेस से ऐडमिनिस्ट्रेशन का एक विमान वैज्ञानिक तथ्य संग्रह करने के लिये उड़ने के बाद विलुप्त हो गया है।

अन्तर्जातीय वार सर्विस की अनगिनत चैनेलों द्वारा कुछ ही मिनटों में यह छोटी सी खबर सारी दुनिया में फैल गई। लेकिन किसी ने भी विशेष ध्यान नहीं दिया। किसी अखबार में छपी किसी में नहीं। कूटनीतिज्ञों ने भी कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया।

दो दिन बाद पाँच मई को सुप्रीम सोवियत की एक बैठक में प्रधान मन्त्री निकिता ख्रुश्चेव ने घोषणा की कि एक अज्ञात मार्किन विमान जो आकाश सीमा का उल्लंघन करके सोवियत यूनियन में प्रविष्ट हो गया था, गोली मारकर जबर्दस्ती नीचे उतार लिया गया है।

और सारी दुनिया चौंक उठी।

कुछ ही घंटों में वाशिंगटन से सरकारी तौर पर घोषणा हुई कि उन्नीस सौ छप्पन से जो यू-टू विमान पृथ्वी से बहुत ऊपर की आबहवा सम्पर्कीय गवेषणा के लिये व्यवहृत हो रहा था, उसी विमान के पायलट ने तुर्किस्तान की लेक व्यैन के ऊपर से उड़ते समय खबर दी थी कि उसकी आक्सीजन सप्लाई में कुछ गड़बड़ी हो गई है। हो सकता है उस परिस्थिति में विमान रशिया की सीमा में प्रविष्ट हो गया हो।

बस इतना कहकर ही वाशिंगटन चुप नहीं हो गया। उस पायलट का नाम तथा उसके निरस्त्र होने के साथ-साथ यह भी कहा गया कि वाशिंगटन से मास्को एक नोट आबहवा की गवेषणा को गये हुए उस विमान की विशद खबर जानने को भेजा गया है।

मार्किन सरकार को यह विश्वास हो गया था कि पायलट फ्रान्सिस ग्रे पावर्स जीवित नहीं है। विमान को गोली मारकर जबर्दस्ती नीचे उतरने पर मजबूर करने के बाद उसके जीवित रहने का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता।

इसी आशा व भरोसे में छह मई को मार्किन परराष्ट्र दफ्तर से जोरदार शब्दों में कहा गया कि सोवियत की आकाशसीमा के उल्लंघन का कोई सवाल ही खड़ा नहीं होता।

तीसरी मई की उस घोषणा के बाद अब तक ख्रुश्चेव चुपचाप बैठे मुस्कुरा रहे थे बस। मानों उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में हों। अब चुप रहना असंभव था। सात मई को सुप्रीम सोवियत में वक्तृता देते समय उन्होंने यू-टू विमान के बारे में बताकर घोषणा की कि फ्रान्सिस ग्रे पावर्स जीवित है एवं सोवियत कारागार में बंद है। फ्रान्सिस ग्रे ने स्वीकार किया है कि उसके साथ प्रचुर धन, आत्महत्या का सरंजाम, सोना, अस्त्रशस्त्र तथा एक थैला घड़ी व अँगूठियों से भरा हुआ था।

अंत में प्रधान मंत्री ने नार्वे, तुर्किस्तान एवं पाकिस्तान को सतर्क करते हुए कहा कि जिस देश से भी ऐसे जासूसी विमान उड़ेंगे उनको उचित शिक्षा दी जायेगी।

मार्किन सरकार की तो कठोर भाषा में निन्दा की परन्तु प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर के संबंध में ख्रुश्चेव ने एक शब्द भी नहीं कहा।

सारी दुनिया के कूटनीतिज्ञ ख्रुश्चेव के इस परिहास को समझ नहीं पाये शायद। उन्होंने सोचा कि कुछ विशेष नहीं होगा।

सात मई को ही वाशिंगटन से पुनः विवृति हुई। विमान के जासूसी करने के निमित्त उड़ने की बात उन्होंने स्वीकार तो की लेकिन घुमा-फिरा कर। उन्होंने कहा कि ऐसी अनुमति दी नहीं गई थी। अब केवल क्रेमलिन के नेताओं ने ही नहीं, सारी दुनिया के डिप्लोमेटों ने मंद-मंद मुसकाना शुरू किया। तो इसका मतलब है कि अमेरिका की सेन्ट्रल इन्टेलीजेन्स एजेन्सी सरकार की अनुमति लिये बिना ही ऐसा महत्त्वपूर्ण फैसला ले सकती है।

अब जब कोई चारा नहीं रह गया तो ग्यारह मई को प्रेसिडेन्ट आइज़नहावर ने यू-टू विमान की उड़ान की अपनी निजी जिम्मेदारी की घोषणा कर दी।

जिस समय यह घोषणा हुई प्रायः उसी समय मास्को में ख्रुश्चेव विदेशी संवाददाताओं को यू-टू फ्लाइट का निरीक्षण करा रहे थे।

अन्तर्जातीय राजनीति में साइक्लोन आ गया। अमरीका की मित्र ब्रिटिश एवं फ्रांस सरकारों ने सोचा कि फिर तो उनके देशों पर भी ऐसे जासूसी विमान उड़ते होंगे। भाई बन कर भी शत्रुता।

विश्व के विभिन्न देशों में इसकी भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया दिखाई दी। ख्रुश्चेव की धमकी सुनकर नार्वे ने वाशिंगटन अपना प्रतिवाद पत्र भेज दिया। ब्लैक सी के इस पार के तुर्किस्तान ने तो यह कल्पना भी नहीं की थी कि प्रभुसेवा करने के फलस्वरूप ऐसी विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। मार्किन की सहायता के सहारे खड़ा होने के कारण नार्वे के समान वह प्रतिवाद भी नहीं कर सका। पाकिस्तान किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। इधर कई वर्षों से अयूब खाँ दूध और तमाखू साथ-साथ खाते रहे थे पर अब जब ख्रुश्चेव ने धमकी दी तो उनकी भी पतलून ढीली हो गई।

कुछ ही दिनों बाद पेरिस सम्मिट था। बहुत दिनों की विश्वव्यापी प्रचेष्टाओं के बाद विश्व समस्या के समाधान की आशा में विश्व की चार महाशक्तियाँ पेरिस में मिलने वाली थीं। उसके बाद ख्रुश्चेव के निमन्त्रण पर प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर सोवियत यूनियन जाने वाले थे। ऐसा सम्भावनापूर्ण अवसर आ रहा था और ऐलेन डलेस ने यह यू-टू भेज दिया ?

चिन्तित राष्ट्रनायक एक अभावनीय आशंका से आतंकित हो उठे। सबके मुँह पर बस एक ही बात थी कि पेरिस सम्मिट होगा भी ? ख्रुश्चेव आयेंगे ?

पर जब एरोफ्लोट का स्पेशल विमान ओर्ली एयरपोर्ट पर उतरा और मुस्कुराते हुए ख्रुश्चेव उसमें से बाहर निकले तो सबने चैन की साँस ली।

अठारह मई को पेरिस में ख्रुश्चेव ने विश्व के संवाददाताओं को एक कहानी सुनाई।....बचपन में हमलोग बहुत ही गरीब थे। हमारी दुःखी माँ किसी तरह हमारे लिये दूध-दही वगैरह बचा-बचाकर रखतीं और जाने कहाँ से एक बिल्ली आती और सब साफ कर जाती। माँ जल-भुनकर रह जातीं। एक दिन वह बिल्ली पकड़ाई में आ गई तो

माँ ने उसका गला पकड़ कर दूध के वर्तन में मुँह रगड़ दिया। जानते हैं क्यों ? उसे सबक सिखाने के लिये।

कहानी सुनाकर ख्रुश्चेव बोले, हमारे देशवासियों का दूध-दही चोरी से खाने के लिये अगर कोई बिल्ली आई तो मैं भी उसे सबक सिखाने के लिये उसकी नाक रगड़ दूँगा, बस और कुछ नहीं !

शीर्ष सम्मेलन का केवल वर्जन करके ही ख्रुश्चेव शान्त नहीं हुए; बल्कि प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर को भी सोवियत यूनियन आने के लिये मना कर दिया उन्होंने।

जितनी आसानी से रिपोर्टर अखबारों में इन घटनाओं का विस्तृत वर्णन कर देते हैं, डिप्लोमेट्स के लिए इन सब मामलों में ताल से ताल मिलाकर चलना उतना सहज नहीं होता। युद्धोत्तर विश्व की राजनीति के उन स्मरणीय दिनों में मास्को, लंदन, पेरिस, वाशिंगटन व यूनाइटेड नेशन्स स्थित भारतीय कूटनीतिज्ञों का सारा दिन वायरलेस ट्रान्सक्रिप्ट की फाइल को लिये-लिये ही बीत जाता था।

किसी गर्भवती स्त्री के गर्भ की सन्तान लड़का है या लड़की यह बताने का दावा तो बहुत से आधुनिक वैज्ञानिक करते हैं, लेकिन रशिया अथवा ख्रुश्चेव के मन की बात जानना किसी के बस की बात नहीं। हाँ, अन्तजार्तीय राजनीति में विश्वशांति की रक्षा के लिये सोवियत यूनियन एवं भारतवर्ष दोनों के एकमत होने की वजह से सम्पूर्ण विश्व भारतीय दूतावासों से सोवियत यूनियन के सम्भावित पदक्षेप के संबंध में जिज्ञासा करने लगा।

यद्यपि बाहरी दुनिया को तो नहीं बताया गया पर मास्को तथा यूनाइटेड नेशन्स के डिप्लोमेटों का अनुमान था कि ख्रुश्चेव यवनिका यहीं नहीं गिरायेंगे, नये रंगमंच पर नाटक शुरू होगा अब।

मास्को एवं यूनाइटेड नेशान्स के डिप्लोमैटिक मिशन ने टॉप सीक्रेट कोडेड मेसेज दिल्ली भेजे। सोवियत यूनियन के सम्भावित कदम के बारे में अनुमान बताने के बारे में भारतीय सरकार को सावधान रहने को कहा गया। कैबिनेट की फॉरेन अफेयर्स कमेटी में इस पर आलोचना हुई और तय किया गया कि विश्वशांति की खातिर ख्रुश्चेव के आवेदन को ठुकराना संगत नहीं होगा।

इसके बाद एक दिन सचमुच ख्रुश्चेव न्यूयार्क पहुँच गये, साथ-साथ

एशिया-अफ्रीका-लैटिन अमेरिका से भी राजनेतागण आये। बैठकें होती रहीं। लगता था जैसे मार्किन सरकार की ग्रहदशा शान्त ही नहीं हो रही हो।

आखिर कूटनीतिज्ञों तथा संवाददाताओं की कई रातें आँखों में ही कटवाकर एरोफ्लोट का विमान ख्रुश्चेव को लेकर न्यूयार्क इन्टर-नेशनल एयरपोर्ट से उड़ गया। एशिया-अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के नेतागण भी लौट गये।

बहुत दिन बाद जाकर कहीं चैन की साँस ली सब ने।

'मिश्र बस करो, और मत पियो !'

'प्लीज़ डोन्ट स्टाप मी टु-नाइट। आइ मस्ट ड्रिंक लाइक ए फिश।'

इंडियन मिशन की तीसरी मंजिल के रिसेप्शन हाल की खिड़की से बाहर आकाश की ओर देखकर मिश्र ने तरुण से कहा, 'इजिप्शियन गार्डेन में नाच देखने चलोगे ?'

'इतनी पीने के बाद क्या इजिप्शियन गार्डेन की बेली डान्सरों की बेली देखने लायक अवस्था रहेगी ?'

'आई ऐम नाट ए प्यूरिटन लाइक यू।'

'तब भी....।'

'यह अब भी-तब भी छोड़ो। मैं कोई तरुण तो हूँ नहीं जिसने जाने किस जमाने में किसी से प्रेम किया था और अब तक उसकी याद से चिपटा बैठा है, किसी लड़की की तरफ नजर ही नहीं डालेगा ?

थोड़ा सा इधर-उधर घूमने के बाद ऐम्बैसेडर ने मिश्र के पास आकर पूछा, 'मिश्र आर यू हैप्पी ?'

ग्लास की बाकी बची स्काच को गले में डालकर मिश्र ने उत्तर दिया, 'सो काइंड आफ यू सर ! जीवन में आपके जैसे बास और स्काच व्हिस्की मिल जाये तो फिर मुझे कुछ नहीं चाहिये।'

इंडिया-शोरूम की मिस मजीठिया को पास खड़े देखकर ऐम्बैसेडर दूसरी ओर चले गये।

आगे बढ़ कर मिश्र बोला, 'हाउ आर यू डियर डार्लिंग स्वीट-हार्ट ?'

बायीं आँख जरा बन्द करके और दाहिनी से चुहल भरा इशारा करके मिस मजीठिया बोलीं, 'डोन्ट बी सिली यू नॉटी बॉय !'

'स्वीट डार्लिंग, स्काच मिल जाये तो दुनिया भूल जाता हूँ, लेकिन अगर तुम मिल जाती हो तो स्काच भी भूल जाता हूँ।'

'डू यू बिलीव हिम, मिस्टर मित्र ?' मुस्कुरा कर मिस मजीठिया ने तरुण ने पूछा।

'सर्टेनली आई बिलीव माई कलीग।' हँसते-हँसते तरुण ने जवाब दिया।

'इतना अधिक विश्वास मत करिये, मुश्किल में पड़ जायेंगे।'

'जैसे आप मुश्किल में पड़ गई हैं ऐसे ही ?' साथ-साथ तरुण ने पलट कर पूछा।

बात यद्यपि हँसी-हँसी में ही कही गई थी पर व्यंग्य चुभ गया। स्काच सिप करती-करती मिस मजीठिया भीड़ में जाकर मिल गईं।

उनके इस तरह भाग जाने पर तरुण अपनी हँसी रोक नहीं पाया। मिश्र की पीठ पीछे जाने कितनी आलोचना-समालोचनाएँ होती हैं। न्यूयार्क में रहने वाले चार-छह भारतीय जहाँ कहीं भी इकट्ठे हुए कि मिश्र की निन्दा शुरू हो जाती है। जो लड़के बेकार या आधे बेकार होते हैं, वह तो गुस्से से मुँह बिचका कर कहतें हैं, 'स्काउन्ड्रल, डिबॉच, ड्रन्कर्ड।'

कहेंगे क्यों नहीं भला ? मिश्र लड़कियों को इन लड़कों से सावधान जो कर देता है। 'मिस जोशी, यू आर ए ग्रोनप गर्ल। लिखी-पढ़ी भी हैं; लेकिन जीवन के बारे में मेरी अभिज्ञता आपसे अधिक है। जरा सावधान रहियेगा।'

मिस जोशी हो या कोई और—'थैंक यू वेरी मच।' कहकर सामने से हट जाती हैं।

यह उम्र ही ऐसी होती है कि मन किसी का भी उपदेश सुनना नहीं चाहता। ज्वालामुखी पर्वत की तरह शरीर की शिरा-उपशिराओं में यौवन की छुपी हुई अग्नि धधकती रहती है। फिफ्थ एवेन्यू या टाइम्स स्क्वेयर पहुँच जाने पर तो वह आग जैसे बाहर निकल पड़ने को व्याकुल हो उठती है। अधिकांश लड़कियाँ यौवन की इस रौ में बह जाती हैं, मन पर लगाम नहीं लगा पातीं। और लगायें भी कैसे ? फिफ्थ एवेन्यू या टाइम्स स्क्वेयर के रंगीन वातावरण में घूमते समय न जाने कौन जैसे कानों में बार-बार फुसफुसा जाता है, दुनिया में दो-चार दिन

के लिये आई हो । आनन्द मनाओ, जीवन का उपभोग करो। चारों ओर की इस रंगीनी को देखो। आओ खो जाओ इसमें, नहीं तो जीवन भर पछताना रहेगा....!

तभी तो मिश्र का उपदेश इनके कानों को बेसुरा लगता है। जो सुनकर इस पर अमल कर लेती हैं, उसी से मिश्र सन्तुष्ट हो जाता है। कोई-कोई तो यह कह कर कि 'मैं क्या करती हूँ क्या नहीं दिस इज़ नाट आफ योर बिजनेस' मुँह पर ही अपमान भी कर जाती है।

लाल कपड़ा देखकर जैसे भैंस चौंकती है इसी तरह इन लड़कियों को विदेश आकर इस तरह स्वच्छन्द आचरण करते देखकर मिश्र डर जाता है।

'जानते हो तरुण, कल रात चौबे के घर से लौटते-लौटते रात के डेढ़-दो बज गये थे। अचानक याद आया कि सिगरेट खत्म हो गई है। टाइम्स स्क्वेयर के पास गाड़ी पार्क करके सिगरेट खरीदने दो कदम चला ही था कि उस स्काउन्ड्रल मलहोत्रा के साथ यशोदा दिखाई पड़ गई....।'

'तुम इन सब बातों को लेकर सिर मत खपाया करो।' तरुण बोला।

पूरी बोतल चढ़ाकर भी मिश्र बेहोश नहीं होता। मुँह नीचा करके जाने क्या सोचा, फिर बोला....'क्या करूँ ? बिना सोचे रहा ही नहीं जाता भाई। इन लोगों को देखकर अमला याद आ जाती है मुझे।'

हाथ का ग्लास नीचे रखकर मिश्र यकायक पत्थर के स्तूप की तरह निश्चल बैठ गया और साथ-साथ आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

तरुण को बहुत पुरानी बात याद आ गई।....जब सेक्शन आफीसर प्रकाशचन्द्र ने भागते-भागते आकर तरुण को खबर दी थी 'सर-सर! जेनेवा से अभी-अभी मेसेज़ आया है—कि मिश्र साहब की लड़की ने स्विसाइड कर लिया।'

चौंक उठा था तरुण, 'व्हाट आर यू सेइंग ? अमला ने स्विसाइड कर लिया ?'

यद्यपि मिश्र पाँच हजार मील दूर बैठे थे, लेकिन जैसे ही खबर वेस्ट यूरोपियन डेस्क पर आई, दिल्ली के परराष्ट्र मन्त्रालय के घर-घर

आग की तरह फैल गई। बाहर के लोगों की मिश्र के संबंध में जो भी धारणा हो, फारेन मिनिस्ट्री का हर व्यक्ति उसे चाहता है, उसपर श्रद्धा रखता है, उसे अपना समझता है।

जो बात, जो परेशानी किसी दूसरे के सामने कहने में संकोच होता है वह भी लोग बिना झिझक मिश्र साहब को बता देते हैं। जिस प्रकार साँझ होते ही ह्विस्की के बिना मिश्र को चैन नहीं पड़ती, उसी प्रकार सहकर्मियों व मित्रों की जरूरत पड़ने पर सहायता किये बिना नहीं रह सकते।

एक दिन की बात है—लंच के बाद आफिस आते ही टेलीफोन का बजर बजाकर मिश्र ने हीरालाल से कहा, 'चले आइये।'

मिश्र के हाथ में अभी तक सिगरेट थी। तीन-चार फाइलें हाथ में लिये हीरालाल जैसे ही कमरे में आया, मिश्र को खटका सा लगा। भँवें सिकोड़कर अच्छी तरह हीरालाल को देखा तो सन्देह नहीं रहा कि हीरालाल काफी चिन्तित है।

हीरालाल ने मिश्र साहब के सामने फाइलें रख दीं। सिगरेट का कश खींचकर मिश्र ने एक बार फिर तिरछी नजर से हीरालाल की ओर देखकर पूछा, 'क्या हुआ आपको ?'

'नहीं सर, ऐसी कोई खास बात नहीं है।'

'मुझे बताने में भी संकोच होता है हीरालाल ?'

कृतज्ञ भाव से हीरालाल ने कहा, 'आपसे क्या संकोच। लेकिन तब भी...।'

'लेकिन-वेकिन क्या ? टेल मी फ्रैंकली व्हाट इज़ राँग विथ यू ?'

इसके बाद बात को छुपाये रखने का साहस नहीं हुआ हीरालाल को। जानता था कि अब नहीं बताया तो डाँट खानी पड़ेगी।

'कल चिट्ठी आई थी कि लड़की फिर बीमार पड़ गई है, लेकिन....।'

'आप तो जानते हैं कि मेरी डिक्शनरी में इफ एंड बट शब्द नहीं हैं।'

ड्रायर से बर्कले बैंक की चेक बुक निकालकर मिश्र ने सौ पाउंड का चेक काटा और हीरालाल के हाथ में देते हुए कहा, 'ऐसी ससुराल से तो लड़की को घर अपने पास ले आओ हीरालाल।'

'आपने फिर...।' चेक पकड़ते-पकड़ते हीरालाल इतना ही कह

पाया था कि मिश्र ने बीच में ही टोक कर कहा—

'फारेन सर्विस में आकर बहुत फार्मेलिटी शुरू कर दी है। अच्छा, आज अगर मेरी खुद की दो-तीन लड़कियाँ होतीं तो ?'

इसके बाद भी भला कुछ कहा जा सकता है ? नहीं। फाइलें वहीं छोड़कर चुपचाप हीरालाल कमरे से चला गया।

ऐसे न जाने कितने मौके उसके जीवन में आये हैं। छोटे से छोटा आदमी अपनी फरियाद लेकर बिना किसी हिचक के चला आता है। प्राइम मिनिस्टर, फॉरेन मिनिस्टर, फॉरेन सेक्रेटरी से लेकर क्लर्क बेयरा तक मिश्र को प्यार करते हैं।

उन्हीं मिश्र साहब की एक मात्र लाड़ली अमला ने आत्महत्या कर ली है, यह सुनकर सभी मर्माहत हो उठे।

करीब साल भर बाद तरुण को मिश्र से मिलने का मौका मिला था, देखकर विस्मय से जहाँ का तहाँ ठिठका खड़ा रह गया था। संध्या होते ही बोतल पर बोतल शराब की चढ़ाते जाते थे और जहाँ भी भारतीय युवतियों को घूमते-फिरते देखते तो कह उठते, 'ऐसा लगता है कि अमला लौटकर आयेगी और दौड़ते-दौड़ते आकर मुझसे लिपट जायेगी।'

अमला कोई आठ-नौ साल की होगी, तभी मिश्र की पत्नी दुनिया से चली गई थीं। काफी दिनों से बीमार चल रही थीं। विशेषकर अंतिम डेढ़-दो सालों से तो अमला का सब कुछ मिश्र ही कर रहे थे, वह बेचारी तो बिस्तर से उठ ही नहीं पाती थीं। पत्नी की मृत्यु के बाद यद्यपि बिल्कुल ही टूट गये थे, लेकिन अमला का मुँह देखकर अपने दिल को ढाढस दे लिया था उन्होंने और उसी की खातिर जीने लगे थे।

देखते-देखते अमला बड़ी हो गई। दिग्विस्तृत अतल समुद्र के बीच बने उस छोटे से द्वीप में एक स्वप्न प्रासाद खड़ा कर दिया मिश्र साहब ने। हर इच्छा पूरी कर देते उसकी, मुँह से निकलने भर की देर होती बस। यहीं कोई रोक-टोक नहीं, कोई बाधा नहीं।

घर में मिश्र साहब के अलावा कोई और था नहीं; अतः साहचर्य के लिये अमला बाहरी दुनिया की ओर तकती। कितनी लड़कियाँ, कितने लड़के उसके मित्र थे, इसकी कोई गिनती नहीं थी। मिश्र ने कभी भूल से भी मना करना तो दूर रहा, वरन् उत्साहित ही किया।

लेकिन साहचर्य, बंधुत्व का परिणाम हुआ—यह सर्वनाश !

'हाँ हाँ तरुण, ये छोकरे देह की अग्नि, यौवन की ज्वाला, आँखो का नशा चरितार्थ करने के लिये यदि अमला की तरह यशोदा का भी सर्वनाश कर दें तो ? यदि स्वयं की लज्जा से मुक्ति पाने के लिये अमला की तरह यशोदा भी...।'

और इसके आगे नहीं बोल पाये मिश्र । काँपते हाथों से कसकर तरुण को पकड़ लिया उन्होंने । आँखों में आँसू भर आये ।

कुछ क्षण बाद एक दीर्घश्वास छोड़कर बोले, 'इन वीस-बाइस साल की लड़कियों को सुन्दर-सुन्दर साड़ियाँ पहने, कंधे पर बैग लटकाये घूमते देखते ही मुझे अमला याद आ जाती है तरुण ।'

क्या जवाब दे तरुण ? कुछ भी नहीं कह पाता । सन्तान के स्नेह से वंचित ऐसे कंगाल को क्या कहकर सान्त्वना दे । माँ की गोद खाली करके शिशु चला जाता है तो माँ उन्मादिनी सी हो जाती है । मिश्र साहब के हृदय में भी यह ज्वाला अहर्निश निरन्तर जलती रहती है । कैसे शान्त हो वह ? यही कारण है शायद कि वह दूसरी लड़कियों, बच्चों को स्नेह देकर मन के रिक्त स्थान को थोड़ा बहुत भरना चाहते हैं ।

'अच्छा तरुण, बहुत से बच्चे दूसरे की माँ को माँ कहकर बुलाते हैं, क्या दूसरे के पिता को पापा कहकर नहीं बुलाया जा सकता ?'

अब तरुण के मुँह से भी आह निकल जाती है । अंतःकरण में एक हूक सी उठती है । दीर्घश्वास छोड़कर कहता है—'क्यों नहीं बुलाया जा सकता !'

और हँसते-हँसते दुहरे हो गये मिश्र । बोले—'डोन्ट टॉक नॉन्सेन्स तरुण । तुमने क्या मुझे नशे में धुत्त समझ लिया है ? कि जो समझा दोगे; बता दोगे झट से मान जाऊँगा ?'

यू-टू फ्लाइट, पेरिस सम्मिट और फिर यूनाइटेड नेशन्स को लेकर इतने दिनों तक व्यस्त रहे मिश्र साहब तो ठीक थे । किन्तु जरा सा मौका मिला तो फिर वही अतीत मँडराने लगा आँखों के सामने ।

पार्टी काफी देर पहले खत्म हो गई थी । प्रायः सभी जा चुके थे । लेकिन मिश्र एक कोने में खड़े बेखबर तरुण से बातें कर रहे थे ।

धीरे-धीरे ऐम्बैसेडर पास आकर खड़े हो गये और मिश्र के कंधे पर

हाथ रखकर बोले, 'कल कौन सी तारीख है याद है ?'

'टुमारो इज ट्वेन्टी-सेकेन्ड ।'

'कल मेरी लड़की आ रही है, यह मालूम है ?'

'श्योर सर । बी. ओ. ए. सी. फ्लाइट सिक्स-जीरो-वन ।'

खुश हो गये ऐम्बैसेडर । हँसकर बोले—'दैट्स राइट । मैं तो परसों ही जेनेवा जा रहा हूँ, सो डोन्ट फॉरगेट टु टेक केयर ऑफ दैट गर्ल ।'

'नो सर, नाट ऐट आल । इफ आइ मे से फ्रैन्कली सर तो रीना आपसे ज्यादा मुझे ही पसन्द करती है ।' मुस्कुरा कर मिश्र ने उत्तर दिया ।

ऐम्बैसेडर ने तरुण के कान में फुसफुसाकर कहा, 'प्लीज़ टेल मिश्र दैट आई ऐम हैप्पी फार दैट ।'

और फिर—'गुड नाइट ! सी यू टुमारो' कहकर ऐम्बैसेडर से विदा ली ।'

'गुड नाइट सर' दोनों साथ-साथ बोल पड़े ।

# आठ

कवि रॉबर्ट रसिक थे। उनके मतानुसार डिप्लोमेट्स महिलाओं का जन्म दिन तो याद रखते हैं, परन्तु उनकी उम्र भूल जाते हैं। जन्मदिन के इस आनन्द-उल्लास से मतलब होता है बस उन्हें; काल के चक्र में विलीयमान यौवन का हिसाब रखने की आवश्यकता नहीं समझते।

डिप्लोमेट होते हुए भी ऐम्बैसेडर बनर्जी महिलाओं का केवल जन्म-दिन ही याद नहीं रखते, वरन् उनकी उम्र भी याद रखते हैं। केवल आनन्दोल्लास में भाग लेकर, मधुपान करके वह अपने मन को खुश नहीं कर पाते। वेदनाविद्ध, अंधकाराच्छन्न मन की गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न भी करते हैं।

अचानक देखने पर ऐसा नहीं लगता कि वह इतने टॉप कैरियर के डिप्लोमेट हैं। दूसरे डिप्लोमेटों की तरह चकाचौंध, स्मार्टनेस, ग्लैमर का कहीं नाम-निशान नहीं। सिर पर हैट या हाथ में लम्बा पतला छाता न होते हुए भी पहनते वह पुराने जमाने का अँगरेजों जैसा ढीला-ढाला थ्री पीस सूट ही हैं। सिल्वर चेन से बँधी पड़ी मोटी पॉकेट वाच का यद्यपि व्यवहार नहीं करते, लेकिन तब भी वह बहुत कुछ कैम्ब्रिज के विख्यात सेल्विन कालेज के ओरियन्टल फिलासफी के प्रोफेसर जैसे लगते हैं।

सभी ऐम्बैसेडर रघुवीर थोड़े ही होते हैं? यौवन के आरम्भ में ही आई. सी. एस. पास करके स्वदेश लौटने पर साल भर के अन्दर-अन्दर रघुवीर देहरादून के डिप्टी मजिस्ट्रेट बन गये थे। और छह महीने बीतते-बीतते लाहौर के सर वीरेन्द्रवीर के सुपुत्र रघुवीर प्रभुभक्ति की अग्नि-परीक्षा में खरे उतर गये। गाँधी जी तथा उनके साथियों को 'टिल द कोर्ट राइज़' तक कारावास दे दिया।

घटना यद्यपि बहुत ही सामान्य थी, परन्तु ऐसा सुयोग बार-बार तो आता नहीं ! मेरठ से मुजफ्फर नगर, रुड़की, देहरादून होकर गाँधी जी कार से मसूरी जा रहे थे। मेरठ तथा मुजफ्फरनगर में मिटिंग थी, लेकिन रुड़की व देहरादून में कोई प्रोग्राम नहीं था। स्वागत के लिये देहरादून की सड़कों के दोनों ओर भीड़ इकट्ठी होना तो स्वाभाविक था ही।

रघुवीर ने जिला मजिस्ट्रेट को रिपोर्ट दी कि देहरादून शहर के अन्दर मिलीटरी एकेडमी के लड़के हर वक्त घूमते रहते हैं। वैसे कोई प्रोग्राम तो नहीं है पर बाई चान्स क्लाकटावर से गुज़रते समय गाँधी जी ने वक्तृता देनी शुरू कर दी तो मिलीटरी एकेडमी के लड़के भी अवश्य सुनेंगे ..। और यह अगर न भी हो तो भी अभ्यर्थना के इस विस्तृत आयोजन को देखते हुए कोई रिक्स न लेना ही उचित होगा।

फलस्वरूप जिला मजिस्ट्रेट टॉम जोन्स साहब की आज्ञा पाकर डिप्टी मजिस्ट्रेट रघुवीर ने आदेश जारी कर दिया कि—मिस्टर मोहन-दास करमचन्द गाँधी को सूचित किया जाता है कि ब्रिटिश इंडिया एवं क्षेत्रीय ला एंड आर्डर की सुरक्षा को ध्यान में रखकर आप व आपके संगी-साथी देहरादून शहर में प्रवेश न करें।

और शहर के शुरू में ही कई सौ देशी विदेशी सिपाहियों को साथ लेकर महात्मा जी का स्वागत किया।

गाड़ी से उतरकर मुस्कुराते हुए गाँधी जी ने पूछा, 'कितने दिनों के लिये मेहमान बनना पड़ेगा ?'

रघुवीर बोले, 'नहीं, नहीं', ऐसी कोई बात नहीं है। बस, आप देहरादून शहर बचाकर निकल जाइये।'

एक वकील की तरह उलट कर गाँधी जी ने प्रश्न किया, 'आपकी महामान्य सरकार ने मसूरी जाने के लिये कोई नया रास्ता बना दिया है क्या ?'

'नो सर, दिस इज़ दि ओनली रोड टु मसूरी।'

'तो क्या मैं हवाई जहाज से जाऊँगा...?'

और जैसे ही सदलबल गाँधी जी आगे बढ़े, रघुवीर उन्हें गिरफ्तार करके कोर्ट ले गये। वहाँ 'टिल द कोर्ट राइज़' तक का कारावास सुना दिया गया।....

वही रघुवीर जब स्वाधीन भारतवर्ष के राजदूत बनकर अमेरिका गये तो बोले, 'अमेरिका के अब्राहम लिंकन और हमारे भारत के गाँधी जी विश्व के मानव-समाज के मुक्ति आन्दोलन के अग्रदूत थे।' इटली में ऐम्बैसेडर बनकर पहुँचने पर वैटिकन के प्रधान पोप को अपना परिचयपत्र देते समय कहा था, 'त्राणकर्त्ता यीशु को तो मैंने नहीं देखा। किन्तु भारत के त्राणकर्त्ता महात्मा गांधी के दर्शनों का सौभाग्य मुझे अवश्य प्राप्त हुआ था। इस महामानव के जीवन व वाणी के माध्यम से मुझे महाप्राण यीशु की उपलब्धि हुई थी।'

राजदूत बनकर रघुवीर साहब ने नाना प्रकार से देशसेवा की है। पश्चिम जर्मनी व भारत के बीच व्यापार संधि पर हस्ताक्षर हुए। हम बंगाली तो बड़े बाजार में पोस्ते की होलसेल देखकर ही फूलकर कुप्पा हो जाते हैं—जर्मन भारत की उस व्यापार-संधि का हिसाब क्या रक्खेंगे। एक सौ पैंतीस रुपये बेसिक तनख्वाह का क्लर्क या एक सौ पचहत्तर का लेक्चरार बनने पर ही जिनकी उदास दृष्टि पृथ्वी छोड़कर नीलाकाश की ओर उड़ने लगती है, उनके लिये भला शत-शत, सहस्र-सहस्र, करोड़ों रुपयों का व्यापार करना कहाँ सम्भव है? जो व्यापार करते हैं, वह कहते हैं मिलियन, बिलियन। बंगाली बुद्धिजीवी तो अखबार का प्रथम पृष्ठ पढ़कर ही उत्तेजित हो उठता है। लेकिन जिन्हें मिलियन बिलियन प्रसाद स्वरूप मिलते हैं, वह लोग अखबार के प्रथम पृष्ठ की अपेक्षा अन्दर के पन्ने पर स्टाक एक्सचेंज एवं कम्पनी मीटिंगों की रिपोर्ट अधिक ध्यान से पढ़ते हैं।

ऐम्बैसेडर रघुवीर की जीवन-संगिनी का लाड़ला छोटा भाई भी अन्दर के उसी पृष्ठ का पाठक था। एक दिन उस भाग्यवान छोटे साले ने जीजाजी से बड़े लाड़ से पूछा, 'इण्डो-जर्मन-ट्रेड में कुछ मिल सकता है क्या जीजाजी?'

'ह्वाई नाट? अपनी दीदी से कह देना, जरा याद दिला दे मुझे।'

और एक दिन राइन नदी पर वाटर जेट लंच में बैठकर संध्या बिताते समय दूर किसी कारखाने की चिमनी पर नजर पड़ते ही मिसेस रघुवीर ने पति को याद दिलाते हुए कहा था, 'तुम्हें मेरे छोटे भाई की वह बात याद है न?'

'हाँ जी! वह भी भला भूली जा सकती है।'

दो-चार दिन बाद ही एक विख्यात जर्मन फर्म से इन्क्वायरी आई कि उन्हें करोड़ों, अरबों मार्क की मशीनरी हिन्दुस्तान भेजनी थी, परन्तु वह लोग वहाँ आफिस नहीं खोलना चाहते, रेजीडेन्ट रिप्रेजेन्टेटिव बनाकर एजेन्सी देना चाहते हैं।

धुएँ का गुब्बार मुँह से निकालकर पाइप नीचे रख दिया रघुवीर ने। फिर जैसे गहरी चिन्ता में पड़कर बोले, 'यह तो बड़ी गम्भीर समस्या है, मुझे थोड़ा सोचने दीजिये।'

'ठीक है सोच लीजिये। पर देखिये यह ख्याल रखियेगा कि वह फर्म किसी और फेमस वेस्टर्न इंजिनियरिंग फर्म का काम न करती हो।'

हँसते हुए ऐम्बैसेडर ने कहा, 'यू आर मेकिंग माई टास्क मोर डिफिकल्ट।'

'योर एक्सलेन्सी ऐम्बैसेडर्स आर नॉट फॉर आर्डिनरी....।'

एक सप्ताह बाद फिर से पूछताछ हुई तो ऐम्बैसेडर ने कहला भेजा, हिन्दुस्तान में जाँच-पड़नाल की जा रही है।

तीन सप्ताह बाद रघुवीर साहब ने जालंधर के छोटे साले की फर्म को रिकमेंड कर दिया।

हर जगह चार-छह व्यक्ति तो ऐसे होते ही हैं जिन्हें दूसरों की निन्दा किये बिना रोटी हजम नहीं होती। फॉरेन सर्विस डिपार्टमेन्ट भी अछूता नहीं है। उनका कहना है कि गुरु-दक्षिणा स्वरूप छोटे साले ने जीजा को दिल्ली फ्रेंड्स कालोनी में ढाई लाख का काटेज उपहार में दिया है।

रघुवीर जैसे और भी बहुत से आदर्शहीन व्यक्ति इंडियन फॉरेन सर्विस में हैं। लेकिन ऐम्बैसेडर बनर्जी कुछ भिन्न धातु के बने हैं। टेबिल पर यदि फाइलों का ढेर नहीं होता तो सहकर्मियों को कमरे में बुलाकर बैठक शुरू कर देंगे। एक दिन तो थर्ड सेक्रेटरी ने कह ही दिया, 'सर आप जैसा सीधा सरल आदमी इन्टरनेशनल डिप्लोमेसी में किस तरह सक्सेसफुल हो गया, मैं तो यह सोचकर आश्चर्य में पड़ जाता हूँ।'

हँसते हुए ऐम्बैसेडर ने जवाब दिया था, 'वेरी सिम्पल रंगस्वामी।

'[illegible]' में नागरत्न ने कहा है—

"Hear is a sigh to those who love me,
And a smile to those who hate,
And whatever sky's above me
Hear is a heart for any fate."

और रवीन्द्र नाथ ने कहा है—

"निजेरे करिते गौरवदान
निजेरे केवलई करि अपमान
आपनारे शुधु घेरिया घेरिया
घूरे मरि पले पले।
सकल अहंकार हे आमार
डूबाओ चोखेर जले॥"

( "अपने को करके गौरवदान
करता हूँ बस निज का अपमान।
अपने ही को घेर-घेर कर
मरता हूँ मैं क्षण-प्रतिक्षण।
हे मेरे तुम अहंकार
बह जाओ जल बन नयनद्वार॥ )

यह है बनर्जी साहब का जीवन-दर्शन। उनकी दृष्टि सदा ही आगे कहीं दूर खोई रहती है, जैसे कुछ ढूँढ़ रही हो। यही कारण है मिश्र साहब की मदमत्तता के पीछे उन्हें उनका अशान्त, स्नेहकातर हृदय नजर आता है।

एक बार उन्होंने कहा था, 'जानते हो तरुण, इससे बड़ा सर्वनाश, इससे बड़ी ट्रैजेडी मनुष्य के जीवन में और कुछ नहीं हो सकती। शिशु के जन्म के बाद स्तनों के दूध के रूप में माँ का हृदय भर उठता है, लेकिन भाग्य के दुर्विपाक से अगर वह सन्तान माँ की गोद खाली करके अचानक सदा के लिये विलुप्त हो जाती है तो वही दूध हृदय की यंत्रणा बढ़ाकर माँ को पागल बना देता है।

क्षण भर के लिये चुप रहकर कहा, 'वह केवल शारीरिक यन्त्रणा नहीं होती, उसके साथ मातृत्व के व्यर्थ होने की वेदना जुड़ी होती है।'

कुछ भी नहीं बोल पाया था तरुण, बस मंत्रमुग्ध ऐम्बैसेडर बनर्जी की तरफ देखता रहा था।

ईस्टर-सेशन काल में यूनाइटेड नेशन्स का हेडक्वार्टर खाली-खाली सा हो जाता है। यहाँ तक कि छोटे से कैफेटेरिया में भी इक्के-दुक्के लोग नज़र आते हैं। अधिकांश देशों के प्रतिनिधि या तो छुट्टी पर घर चले जाते हैं अथवा घूमने-फिरने निकल जाते हैं। जूनियर डिप्लोमेट्स के कामकाज में भी थोड़ी ढील आ जाती है।

उस दिन सुबह ट्रस्टीशिप काउन्सिल की एक छोटी कमेटी की मीटिंग थी। आधे-पौन घंटे में खत्म हो गई। कुछ ही मिनटों में इतना विराट यूनाइटेड नेशन्स का हेडक्वार्टर प्रायः खाली हो गया। आठवीं मंजिल पर इंडियन डेलीगेशन के कमरे में मिस्टर बनर्जी एवं तरुण बैठे बातचीत कर रहे थे। अचानक जैसे हेडक्वार्टर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की गन्दगी से मुक्त हो गया था। तभी तो दोनों दिल खोलकर बात कर रहे थे।

हडसन नदी के इस किनारे से उस किनारे तक एक बार दृष्टि फिराकर नीले आकाश की ओर निबद्ध कर दी बनर्जी ने। रिवाल्विंग चेयर को हल्के-हल्के घुमाते हुए बोले, 'मिश्र को देखकर बड़ा दुख होता है। रीना को निकट पाकर उसके मन की शून्यता, व्यर्थ पितृत्व की ज्वाला मुझे जैसे और अधिक अपसेट कर देती है।'

मिसेस बनर्जी को यह ख्याल भी नहीं था कि बनर्जी साहब अभी तक यू० एन० में हैं। तरुण के फ्लैट पर फोन किया तो घंटी जाती रही, किसी ने उठाया ही नहीं। सोचा, किसी जरूरी काम से अटक गये हैं दोनों। उधर समय बीतता जा रहा था। जल्दी से लंच खाकर एयर-पोर्ट जाना था। जब कुछ समझ में नहीं आया तो मिश्र को फोन किया, 'भाई साहब, 'बनर्जी साहब की कुछ खबर है आपको ?'

'क्यों अभी तक नहीं लौटे ?'

'ना ! किसी जरूरी काम से गये हैं क्या ?'

'ऐसे किसी जरूरी काम की जानकारी मुझे तो है नहीं। अच्छा तरुण को फोन करके देखता हूँ।'

'तरुण भी घर नहीं है...।'

मिसेस बनर्जी की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि छूटते ही मिश्र बोले, 'देन डोन्ट वरी। दोनों सेन्टीमेन्टल बंगाली कहीं बैठे या तो चुप-चाप आकाश की ओर निहार रहे होंगे या फिर मेरे दुख की बैलेन्सशीट

मिला रहे होंगे।'

मिश्र की बात सुनकर मिसेस बनर्जी भी हँस पड़ीं। बोलीं, 'तो जरा ढूँढ़िये उन लोगों को। अभी लंच खाकर जल्दी से रीना को लेने भागना पड़ेगा ....।'

'उससे बनर्जी साहब को क्या मतलब? वह तो मेरी व आपकी चिन्ता है।'

और टेलीफोन रखकर झटपट मिश्र निकल पड़े। कुछ ही मिनटों में यू० एन० पहुँच गये। गाड़ी पार्क करने लगे तो नज़र पड़ी दोनों परिचित गाड़ियाँ अगल-बगल खड़ी थीं। ऐम्बैसेडर साहब का ड्राइवर भी कहीं साथियों के बीच जाकर बैठ गया था। मिश्र ने जान-बूझ कर इस तरह अपनी गाड़ी पार्क की कि उन दोनों गाड़ियों का निकलना तब तक संभव नहीं था, जब तक वह अपनी गाड़ी न हटाये। लिफ्ट से ऊपर जाते-जाते अगर कहीं दोनों भावुक बंगाली दूसरी लिफ्ट से नीचे पहुँच गये तो समझ जायेंगे कि जिसके दुखों की बैलेन्सशीट तैयार करने में वह अब तक व्यस्त थे वह आ गया है।

ऐम्बैसेडर बनर्जी के कमरे के सामने पहुँच कर क्षण भर को मिश्र चुप खड़े रहे। एक बार सोचा नॉक करें, फिर सोचा नहीं, नहीं, इन सब फॉर्मैलिटीज़ की क्या ज़रूरत है?

धीरे से दरवाजा खोलकर मिश्र के अन्दर घुसते ही दोनों चौंक पड़े।

एक साथ बोल उठे, 'मिश्र, यू आर हियर?'

मुस्कुराते हुए मिश्र ने जवाब दिया, 'व्हाट एल्स कुड आइ डू?'

हाथ में बँधी घड़ी की ओर देखकर मिश्र ने बनर्जी साहब से कहा, 'सर, मिसेस बनर्जी कह रही थीं कि आपको खिला-पिलाकर उन्हें एयरपोर्ट—!'

'अरे-रे, मैं तो भूल ही गया था!'

और झटपट उठ खड़े हुए दोनों। नीचे आकर गाड़ी में बैठते हुए बनर्जी बोले, 'तुम लोग वरन् मेरे यहाँ ही चले चलो। ह्वाटएवर इज़ देयर, वी विल शेयर इट!'

हँसते-हँसते मिश्र ने कहा, 'सर, जब आपने रीना को ही मुझे दे दिया है तो फिर खाने-पीने में हिस्सा बँटाने में कैसी शरम?'

मिश्र व मिसेस बनर्जी के एयरपोर्ट पहुँचने के पाँच-सात मिनटों में ही पब्लिक एड्रेस सिस्टम से एनाउन्समेन्ट हुआ कि बी० ओ० ए० सी० अनाउन्स द अराइवल आफ फ्लाइट सिक्स-जीरो-वन फ्राम लन्डन।

रीना ने झुककर माँ को जल्दी-जल्दी प्रणाम किया और मिश्र से लिपट कर बोली, 'मुझे मालूम था अंकल तुम जरूर आओगे!'

रीना के सिर पर हाथ फिराते-फिराते मिश्र ने उत्तर दिया, 'अरे तुम लोग तो एक से एक बढ़कर शत्रु हो! तुम लोगों को नजरों से दूर थोड़े ही रक्खा जा सकता है भला?'

अंकल के कान के पास मुँह ले जाकर फुसफुसाते हुए जाने क्या तो कहा रीना ने कि खिलखिला कर हँस पड़े मिश्र और बोले 'ठीक है, ठीक है। डोन्ट वरी डियर डार्लिंग ममी!'

यद्यपि खुशी से मिसेज बनर्जी का मुँह चमक रहा था पर फिर भी जरा डाँटने के स्वर में बोलीं, 'बस, आते ही अंकल को तंग करना शुरू कर दिया न?'

और अंकल मन ही मन हँस रहे थे! सोच रहे थे संसार की सारी रीनाएँ अगर गले में हाथ डालकर कानों में फुसफुसाकर इस तरह आग्रह करती होतीं तो शायद अमला को—!

उस रात को थर्टी टू स्ट्रीट ईस्ट पर मिश्र के फ्लैट में रीना के आनर में एक विराट उत्सव का आयोजन हुआ। मिस्टर व मिसेस बनर्जी तो थे ही, इंडियन डेलीगेशन के प्रायः सभी व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे।

नवागत इन्फर्मेशन अटैची वर्मा ने धीरे से तरुण से पूछा, 'क्या बात है, मिस्टर मिश्र के ऐसे डिनर में कोई ड्रिंक नहीं है आज?'

'रीना के सामने वह ड्रिंक नहीं करते।'

'क्यों?'

'कहते हैं लड़कियों के सामने ड्रिंक करना ठीक नहीं। इसके अलावा—!'

'इसके अलावा क्या?'

'इसके अलावा कहते हैं कि रीना को पास पाकर उन्हें कोई दुःख नहीं रहता, फिर ड्रिंक क्यों करें?'

इतना बड़ा भोज था। जाने क्या-क्या बना था। पर

ध्यान जैसे उधर था ही नहीं। बस, मंत्रमुग्ध मिश्र को देख रहा था। माथे की वह चिन्ता की रेखाएँ जाने कहाँ विलीन हो गई थीं! क्लान्त, भग्न मनुष्य की विषण्ण, शून्य दृष्टि का कहीं नामनिशान भी नहीं कामकाज के बाद रोज शाम को जो मिश्र अपने को भूल जाते हैं, निश्चल बैठे-बैठे बोतल पर बोतल शराब की खाली करते रहते हैं; आज मानों उन्हें पुनः नवयौवन मिल गया था। कितने चञ्चल, कितने प्रसन्नचित्त, कितने सुन्दर, कितने प्रिय लग रहे थे!

तरुण ऐम्बैसेडर बनर्जी के पास पहुँचा और धीरे से बोला, 'सर, आप घर नहीं जायेंगे? रात को ही सारे पेपर्स ठीक करके नहीं रक्खेंगे तो कल कैसे जायेंगे?'

'जाऊँ कैसे, अभी तक तो खाना ही नहीं खाया।'

'यह क्या?'

'आज क्या मेरी ओर ताकने की फुर्सत है मिश्र को?' हँसते हुए एम्बैसेडर ने कहा।

तरुण भी हँस पड़ा। बोला, 'आप ठीक ही कह रहे हैं सर। रीना को पास पाकर तो वह जैसे बिल्कुल पागल हो जाते हैं, सब कुछ भूल जाते हैं।'

एक छोटा सा निश्वास छोड़कर एम्बैसेडर ने कहा, 'रीना को लेकर उसका यह पागलपन देखने में बड़ा अच्छा लगता है। जानते हो तरुण, अपनी पत्नी, अपनी सन्तान को तो सभी प्यार करते हैं, लेकिन जब दूसरे व्यक्ति भी उन्हें प्यार करते हों, तभी तो सार्थकता है।'

तरुण कोई जवाब नहीं देता। बनर्जी की यह सहृदयता उसे मुग्ध कर देती है।

'इसके अलावा इसका एक पहलू और भी है। जो लोग किसी दूसरे की स्त्री पर भक्ति-श्रद्धा रखते हैं, उनके बच्चों पर प्यार व स्नेह लुटाते हैं उनके हृदय की विशालता की क्या तुलना की जा सकती है?'

अगले दिन बनर्जी डिसआर्मामेन्ट कन्ट्रोल कमीशन के अधिवेशन में योग देने के लिये जेनेवा चले गये।

रीना की पन्द्रह दिन की छुट्टियाँ भी चुटकी बजाते निकल गईं जैसे। मिश्र को फिर से वही चिरपरिचित यन्त्रणा एवं शराब की बोतल मिल गई। और तरुण को अपना छंदहीन जीवन प्राप्त हो गया।

पन्द्रह दिन तक तरुण मिश्र का पागलपन देखता रहा था बस। आत्मविस्मृत मनुष्य का अंध स्नेह कितना परिवर्त्तन ला देता है उसमें। मन ही मन वह उस पर श्रद्धा व भक्ति करता रहा था जिसको कुछ इंडियन स्टूडेन्ट्स डिबॉच, स्काउन्ड्रल और जाने क्या-क्या कहते हैं!

टेलीविज़न के पर्दे पर वेसवाल के खेल में लोगों का हो-हुल्लड़ अच्छा नहीं लगा उसे। स्विच बन्द करके कोने के सिंगल सोफे पर चुप होकर बैठ गया।

जाने कहाँ-कहाँ के ख्याल मन में आने लगे। धीरे-धीरे दृष्टि धुँधली पड़ने लगी। सारी दुनिया कहीं दूर पहाड़ की तलहटी में बसे कुहरे से ढके छोटे से गाँव सी लगने लगी। सोचते-सोचते जाने कहाँ खो गया डिप्लोमेट तरुण मित्र। मन के पर्दे पर आहिस्ता-आहिस्ता कितनी ही धुँधली आकृतियाँ उभरने लगीं। कब वह भीड़ छँटी और कब इन्द्राणी की छवि स्पष्ट हुई तरुण को पता ही नहीं चला।

नि:संग तरुण को जब तब इस तरह इन्द्राणी दिखाई पड़ने लगती है। मन ही मन कितनी ही बातें करता है वह उससे, भविष्य के न जाने कितने स्वप्न सँजोता है। बीच-बीच में जब कभी फ्लैट में इस तरह अकेला होता है तो चीख उठता है। एक दिन इसी तरह उसकी चिल्लाहट सुनकर बगल के फ्लैट की मिसेस रोजर्स दौड़ी-दौड़ी आई थीं और पूछा था—

'मिट्रा! यू वर शाउटिंग टु समबडी?'

लज्जित स्वर में तरुण बोला था, 'आई एम सॉरी मिसेस रोजर्स।'

'नहीं, नहीं सॉरी की कोई बात नहीं है। पर तुम हमेशा बहुत चुपचाप रहते हो न! इसलिये अचानक तुम्हारी चीख-पुकार सुनकर।'

आज शायद रोजर्स परिवार कहीं बाहर गया हुआ था, तभी मिसेस रोजर्स भागी हुई नहीं आईं। बज़र की आवाज सुनकर तरुण की आवाज पर जैसे यकायक ब्रेक लग गया। दरवाजा खोला तो सामने मिश्र को खड़े पाया।

'तुम इन्द्राणी को इतना प्यार करते हो?'

सिर झुकाये खड़ा रहा तरुण। क्या जवाब दे वह मिश्र के प्रश्न का?

तरुण के कंधों पर दोनों हाथ रखकर जरा झक झोरते हुए बोले,

'इतना प्यार छुपा हुआ है तुम्हारे अन्दर ? मैं तो बोतल पर बोतल शराब पीकर भी अमला की सूरत नहीं भूल पाता। तुम तो मेरी तरह पीते भी नहीं, फिर किस तरह अहर्निश, प्रतिपल इस ज्वाला को दबाये रखते हो तरुण ?'

मुँह उठाया तरुण ने और पल भर को चुप रहकर पूछा, 'मैं क्या बहुत जोर से चिल्ला रहा था ?'

मिश्र के ओठों पर मुस्कुराहट दौड़ गई। बोले, 'चलो-चलो, अन्दर चलकर बैठा जाये।'

तरुण के पीछे-पीछे पैसेज से ड्राइंगरूम की ओर जाते हुए मिश्र कहने लगे—"मैं भी कभी-कभी जब अकेला होता हूँ तो जोर-जोर से अमला को सुनाकर जाने कितनी बातें करता हूँ।'

'अच्छा ?'

ड्राइंगरूम में जाकर बैठने के बाद मिश्र बोले, 'मर जाने के बाद भी अमला मेरे जीवन से, मन से नहीं गई तरुण। फिर बिना बात किये कैसे रह सकता हूँ ?'

अचानक जाने क्या हो गया मिश्र को कि कहने लगे, 'छोड़ो भी, उस हतभागी बेवकूफ लड़की की बात तक करने से मेरा मिजाज खराब हो जाता है। छोड़ो अब यह सब। गिव मी ए ग्लास आफ स्कॉच।'

दो ग्लास स्काच ले आया तरुण।

स्काच का ग्लास हाथ में ऊपर उठाकर मिश्र बोले—'फार ऐन अर्ली ऐंड हैप्पी रियूनियन आफ तरुण विथ हिज़ एटरनल लवर इन्द्राणी !' (तरुण के अपनी प्रेमिका इन्द्राणी से शीघ्र एवं आनन्ददायी मिलन के नाम पर)

अचानक टेलीफोन बज उठा। सेन्टर टेबिल पर ग्लास रखकर तरुण ने उठकर टेलीफोन का रिसीवर उठाया और बोला, 'मित्रा हियर।...कौन ? मलकानी ? येस....कहो क्या बात है ?'

मलकानी की बात सुनकर तरुण बोला, 'अभी मैसेज आया है ? देट्स आल ? थैंक यू वेरी मच।'

रिसीवर नीचे रखकर मिश्र की ओर नजरें घुमाकर तरुण ने मिश्र को बताया, 'मलकानी ने बताया कि अभी-अभी मैसेज़ आया है, मेरा बर्लिन ट्रांसफर कर दिया गया है।'

मिश्र ने भी ग्लास नीचे रख दिया ! 'तो तुम चल दिये ।'!

मिश्र की ओर से आँखें हटाकर जाने क्या तो सोच रहा था तरुण ।

'एमर्सन की Conduct of Life तो अवश्य पढ़ी होगी । याद है वह लाइन ?'

जवाब नहीं दिया तरुण ने, चुप बैठा रहा ।

मिश्र ने भी उत्तर की प्रतीक्षा न करके जैसे अपने को ही वह पंक्ति सुनाई—

He who has a thousand friends
has not a friend to spare.

और कुछ क्षण चुप रहकर ग्लास से घूँट भरकर बोले, 'मेरा भी यही हाल हुआ है ।'

अब तरुण ने भी मुस्कुराते हुए ग्लास उठाकर मुँह से लगाया । मानों घूँट भर ह्विस्की से गला तर करना चाहता हो । बोला, 'एमर्सन ने तो उमर खैयाम को बेस करके ही यह लिखा है । उमर खैयाम की और भी कई लाइनें याद आ रही हैं'—

बिना कुछ बोले मिश्र ने फिर ह्विस्की का घूँट भरा और तरुण की ओर देखने लगे ।

तरुण ने आवृत्ति की :

The moving finger writes; and having writ
Moves on : nor all our Piety nor Wit
Shall lure it back to cancel half a line
Nor, all our Tears wash out a word of it.

(चलती हुई उँगली लिखती है और लिखकर आगे चलती जाती है । हमारी सारी धर्मनिष्ठा और विचार शक्ति लिखी हुई आधी पंक्ति को भी काटने के लिये इसे फुसला नहीं पायेगी और ना ही हमारे आँसू इसका एक शब्द भी मिटा पायेंगे ।)

'ठीक कह रहे हो तरुण, डिप्लोमेट होकर भी स्वीकार करने को बाध्य हूँ कि सब विधि का विधान है !'

# नौ

लड़की का विवाह निश्चित हो जाने पर बंगाल में सारे रिश्तेदार, पड़ोसी, मित्र आदि लड़की को खाने पर निमन्त्रित करते हैं। अँगरेजी में फेयरवेल डिनर कहा जा सकता है! डिप्लोमेटों के आगमन व निर्गमन के अवसर पर भी इस प्रकार निमन्त्रित करने की प्रथा है। सहकर्मियों के अलावा दूसरे मिशनों के मित्रों के यहाँ भी खाना और उन्हें खिलाना पड़ता है। समस्त देशों की फॉरेन सर्विस में ही यह चलन है—इन्डियन फॉरेन सर्विस में भी इसका व्यतिक्रम नहीं होता। सीनियर, जूनियर किसी भी लेवल पर नहीं।

हमारे देश के आइ० ए० एस० या आइ० पी० एस० अफसरों में सौजन्यता का यह सब झंझट नहीं है। मजिस्ट्रेट या पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट की बदली होने पर अधिकांशतया उनके सहकर्मियों को खुशी ही होती है। अतएव फेयरवेल डिनर का सवाल ही नहीं उठता। केन्द्रीय अथवा राज्य सरकार के विताड़ित या पदत्यागी मंत्री की अथवा कलकत्ते के अवकाश प्राप्त पुलिस कमिश्नर को किसी के प्यार से फेयरवेल डिनर देने की बात आज भी नहीं सुनी जाती। फॉरेन सर्विस में और चाहे जितनी त्रुटियाँ-विच्युतियाँ हों पर सौजन्यता का यह परंपरा नहीं है। किसी ऐम्बैसेडर को वापस बुलाये जाने पर या उसकी नौकरी की अवधि खत्म होने पर भी सौजन्यमूलक फेयरवेल डिनर तो दिया ही जाता है।

लगभग छह सौ रुपये के वेतन पर जो लोग फॉरेन सर्विस में आकर नया जीवन शुरू करते हैं, पहली फॉरेन पोस्टिंग के समय फेयरवेल डिनर खाते-खाते और खिलाते-खिलाते उनकी जान पर बन आती है। कुछ नहीं तो भी कोई सौ डिनर तो खाने व खिलाने पड़ते ही हैं, छः मास का वेतन अग्रिम लेकर भी ताल नहीं मिलती। हाई स्टैण्डर्ड एवं इन

सौजन्यताओं की रक्षा करने में बहुत से नौजवान आई० एफ० एस० को कर्ज में डूबना पड़ता है। हाँ, बाद को अवश्य कैमरा, बाइनोक्यूलर, ट्रान्जिस्टर, टेपरिकार्डर आदि बेचकर हालत सुधर जाती है।

न्यूपार्क छोड़ने से पहले तरुण को भी फेयरवेल डिनर खाने-खिलाने पड़े। डिप्लोमेटिक मिशन की नौकरी में रोज ही आना-जाना लगा रहता है। यहाँ जैसे कुछ भी नित्य नहीं है, सब कुछ अनित्य है, अस्थायी है। तब भी आखिर तो इन्सान ही है। तरुण का मन भी खराब हो गया। मन में दुख व मुँह पर मुस्कुराहट लिये उसने सबसे हाथ मिलाया और प्लेन पर चढ़ गया।

प्लेन के ऊपर आकाश में पहुँचते ही तरुण का मन भी क्षणभर में उड़कर लंदन पहुँच गया। वन्दना और विकास याद आने लगे।

इच्छा तो यही थी कि खुद ही उपस्थित रहकर वन्दना की शादी करेगा। पर पूरी नहीं हुई। यूनाइटेड नेशन्स में उस समय तूफान उठा हुआ था। छुट्टी लेना असम्भव था। तब भी तरुण की इच्छा के विपरीत कुछ भी नहीं हुआ था। वन्दना ने चिट्ठी में लिखा था, दादा, अखबार देखकर ही समझ गई हूँ कि तुम कितनी व्यस्तता भरे दिन व्यतीत कर रहे हो। मैं तो सोच भी नहीं पाती कि किस तरह तुम लोग सारा दिन मीटिंग, कान्फ्रेन्स करते रहते हो—थकते नहीं। इतनी व्यस्तता में भी तुम मुझे भूलते नहीं। तुम्हारी चिट्ठी में दो-तीन तरह के बॉलपेन व स्याही का प्रयोग देखकर ही पता चल जाता है कि एक साथ पूरी चिट्ठी लिखने तक का वक्त तुम्हें नहीं मिलता। तुम्हारे कथनानुसार अब मैं विवाह करने को तैयार हूँ। परन्तु मौड़ी सिर पर बाँधकर शादी करने के लिये हजारों रुपये खर्च करके कलकत्ता जाना क्या संभव होगा? या उचित होगा?

दूसरी चिट्ठी में वन्दना ने लिखा, विकास को तो तुम अच्छी तरह जानते हो। हमारे हाई कमीशन में ही तो काम करता है। सारा दिन आफिस का काम करके भी उसने रिजेन्ट स्ट्रीट पालिटेक्नीक से एका-उन्टेन्सी पास कर ली है। लगता है अब अच्छी सर्विस मिल जायेगी। अब उससे ज्यादा तुमसे क्या कहूँ।

वन्दना जानती थी कि सारी बातें खोलकर लिखे बिना दादा की अनुमति नहीं मिल सकती। इसलिये पत्र के अंत में लिखा था, भगवान

की सौगंध खाकर कह सकती हूँ कि छुप-छुप कर प्यार का खेल मैंने नहीं खेला है। जो अधिकार मिलने वाला नहीं है, उसे वह पाना भी नहीं चाहता और मैंने भी नहीं लिया। पर तब भी ऐसा लगता है कि मुझ जैसी दुखी लड़की को वह जी-प्राण से सुखी बनाने का प्रयत्न करेगा।

यह सारी बातें सोचता-सोचता मन ही मन हँस पड़ा तरुण। प्लेन की खिड़की से एक बार नीचे की ओर झाँक कर देखा तो जैसे सीमाहीन अटलान्टिक नहीं वन्दना और विकास दिखाई पड़े। खाना-पीना निपटा कर तैयार हो गये हैं। दोनों वन्दना ने माँग में सिन्दूर की लम्बी रेखा एवं माथे पर बड़ी सी बिन्दी भी लगा ली है। और विकास पर गुस्सा हो रही है कि तुम्हें तो निकलते-निकलते लगता है घंटों लग जायेंगे। जब पहुँचेंगे तो पता चलेगा कि खड़े-खड़े इन्तजार कर-करके दादा कहीं और...।

मजाक करते हुए विकास कहता है, 'तुम्हारे भैया हैं तो क्या हुआ! मेरा तो साला ही है। इतनी खातिर की क्या बात है?'

वन्दना भला यह सुनकर कैसे चुप रह जाती, कहती है...'भूलो मत, दादा की वजह से ही मुझे पाया है। यह सारी बातें मेरे ही सामने बना रहे हो। दादा के सामने तो मुँह से बोल नहीं निकलेगा।'

महाकाश की गोद में तैरते-तैरते जाने कितनी बातें याद आती रहीं तरुण को।

न्यूयार्क से बर्लिन जाते समय सरकारी तौर पर लंदन में तीन दिन का स्टॉप-ओवर था शॉपिंग के लिये। भारत सरकार की नियमावली भी विचित्र है। अंग्रेज चले गये, लाल किले पर तिरंगा उड़ने लगा है, पर लंदन आज भी उनका स्वर्ग है! दिल्ली से अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, घाना जाना हो तो भी बीच में लंदन। शॉपिंग के लिये लंदन में स्टॉप-ओवर की बात सुनकर बहुतों को हँसी आयेगी। बांड स्ट्रीट-आक्सफोर्ड स्ट्रीट में कुछ रेडीमेड कपड़ों के अलावा लंदन में खरीदने को और कुछ भी नहीं है। किन्तु आई० सी० एस० लोगों की पॉलिटिकल बाइबिल में शायद लंदन के अलावा और किसी जगह का उल्लेख नहीं है।

तरुण के लिये लंदन में शॉपिंग का तो कोई मतलब नहीं है। उसने तो तय किया है कि तीन दिन की छुट्टी लेकर वहाँ तीन की जगह छः

दिन वितायेगा। दो-चार दिन वन्दना-विकास के साथ रहकर यार-दोस्तों से मिलेगा। यार-दोस्तों को यह तो बता दिया है कि वह लंदन होकर र्बलिन जा रहा है, पर यह नहीं बताया कि लंदन कब पहुँच रहा है। बस, वन्दना को केवल भेजा है—रीचिंग लंदन, ए० आई० फ्लाइट फाइव-जीरो-वन, फ्राइडे।

एयर इंडिया का बोइंग विद्युत गति से लंदन की ओर भाग रहा है, पर तब भी तरुण धैर्यपूर्वक नहीं बैठ पा रहा है मानों। उसके धीरज और बोइंग की गति में प्रतियोगिता चल ही रही थी कि कानों में सुनाई दिया, मे आई हैव योर अटेन्शन प्लीज़, ! वी विल वी लैंडिंग ऐट लंडन हिथरो एयरपोर्ट इन ए फ्यू मिनिट्स फ्राम नाउ। काइंडली फॉसेन योर सीट बेल्ट ! (कृपया सुनिये...कुछ ही मिनिटों में हम लंदन हिथरो एयरपोर्ट पर उतरने वाले हैं। कृपा करके अपने-अपने सीट वेल्ट बाँध लीजिये।)

प्लेन से उतरकर टर्मिनल बिल्डिंग में घुसने से पहले ऊपर विजिटर्स गैलरी की ओर देखे बिना नहीं रह सका तरुण। आशा के अनुसार वन्दना और विकास खड़े आनन्दोल्लास से भरकर हाथ हिला रहे थे। दोनों के मुख परम तृप्ति की मुस्कुराहट से प्रदीप्त थे।

अच्छा लगा तरुण को। क्षण भर के लिये मन जैसे कहीं उड़ गया। निकट के मनुष्यों का प्यार पाना तो जीवन में संभव नहीं हुआ। पूर्णतया रिक्त व निःस्व होकर कर्मजीवन शुरू किया था उसने। इन्द्राणी-विहीन जीवन में एक पल के लिये भी शान्ति मिलेगी इसकी कल्पना तक नहीं कर पाता था। इन्द्राणी के अभाव की व्यथा आज भी उसी तरह विद्यमान है। बूढ़ीगंगा के किनारे यौवन के प्रारम्भिक दिनों में जिसे साथ लेकर जीवन-सूर्य की प्रथम किरण देखी थी, आज भी उसे लेकर भविष्य के स्वप्न देखता है। इतनी बड़ी ट्रेजेडी के बाद भी तरुण के जीवन में तृप्ति है, आनन्द है। वन्दना है, और भी बहुत से लोग हैं !

शुरू के दो दिन तो होबर्न के उनके फ्लैट से ही नहीं निकल पाया तरुण। कितनी ही बार कहा, 'चलो घूम आयें। मार्बल आर्च के पास बैठ कर थोड़ी देर बातचीत करेंगे फिर पिकाडेली में खा-पीकर लौट आयेंगे।'

वन्दना कहती, 'मार्बल आर्च और बांड स्ट्रीट देखकर क्या होगा ? और फिर खाना बाहर क्यों खाओगे ? मेरा बनाया खाना क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगता ?'

क्या जवाब देता इसका तरुण। कुछ नहीं बोला, चुप बैठा मुस्कुराता रहा।

दो दिन तो विकास भी आफिस नहीं गया। काम का जोर अधिक होने के कारण और छुट्टी नहीं मिली। वन्दना तो दस दिन की छुट्टी लिये बैठी थी।

उस दिन दोपहर को लंच के बाद वन्दना और तरुण बातें कर रहे थे—अमेरिका की, यूनाइटेड नेशन्स की, व्यक्तिगत, पारिवारिक। जाने कहाँ-कहाँ की बातें, जैसे खत्म नहीं हो रही थीं। अचानक जैसे कुछ याद आ गया वन्दना को। उत्तेजित होकर बोली, 'अच्छा दादा, तुम मन्सूर अली नाम के किसी आदमी को जानते हो ?'

एकदम से तरुण ने पूछा, 'किस मंसूर अली को ?'

'वह कह रहे थे कि ढाका में तुम उनके घर के पास ही.... ।'

अब तरुण चंचल हो उठा। पूछा 'भूरी-भूरी सी आँखें हैं ?'

'हाँ, हाँ।'

'हँसाता खूब है ?'

'बिल्कुल ठीक।'

अब और लेटा नहीं रह सका तरुण। उठकर बैठ गया, 'कहाँ मिला था हतभागा ?'

बड़ी खुश हुई वन्दना, आशा की किरण दिखाई दी। तरुण ने कभी उसे इन्द्राणी के बारे में नहीं बताया। बताने वाला रिश्ता भी नहीं था। इसके अलावा अपनी मान-मर्यादा व सम्भ्रम की रक्षा करके तरुण को दूसरों के साथ घुलना-मिलना आता है। प्रत्यक्ष रूप से कुछ न सुनने पर भी वन्दना को अनुमान हो गया था और फिर घनिष्ठ रूप से मिलने के बाद तो उसे विश्वास हो गया था कि इस दुनिया में तरुण किसी को ढूँढ़ता फिर रहा है। मन्सूर अली से बातचीत करके सारी बातें बिल्कुल ही स्पष्ट हो गई थीं।

यही कारण था कि तरुण की बात सुनकर वह भी अस्थिर हो उठी। बोली, 'हमारे इस बार के नववर्ष के उत्सव में मुलाकात हुई

थी। बातों-बातों में ही तुम्हारा जिक्र भी आ गया था।'

'मेरे बारे में पूछ रहा था ?'

'हम लोगों के पास ही ढाका के कोई मिस्टर सरकार खड़े थे। उन्हीं से मिस्टर अली तुम्हारा नाम लेकर कह रहे थे कि तुम लोग एक ही मुहल्ले में रहते थे।'

'हाँ, हाँ। सिर्फ एक मुहल्ले में ही नहीं रहते थे, बल्कि एक ही स्कूल में पढ़ते भी थे।'

'अच्छा ?'

'और क्या ? उसे हम लोग कभी मन्सूर अली थोड़े ही कहते थे।'

'तो फिर क्या कहते थे ?'

'मसूर कहकर बुलाया करते थे। बड़ा मजेदार लड़का था। मसूर कहते ही वह पूछता, 'क्या कह रहे हो ससुरे ?'

अचानक आनन्द, उल्लास से तरुण का सारा मुख उच्छ्वसित हो उठा। खिड़की से बाहर लंदन के धुंधले आकाश में भी उसे अतीत के वह दिन स्पष्ट दर्शित होने लगे।

पेटू मन्सूर का कितना मज़ाक बनाया करते थे वह लोग। पर एक बात थी, जो काम किसी के बस का नहीं होता था, वह भी मन्सूर चुटकी बजाते कर लेता था। इसीलिये तरुण की माँ मन्सूर को बहुत चाहती थी। रमना के विलास वकील की लड़की की शादी में मन्सूर नहीं होता तो जाने क्या हो जाता। विवाह रात के अंतिम प्रहर में था। विलास बाबू की नाई के साथ कुछ हील-हुज्जत हो गई। फलस्वरूप नाई चला गया। इधर लग्न का मुहूर्त्त निकला जा रहा था और नाई का कहीं पता नहीं था। बड़े परेशान थे सब। अचानक मन्सूर गया और नाई के सोलह-सत्रह साल के लड़के को पकड़ लाया। चैन की साँस लेकर सबने मन्सूर की पीठ ठोकी खूब। वही मन्सूर लन्दन आया था ?

'वह आजकल रेडियो पाकिस्तान में हैं। बी०बी०सी० में कोई ट्रेनिंग लेने आये थे।'

'उसे कैसे पता चला कि मैं लन्दन में था ?'

'यह तो नहीं मालूम। हो सकता है किसी पाकिस्तानी डिप्लोमेट से तुम्हारे बारे में सुना हो।'

बातचीत चलती रही। कुछ देर बाद कुछ द्विधा व संकोच का

बोध करने लगी वन्दना; लेकिन तब भी पूछे बिना नहीं रह सकी—

'अच्छा दादा ढाका में तुम्हारे वहाँ चिकाटोला नामक कोई...?'

'चिकाटोला नहीं, टिकाटुलि।'

'मिस्टर अली उस टिकाटुलि की रायवाड़ी की बात भी कर रहे थे।'

टिकाटुलि की रायवाड़ी का नाम सुनते ही तरुण का हृत्पिड मानों यकायक रुक गया। घबराहट से मुँह का रंग उड़ गया। बड़ी मुश्किल से स्वयं को संयत करके पूछा, 'रायवाड़ी के बारे में क्या कह रहा था?'

'विशेष कुछ नहीं। बस दुःख प्रकट करते हुए कह रहा था कि दंगे में उन बेचारों का सर्वनाश हो गया। और कह रहे थे कि उस घर की लड़की इन्द्राणी...'

एकदम से भँवें सिकुड़ गईं तरुण की। गले का स्वर काँप उठा। बीच में ही बोला, 'क्या? क्या हुआ इन्द्राणी का? मारी गई ना?'

तरुण के दोनों हाथ पकड़ कर वन्दना बोली, 'नहीं-नहीं दादा, वह जीवित है।'

'क्या कहा वन्दना?'

'वह मारी नहीं गई।'

मन ही मन जैसे बार-बार दुहराया तरुण ने, 'इन्द्राणी जीवित है...? इन्द्राणी जीवित है ...?'

सिर नीचा करके, कुछ सोचते-सोचते जाने कहाँ डूब गया तरुण। शायद महादुर्योग की रात्रि में महासागर के बीच दिग्भ्रान्त नाविक की तरह उसे भी दूर—बहुत दूर प्रकाश की छोटी सी किरण दिखाई दे गई थी।

कुछ देर दोनों चुप बैठे रहे। आखिर वन्दना ही बोली, 'हाँ दादा, वह जीवित हैं। तुम एक बार अपना ट्रांसफर कराकर ढाका चले जाओ ना!'

मुँह उठाकर सिर हिलाते हुए तरुण ने कहा, 'नहीं वन्दना, नहीं, मैं ढाका नहीं जाऊँगा। वहाँ जाकर मैं चैन से नहीं रह पाऊँगा।'

'कोशिश करने पर तुम उन्हें ढूँढ़ लोगे।'

एक लम्बी गहरी साँस छोड़कर तरुण बोला, 'उसे ढूँढ़ना बड़ा मुश्किल है।'

'तुम मिस्टर अली को एक चिट्ठी तो डाल दो।'

'नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता ?'

'क्यों नहीं हो सकता ?'

'फॉरेन सर्विस का आदमी होकर पाकिस्तान गवर्नमेन्ट के किसी अफसर से पत्र-व्यवहार करना उचित नहीं है।'

खबर इतनी अप्रत्याशित थी कि स्थिर होकर कुछ सोचने-समझने की क्षमता नहीं रही तरुण में। वन्दना ने ही कुछ सोचकर कहा, 'एक काम करो ना दादा। कराची में अपने हाईकमीशन के किसी आदमी से कह दो कि मन्सूर अली से जरा मिलें।'

वन्दना का प्रस्ताव सुनकर तरुण का जैसे वास्तविक ज्ञान लौट आया। 'हाँ, यह ठीक कह रही हो तुम ! मन्सूर क्या कराची में ही पोस्टेड है ?'

'वह तो यही कह रहे थे।'

पल भर कुछ सोचकर फिर वन्दना बोली, 'तरुण दादा, तुम ढाका के अपने हाईकमीशन के किसी आदमी से टिकाटुलि के संबंध में पता लगाने को क्यों नहीं कहते ! हो सकता है किसी को मालूम ही हो।'

दबे स्वर में तरुण ने जवाब दिया, 'हाँ यह भी किया जा सकता है।'

वन्दना को कुछ खरीद-फ़रोख्त करनी थी। इसलिये उठ खड़ी हुई।

'कहाँ चली ?'

'यही, जरा बाजार तक जा रही हूँ।'

'क्यों ?'

'आज तीन दिन हो गये घर से निकले हुआ। कुछ सामान-वामान......!'

मुस्कुरा कर तरुण ने कहा, 'अब बाजार जाने की जरूरत नहीं है। विकास के आते ही सब साथ चलेंगे। आज वाहर ही खायेंगे !'

वहुत दिन बाद अचानक आशा की किरण देखने के वाद तरुण का मन खुशी से नाच उठा था। अतः आज वन्दना ने वाधा नहीं दी। वोली, 'ठीक है। आज खूब खुशी मनायेंगे। तुम वैठो, मैं वस अभी आई।'

'कुछ लाना है ?'

'हाँ, जरा कॉफी ले आऊँ।'

'नहीं, नहीं, इस वक्त मत जाओ। बल्कि मैं विकास को फोन कर देता हूँ कि हम लोग आ रहे हैं, वह वेट करे।'

'एक प्याला कॉफी तो पी लें ?'

'क्या जरूरत है ? अभी निकल पड़ते हैं। तीनों साथ ही कहीं बैठ कर पी लेंगे।'

गुरु-गम्भीर धीर-विनम्र तरुण मानों हठात् चंचल हो उठा था। बहुत दिनों की जमी बर्फ ने मानों प्रभात के सूर्य की रंगीन किरण का स्पर्श पाकर नरम होना शुरू कर दिया था।

रात को सोने से पहले पलङ्ग पर पड़े-पड़े वन्दना विकास से बोली, 'खबर सुनने के बाद दादा एकदम कैसे बदल गये हैं, देख रहे हो ?'

'हाँ। दुनिया में और कोई तो है नहीं। अतः खबर सुनकर खुशी होना स्वाभाविक ही है।'

'जिस दिन दोनों एक दूसरे से मिल जायेंगे, क्या होगा उस दिन ? कैसा लगेगा ?'

मजाक करते हुए विकास ने कहा, 'हम जिस दिन पहली बार मिले थे, उससे अधिक और क्या होगा ?'

एक हल्की सी चपत लगाकर वन्दना बोली, 'तुम्हारे जैसा असभ्य आदमी इसके अलावा और कहेगा भी क्या ?'

बस एक दिन और बाकी रह गया था। सारा दिन भाग-दौड़ करके तरुण पुराने सहकर्मियों व मित्रों से मिला। छोटा-मोटा काम था, वह भी निपटा लिया।

रात को वन्दना ने अपने हाथों से खाना बनाकर खिलाया। फिर थोड़ी देर बैठकर सबने बातचीत की और सोने चले गये।

दूसरे दिन सुबह ब्रेकफास्ट करके एयरपोर्ट रवाना हुए सब। वन्दना ने रोकने का बहुत प्रयत्न किया पर आँखें छलछला ही आईं। सान्त्वना देते हुए तरुण ने कहा, 'अब दुख किस बात का है ? साल में एक बार तुम लोग आ जाया करना, मैं भी आ जाया करूँगा।'

और बी० ई० ए० के विमान से तरुण बर्लिन चल दिया।

कलकत्ते के बहूबाजार की बैठकों तथा रासबिहारी सदर्न एवेन्यू में आश्चर्यजनक पार्थक्य होते हुए भी तुलना की जा सकती है; पर

लंदन के साथ बर्लिन की तुलना ? असम्भव, अवास्तविक एवं कल्पनातीत है। काशीपुर के पुराने जमींदार की अट्टालिका के गेट पर बनी सीमेंट की सिंह मूर्तियों को देखकर बच्चों के मन में कौतूहल उत्पन्न हो सकता है, लेकिन आज के बृहद् समाज के लिये वह मात्र कौतुक की वस्तु है। वह जमींदारगृह परम्परागत प्रमाण तो हैं पर उनका दारिद्रय नजरों से छुपा नहीं रहता। लन्दन भी मानों काशीपुर-बरानगर के जमींदारगृहों का एक बृहत्तर संस्करण मात्र है। अतएव बर्लिन के आगे कहीं ठहरता ही नहीं।

केवल लन्दन ही क्यों, न्यूयार्क के साथ भी बर्लिन की कोई तुलना नहीं की जा सकती। पृथ्वी का सबसे धनी देश है अमेरिका और न्यूयार्क उसके सिर का ताज है—शो विंडो। लेकिन तब भी वहाँ के डाउन टाउन के लोगों का दारिद्रय, भीड़ भरे टाइम्स स्क्वेयर की चमक-दमक के बीच भिखारी देखकर आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दब जाती है। क्या बेकारी ! अमेरिका के सैकड़ों नागरिक आज भी जीवन की सुविधाओं से वंचित हैं ?

और बर्लिन में बेकार ? भिखारी ? हो ही नहीं सकता। और अगर कोई दिखाई पड़ा होगा तो अवश्य ही उसका मस्तिष्क विकृत होगा।

यह सब पहले से ही तरुण को ज्ञात है । पोस्टिंग कभी नहीं हुई वहाँ उसकी, पर आया गया तो कई बार है।

# दस

बंगाल व पंजाब की तरह जर्मनी भी दो टुकड़ों में बँट गया है, लेकिन कलकत्ते या लाहौर की तरह बर्लिन किसी को पूरा नहीं मिला। एक नहीं, दो नहीं—चार टुकड़े हो गये बर्लिन के—ब्रिटिश सेक्टर, फ्रेंच सेक्टर, अमेरिकन सेक्टर, रशियन सेक्टर। ऐलाइड फोर्सेस के तीन सेक्टरों को मिलाकर पश्चिम बर्लिन और रशियन सेक्टर पूर्वी बर्लिन कहलाता है। बाह्यतः एवं कार्यतः पूर्णतया मुक्त होते हुए भी पश्चिम बर्लिन कानून के अनुसार आज तक अंग्रेज, फ्रांस व अमरीका के अधीन है। शहर का चक्कर लगाने निकलो तो बार-बार दृष्टिगत होगा—यू आर लीविंग ब्रिटिश सेक्टर, यू आर एन्टरिंग फ्रेंच सेक्टर अथवा अमेरिकन सेक्टर।

विराट एवं विचित्र शहर है बर्लिन भी। बीसवीं शताब्दी के इतिहास में बार-बार इसका उल्लेख मिलता है। क्षेत्रफल में पूर्व बर्लिन से पश्चिम बर्लिन कुछ बड़ा है। दोनों बर्लिन एक साथ मिला दिये जायें तो वाशिंगटन से साढ़े तीन गुना बड़ा बैठेगा। आज का पश्चिम बर्लिन ही पेरिस से बड़ा है।

यद्यपि दो जर्मनी, दो बर्लिन दिन और रात की तरह सत्य हैं, तथापि भारत के साथ कूटनैतिक संबंध केवल पश्चिम जर्मनी के ही हैं। कॉन्सल जनरल का आफिस पश्चिम बर्लिन में है। उसी कॉन्सल जनरल आफिस के पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट का प्रधान बन कर तरुण बर्लिन जा रहा है।

साधारणतः कॉन्सल जनरल के आफिस में दो काम होते हैं—कान्सुलर और कमर्शियल। अर्थात् पासपोर्ट-विसा एवं व्यवसाय-वाणिज्य के मामलों में सहायता एवं सहयोग करना। कहीं-कहीं इसके साथ प्रचार विभाग भी जुड़ा होता है। बर्लिन भी यदि सैन फ्रैन्सिस्को की

तरह एक विराट शहर तथा व्यवसाय का केन्द्र होता, तो इन दोनों-तीनों आफिस का काम होता। लेकिन बर्लिन अन्तर्जातीय राजनीति का अन्यतम केन्द्र है। विश्व की दो बड़ी विवादग्रस्त शक्तियाँ यहाँ परस्पर उन्मुख हैं। फलस्वरूप केवल पासपोर्ट-विसा एवं एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का काम ही नहीं होता। कॉन्सुलेट का कूटनीतिक विभाग कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उसी महत्त्वपूर्ण पोलिटिकल डिविज़न का प्रधान बनाया गया है तरुण को।

पूर्वी जर्मनी में भारतीय कूटनीतिक मिशन नहीं है, इसीलिये पूर्वी-बर्लिन में दूतावास होने का प्रश्न ही नहीं उठता। विश्व के अन्यतम व प्रधान औद्योगिक देश पूर्व जर्मनी के साथ भारत के केवल व्यापार संबंध होने के कारण वहाँ ट्रेड मिशन अवश्य है।

दो भागों में विभक्त बंगाल के बंगालियों के लिये द्विखंडित बर्लिन की कहानी हास्य का कारण हो सकती है। पश्चिम बर्लिन पश्चिम जर्मनी के अन्तर्गत नहीं है, तब भी पश्चिम जर्मनी के अधिकतर सरकारी कर्मचारी राजधानी बॉन की अपेक्षा पश्चिम बर्लिन में काम करते हैं। दो टुकड़ों में बँट जाने पर भी म्युनिसपैलिटी एक ही है। पृथ्वी के ऊपर की लोकल ट्रेन्स 'यू-वन' पूर्वी-जर्मनी चलाता है और अन्दर की पश्चिमी जर्मनी। प्रायः पचास हजार पूर्व बर्लिन निवासी प्रतिदिन काम करने पश्चिम बर्लिन आते हैं और कई हजार व्यक्ति पश्चिम बर्लिन से पूर्वी बर्लिन जाते हैं।

आश्चर्य में डालने वाली और भी बहुत सी बातें हैं। पश्चिम बर्लिन के जो बाईस व्यक्ति बॉन में प्रतिनिधित्व करते हैं, उनमें एक पूर्वी बर्लिन का होता है। कल्पना कर सकते हैं कि खुलना या बारिसाल का निवासी होकर कलकत्ते से निर्वाचित हो और दिल्ली पार्लियामेंट का सदस्य बन कर काम करे कोई ?

कलकत्ते की तरह पूर्वी जर्मनी के थियेटर भी अधिक विख्यात हैं। अतः पश्चिम बर्लिन के थियेटर प्रेमी धनी व्यक्तियों का समूह रोज संध्या से पूर्व पूर्व बर्लिन जाकर थियेटर देखता है। इसके अलावा अमेरिकन पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिये अमेरिकन प्रचार दफ्तर की लायब्रेरी विश्व की वृहत्तम लायब्रेरी मानी जाती है और उसी पश्चिम बर्लिन के यू० एस० आई० ए० में हजारों पूर्व बर्लिन निवासी कार्य करते हैं।

उसी बर्लिन में आया तरुण। पश्चिम बर्लिन का टेम्पलहाफ् एयर-पोर्ट शहर के बीचोबीच है। कलकत्ता के वेलिंगटन स्क्वेयर जैसा नहीं तो पार्क सर्कस जैसा समझ लो। एयरपोर्ट भी अपने में अभिनव है। मैदान में रनवे के किनारे या टर्मिनल बिल्डिंग से मील भर दूर प्लेन में चढ़ना या उतरना नहीं पड़ता। प्लेन टर्मिनल बिल्डिंग के बिल्कुल अन्दर हॉल में रुकता है। प्लेन में अन्दर जाते या बाहर आते समय एयर होस्टेस की कृत्रिम हँसी देखने के बाद यात्रियों को धूप या वर्षा की बौछार नहीं झेलनी पड़ती।*

किसी आवश्यक कार्यवश अटक जाने के कारण कॉन्सल जनरल स्वयं तरुण की अभ्यर्थना के लिए एयरपोर्ट नहीं आ सके थे। सहकर्मी मिस्टर सूरी और मिस्टर दिवाकर को भेज दिया था।

तरुण बोला, 'आप लोगों ने क्यों कष्ट किया? आइ ऐम सारी, मेरे कारण आप लोगों को कष्ट उठाना पड़ा।'

हँस कर मिस्टर दिवाकर ने कहा, 'आप भी क्या बात कर रहे हैं सर! आप लोगों की देखभाल करने के अलावा हम लोगों को और काम ही क्या है?'

अनुमोदन करते हुए मिस्टर सूरी ने कहा, 'दैट्स राइट सर।'

तरुण का फ्लैट हंसा क्वार्टर में ठीक किया गया था। पूरे फ्लैट का एक चक्कर लगवाकर दिवाकर और सूरी बोले, 'सर आप एक बार सी० जी० की वाइफ को टेलीफोन कर लीजिये।'

'क्यों? एनीथिंग स्पेशल?'

'यह तो नहीं मालूम! पर सी० जी० ने बार-बार कहा है।'

हँस पड़ा तरुण। उसको इस प्रकार हँसते देखकर दिवाकर और सूरी कुछ समझ न पाकर एक दूसरे का मुँह देखने लगे। उनको अस-मंजस में पड़ा देखकर तरुण बोला, 'टेलीफोन करने की जरूरत नहीं है। आप लोग कृपया मिसेस टंडन से कहते जाइयेगा कि मैं बस जरा देर में पहुँच रहा हूँ अभी।'

---

*दोनों बर्लिन की यह कहानी सन् १९६१ में 'बर्लिन प्राचीर' बनने से पहले की पटभूमिका में लिखी गई है। क्योंकि इस रचना का घटनाकाल भी उसी समय का है।

जाते-जाते दिवाकर कह गया, 'कुछ ही देर में गाड़ी पहुँच जायेगी सर।'

'दैट्स आल राइट।'

उन दोनों के बिदा लेने के बाद तरुण ने घूमकर एक बार फिर फ्लैट का निरीक्षण किया। छोटा सा था। छोटा फ्लैट ही चाहा था उसने। एक बड़ा लिविंग रूम, एक बीच की साइज़ का बेडरूम, एक छोटी स्टडी और किचेन, टायलेट इत्यादि। कमरों के बाहर दो बालकनी थीं, एक छोटी, एक बड़ी। बड़ी लिविंग रूम के साथ और छोटी बेडरूम के साथ। दोनों बालकनियों में अल्यूमिनियम की डेकचेयर्स पड़ी हुई थीं। सोफा, बेड, लैम्पस्टैन्ड, छोटी बड़ी टेबिलें, डाइनिंग टेबिल व कुर्सियाँ—आवश्यकता की हर वस्तु थी। अपार्टमेन्ट में कहीं कोई त्रुटि नहीं थी।

संसार में कुछ देश ऐसे भी हैं, जहाँ कला और कलाकार का समन्वय हुआ है। उन गिने-चुने देशों की प्रत्येक वस्तु में कलाकार की सहज-सुलभ मनोवृत्ति एवं रुचि का परिचय सहज ही मिल जाता है। राइफल हर देश में बनती है—अमेरिका, रशिया से लेकर भारत के इछापुर तक में राइफलों का निर्माण होता है। लेकिन चेकोस्लोवाकिया ही एकमात्र ऐसा देश है जिसकी राइफल में बहुत ही सुन्दर कलात्मकता पाई जाती है। लोहे के बने पुल कलकत्ता, न्यूयार्क, लंदन हर बड़े शहर में हैं; परन्तु पेरिस के उन प्राणहीन पुलों में समस्त फ्रांसीसी ज़ाति की कलात्मक रुचि का जो परिचय मिलता है, वह किसी और देश के पुलों में नहीं मिलता। जापान और जर्मनी इस संबंध में एक-रूप हैं; जहाँ प्रयोग की हर वस्तु में प्रयोजन के साथ-साथ रुचि का भी समन्वय दिखाई देता है।

विश्व के बड़े-बड़े सब शहरों में ही आधुनिक अपार्टमेंट हैं, किन्तु बर्लिन के हंसा क्वार्टर के अपार्टमेन्ट में जाने क्या तो है जो मन को बाँध लेता है। यह अतिरिक्तता जिसे कोई नाम देना मुश्किल होता है जाति-वैशिष्ट्य है। रशिया राकेटों के साथ-साथ बलशोई थियेटर और बैलेरिना के लिये विश्व-विख्यात है। जापान केवल इलेक्ट्रोनिक्स ही नहीं वरन् खूबसूरत गुड़ियाओं के निर्माण में अपना सानी नहीं रखता। स्विस घड़ियों की जितनी माँग है उतनी ही स्विस चाकलेट भी सबको प्रिय हैं। बर्लिन में भी बड़े-बड़े कल-कारखानों के साथ-साथ

बर्लिन फिलहारमोनिक आर्केस्ट्रा का विशिष्ट स्थान है।

बाल्कनी में खड़े होकर चारों ओर देखना अच्छा लग रहा था तरुण को। दूर रेडियो टावर पर नजर पड़ते ही उसे फिलहारमोनिक व सिम्फोनी आर्केस्ट्रा याद आ गया। गत वर्ष ही तो न्यूयार्क में हावर्ट वन् कर्जन की परिचालना में बर्लिन फिलहारमोनिक आर्केस्ट्रा सुना था। और भी जाने कितनी बातें याद आ गईं—

रमना के मजूमदारों का लड़का विनय बी० ए० में फेल हो जाने पर घर छोड़कर भाग गया था। बहुत खोज-खबर की पर कुछ पता नहीं चला। अखबारों में फोटो के साथ विज्ञापन भी छपवाया था पर विनय बाबू लौटकर नहीं आये। और लौटते भी कैसे। जिस दिन विज्ञापन निकला वह तो अरब सागर की लहरों पर झूल रहे थे।

देखते-देखते सालों गुजर गये। ढाका के लोग विनय बाबू को करीब-करीब भूल चुके थे। यहाँ तक कि बातचीत में अब उनका नाम आना बंद हो गया था। लेकिन इन्द्राणी अपने विने काकू को नहीं भूली थी। और भूलती भी कैसे? उन्हीं की गोद में चढ़कर तो वह घूमने जाती थी, खरीदवा कर लाजेन्जेस खाती थी। विने काकू ही तो उसकी हर जिद हँसकर पूरी किया करते थे। विने काकू चले गये थे—धीरे-धीरे इन्द्राणी बड़ी हो गई थी, लेकिन उनकी दी हुई गुड़ियाएँ अभी तक खूब सँभाल कर रक्खी थीं उसने।

एक अरसे बाद अचानक एक दिन विने काकू ढाका लौट आये। सालों तक जर्मनी रहकर उन्होंने अपना भाग्य बदल डाला था, अकल्पनीय सफलता प्राप्त की थी जीवन में। युद्ध शुरू होने के बाद मजबूर होकर स्वीडन में आश्रय लेना पड़ा था। फिर युद्ध समाप्त होने पर भी मातृभूमि लौटना नहीं हुआ।

उन्हीं विने काकू के पास जाने में इन्द्राणी को संकोच हो रहा था, शर्म आ रही थी। बिना कुछ बताये तरुण कालेज जाते समय विने काकू के यहाँ गया था।

'काकू मेरा नाम तरुण है। आप शायद भूल गये हैं।'

'तुम्हारे पिता जी का नाम क्या है?'

'कनाई मित्र।'

'तुम उसी वकील बाड़ी के कनाई दा के लड़के हो?'

हँसते-हँसते तरुण ने जवाब दिया, 'हाँ, बिल्कुल ठीक कहा आपने।'

और तब प्यार से विनय बाबू ने तरुण को अपने निकट खींच लिया था। बातचीत के अन्तर्गत ही तरुण ने इन्द्राणी की बात की थी।

'वह गोल-मटोल छोटी-सी लड़की! जो मुझे विने काकू कहा करती थी?' एकदम से विनय बाबू बोले थे।

'हाँ।'

और जैसे कुछ उदास से हो गये विनय बाबू। खोये हुए अतीत में मन जैसे खो गया। कुछ देर बाद बोले, 'वह क्या अब भी वैसी ही हँस-मुख, उतनी ही लाड़ली है?'

क्या जवाब देता तरुण इस बात का? चुप रहा। थोड़ी देर चुप रहकर विनय बाबू फिर बोले, 'जानते हो तरुण, विदेश जाने के बाद शुरू-शुरू के दिनों में छोटे बच्चों को टॉफी खाते देखकर उसकी याद आ जाती थी। बड़ी इच्छा होती थी कि उसकी फोटो पास रखूँ पर हो नहीं सका।'

'क्यों नहीं हो सका काकू?' जिज्ञासा प्रकट की तरुण ने।

हँस कर विनय बाबू ने जवाब दिया, 'घर से भाग कर गया था ना, फिर ढाका किसी को चिट्ठी कैसे लिख सकता था?'

इन्द्राणी को नहीं आना पड़ा, विनय बाबू ही उससे मिलने गये थे। साथ जेबें भरकर टॉफी ले जाना नहीं भूले वह।

बर्लिन के हंसा क्वार्टर की बालकनी में खड़े-खड़े तरुण को यह सारी बातें याद आ गईं। याद आया एक दिन विने काकू ने कहा था, 'ढाका में रहकर इलिश मछली खाकर और गंगाजल पीकर जीवन बिताने से क्या लाभ। एक दिन चुपचाप जर्मनी पहुँच जाओ और बर्लिन चले आओ।'

जर्मनी की नागरिकता ग्रहण करके ढाका के वही विने काकू बर्लिन में ही बस गये थे, यह तरुण को मालूम था। उसने निश्चय किया कि अपने उस परम शुभाकांक्षी को वह ढूँढ़ेगा जरूर।

विने काकू की बात याद आते ही इन्द्राणी की स्मृति और भी तीव्र होकर मन को मथने लगी। यहीं अगर इधर की बाल्कनी में डेकचेयर पर बैठकर इन्द्राणी गाना शुरू कर देती तो....

अचानक टेलीफोन की घंटी बज उठी। यादों का सिलसिला टूट

बर्लिन फिलहारमोनिक आर्केस्ट्रा का विशिष्ट स्थान है।

बालकनी में खड़े होकर चारों ओर देखना अच्छा लग रहा था तरुण को। दूर रेडियो टावर पर नजर पड़ते ही उसे फिलहारमोनिक व सिम्फोनी आर्केस्ट्रा याद आ गया। गत वर्ष ही तो न्यूयार्क में हार्बर्ट वन् कर्जन की परिचालना में बर्लिन फिलहारमोनिक आर्केस्ट्रा सुना था। और भी जाने कितनी बातें याद आ गईं—

रमना के मजूमदारों का लड़का विनय बी० ए० में फेल हो जाने पर घर छोड़कर भाग गया था। बहुत खोज-खबर की पर कुछ पता नहीं चला। अखबारों में फोटो के साथ विज्ञापन भी छपवाया था पर विनय बाबू लौटकर नहीं आये। और लौटते भी कैसे। जिस दिन विज्ञापन निकला वह तो अरब सागर की लहरों पर झूल रहे थे।

देखते-देखते सालों गुजर गये। ढाका के लोग विनय बाबू को करीब-करीब भूल चुके थे। यहाँ तक कि बातचीत में अब उनका नाम आना बंद हो गया था। लेकिन इन्द्राणी अपने विने काकू को नहीं भूली थी। और भूलती भी कैसे? उन्हीं की गोद में चढ़कर तो वह घूमने जाती थी, खरीदवा कर लाजेन्जेस खाती थी। विने काकू ही तो उसकी हर जिद हँसकर पूरी किया करते थे। विने काकू चले गये थे—धीरे-धीरे इन्द्राणी बड़ी हो गई थी, लेकिन उनकी दी हुई गुड़ियाएँ अभी तक खूब सँभाल कर रक्खी थीं उसने।

एक अरसे बाद अचानक एक दिन विने काकू ढाका लौट आये। सालों तक जर्मनी रहकर उन्होंने अपना भाग्य बदल डाला था, अकल्पनीय सफलता प्राप्त की थी जीवन में। युद्ध शुरू होने के बाद मजबूर होकर स्वीडन में आश्रय लेना पड़ा था। फिर युद्ध समाप्त होने पर भी मातृभूमि लौटना नहीं हुआ।

उन्हीं विने काकू के पास जाने में इन्द्राणी को संकोच हो रहा था, शर्म आ रही थी। बिना कुछ बताये तरुण कालेज जाते समय विने काकू के यहाँ गया था।

'काकू मेरा नाम तरुण है। आप शायद भूल गये हैं।'

'तुम्हारे पिता जी का नाम क्या है?'

'कनाई मित्र।'

'तुम उसी वकील बाड़ी के कनाई दा के लड़के हो?'

हँसते-हँसते तरुण ने जवाब दिया, 'हाँ, बिल्कुल ठीक कहा आपने।'

और तब प्यार से विनय बाबू ने तरुण को अपने निकट खींच लिया था। बातचीत के अन्तर्गत ही तरुण ने इन्द्राणी की बात की थी।

'वह गोल-मटोल छोटी-सी लड़की ! जो मुझे विने काकू कहा करती थी ?' एकदम से विनय बाबू बोले थे।

'हाँ।'

और जैसे कुछ उदास से हो गये विनय बाबू। खोये हुए अतीत में मन जैसे खो गया। कुछ देर बाद बोले, 'वह क्या अब भी वैसी ही हँस-मुख, उतनी ही लाड़ली है ?'

क्या जवाब देता तरुण इस बात का ? चुप रहा। थोड़ी देर चुप रहकर विनय बाबू फिर बोले, 'जानते हो तरुण, विदेश जाने के बाद शुरू-शुरू के दिनों में छोटे बच्चों को टॉफी खाते देखकर उसकी याद आ जाती थी। बड़ी इच्छा होती थी कि उसकी फोटो पास रखूँ पर हो नहीं सका।'

'क्यों नहीं हो सका काकू ?' जिज्ञासा प्रकट की तरुण ने।

हँस कर विनय बाबू ने जवाब दिया, 'घर से भाग कर गया था ना, फिर ढाका किसी को चिट्ठी कैसे लिख सकता था ?'

इन्द्राणी को नहीं आना पड़ा, विनय बाबू ही उससे मिलने गये थे। साथ जेबें भरकर टॉफी ले जाना नहीं भूले वह।

बर्लिन के हंसा क्वार्टर की बाल्कनी में खड़े-खड़े तरुण को यह सारी बातें याद आ गईं। याद आया एक दिन विने काकू ने कहा था, 'ढाका में रहकर इलिश मछली खाकर और गंगाजल पीकर जीवन बिताने से क्या लाभ। एक दिन चुपचाप जर्मनी पहुँच जाओ और बर्लिन चले आओ।'

जर्मनी की नागरिकता ग्रहण करके ढाका के वही विने काकू बर्लिन में ही बस गये थे, यह तरुण को मालूम था। उसने निश्चय किया कि अपने उस परम शुभाकांक्षी को वह ढूँढ़ेगा जरूर।

विने काकू की बात याद आते ही इन्द्राणी की स्मृति और भी तीव्र होकर मन को मथने लगी। यहीं अगर इधर की बाल्कनी में ईजीचेयर पर बैठकर इन्द्राणी गाना शुरू कर देती तो....

अचानक टेलीफोन की घंटी बज उठी। यादों का सिलसिला टू

गया। भागकर तरुण ने रिसीवर उठाया—आवाज आई—हैलो....

'हैलो, तरुण स्पोकिंग ?'

'हाँ। मैं तरुण बोल रहा हूँ।''''नमस्कार मिसेस टंडन, हाउ आर यू ?'

'आइ ऐम सारी। इच्छा होते हुए भी मैं एयरपोर्ट नहीं आ सकी।'

'नहीं नहीं, तो उससे क्या हुआ....'

अब और देर नहीं की तरुण ने।

टंडन साहब सरकारी नौकरी से बस बिदा लेने वाले हैं। बर्लिन उनकी लास्ट पोस्टिंग है। फॉरेन सर्विस के अनेकों अफसरों ने टंडन साहब के अधीन किसी न किसी डेस्क पर काम किया है। तरुण ने भी किया है। सब जूनियर मिसेज़ टंडन को यद्यपि भाभी जी कहते हैं पर सम्मान माँ के समान करते हैं। किसी से भी थोड़ी मर्यादा, थोड़ा सम्मान पाकर ही मिसेज़ टंडन विगलित हो जाती हैं। क्षमता से अधिक बदला चुकाये बिना उन्हें चैन नहीं पड़ती।

इसका भी एक कारण है। टंडन साहब ने अध्यापक के रूप में अपना जीवन शुरू किया था। अधीनस्थ कर्मचारियों को आज भी छात्र-वत् समझते हैं।

खाना-पीना खत्म होने पर तरुण बोला, 'जानती हैं भाभी जी, यूनाइटेड नेशन्स छोड़ते हुए मन को बड़ा खराब लग रहा था। पर जैसे ही आपके बनाये खाने की याद आई तो फिर एक मिनट को वहाँ मन नहीं लगा। जल्दी-से-जल्दी पहुँचने की तबियत होने लगी।'

'अब तो तुम्हारे टंडन साहब रिटायर हो रहे हैं। मैं तो खाना बनाकर खिला नहीं पाऊँगी। अब जल्दी से शादी-ब्याह कर लो तो मैं भी आने वाली को खाना वगैरह बनाना सिखाकर रिटायर हो जाऊँ।' हँसकर मिसेस टंडन ने कहा।

'तब तो आपको उम्र भर व्यर्थ ही प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस जन्म में तो यह होने से रहा।'

'ये सब बेकार की बातें छोड़ो तरुण। फॉरेन सर्विस में रहकर भी तुम अब तक इन्द्राणी को नहीं ढूँढ़ सके ?'

जो लोग फॉरेन सर्विस में होते हैं, उनकी अच्छी या बुरी बात सब को पता चल जाती है। जिस तरह सुधीर अग्रवाल जब फॉरेन सर्विस

के दिल्ली आफिस में आया था तो उसके शुद्धाचरण की बात आग की तरह फैल गई थी। ड्रिक्स तो दूर की बात थी, पान-सिगरेट तक नहीं छूता था। प्रति मंगलवार को केवल उपवास ही नहीं करता था, बल्कि इर्विन रोड के हनुमान मंदिर जाकर तब आफिस आता था और सबको प्रसाद बाँटता था। साँझ को घर लौटने पर कोट-पैंट उतार कर, धोती-कुर्त्ता पहन कर घंटों पूजा किया करता था।

जो लोग फॉरेन सर्विस में रहते हुए भी फॉरेन नहीं जाते थे अथवा जा नहीं पाते थे वह उनकी वाहवाही करते थे। लेकिन जो घाट-घाट का पानी पी आये थे, कहा करते—पहले ओवर में ही क्लीन बोल्ड हो जायेगा। इसीलिये आई० एफ० एस० सुधीर अग्रवाल को लोग मज़ाक में आई० जी० बी० एस०—इंडियन गुड ब्वाय सर्विस कहा करते थे।

उसी अग्रवाल की पहली फारेन पोस्टिंग मनीला में हुई। विकृत पश्चिम एवं विस्मृत पूर्व की मिलनभूमि फिलिफाइन्स। ट्रान्सफर एंड अपाइन्टमेन्ट बोर्ड का आदेश सुनकर बहुत से लोग मुस्कुरा दिये थे।

दो-चार अनभिज्ञ प्रवीण व्यक्तियों ने प्रतिवाद करते हुए कहा था, 'इफ यू पिपुल डोन्ट स्पॉयल हिम, अग्रवाल ठीक-ठाक रहेगा।'

विदेश जाने से पहले सुधीर छुट्टी लेकर माँ-बाप से मिलने केवल कानपुर ही नहीं गया, हरिद्वार एवं बनारस भी गया। वहाँ से निर्माल्य, गंगाजल एवं न जाने कितने देवी-देवताओं की तस्वीरें लेकर आया। कनाट प्लेस में शॉपिंग करने से पहले चाँदनी चौक जाकर धूपवत्तियों के दर्जनों डब्बे खरीदे। दूसरे सहकर्मियों के साथ जाकर रिकार्ड भी खरीदे, पर विलायत खाँ, रविशंकर के सितार या लता मंगेशकर के लाइट म्यूज़िक के रिकार्ड नहीं—यूथिका राय, शुभलक्ष्मी के भजनों के रिकार्ड खरीदे।

शुभ दिन शुभ क्षण में सुधीर अग्रवाल चला—सिंगापुर एनरूट टु मनीला।

विदा करने आये लोगों में इंडियन गुड ब्वाय सर्विस का महेश मिश्र भी था। बार-बार आग्रह करते हुए उसने अग्रवाल से कहा था, 'डोन्ट हेज़ीटेट, जिस चीज़ की भी जरूरत हो मुझे लिख देना। मैं भेज दूँगा।'

मनीला पहुँच कर अग्रवाल ने बहुत से लोगों को चिट्ठी लिखी। मिश्र को लिखा, तुम सबके छूट जाने से बड़ा निस्संग अनुभव कर रहा हूँ।

मिस्टर डुरास्वामी का छोटा फ्लैट मुझे दिया गया है। सब ठीक-ठाक कर लिया है। दो-एक सहकर्मी सहायता करने वाले मिल गये हैं। पर शाम के बाद का समय घर में ही बिताता हूँ। सारा शहर शाम होते ही मानों हठात् उन्मत्त हो उठता है। तुम तो जानते हो, मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। इसलिये बस कमरे में बैठा पढ़ता-लिखता रहता हूँ।

और किसी के पास आये ना आये, मिश्र के पास हर हफ्ते मनीला से चिट्ठी अवश्य आती थी। अभी अग्रवाल अच्छे क्लासिकल भजनों के दो-चार रिकार्ड भेजने को लिखता तो कभी वहाँ मनपसन्द किताबें न मिलने की बात लिखकर विद्याभवन की कुछ किताबें भेजने का अनुरोध करता।

कभी वहाँ के नेशनल म्यूजियम के कई शताब्दियों के अस्त्र-शस्त्र व पोशाकों के संग्रह का वर्णन करते हुए लिखता कि उनके अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह पर ही इधर के लोगों के विवर्त्तन का इतिहास लिखा जा सकता है। यहाँ के नेशनल म्यूजियम में पोशाकों के संग्रह में मनुष्य की सृजन-शक्ति किस तरह कदम-कदम कर अग्रसर हुई है परिलक्षित है। हमारे देश में कितनी ही तरह की पोशाकों का व्यवहार होता है; परन्तु दुःख का विषय है कि कहीं उनका संग्रह नहीं किया गया।

निस्संग अग्रवाल शाम को या तो पढ़ता-लिखता या चिट्ठियाँ लिखता। कभी शहर के बारे में लिखता तो कभी सहकर्मियों के बारे में लिखता।.... दिन के समय तो सब कुछ जैसे कैजुअल है--कामकाज, साज़-पोशाक सब। आधी आस्तीन की कमीज़ पहनकर भी फॉरेन मिनिस्टर से मिलने चले जायेंगे। काम करते हैं पर मन शाम होने का इन्तज़ार करता रहता है। रात के नशे के कारण ही दिन का कार्य सम्भव है बस यह समझ लो। केवल होटलों, रेस्टोरेंटों व नाइट क्लबों में ही नहीं घर-घर में आनन्द की महफिल जमती है। लोग अचानक जैसे सदियों पीछे चले जाते हैं। आदिम मनुष्य की तरह हिंस्र हो उठते हैं---स्त्री-पुरुष सभी।... एक हमारे साथी मिस्टर चड्ढा हैं--कैसा जीवन बिता रहे हैं। रोज शाम को जाने कहाँ से एक नई लड़की पकड़ कर अपने फ्लैट में ले आते हैं। कल्पना मात्र से रोमांच होता है, घृणा हो आती है।

अग्रवाल की इन अभिज्ञताओं की कहानी फॉरेन सर्विस के हर व्यक्ति

को पता थी। वाद में उसकी चिट्ठियाँ कम आने की वात भी धीरे-धीरे फैल गई थी।

कुछ ही महीनों में कुछ दूसरी कहानियाँ सुनाई देने लगीं।

मनीला से जिनका ट्रांसफर दूसरी जगह का होता उन्हें अग्रवाल के परिवर्त्तन की कहानी पता थी। देवी-देवताओं का भजन-पूजन खत्म हो गया था। शराब पीकर रास्ते से लड़कियाँ पकड़कर लाने को अशिष्टता समझने वाली भावना जाने कब की विलीन हो गई थी। अब तो अग्रवाल 'जंगल बार' नाइट क्लब में वैठकर फिलीपाइन्स की 'तुरा' नामक शराब पीते हुए गर्लफ्रेन्ड के साथ बात करके ही खुश नहीं होता—शिकार जुटाकर अपने अपार्टमेन्ट में ले आता है।

इसी प्रकार तरुण की कहानी भी फॉरेन सर्विस के हर स्तर पर सुज्ञात थी। मिसेस टंडन भी जानती थीं कि इन्द्राणी को खोकर तरुण भी जीवित लाश के समान रह रहा है। अतः जव इन्द्राणी के विषय में प्रश्न करने पर तरुण चुप लगा गया तो भाभी जी बोलीं, 'ठीक है। तुम लोगों जैसे इनकॉम्पिटेन्ट डिप्लोमेटों से कुछ नहीं होने वाला। अब मैं ही कुछ करूँगी।'

बिना कुछ कहे तरुण उठा और नमस्कार करके चला आया।

# ग्यारह

लन्दन की तरह भारतीयों की भीड़ अथवा न्यूयार्क के समान वी० आई० पी० का मेला बर्लिन में नहीं है। भारतीय डिप्लोमेटों के लिये यह बहुत बड़ी शांति की बात है। हाँ, बर्लिन में डेलीगेशनों की लाइन अवश्य लगी रहती है। अपने देश की 'बारह मास तेरह पार्वण' वाली कहावत यहाँ खूब चरितार्थ होती है। राजनीतिज्ञों की संख्या सीमित होते हुए भी विशिष्ट जनों का अभाव नहीं है। डाक्टर, इंजीनियर, आर्कीटेक्ट से लेकर फिलम स्टार, इन्डस्ट्रियलिस्टों तक का डेलीगेशन आता है।

डेलीगेशन यदि गैर-सरकारी होता है तो भारतीय डिप्लोमेट्स का दाय होता है दायित्व नहीं; कर्त्तव्य नहीं होता पर दुश्चिंता अवश्य रहती है। कॉन्सल जनरल मिस्टर टन्डन बहुत ही सज्जन पुरुष हैं, रिटायर होने वाले हैं, अतः किसी को भी असन्तुष्ट नहीं करना चाहते। इसके अलावा फॉरेन आफिस के किसी प्रमुख व प्रवीण डिप्लोमेट से परिचय-आलाप होने का मतलब है सम्पूर्ण देश के सरकारी गैर-सरकारी लोगों को जानना। अतः झमेलों का कोई अन्त ही नहीं है।....

उस बार जेनेवा में हुई इन्टरनेशनल लेबर कान्फ्रेन्स में इंडियन डेलीगेशन के लीडर मैसूर के लेबर तथा इन्डस्ट्री मिनिस्टर मिस्टर भीमप्पा थे। भीमप्पा साहब का भी अपना ही एक इतिहास व वैशिष्ट्य है। वह पहले मैसूर के महाराजा के डिप्टी पोलिटिकल सेक्रेटरी थे। अपने शैशव व किशोरावस्था में दशहरे की शोभायात्रा में हाथी पर बैठ कर गार्डेन सिटी मैसूर के राजपथों का चक्कर लगाया करते थे। यौवन के प्रारम्भिक सुनहले दिनों में छुप-छुप कर राजप्रासाद के कोनों में ताक-झाँक किया करते थे।

भीमप्पा साहब के वैचित्र्यपूर्ण जीवन का यह अन्त नहीं प्रारम्भ था। बंगलौर के मिशनरी कालेज में शिक्षा हुई थी। फलस्वरूप दर्जनों एंग्लो-इंडियन लड़कियों के साथ मित्रता थी। चमराज सागर लेक के किनारे उनकी सन्ध्याएँ उन लड़कियों का सान्निध्य उपभोग करने में गुज़रती थीं। छुट्टी के दिन उन लोगों को साथ लेकर कभी छोटी लाइन से नन्दी पहाड़ चले जाते तो कभी शिवा समुद्र जाकर कावेरी जल-प्रपात के सौन्दर्य का पान करते।

और भी जाने क्या-क्या किया था उन्होंने अपने पूर्व जीवन में। दक्षिण भारतीयों की तरह वह इंगलिश नहीं बोलते। ऑक्सोनियन इंगलिश भी नहीं कह सकते पर हाँ इंगलिश अच्छी बोलते हैं।

इसके बाद की बात है—एम०एल०ए० होने के बाद चूड़ीदार पाय-जामा और शेरवानी पहनकर उन्होंने दिल्ली के राजनीतिक क्षेत्र में घूमना-फिरना शुरू किया। कोई दो डेलीगेशनों के सदस्य बनकर एयर इंडिया से फॉरेन हो आने के बाद एक शुभ दिन शुभ घड़ी में मंत्री बन गये। लेबर एंड इन्डस्ट्री मिनिस्टर—अदृष्ट का सिंहद्वार खुल गया।

एक बार, दो बार नहीं, सरकारी, गैर-सरकारी डेलीगेशनों के सदस्य बनकर अनेकों कारणों से अनेकों बार पृथ्वी के नाना देशों में गये हैं। इसी सूत्र से मिस्टर टंडन से परिचय है। एक बार एक गुड-विल डेलीगेशन में वह दोनों साथ-साथ ईस्ट योरोप के देशों को गये थे।

भीमप्पा जेनेवा में इंडियन डेलीगेशन के लीडर हो गये हैं, यह खबर बर्लिन पहुँच गई थी। कुछ दिन बाद उनकी एक चिट्ठी भी मिस्टर टंडन के पास आई थी। लिखा था...कितना कठिन परिश्रम करना पड़ रहा है, बता नहीं सकता। इतना मतभेद व विरोध हमारे डेलीगेशन में दिखाई देगा, इसकी कल्पना भी नहीं थी। जो भी हो...कान्फ्रेन्स खत्म होने पर कुछ सप्ताहों के लिये जरा घूमूँ-फिरूँगा। बर्लिन अवश्य आऊँगा। कुछ दिन आनन्द व आराम के व्यतीत करूँगा।

उस दिन कान्सुलेट पहुँचते ही तरुण को टंडन ने बुला भेजा। बोले, 'आई होप यू नो मिस्टर भीमप्पा ? वही जो मैसूर के लेबर एंड इन्डन्ट्री मिनिस्टर हैं।'

साक्षात् परिचय न होते हुए भी तरुण ने भीमप्पा साहब के बारे में

सुन रक्खा था। बोला, 'हाँ, हाँ, उनके बारे में सुन रक्खा है। और वही तो आई० एल० ओ० कान्फ्रेन्स में हमारे डेलीगेशन के लीडर हैं।'

'दैट्स राइट', खुश होकर मिस्टर टंडन ने कहा, 'देखता हूँ तुम कोई बात भूलते नहीं।'

हँसते हुए तरुण ने कहा, 'भारतवर्ष के ऐसे स्मरणीय व्यक्तियों को भूलकर नौकरी कर सकता हूँ क्या ?'

उसकी इस बात पर टंडन भी हँसे विना नहीं रह सके। वोले, 'यह तुमने ठीक कहा। स्मरणीय तो हैं।'

कुछ क्षण चुप रहकर मुस्कुराते हुए उन्होंने पूछा, 'तुम उनके संबंध में कुछ जानते हो ?'

'विशेष तो नहीं, पर सुना है ही इज़ जॉली गुड फेलो।'

'ठीक सुना है। जो भी हो, वह कुछ दिनों के लिये बर्लिन आ रहे हैं। यद्यपि प्राइवेट विज़िट पर आ रहे हैं, पर हैं तो आखिर मिनिस्टर, कुछ व्यवस्था, कुछ देखभाल तो करनी ही पड़ेगी।'

पश्चिमी देशों में बहुत से स्थानों पर डिप्लोमेटों को छोटी-मोटी तरह-तरह की सुविधा दी जाती है। खरीद-फरोख्त में चीजें सस्ती मिल जाती हैं। डिप्लोमैटिक मिशन के माध्यम से बुक करने पर होटल के चार्जेज़ कम होते हैं। भीमप्पा साहब जैसे लोग जो जल्दी-जल्दी विदेश यात्रा करते हैं, उनके लिये यह सारी व्यवस्था इंडियन मिशन ही करता है। सुतरां मिस्टर भीमप्पा के लिये होटल अमजू में कमरा बुक कर दिया गया। उनके घूमने-फिरने के लिये कॉन्सुलेट की एक गाड़ी भी रक्खी गई—सरकारी तौर पर नहीं—बेसरकारी तौर पर। इधर जमाना बदल गया है, पहले वाले दिन नहीं रहे। कब, कहाँ से, कैसे खबर लीक-आउट हो जाये, ठीक नहीं। और अगर कहीं यह बातें अपोजीशन के एम० पी० को पता चल गई तो हो गया कल्याण। अतः इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए कानून से बचकर ही सब कुछ किया गया।

मिस्टर टंडन स्वयं ही एयरपोर्ट भीमप्पा साहब को लेने गये। लेकिन एयरपोर्ट पर रिसीव करने के पश्चात् होटल पहुँचाने का दायित्व कान्सुलेट के एक साधारण कर्मचारी को दिया गया।

एयर फ्रांस का प्लेन ठीक समय पर ही आया। आगे-आगे भीमप्पा

और उनके पीछे मुस्कुराते हुए मिस्टर शर्मा प्लेन से निकले। टंडन के साथ हाथ मिलाने के बाद शर्मा की ओर हाथ उठाकर बोले, 'मीट माइ फ्रेंड मिस्टर शर्मा....'

स्वभाव-सुलभ प्रसन्न वदन मिस्टर टंडन शर्मा के साथ हैंड शेक करके बोले, 'ग्लैड टु मीट यू मिस्टर शर्मा।'

तदुपरान्त भीमप्पा साहब ने शर्मा जी का परिचय दिया...'मिस्टर टंडन, शर्मा जी एक विख्यात ट्रेड यूनियन लीडर हैं। इस बार हमारे डेलीगेशन के मेम्बर भी थे। रादर ही वाज़ द मोस्ट ऐक्टिव मेम्बर ऑफ ऑल ऑफ देम।'

भीमप्पा साहब अभी शर्मा जी की प्रशंसा के और भी पुल बाँधते; परन्तु एयरपोर्ट में खड़े होकर अधिक देर तक बातचीत करना अच्छा नहीं लगता यह सोचकर टंडन बोले, 'आप भी कुछ दिन रहेंगे न यहाँ? बाद में तसल्ली से बैठकर बात करेंगे।'

'मिस्टर भीमप्पा के साथ ही चला जाऊँगा।' शर्मा जी ने प्रत्युत्तर दिया।

'आप कहाँ ठहर रहे हैं?'

भीमप्पा की ओर इशारा करके शर्मा जी ने कहा, 'साथ आये हैं, साथ-साथ ही रहेंगे।'

अब टंडन साहब वास्तव में परेशानी में पड़ गये, बोले—'एक्सक्यूज़ मी मिस्टर भीमप्पा, आपने इस सम्बन्ध में कुछ लिखा था क्या?'

'नहीं, लिखा तो नहीं था, पर जैसे भी होगा मैनेज कर लेंगे।'

यह बात सुनकर टंडन को मन ही मन गुस्सा आ गया। यह कोई हरिद्वार-लक्ष्मणझूला या काशी-गया की धर्मशाला तो है नहीं कि एक कमरे में दस जने भी रह लेंगे। मिस्टर भीमप्पा अच्छी तरह जानते हैं कि बर्लिन में यह संभव नहीं। पहले से खबर कर देते तो कुछ न कुछ व्यवस्था हो ही जाती। पर हिन्दुस्तानियों का भी जवाब नहीं। कोई सोमवार के बदले मंगल और सुबह के बदले शाम को आता है। कभी तीन को आना होता है और पहुँचता एक है, तो कभी एक के बदले तीन आते हैं।

यही झंझट उस बार फिल्म फेस्टीवल के डेलीगेशन को लेकर हुआ था। फेस्टीवल में दो फीचर और एक डाक्यूमेन्टरी तीन भारतीय

फिल्मों की आफीशियल एन्ट्री थी। उन फिल्मों के प्रोड्यूसर, डायरेक्टर, एक्टर, एक्ट्रेस सब मिलाकर ग्यारह जने आने वाले थे। इसके अलावा फेस्टीवल कमेटी ने फिल्मी दुनिया के चार व्यक्तियों को और आमन्त्रित किया था। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता से पत्रों के अनुसार सभी लोग आ रहे थे। उसके अनुसार ही होटल बुक कर दिया गया।

फिर चिट्ठी, तार आये। किसी ने खबर दी सोमवार को पहुँच रहा है, तो किसी ने मंगल को पहुँचने की बात लिखी। कोई सुबह आ रहा था तो कोई शाम को।

उसके बाद चिट्ठियाँ अपनी बन्द हो गईं, बस टेलीग्राम ही टेलीग्राम आने लगे। 'फॉरेन एक्सचेंज नाट येट् सेंक्शन्ड। डिपार्चर डिलेड'—कलकत्ता से मिस्टर गुप्त का तार आया। फेस्टीवल कमेटी के आमन्त्रण पर जो चार व्यक्ति आ रहे थे, उनमें से दो शायद कर्ज लेकर भी प्लेन का किराया नहीं जुटा पाये, इसलिये अंतिम क्षण बीमार पड़ गये दोनों—'सारी, कांट अटेन्ड, सीरियसली इल'—कलकत्ते से किसी फिल्म जर्नलिस्ट ने तार दिया। और बम्बई के सज्जन ने तो हिन्दी फिल्म का संवाद ही लिख भेजा—'एयरपोर्ट पहुँचकर अचानक तबियत खराब हो गयी। आने से मजबूर हूँ। अगले वर्ष अवश्य आऊँगा।'

और भी बहुत से टेलीग्राम आये। बम्बई के निर्माता भोंसले ने खबर दी कि अभिनेत्री कुमारी सुन्दरी को लेकर बुधवार को पहुँच रहे हैं। और अभिनेता दुर्लभकुमार बृहस्पतिवार को पहुँचेंगे। लेकिन कब? बर्लिन क्या केवल एक फ्लाइट आती है?

एक बखेड़ा खड़ा हो गया था। फेस्टीवल कमेटी से बार-बार फोन आ रहा था काउन्सल जनरल के पास, पर वह कुछ बता ही नहीं पा रहे थे। बताते भी क्या? अपनी सरकार की अकर्मण्यता की बात बाहर तो कही नहीं जा सकती। संसार के, सबसे अधिक अस्पष्ट मनोवृत्ति वाले व्यक्ति ही फॉरेन एक्सचेंज डिपार्टमेंट में मँडराया करते हैं।

अन्त में तीन दिनों में चार विमान सेवाओं द्वारा सात व्यक्ति आये थे। होटल पहुँचकर सिंगल रूम देखकर प्रोड्यूसर भोंसले चौंके। पहले तो अनुरोध किया डबल रूम के लिये और जब उससे काम नहीं चला तो अधिकार जताने लगे। उधर योरोप भर से हजारों मनुष्य फेस्टीवल देखने बर्लिन आये हुए थे। किसी होटल में तिल रखने की भी जगह नहीं

थी। होटल के मैनेजर ने डबल रूम देने में जैसे ही अपनी अक्षमता प्रकट की, भोंसले साहब का मुँह गुस्से से लाल हो गया।

मुँह से तो नहीं कहा पर काउन्सल जनरल को जता दिया कि सत्यमेव;जयते का तिलक लगाकर आप लोगों की तरह मुझे किसी की गुलामी नहीं करनी पड़ती। हजारों रुपये खर्च करके हिरोइन को केवल फिल्म जर्नल में दो चार फोटो छपवाने के लिये नहीं लाया हूँ, अपने मतलब से लाया हूँ।

मिस्टर टंडन जैसा व्यक्ति भी यह बर्दाश्त नहीं कर पाया था। तंग आकर उन्होंने भी कह दिया था कि मिस्टर भोंसले, आप लोगों के फिलम फेस्टीवल के साथ हमारा कोई सम्पर्क नहीं है। मात्र भद्रता व सौजन्यता की खातिर मैंने सहायता करने का प्रयत्न किया था। दैट्स आल राइट।

देश की प्रख्याति या प्रतिनिधित्व करने के लिये नहीं, वरन् रक्तमांस के शरीर से खेलने के उद्देश्य से ही किसी आनरेबल डेलीगेट का आगमन होता है। परन्तु उससे क्या हुआ। इण्डियन मिशन की सिरदर्दी तो खत्म नहीं होती, बढ़ती ही है।

भीमप्पा साहब एक मंत्री हैं और भारतीय डेलीगेशन का नेतृत्व किया है। गैरज़िम्मेदार कह देना भी संभव नहीं है, पर तब भी शर्मा जी को साथ लाने से पहले खबर दे देना उन्होंने उचित अथवा कर्तव्य नहीं समझा।

मन यद्यपि विरक्ति से भर उठा था; फिर भी टंडन साहब ने कहा-'ठीक है, होटल चले जाइये। आइ होप दे विल मैनेज सम हाउ।'

अगले दो दिन भीमप्पा या शर्मा जी की शक्ल भी दिखाई नहीं दी। तीसरे दिन दोपहर को कान्सुलेट में हाजिर होकर भीमप्पा साहब ने टंडन से अनुरोध किया, 'मैं और शर्मा जी कुछ सामान खरीदना चाहते थे, मिस्टर मित्र अगर थोड़ी मदद कर देते....?'

लन्दन जाकर लोगों से खचाखच भरी पब में घुसकर एक ग्लास बियर नहीं पी तो विलायत जाना व्यर्थ है। पेरिस जाकर इसी तरह नाइट क्लब जाना और परफ्यूम खरीदना आवश्यक है। रोम जाकर लोग कैसीनो जाते हैं। उसी प्रकार बर्लिन जाकर नाइट क्लबों में रात गुज़ारे और सस्ता कैमरा खरीदे बिना इंडियन डेलीगेशन्स की [illegible]

रक्षा नहीं होती।

स्वयं ही भीमप्पा बोले, 'यू सी मिस्टर टन्डन, पिछली दो रातें रेसी में अच्छी कट गईं।'

'रेसी में?'

'हाँ, बॉल हाउस रेसी। बर्लिन का यह नाइट क्लब विश्वविख्यात है। डांसिंग फ्लोर के चारों ओर छोटे-छोटे केबिन हैं। प्रत्येक टेबिल पर टेलीफोन एवं विद्युत पद्धति से पत्र के आदान-प्रदान की अपूर्व व्यवस्था है। खुली हुई केबिन में बैठे-बैठे दिख जाता है कि कौन कहाँ बैठा है। टेबिल पर रक्खे मैप से दूसरी टेबिल का नम्बर देखो और चिट्ठी लिख दो—दूर से देखने में आप बड़ी अच्छी लग रही हैं। यदि आपत्ति न हो तो यह भारतीय आपके साथ नाचना चाहता है।

इलेक्ट्रोनिक्स की कृपा से क्षण भर में वह चिट्ठी अभीष्ट स्थान पर पहुँच जायेगी और उत्तर आ जायेगा—ग्लास की शैम्पेन खत्म होने तक यदि धैर्य रख सकें तो यह हैम्बर्गवासिनी बर्लिन भ्रमणकारिणी कृतार्थ होगी।

इधर से फिर पत्र जायेगा—जर्मन लड़कियों के सम्बन्ध में हमारी धारणा बहुत ऊँची थी, लेकिन मात्र एक ग्लास शैम्पेन जैसी सामान्य वस्तु के प्रति आपकी दुर्बलता देखकर आश्चर्यचकित होना पड़ता है।

प्रत्युत्तर मिलेगा—क्या करूँ माइ डियर जेन्टिलमैन? आपने केवल नाचने का आमन्त्रण दिया है; शैम्पेन का ऑफर तो मिला नहीं है।

इसी तरह के पत्राचार के बाद भीमप्पा साहब ने मन ही मन अवश्य सोचा होगा कि इस विदेश में ऐसी रंगीन जगह तुम्हारी जैसी सुन्दर सौष्ठव सुन्दरी का संग मिले तो एक ग्लास क्या पूरी बोतल शैम्पेन पिला सकता हूँ।

प्रत्यक्ष में उत्तर गया होगा—यू आर वेलकम टु डांस एंड ड्रिंक।

इसी तरह खेल चलता रहता है और रात गहराती जाती है। बहुत से लोग शैम्पेन पीकर नाचते-नाचते झूमते रहते हैं और वाटर शो देखने की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं। वह भी एक अपूर्व दृश्य है। प्रति मिनिट नौ हजार जेट एक लाख बत्तियों के साथ आँख मिचौनी खेलते हुए आठ हजार लिटर पानी बरसाते हैं।

रेसी की बात करते-करते अपूर्व आनन्द से भीमप्पा साहब का रोम-

रोम उच्छ्‌वसित हो उठा, आँखों में चमक आ गई। आगे बोले, 'जानते हैं मिस्टर टंडन, रेसी में बैठकर आदमी भूल जाता है कि वह दुनिया में है।'

इतने उत्साह से भीमप्पा साहब यह सब बता रहे थे कि मिस्टर टंडन रोक भी नहीं पाये। बात खत्म करने के ख्याल से बोले—'यह लोग आनन्द मनाना जानते हैं।'

अब भीमप्पा साहब जैसे एकदम से लीडर बन गये। कहने लगे, 'जो जाति खुशी मनाना, आराम के क्षण व्यतीत करना नहीं जानती वह परिश्रम भी नहीं कर सकती। काम करने के लिये खुशी मनाने, मज़ा करने का स्कोप होना ही चाहिये। परन्तु हिन्दुस्तान में भला यह स्कोप कहाँ है?'

'दैट्स राइट मिस्टर भीमप्पा।'

प्रवीण होते हुए भी टंडन आखिर तो फॉरेन सर्विस के आदमी थे। अधिक नहीं, इतना तो समझ ही गये कि रेसी में नाचते-नाचते भीमप्पा को अवश्य कोई शिकार मिल गया होगा।

शर्माजी अब तक चुप बैठे थे। रेसी की स्मृति में मन डुबकियाँ लगा रहा था। अब चुप नहीं रह सके, बोले—'डू यू नो मिस्टर टंडन, वह लड़की—क्या नाम था उसका—हाँ, रिटरेर के साथ दो दिन रहकर जर्मन के चार-छह वाक्य भी सीख लिये हैं मैंने।'

और जर्मन में धन्यवाद जताये बिना नहीं रह सके टंडन। बोले—'डांकेशन।'

साथ-साथ शर्माजी ने जवाब दिया, 'बिटुशेन।'

भीमप्पा ने पुनः खरीदारी वाली बात शुरू की—'कल हम फ्री हैं। उसके बाद कुछ इन्डस्ट्री देखूँगा। दो-एक पार्टियों के साथ बातचीत चल रही है। हो सकता है वह लोग मैसूर में कोलाबरेशन से कुछ शुरू करें।'

'इसका मतलब है आप शॉपिंग कल ही करना चाहते हैं?' टंडन ने जिज्ञासा प्रकट की।

'दैट वुड बी फाइन।'

तरुण को टंडन अच्छी तरह जानते हैं। एक बोतल बियर या एक डिनर के लोभ में भारतीय विशिष्ट जनों का इस तरह घूमना उसे

बिल्कुल नहीं सुहाता। इसके अलावा अपने नाम से सामान खरीद कर भीमप्पा को देने का तो वह अवश्य विरोध करेगा। लेकिन फिर भी....

लेकिन क्या ? फॉरेन सर्विस में यह सब हज़म करना ही पड़ता है। कितने लोगों की लड़कियों की शादी के समय हजारों का सामान खरीदकर किसी डिप्लोमेट या डिप्लोमैटिक बैग की मारफत भेजना पड़ता है।

'जो जो सामान खरीदना चाहते हैं, उसकी लिस्ट और दाम लिखकर रख जाइये। आइ विल ट्राइ टु हेल्प यू।'—और क्या कहते टंडन साहब !

इतना सुनते ही दोनों ने जेब से कैटेलाग-प्राइस-लिस्ट निकाली और काफी बहस के बाद एक लम्बी लिस्ट बनाकर टंडन के हाथ में पकड़ा दी।

'आइ ऐम अफ्रेड, यह सब खरीदना तो सम्भव नहीं होगा।'

शर्माजी बोले, 'हम लोग तो रोज-रोज नहीं आते। और फिर भीमप्पा के पास तो डिप्लोमैटिक पासपोर्ट है। बम्बई या दिल्ली में कस्टम का झगड़ा भी नहीं होगा। इसीलिये...।

'पर आप जैसे तो और भी तो बहुत से आते हैं।'

विवेचक की तरह भीमप्पा बोले—'ठीक है लिस्ट छोड़ जाते हैं, जो खरीद सकें खरीद लीजियेगा।'

दोनों वी० आइ० पी० के बिदा होते ही टंडन ने तरुण को बुला भेजा।

तरुण के कमरे में प्रवेश करते ही वह लिस्ट और मार्क का एक बंडल उसकी ओर बढ़ाते हुए बोले, 'मेरा पुरस्कार देखा ?'

हँसते हुए तरुण ने कहा, 'वही इन्डस्ट्री मिनिस्टर ! तभी तो अपने देश की उन्हें कोई चीज पसन्द नहीं आती। इम्पोर्टेड सामान से घर भरा हुआ न होने से उनकी प्रेस्टिज टिकती है क्या ?'

जरा रुककर तरुण फिर बोला—'कभी-कभी ऐसा लगता है कि अंग्रेज अगर ट्रांजिस्टर, टेरेलीन, कैमरे, ह्विस्की आदि पर कुछ खर्च करे तो शायद फिर से भारत पर राज्य करने में समर्थ हो जाये।'

'हाँ, शायद तुम्हारी बात ही ठीक है।' टंडन साहब ने हताश स्वर में जवाब दिया।

## बारह

इसके बाद भीमप्पा साहब जिस दिन कान्सुलेट आये शर्माजी साथ नहीं थे। टंडन साहब को थोड़ा विस्मय भी हुआ। एक लम्बे अरसे तक फॉरेन सर्विस में काम करने के परिणामस्वरूप उनकी अभिज्ञता है कि जो मंत्री चालू किस्म के होते हैं, वह अकेले भ्रमण करना पसन्द नहीं करते।

कारण ?

कारण एक नहीं अनेकों हैं। पर हाँ, केवल उम्मेदारी, तावेदारी या खिदमतगारी के लिये नहीं, वरन् स्वयं की रसना व वासना की परितृप्ति के निमित्त किसी को साथ लिये घूमते हैं।

अपने-अपने कर्मक्षेत्र में तो मन्त्रियों को नाप-तौल कर कदम रखना पड़ता है। मन की सूक्ष्म अनुभूतियों को मोटे खद्दर के नीचे दवाये रखने के लिये वे विवश होते हैं। परिचित समाज में मनमानी करना असंभव होता है। जरा लीक से हटे नहीं कि लोक सभा या विधान सभा का कोई भी मेम्बर 'मे आइ नो सर' कह कर प्रश्न कर वैठता है। और फिर लोकल समाचार पत्रों की रिपोर्ट अलग सर पर तलवार की तरह झूलती रहती है।

विहार के भूतपूर्व मन्त्री दिव्येन्दु विकास चौधरी ने एक वार मिस्टर टंडन से पूछा था, 'अच्छा वताइये तो मिस्टर टंडन कि हम लोग मंत्री वन जाने के वाद क्या हाड़-मांस से वने इन्सान नहीं रहे ?'

सहानुभूति जताते हुए टंडन साहब ने प्रत्युत्तर दिया था, 'वह तो रहेंगे ही। इन्सान तो आखिर इन्सान ही है।'

'कालेज के लड़के-लड़कियों को साथ लिये घूमते फिर सकते हैं, अध्यापक छात्राओं के साथ घुल-मिल सकते हैं, नौकरीपेशा व्यक्ति सहकर्मी लड़की को साथ लेकर डायमंड हार्वर या पुरी जा सकता है,

मर्केन्टाइल फर्म का अफसर यंग स्टेनो लड़कियों को लेकर मसूरी नैनी-ताल कान्फ्रेन्स या सेमीनार अटेंड करने जा सकता है....।'

तूफान की तीव्र गति से दिव्येन्दु विकास के दुःखों की कहानी अपने आप उनके मुख से निकलती आ रही थी। बेरुत की इंडियन ऐम्बैसी की चान्सरी बिल्डिंग की तीसरी मंजिल पर कोने के कमरे में बैठे मिस्टर टंडन को जैसे भूमध्यसागर की मदहोश बना देने वाली हवा का स्पर्श अनुभव हुआ। खिड़की से एक बार बाहर दूर तक दृष्टि दौड़ाई; और फिर बीच में ही मन्त्री महोदय की बात काट कर सान्त्वना देते हुए बोले, 'मैं आपकी बात अच्छी तरह समझता हूँ, रियलाइज़ करता हूँ।'

उत्तेजना से भरे हुए दिव्येन्दु विकास ने बहुत जोर से नहीं पर टेबिल पर मुक्का मारते हुए कहा—'रियलाइज़ क्यों, एप्रीशियेट करिये मेरी बात—क्योंकि देयर इज़ लॉजिक इन माइ आर्ग्युमेन्ट।'

'दैट्स राइट।'

छोटे मंत्री छोटे शिकार पकड़ते हैं—कोई शापिंग करा देता है, कोई टैक्सी का बिल चुका देता है तो कोई बेरुत विश्वविख्यात नाइट क्लब 'किट-कैट' में ले जाता है।

और बड़े-बड़े मंत्री ऐसे छोटे-मोटे लोगों की ओर नजर ही नहीं उठाते।....

एक अति साधारण विदेश यात्री की तरह अशोक अग्रवाल नामक एक सज्जन क्वैन्टास फ्लाइट द्वारा कलकत्ते से योरोप आये। बाहर के लोगों को न तो पता ही चल पाया और ना ही किसी ने इस ओर ध्यान दिया। परिचित वर्ग ने जाना कि दुर्गापुर में एक कारखाना कोलाब-रेशन से लगाने के लिये अशोक बाबू 'विलायत' गये हैं।

जिन दिव्यज्ञान सम्पन्न नेताओं की यह धारणा है कि कोलाबरेशन की मकरध्वज खाने वाले भारतीय विलायत के नाम पर सीधे स्वर्ग जाते हैं, उन्होंने अशोक बाबू की जेबें फॉरेन एक्सचेंज से भर दीं। इसके अलावा—

इसके अलावा और क्या ?

इसके अलावा ए० बी० सी० एण्ड एक्स० वाइ० जेड० इन्टरनेशनल कन्सट्रक्शन कम्पनी के ओवरसीज मैनेजर के एकाउन्ट में हर महीने

पाँच सौ डालर भी तो जमा होते रहते हैं।

इसका मतलब ?

अशोक अग्रवाल एवं उनके मित्र शायद सोचते हैं कि कोई कुछ समझता नहीं। मन ही मन हँसते टंडन साहब। रिजर्व बैंक से कहा गया—ओवरसीज मैनेजर वेतन का दस हजार रुपया प्लस कार एलाउन्स प्लस आफिस एलाउन्स प्लस एन्टर्टेनमेन्ट एलाउन्स प्लस....। जाने कितने प्लस होते हैं ऐसे। इधर ओवरसीज मैनेजर से कहा हुआ है—श्रीमान् जी ! हर महीने पाँच सौ डालर बैंक में जमा करते रहिये। कर्त्ता-धर्त्ता अर्थात् मंत्रिगण अथवा उनके बंधुबांधव, हिताकांक्षी आदि में से कोई भी विलायत रूपी स्वर्ग जायेगा तो वह डालर खर्च करेगा।

अतः रिजर्व बैंक से मिले जेब भर फॉरेन एक्सचेंज के अलावा दूसरा सम्बल भी था अशोक बाबू के पास। और फिर एक महीने तक योरोप के अनेक देशों का भ्रमण करके 'बंधुगण' की सेवा की फूलप्रूफ व्यवस्था कर दी अशोक बाबू ने।

उसके एक महीने बाद जिस दिन 'बंधुवर' भारत के किसी एयरपोर्ट से बी० ओ० ए० सी० प्लेन द्वारा योरोप चले, पूरी एक भीड़ ने गले में मालाएँ डालकर हाथ हिलाते भी हुए विदा दी। और फिर जिस दिन वापस लौटे उस दिन भी स्वागत करने सैकड़ों व्यक्ति फूल-मालाएँ लेकर गये। किसी को यह पता नहीं चला कि किसकी निःस्वार्थ सेवा के लिये उनकी यह यात्रा सफल हुई।

टंडन साहब यह सब जानते हैं, समझते भी हैं। छोटी-मोटी सेवा के लोभवश ही भीमप्पा साहब ने शर्माजी को साथ रक्खा था, यह भी जानते हैं। उन्हें पता है कि शर्माजी लीडर हैं—और वह भी कच्चे नहीं—बिल्कुल फिनिश्ड प्रोडक्ट। उन्होंने भी अपने टिटागढ़ के कारखाने के अंग्रेज जनरल मैनेजर की मार्फत योरोप-भ्रमण व दर्शन की व्यवस्था कर रक्खी है। बहुत से विदेशी मिल मालिक श्रमिक कल्याण के लिये योरोप आने वाले किसी-किसी लीडर के रहने-सहने, खाने-पीने, घूमने-फिरने आदि की सारी व्यवस्था करते हैं, यह केवल मिस्टर टंडन नहीं, सारे डिप्लोमेट जानते हैं।

लेकिन तब भी जैसे अनजान बनते हुए मिस्टर टंडन ने सामने बैठे

भीमप्पा साहब से पूछा, 'आज शर्मा जी दिखाई नहीं दे रहे? ह्वाट हैपेण्ड टु हिम?'

'उनकी तो बात ही मत करिये बस! हमारे कोई-कोई लीडर इतने करप्टेड और होपलेस हैं कि क्या कहा जाये। उनकी गार्डेन रीच वर्कशाप के डिप्टी जनरल मैनेजर मिस्टर ब्राउन एक्सीडेन्टली बर्लिन आये थे। एकान्त में मार्टिनी पीते-पीते कुछ विषयों पर बात करने के निमित्त कुछ दिनों के लिये...'

भीमप्पा साहब ने वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि बीच में ही टंडन साहब ने रोकते हुए कहा, 'नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह सब जानने से नहीं था। लेट हिम माइंड हिज ओन बिजनेस!'

'इन एनी केस', और भीमप्पा साहब काम की बात पर उतर आये, 'वह कैमरा और बाइनोक्युलर डिप्लोमैटिक बैग में दिल्ली भेजनी पड़ेगी।'

शर्मा जी तो भ्रष्ट हैं, लेकिन भीमप्पा खुद बिल्कुल सच्चे, दूध के धुले हैं। कूटनीतिक मिशन की सबसे महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति यह डिप्लोमैटिक बैग होता है। वाशिंगटन के सी० आई० ए० के दफ्तर से लेकर मास्को की अमेरिकन एम्बैसी की मार्फत एजेन्टों के पास जो भी गुप्त संकेत व निर्देश जाते हैं, वह इसी डिप्लोमैटिक बैग में होते हैं। अमेरिकन एम्बैसी से जो डिप्लोमैटिक बैग वाशिंगटन जाता है, उसमें रशिया की बहुत सी गुप्त खबरें होती हैं। सारी दुनिया से जो डिप्लोमैटिक बैग क्रेमलिन आते हैं, उनमें भी न जाने कितने रहस्य छुपे होते हैं।

लेन-देन की इस कहानी के बारे में सभी जानते-समझते हैं। लेकिन तब भी कोई रोकता-टोकता नहीं। शांति के समय डिप्लोमैटिक बैग के यातायात पर प्रतिबंध लगाने का नियम नहीं है।

साधारणतः हर देश अपनी एयरलाइन्स द्वारा ही यह बैग मँगाता व भेजता है। ब्रिटिश फॉरेन आफिस या ब्रिटिश ऐम्बैसी पैन अमेरिकन अथवा एयर फ्रांस से भी अपना डिप्लोमैटिक बैग नहीं भेजेगी। एयरक्राफ्ट के कमांडर की व्यक्तिगत हिफ़ाज़त में रहता है यह बैग। किसी भी देश के गुप्तचर, पुलिस या कस्टम विभाग के किसी आदमी को इसे छूने का अधिकार नहीं होता।

डिप्लोमैटिक बैग में केवल गोपनीय तथ्य ही नहीं जाते, वरन् मिशन की रोजमर्रा की चिट्ठी-पत्रियाँ एवं छोटा-मोटा बहुत सा सामान होता

है। डिप्लोमैट्स की अपनी व्यक्तिगत बहुत ही आवश्यक चीजें भी चली जाती हैं।

जो भी हो, डिप्लोमैटिक बैग के राजनीतिक मूल्य की कोई तुलना नहीं है। सदा इसकी आवश्यकता बनी रहेगी। बहुत से देश तो डिप्लोमैटिक बैग की देखभाल व सुरक्षा के लिये साथ में एक-दो डिप्लोमेट भी भेजते हैं।

भारतवर्ष के पास न तो इतना फालतू रुपया है और न ही दुनिया की गुप्त खबरों के लूटपाट करने की उसे कोई आवश्यकता है। लेकिन तब भी आखिर है तो डिप्लोमैटिक बैग। फॉरेन मिनिस्ट्री की अनेकों गुप्त खबरें तथा चिट्ठी-पत्रियाँ होती हैं उसमें।

डिप्लोमैटिक बैग एम्बैसी से ही चलता है, कान्सुलेट से नहीं। इस बैग में कुछ भेजना हो तो कान्सुलेट से पहले एम्बैसी भेजना पड़ता है। वहाँ अगर आवश्यकता समझी जाती है तो वह चीज़ डिप्लोमैटिक बैग में चली जाती है।

बर्लिन से कोई डिप्लोमैटिक बैग सीधा दिल्ली नहीं जाता। पहले सब कुछ बॉन-इंडियन एम्बैसी में जाता है, फिर वहाँ से निर्दिष्ट दिन फ्रैंकफर्ट जाकर एयर इंडिया के दिल्ली जाने वाले प्लेन के कमांडर को सौंप दिया जाता है।

भारत से जाने वाले हमारे डिप्लोमैटिक बैग में केवल जरूरी कागज-पत्र ही नहीं जाते, बल्कि जर्मन या फ्रांस के कूटनीतिज्ञों के लिये सूखा धनिया-जीरा-मिर्च भी जा सकता है। परन्तु उधर से आने वाले बैग में जायेन्ट सेक्रेटरी की लड़की के विवाह के लिये स्विस घड़ी या जमाई के लिए स्काटिश ट्वीड का सूट भी आता है यह कहना कठिन है। अगर वह आ सकता होगा तो और भी बहुत कुछ आ सकने की गुंजाइश होगी।

पर तब भी दूसरे के लिये स्वयं के नाम से यह काम करना एक अलग बात है।

'एक्सक्यूज़ मी, मिस्टर भीमप्पा, यहाँ से तो कोई डिप्लोमैटिक बैग दिल्ली जाता नहीं।' अपनी मजबूरी बताई टंडन साहब ने।

'ठीक है, बॉन एम्बैसी को भेज दीजिये। वह लोग वहाँ से आप लोगों के नाम से सेक्रेटरी मिस्टर ननजप्पा को भेज देंगे। वहीं से...।' रास्ता सुझाया भीमप्पा ने।

'लेकिन सर, हम तो कोई बैग एम्बैसी को भी नहीं भेजते। आप बल्कि लौटते हुए बॉन एम्बैसी में दे दीजिये।'

इससे पहले तरुण की पोस्टिंग किसी कान्सुलेट में नहीं हुई थी। दिल्ली की फॉरेन मिनिस्ट्री के अलावा उनने विभिन्न दूतावासों में कार्य किया है। बर्लिन आने से पहले यूनाइटेड नेशन्स में था। उसने सोचा था कि बर्लिन कान्सुलेट में झमेला कम होगा। परन्तु भीमप्पा जैसे नित नये आने वाले भूतों के उपद्रव से जीवन अशांत हो उठेगा, इसकी तो उसे कल्पना ही नहीं थी।

भीमप्पा को किसी तरह विदा करके मिस्टर टंडन भी तरुण से बोले, 'मैंने सोचा था तरुण कि रिटायर होने से पहले कुछ दिन चैन से रहूँगा, पर इन लोगों ने तो नाक में दम कर दिया है।'

कुछ देर रुककर पुनः बोले, 'जीवन भर किसी न किसी अफसर अथवा एम्बैसेडर के अंडर में काम किया है मैंने। उनकी इच्छाएँ पूरी करते-करते हाँफ उठा था। इसीलिये बर्लिन में इन्डिपेन्डेन्ट चार्ज लिया, पर अब देखता हूँ कि इससे तो पहले ही अच्छा था।

और इतना कहकर एक दीर्घ श्वास छोड़ा बर्लिन के इंडियन काउंसल जनरल मिस्टर टंडन ने।

इस पर तरुण ने कहा—'आप तो अगले सप्ताह कन्सल्टेशन के लिये बॉन जा रहे हैं, तब मेरी क्या दुर्गति होगी, आप ही बताइये ?'

हँसते हुए मिस्टर टंडन ने जवाब दिया, 'नर्वस होने की तो कोई बात है नहीं ! अगले सप्ताह डान्सर प्रीति कुमारी के अलावा कोई पॉलिटिशियन तो आ नहीं रहा है। सो आई होप यू विल हैव ए गुड टाइम।'

'होप' तो लोग बहुत कुछ करते हैं परन्तु प्रकट रूप से होता तो कुछ और ही है।

हमारा पीसफुल को-एक्जिस्टेन्स एंड फ्रेंडली को-आपरेशन विदेशों में जितना गतिहीन हो रहा है भारतीय संगीत और नृत्य उतनी ही प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है। भारतीय समाचारपत्रों को पढ़ने से तो लगता है जैसे हमारे नृत्य व म्यूजिक इतने जनप्रिय होते जा रहे हैं कि यही हाल रहा तो कुछ दिनों में हालीवुड में फिल्में बननी बन्द हो जायेंगी और दर्शकों के अभाव में पेरिस के नाइट क्लबों का चलना मुश्किल हो जायेगा।

फॉरेन से सक्सेसफुल टूर के वाद लौटे किसी उस्ताद जी से प्रेस कान्फ्रेन्स में कोई प्रश्न करके देखिये, वनारसी पान व जर्दा गालों में दबाये किस तरह खुशी में झूमते हुए कहेंगे, 'वाद्य ? आहा हा, कितना पसन्द करते हैं वे भारतीय वाद्य संगीत, वताया नहीं जा सकता। हॉल पैक होता है। तिल रखने की जगह नहीं होती। और फिर इतने तन्मय होकर सुनते हैं कि सुई भी गिरे तो आवाज सुनाई दे जाये। आटोग्राफ देते-देते हाथ दुखने लगते हैं।'

पर सब पूछ लो, वस यह मत पूछ वैठना कि उस्ताद जी और सब तो ठीक है पर आप फॉरेन एक्सचेंज कितना लेकर लौटे ? इतना पूछते ही वह कुर्सी से उछल पड़ेंगे जैसे साँप देख लिया हो !

और फिर उस प्रेस कान्फ्रेन्स के वाद कलकत्ते की म्यूजिक कान्फ्रेन्सों में उस्ताद साहब के रेट शेयर बाजार की दरों को भी मात करते हुए ऊपर चढ़ते चले जायेंगे।

हाँ, सुन्दरी युवती नृत्यांगनाओं को पैसा खर्च करके प्रेस कान्फ्रेंस नहीं करनी पड़ती। रिपोर्टर व कैमरामैन ही उनके दरवाजे पर भीड़ लगाये रहते हैं। घन्टों प्रतीक्षा करने के बाद भी यदि क्षण दो क्षण को सुन्दरी के दर्शन मिल जाते हैं तो वह गद्‌गद हो उठते हैं और अखबारों में छप जाता है कि मिस सो एन्ड सो का नृत्य देखने के लिये पेरिस में भीड़ के कारण ट्रैफिक जैम हो गया, एवं रशिया के वलशोई थियेटर के टिकिट ही नहीं बिक पाये।

और रोम में ?

वहाँ तो एयरपोर्ट पर लोगों की इतनी भीड़ हो गई थी कि चार इन्टरनेशनल फ्लाइट हो डिलेड हो गईं।

मिस सो एंड सो कहेंगी कि 'इस टूर से सबसे वड़ा लाभ तो यह हुआ है कि कई देशों के फिल्म निर्माता एवं निर्देशकों ने अपनी फिल्म में एक नृत्य देने के लिये इनवाइट किया है।'

और वस ! हो गयी रेस के मैदान की ट्रिपल टोट ! चार लाख काले और एक लाख सफेद देकर भी प्रोड्यूसरों को मिस साहब का कान्ट्रैक्ट नहीं मिलता।

लेक मार्केट के पटल दा अथवा दर्जीपाड़ा के विधु बाबू जैसे लोग भले ही वड़ी सरलता से इन सब कहानियों पर विश्वास कर लें, पर तरुण

जैसे इंडियन डिप्लोमेट्स ऐसी बातें सुनकर अपनी हँसी नहीं रोक पाते। तभी तो अगले हफ्ते प्रीति कुमारी के आगमन की खबर सुनकर उसे कोई बहुत खुशी नहीं हुई।

इसके अलावा तरुण जरा भिन्न प्रकृति का व्यक्ति है। कुछ इंडियन डिप्लोमेट्स ऐसे भी हैं जो ऐसी नृत्यांगनाओं की सेवा करके स्वयं को धन्य समझते हैं। प्रोग्राम खत्म होने पर होटल के निभृत कक्ष में बैठकर दो-चार राउंड ड्रिंक के बाद इनकी तकदीर में कभी-कभी ऊपर का पावना भी नसीब हो जाता है। तरुण के सहकर्मी सबरवाल एक बार इसी तरह एक नृत्य-पटीयसी की सेवा करने के कारण रात को बहुत देर से आये थे। अतः सुबह देर से उठना स्वाभाविक था। जल्दी-जल्दी में आफिस के लिये तैयार होते समय अपने जूतों के स्थान पर लेडीज जूते पहनकर एम्बैसी चले गये थे। फॉरेन सर्विस का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे यह बात मालूम न हो।

इन सब ऊपर के पावनों का स्वप्न तरुण ने कभी अपने जीवन में नहीं देखा। मन की सम्पूर्ण सत्ता से, मधुरता से जिसे उसने प्यार किया है, उस इन्द्राणी के अलावा किसी और नारी का स्थान न तो कभी उसके जीवन में रहा और न ही कभी होगा।

जीवन के धूसर मरु-प्रांतर में चलते-चलते अचानक वन्दना से एक विराट् सम्भावनापूर्ण इंगित मिला था तरुण को। न जाने कैसी-कैसी आशा-आकांक्षा लिये वह बर्लिन आया था। मन्सूर अली के साथ सम्पर्क करने के लिये कराची सेकेंड सेक्रेटरी को भी चिट्ठी लिखी थी उसने। बरुआ छुट्टी पर गया हुआ था, प्रत्युत्तर देर से आया था। उसने लिखा था कि पाकिस्तान सरकार के किसी अफसर के साथ सीधे सम्पर्क स्थापित करने पर विपत्ति में पड़ने की सम्भावना है। आगे लिखा था कि मेरी क्षति की अपेक्षा मिस्टर अली का नुकसान ही अधिक हो सकता है; कारण पाकिस्तान सरकार यह सोचेगी कि हम लोगों के साथ उसके शायद गुप्त सम्बन्ध हैं। आजकल कराची की आबहवा अच्छी नहीं है। अतएव मिनिस्ट्री लेवल पर सम्बन्ध स्थापित करना ही उचित है।

अंत में बरुआ ने लिखा था कि हमारी मिनिस्ट्री से अगर पाकिस्तान फॉरेन मिनिस्ट्री को एक चिट्ठी आ जाये तो काफी आसान हो जायेगा। पहली बात तो यह है कि हाई कमीशन भी सरकारी तौर पर

खोज कर सकता है। और इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि इन दिनों इंडियन डेस्क की इन सब बातों की जाँच-पड़ताल जो करते हैं वह पूर्वी बंगाल के एक मुसलमान ही हैं। जहाँ तक मेरा ख्याल है ढाका के ही हैं। ढाका प्रायः जाते रहते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस मामले में वह अच्छे सहायक सिद्ध होंगे।

इधर पिछले कुछ दिन इतने झमेलों में फँसा रहा तरुण कि मिनिस्ट्री को एक फारमल कम्यूनिकेशन भेज ही नहीं सका। और टंडन साहब की अनुपस्थिति में तो समय बिल्कुल ही नहीं मिलेगा। यह सोच कर तरुण बोला, 'उन सब डान्सरों की तो सोच ली जायेगी जब आयेंगी। आप बॉन जाने से पहले मेरी उस चिट्ठी का ड्राफ्ट देखकर फाइनल कर दीजियेगा; एण्ड यू शुड सी दैट इट इज़ इमीडियेटली डिस्पैच्ड टु फॉरेन ऑफिस।'

'सर्टेनली'—जोर के साथ मिस्टर टंडन ने जवाब दिया।

कुछ पल रुककर फिर बोले, 'बैटर डू वन थिंग। तुम आज रात को घर आ जाओ। डिनर के बाद बैठकर फाइनल कर देंगे।'

'तो क्या आपको नहीं मालूम कि मैं आज रात को आपके यहाँ आ रहा हूँ?' हँसते हुए तरुण ने पूछा।

'इसका मतलब ?'

'इसका मतलब है कि आज भाभी जी ने मेरे लिये कोई स्पेशल डिश बनाई है....।'

खिलाखिला पड़े टंडन। बोले, "सारी जिन्दगी डिप्लोमेसी करता रहा पर तब भी डिप्लोमेसी में तुम लोग मुझे हरा देते हो!'

# तेरह

शुक्रवार को जैसे ही तरुण आफिस पहुँचा, खबर मिली कि इन्द्राणी का पता लगाने में फॉरेन मिनिस्ट्री यथासाध्य प्रयत्न करेगी।

खबर बॉन एम्बैसी के फर्स्ट सेक्रेटरी मिस्टर कपूर ने भेजी थी।

खबर मिलते ही मन खुशी से ओतप्रोत हो गया। न जाने कितनी बार केबलग्राम पढ़ा—फॉरेन एश्योर्ड एवरी पॉसिबल ऐक्शन ट्रेस इन्द्राणी।

पलक झपकते समझ में आ गया कि मिस्टर टंडन की वजह से ही इतनी चटपट बॉन से दिल्ली अर्जेन्ट मेसेज जा सका। अम्बैसेडर ने भी जोर देकर लिखा होगा। नहीं तो भला कहीं इतनी जल्दी उत्तर आ सकता था?

यों तो फॉरेन मिनिस्ट्री के सामने बहुत सी मुश्किलें होती हैं। पर सहकर्मियों की सहायता व सहयोग करने में किसी को रंचमात्र हिचक नहीं होती। इसके विपरीत आग्रह ही अधिक होता है।

पाकिस्तान भी एक विचित्र देश है। राजनैतिक मामले में उसका रुख समझना संभव नहीं है। हाँ, अराजनैतिक विषयों में वह अवश्य सहायता करने का प्रयत्न करता है। इसका भी कारण है—वह यह कि कोई पाकिस्तानी यदि मुश्किल में फँसा हो तो भारत सरकार हर तरह की सहायता करने का शीघ्रातिशीघ्र प्रयत्न करती है। दिल्ली स्थित पाकिस्तान हाई कमीशन से जब तब इस तरह के अनुरोध आया करते हैं, भारत सरकार सदा उनकी मर्यादा रखने की कोशिश करती है।

देश के दो भागों में बँट जाने पर आत्मीय-स्वजन—सगे-सम्बन्धी भी दोनों देशों में विभक्त हो गये हैं। शादी-विवाह में जाना-आना पड़ता ही है। लखनऊ में ससुर की मृत्यु का समाचार पाकर लड़के बहू या लड़की जमाई को भागना ही पड़ता है लाहौर से।

और भी बहुत कुछ होता है। अभी थोड़े दिनों की तो बात है जब पाकिस्तान हाई कमीशन के एक थर्ड सेक्रेटरी की पत्नी सन्तान प्रसव के बाद बहुत बीमार पड़ जाने पर अपनी माँ को देखने के लिये तरस गई थीं। भारत सरकार की मदद से वह अगले दिन ही पेशावर से दिल्ली पहुँच गई थीं। भारत सरकार की इस उदारता व तत्परता से मुग्ध होकर पाकिस्तान के फॉरेन सेक्रेटरी ने व्यक्तिगत रूप से स्वयं कृतज्ञता जताई थी।

पाकिस्तान के अनेकों बड़े-बड़े अफसरों के अगणित नाते-रिश्तेदार उत्तर-पश्चिम भारत में बिखरे हुए हैं। अतः भारत सरकार के औदार्य व सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ पाकिस्तानी ही अधिक उपकृत होते हैं। यही कारण है कि भारत सरकार के ऐसे किसी अनुरोध का पालन करने का वह यथासाध्य प्रयत्न करते हैं।

तरुण यह सब जानता है। जब दिल्ली था तो उसी के पास ऐसे न जाने कितने अनुरोध आया करते थे। तभी तो बॉन से मैसेज मिलने पर ऐसा प्रतीत हुआ मानों अमावस की रात खत्म होने को आ रही हो और नव दिवस की प्रथम किरण फूटने ही वाली हो।

मिस्टर दिवाकर कुछ फाइलें लेकर आये, पर आज तरुण का उन्हें देखने का मन नहीं हुआ।

"एक्सक्यूज़ मी मिस्टर दिवाकर, आज इन्हें रख दीजिये। सोमवार को देखूँगा। आज मैं साप्ताहिक रिपोर्ट तैयार कर देता हूँ, उसे आज ही भेज दीजियेगा।"

सभी देशों के डिप्लोमेटिक मिशन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वीकली पोलिटिकल डिस्पैच भेजना होता है। ब्रह्मांड चाहे उलट-पुलट हो जाये, डिप्लोमेट मरे या जिये; पर वीकली रिपोर्ट ठीक समय पर जायेगी ही। और फिर बर्लिन का तो महत्त्व ही अलग है। बॉन स्थित ऐम्बैसी इसी रिपोर्ट के आधार पर दिल्ली रिपोर्ट भेजती है और उस रिपोर्ट को आधार बनाकर दिल्ली अपनी नीति व कार्य-पद्धति निर्धारित करती है। अतः इन्द्राणी के स्वप्न में खोये रहते हुए भी पोलिटिकल रिपोर्ट भेजने में तरुण ने विलम्ब नहीं किया।

रिपोर्ट को अंतिम बार देखकर अपने हाथ से सील करके तरुण ने मिस्टर दिवाकर को पकड़ा दी और हँसते हुए कहा, "यह लीजिये।

आइ होप आइ विल नाट सी यू बिफ़ोर मन्डे !"

दिवाकर के चले जाने पर तरुण फिर कुछ देर तक केवलग्राम को उलटता-पलटता रहा। उसके वाद अचानक न जाने क्या याद आया कि वन्दना को चिट्ठी लिखने वैठ गया।

""प्रायः तीन हफ्ते हो गये तुम्हारी चिट्ठी मिले, पर जवाब नहीं दे सका। प्रियजनों के पत्रों का उत्तर मैं जल्दी नहीं देता, यह तुम जानती हो। जिनको प्यार तो करता हूँ किन्तु निकट नहीं पाता उनकी चिट्ठी मिलने पर बड़ा अच्छा लगता है। बार-बार पढ़ता हूँ उन पत्रों को—एक दिन नहीं, कई दिनों तक। तुम्हारा पत्र भी कई दिनों तक कई बार पढ़ा है। एक बार उत्तर दे देने पर तो सब कुछ खत्म हो जाता है। जब तक जवाब नहीं देता लगता है चिट्ठी के माध्यम से प्रेषक को देख रहा हूँ, उसकी बातें सुन रहा हूँ। लेकिन उत्तर देने के वाद यह प्रतीति, यह कल्पना विलीन हो जाती है। इसी डर से पत्रोत्तर देने में जान-बूझ कर देर कर देता हूँ।

लेकिन तव भी इतना विलम्ब होना उचित नहीं है। इधर कुछ ऐसे बेकार के लोगों के उत्पातों से तंग था कि ऑफिस का कामकाज भी ठीक तरह नहीं कर सका। पर आज तुम्हें चिट्ठी लिखे बिना नहीं रह सका। आज ही ऐम्बैसी से खबर मिली है कि फॉरेन मिनिस्ट्री इन्द्राणी को ढूँढ़ निकालने में यथासाध्य प्रयत्न करने को तैयार हो गई है। खबर पाकर सबसे अधिक खुशी शायद तुम्हें ही होगी, यही सोचकर तुरन्त लिखने वैठ गया।

अंत में तरुण ने यह भी लिखा कि पता नहीं इन्द्राणी मिलेगी या नहीं; उसे कभी देख पाऊँगा या नहीं; पर अतीत की अभिज्ञता से ऐसा लगता है कि इस वार उसकी वास्तविक खवर अवश्य मिल जायेगी।

इस विश्व के महाशून्य के अन्तर्गत होते हुए भी नित्य नियमानुसार चौबीस घंटे घूमते रहते हैं। प्रतिदिन नियत समय पर चन्द्र-सूर्य उदित होते हैं और अस्ताचल की ओर चले जाते हैं। समुद्र में, नदी में ज्वार-भाटा उसी तरह आता है। शुक्ल पक्ष के पश्चात् फिर अँधेरा शुरू होता है और अमावस्या की काली रात आ जाती है। इसी तरह काल के क्रम के साथ-साथ दुनिया चल रही है। पृथ्वी की मध्याकर्षण शक्ति के समान मनुष्य व प्रकृति की भी कोई अदृश्य शक्ति है। पहाड़ की क्रोड़ में

जन्म लेकर भी नदी सारे बंधनों को तोड़ती हुई समुद्र की ओर भागती है। महासमुद्र की अनन्त जलराशि में स्वयं को विलीन कर देना ही उसकी साधना, उसका धर्म है। समुद्र के आकर्षण से ही नदी उसकी ओर भागती है। जो हिमालय सबके ऊपर छत्रछाया रखता है, उसी पर्वत-राज जन्मदाता का त्याग करने में उसे कोई दुविधा, कोई संकोच नहीं होता। वरन् उस त्याग में एक आनन्द, एक परितृप्ति निहित होती है। यही कारण है कि वह पतली-सी धारा नाचते-नाचते रुक जाती है और फिर हँसते हुए समतल भूमि में फैल जाती है। केवल इतना ही नहीं—जो क्षीण धारा पर्वतश्रृङ्ग से गिरते समय अथवा तराई के जंगलों में परिचय विहीन होती है, वही मैदान में पहुँचकर असंख्य मनुष्यों के स्पर्श से अनन्य बन जाती है और समुद्र के सामने पहुँचकर दिगन्त-विस्तृत हो जाती है।

तरुण भी इसी प्रकार इन्द्राणी के आकर्षण से बँधा अनन्त, अज्ञात भविष्य की ओर भागा चला जा रहा है। उसे तो यह भी नहीं मालूम कि कहीं यह झूठी प्रत्याशा या मरीचिका तो नहीं है। भविष्य उसके लिये अंधकार ही अंधकार है—जिसमें कुछ भी देखना सम्भव नहीं। पर तब भी प्रकाश की इस बहुत ही धुँधली सी रेखा ने भी जैसे उसे आनन्द-विभोर कर दिया है। आशा के अंकुर फूटने लगे हैं मन में। तभी तो वन्दना को पत्र लिखते समय वह जैसे स्वयं को भूल बैठता है।

...वन्दना तुम वयस्क हो, समझदार हो। पर इससे भी बड़ी बात यह है कि तुम मुझसे स्नेह करती हो, मेरी मंगलकामना करती हो, मुझे बड़ा भाई मानती हो। इसलिये तुमसे कुछ भी नहीं छुपाया जा सकता। दूसरी लड़कियों की तरह इन्द्राणी साधारण लड़की नहीं थी। वह स्वप्न बहुत देखा करती थी। मुझसे बड़ी-बड़ी आशाएँ किया करती थी। बूढ़ीगंगा के किनारे वास करते हुए मैं उस जैसे स्वप्न न तो देख पाता था और ना ही देखने का साहस होता था। पिता जी के कोर्ट चले जाने पर माँ जब शिवमंदिर चली जातीं तब वह मेरे पास आया करती। बार-बार कहती विने काका की तरह क्या तुम भी सबको स्तम्भित नहीं कर सकते ?

तब तो कल्पना भी नहीं कर सका था कि ढाका या कलकत्ता के बाहर भी कभी जा पाऊँगा, सोच ही नहीं सका था कि नौकरी में सात

समुद्र तेरह नदी न जाने कितनी बार लाँघनी पड़ेंगी। और भी बहुत कुछ जो आज है उस समय कल्पनातीत था। तभी तो उसके प्रश्न के जवाब में कहा करता, भविष्य क्या मेरे हाथ में है इन्द्राणी ?

प्रतिवाद करते हुए वह कहती, मर्द होकर इस तरह की बात कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती।

और यह कहते ही उत्तेजना से उसका मुँह लाल हो जाता। ढीला बँधा जूड़ा बार-बार सिर हिलाने से और भी ढीला हो जाता।

जूड़े के काँटे ठीक करते-करते कहती, तुम इस साल बी० ए० की परीक्षा दे रहे हो, मैं भी कालेज में भर्ती हो गई हूँ। क्या अब भी भविष्य के प्रति सचेतन होने का समय नहीं आया ?

कहाँ तक लिखूँ ? मुझे लेकर जिसने अगणित आशाएँ हृदय में सँजो रक्खी थीं, वह यदि जीवित है तो किस प्रकार अपने दिन व्यतीत कर रही होगी, यह सोचकर मन कष्ट से भर उठता है।

और कुछ नहीं लिखा तरुण ने वन्दना को। लिख ही नहीं सका। लिखना संभव भी नहीं था। स्वप्न तो सभी लड़कियाँ देखती हैं—कोई कम कोई ज्यादा। लेकिन इन्द्राणी तो जैसे असम्भव को संभव बनाने का स्वप्न देखा करती थी।

ढाका से सहस्रों मील दूर बर्लिन के इंडियन कान्सुलेट में बैठा था तरुण पर मन ढाका के उन्हीं बीते हुए सुनहरे दिनों की ओर उड़ गया था....

दिन चढ़ आया था, पर तरुण तब भी सो रहा था। टेस्ट परीक्षा जब खत्म हो गई थी तो भला देर तक क्यों न सोया जाये। उधर की बड़ी खिड़की से धूप आने लगी तो करवट बदलकर फिर चादर लपेट ली थी उसने। और फिर जब पिताजी ढाका से बाहर गये हुए थे तो और भी निश्चिन्तता थी।

जाने कौन दौड़ता हुआ घर में घुसा ? काँच की चूड़ियों की खन-खनाहट भी सुनाई दी ! लेटे-लेटे मन ही मन मुस्कुराया तरुण। तो आ ही गई डाकू लड़की आखिर।

दूसरे ही क्षण कानों में सुनाई दिया, 'मौसी।'

कोने वाले कमरे से तरुण की माँ ने जवाब दिया, 'मैं यहाँ हूँ कोने वाले कमरे में।'

बाद के कुछ मिनिटों तक उनकी कोई बात सुनाई नहीं दी। एक बार चादर हटाकर बरामदे की ओर सिर घुमाकर देखा—कोई दिखाई नहीं दिया—नहीं अभी इधर आने का समय नहीं हुआ।

और कुछ मिनिट गुज़रे, तब भी इन्द्राणी की आवाज़ सुनाई नहीं दी। तो क्या चली गई ? नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है! एक बार मिले बिना कैसे जा सकती है भला ?

इतनी देर बाद ख्याल आया कि धूप काफ़ी चढ़ आई है। चादर लपेट कर इस बेला तक सोना अच्छा नहीं लगा तरुण को।

कुछ समय और गुज़र गया। नहीं, अब देर नहीं करनी चाहिये। और बिस्तर से उठ खड़ा हुआ तरुण। बदन पर चादर लपेट कर बरामदे में जाकर इधर-उधर नज़र दौड़ाई। पटल की माँ दिखाई नहीं दी तो समझ गया कि वह रसोई में होगी। धीरे-धीरे चलकर कोने वाले कमरे के दरवाजे के सामने पहुँचा। और उसके पहुँचते ही दोनों की बातचीत बंद हो गई।

'मामला क्या है ? सुबह-सुबह तुम्हारी खुसर-पुसर शुरू हो गई ? आँखें मलते-मलते तरुण ने कहा।

चोटी को हाथ से झुलाते हुए सिर जरा तिरछा करके उसकी ओर देखा इन्द्राणी ने और चकित होकर पूछा, 'यह क्या मौसी, खोकन दा अब सोकर उठे हैं ?'

इन्द्राणी की बात खत्म भी नहीं हुई थी कि तरुण ने अन्दर जाकर कुर्सी खींच ली थी। कुर्सी पर बैठते-बैठते निर्विकार भाव से बोला, 'भाग्यवान लोगों को ही देर तक सोना नसीब होता है, इसमें चौंकने की क्या बात है ?'

कुछ भी हो, आखिर तो इकलौती सन्तान थी। डाँटने की भाषा भी निराली थी। माँ ने जवाब दिया, 'उसकी बात मत कर बेटी !'

और एक छोटा सा दीर्घश्वास छोड़ा माँ ने जिससे उसे पता न चले। फिर इन्द्राणी को लक्ष्य करके बोली, 'तेरे जैसी कोई लड़की मिल जाती, तभी यह वश में आता।'

क्षण भर के लिये दोनों की आँखें मिलीं। दोनों के नेत्रों में अचानक एक चमक आई और इन्द्राणी की नज़रें जैसे शर्म से झुक गई।

'अगर मिल जाती तो का क्या मतलब ? तुम्हारे पास ही तो बैठा

है।' बात को आगे बढ़ाया तरुण ने।

कुछ देर चुप रहकर फिर बोला, 'अच्छा माँ, तुम्हारा क्या ख्याल है? यह कि ऐसी लड़की मुझे वश में कर लेगी?'

अचानक पटल की माँ की आवाज सुनाई दी और तरुण की माँ उसकी बात का जवाब दिये बिना हाथ की सिलाई रखकर रसोई में चली गईं।

तरुण भी उठ कर खड़ा हो गया और इन्द्राणी से बोला, 'देखो तो, जरा एक कप चाय पिलवा सकती हो क्या?'

उठकर खड़े होते-होते इन्द्राणी ने कहा, 'कुल्ला कर लिया?'

'तुम्हारे हाथ की चाय पीते ही कुल्ला हो जायेगा।'

'मुझे कोई मौसी मत समझ लेना जो इकलौते लड़के की हर ज़िद पूरी कर देंगी।'

जरा चुटकी लेने के ख्याल से तरुण ने कहा, 'तो क्या हुआ, मौसी के इकलौते लड़के की तरह तुम्हारे भी तो मन का एकमात्र अधीश्वर हूँ।'

ओंठ उलटकर अन्दर ही अन्दर हँसते हुए इन्द्राणी ने जवाब दिया, 'क्यों नहीं, क्यों नहीं! जो लड़का मुन्सिफ कोर्ट की वकालत का स्वप्न देखता हो, वही तो मेरे मन का अधीश्वर होगा।'

दाहिने हाथ की उँगली से अपनी ओर इशारा करके तरुण ने पूछा—'मैं मुन्सिफ कोर्ट में प्रैक्टिस करूँगा?'

'और इससे ज्यादा तुमसे होगा भी क्या?'

आखिर था तो माँ-बाप की इकलौती सन्तान! अपने भविष्य के बारे में विशेष चिन्ता की आवश्यकता ही नहीं समझी कभी तरुण ने। मैट्रिक के बाद आइ० ए०; आइ० ए० के बाद बी० ए०; बी० ए० के बाद एम० ए०।

और उसके बाद?

उसके बाद देखा जायेगा। माँ हैं, पिताजी हैं। और फिर इन्द्राणी है। बेकार सोच-सोचकर सिरदर्दी क्यों मोल ली जाये।

भविष्य के बारे में तरुण की यह उदासीनता ही बस इन्द्राणी बर्दाश्त नहीं कर पाती थी। उसके लिये कल्पनातीत था यह। बचपन में जिसके साथ खेली थी, यौवन में जिसे लेकर स्वप्न देखने सीखे थे, वह क्या बस

उयाड़ि के मैदान में फुटवाल खेलेगा, बूढ़ीगंगा के किनारे अड्डेवाजी करेगा, नौकरी करके जीवन यापन करेगा।

तो फिर ?

तो फिर क्या ? वह बड़ा बनेगा। बहुत बड़ा बनेगा। हजारों में एक होगा। वह विने काका जैसा बनेगा। देश-देशान्तरों का भ्रमण करके ढाका के लोगों को चमत्कृत करेगा।

वचपन में प्रतिदिन चाकलेट टॉफी खिलाते-खिलाते विने काका अचानक एक दिन गायव हो गये थे। छोटी सी वच्ची इन्द्राणी समझ तो कुछ पाई नहीं, बस स्तंभित रह गई थी। जैसे-जैसे वड़ी होती गई विने काका की स्मृति और भी प्रगाढ़ होती गई। ढाका के और सारे निवासियों की तो वही एक सी नीरस दिनचर्या थी। वह लोग तो इलिश मछली खाकर और गंगाजल पीकर ही मस्त थे वस। मन में एक विराट शून्यता का अनुभव करती इन्द्राणी; पर किसी से कुछ भी कहती नहीं—तरुण से भी नहीं। वयस्क होने पर वही शून्यता वह अपने निकट के व्यक्ति से पूर्ण करना चाहती हैं।

तभी तो वातों-बातों में तरुण को ताना मार देती है।

इन्द्राणी रसोई की ओर चली गई। और तरुण के हाथ-मुँह धोकर अपने कमरे में घुसते ही चाय ले कर आ गई। चाय का कप उसके हाथ में पकड़ाते हुए ओठों ही ओठों में मुस्कुराकर वोली, 'जानते हो, इतनी सुबह-सुबह मौसी ने क्यों बुलाया था ?'

दोनों पाँव कुर्सी के ऊपर खींचकर ठीक से वैठते हुए तरुण ने पूछा, 'क्यों वुलाया था ?'

'माँ ने शायद मौसी से कहा है कि मैमनसिंह के किसी डाक्टर के लड़के का मेरे लिये रिश्ता आया है..!'

भँवें सिकोड़कर तरुण वोला, 'कव, मुझे तो तुमने वताया नहीं ?'

'मुझे भी मालूम नहीं था। मौसी से ही पता चला अभी।'

'माँ ने क्या कहा ?'

'पता है, मेरी शादी के सम्वन्ध की वात सुनकर मौसी वहुत गुस्सा हैं।'

'क्यों ?

'यह तो नहीं मालूम। पर इतना अवश्य समझ में आया कि मैं कहीं

और चली जाऊँ, यह वह नहीं चाहतीं।'

यह सुनकर तरुण की जान में जान आई जैसे। परम तृप्ति के साथ चाय का घूँट भरकर बोला, 'वाह! फर्स्ट क्लास!'

उसके मुख के विल्कुल सामने टेविल पर झुक कर इन्द्राणी ने पूछा, 'क्या फर्स्ट क्लास?'

मुँह उठाये विना ही तरुण ने जवाव दिया, 'तुम, माँ, चाय—सभी फर्स्ट क्लास हैं!'

वन्दना को चिट्ठी लिखने के बाद वैठे-वैठे यही सब याद आ रहा था तरुण को। माँ याद आ रही थीं। वहुत ही प्यार करती थीं इन्द्राणी को। बिल्कुल अपनी लड़की की तरह चाहती थीं। उसे पास रखने की वड़ी इच्छा थी उनकी।

दो-चार इधर-उधर के रिश्ते आने के वाद अपने को रोक नहीं पाईं, सीधे इन्द्राणी के पिताजी से ही कहा था उन्होंने—'देखो देवर जी, मुझे विना वताये लड़की को जहाँ-तहाँ मत फेंक देना!'

'आपको वताये बिना भी भला लड़की का रिश्ता कर सकता हूँ?'

'यह तो पता नहीं। पर जिस तरह तुम लोग यह सब इधर-उधर के जैसे-तैसे लड़कों की खबर सुनते ही भाग-दौड़ कर रहे हो, उससे तो यही लगता है।'

'तो आपके जैसा लड़का कहाँ मिलेगा भला?'

'वह तो वाद की वात है। अभी तो वस यही कहना है कि मुझे वताये विना कभी हठात्...।'

सारे स्वप्न चूर-चूर हो गये। दुनिया ही उलट-पुलट हो गई। शाँख-सिन्दूर, मुख की मुस्कुराहट, आँखों के सपने—सब एक साथ खो गये।

उसके वाद तो जाने क्या कुछ हुआ! भेड़ों के झुंड की तरह सर्वहारा वनकर इस पार आ गये।

रानाघाट, स्यालदह, पटलडाँगा। फुफेरी ननद का घर, ममेरे देवर का घर! और भी कितनी जगहें!

वे दिन मानो एक लम्बी अँधेरी रात वन गये थे, जो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। एक दिन अचानक जैसे नवीन कुंड लेन के उस अँधेरे कमरे में सूर्य का प्रकाश पहुँच गया। तरुण आइ० एफ०

एस० बन गया ।

जो सूर्य दोपहर को ही अस्त हो गया था, उसके लिये उस दिन खूब रोईं थीं माँ । वह आज होते तो लड़के की इस उन्नति से उनको ही तो सबसे अधिक प्रसन्नता होती ।

किसी तरह की सान्त्वना नहीं दे पाया था तरुण मां को । इतनी बड़ी सफलता के बाद भी स्वयं को जाने कैसा तो पराजित सा अनुभव कर रहा था । तख्त पर नीचा सिर किये बैठा-बैठा चुपचाप सोचता रहा था बस !

अचानक तरुण की माँ ने दुखभरी एक दीर्घश्वास छोड़ी और जैसे अपने आप से कहा था, 'हतभागी लड़की ही अगर पास होती ।'

यह सारी बातें सोचते-सोचते तरुण की आँखें भर सी आईं—कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था जैसे । भूल गया कि वह बर्लिन में है—भूल गया कि वह ऑफिस में बैठा है ।

हठात् मिस्टर दिवाकर ने कमरे में प्रविष्ट होकर कहा, 'सर ! छह बज रहे हैं । हम लोग जायें क्या ?'

लज्जित अनुभव किया तरुण ने स्वयं को । संविद् में लौटा और स्वर को संभालकर बोला, 'हाँ, हाँ, जाइये । चलिये, चलिये, मैं भी चलता हूँ ।'

# चौदह

उड़-उड़ कर फूल-फूल का रस पीना ही मधुमक्खी का काम है—उसका स्वभाव व धर्म है। शीत, बसन्त, शरत्, हेमन्त के कितने भिन्न-भिन्न फूलों का मधु संग्रह करती है वह। और इसी मधु के लिये जीती है। जहाँ मधु नहीं होता, वहाँ मधुमक्खी भी नहीं होती।

बहुत से मनुष्य भी इसी तरह केवल रस के लोभी होते हैं। शीत के मासूम फूलों के बीच रहते हुए इनकी नज़र वसन्त की ओर रहती है तो वसन्त में हेमन्त की ओर! स्मृतियों के भंडार में कुछ भी जमा नहीं रहता उनके पास! इन लोगों का हृत्पिड तो होता है, पर हृदय नहीं होता, मन तो होता है, लेकिन हृदय नाम की कोई वस्तु नहीं होती।

प्यार करना ही जीवन का धर्म है। यौवन में पहली बार उसकी पूर्ण अनुभूति होती है। जीवन के संधिकाल के उस अपूर्व क्षण में मनुष्य प्यार करता ही है। यही कारण है कि यौवन में बहुत से लोग प्रेम में पड़ जाते हैं, पर प्यार करना? सभी क्या प्यार कर पाते हैं। तन-मन की हर ग्रंथि, हर शिला में क्या सभी प्यार की अव्यक्त वेदना का अनुभव कर पाते हैं?

नहीं। तभी तो प्रेम में पड़ने से ही प्यार नहीं हो जाता। प्रेम एक रोग है। जिस प्रकार असली बड़ी माता नहीं, पर छोटी सबको अवश्य निकलती है और शरीर पर अपने चिह्न भी छोड़ जाती है; परन्तु वह चिह्न स्थायी नहीं होते; एक दिन मिट जाते हैं। और प्रेम?—वह अन्तर का धर्म है, मन का विश्वास है। वह स्थायी होता है, चिरन्तन होता है, अनन्त होता है। कभी मिटता नहीं।

दुनिया के लोग बर्लिन आकर अपने समस्त दुख-सुख, व्यथा-वेदना भूल जाते हैं। गोल्डेन सिटी बार, एल पैनोरमा या बाल हाउस ऐसी की क्षणिक चकाचौंध में और भी बहुत कुछ भूल जाते हैं। हंसा क्वार्टर

में रहकर भी बहुत कुछ भूला जा सकता है। लेकिन तरुण इन्द्राणी को नहीं भूल पाता।

आफिस से लौटकर लिविंग रूम में चुपचाप बैठा एक के बाद एक सिगरेट पीते हुए न जाने क्या सोच रहा था वह। तन्मय होकर सोच रहा था। और दिन तो गाड़ी से उतरते ही पड़ोसी डा० रिटर के छोटे लड़के को ढूँढ़ता था और तरुण को देखकर छोटा रिटर भी एक मिल्क चाकलेट के लोभ में डगमगाते कदमों से आगे बढ़ आता था। रोज की तरह उस दिन भी जेब में चाकलेट थी पर गाड़ी से उतरकर अन्य-मनस्क भाव से वह सीधा अपने अपार्टमेन्ट में चला आया था। प्रतिदिन की तरह पैन्ट्री में जाकर चाय भी नहीं बनाई थी। क्यों बनाये ? रोज-रोज क्या अच्छा लगता है ? केवल अपने लिये इतना झमेला करने की किसे इच्छा होती है ?

तभी तो इतना तन्मय हो गया था। सोच रहा था, जब सब थे, सब कुछ था तब वह भी पास थी। सुख-दु:ख में अहर्निश उसे अपने निकट पाया था उसने। एक बार पूजा के पहले जब तरुण की माँ को डबल निमोनिया हुआ था और उसके पिताजी कलकत्ता गये हुए थे तो तरुण की डर से जैसे जान ही निकल गई थी। माँ-बाप का अकेला पुत्र होने के कारण घर-गृहस्थी की किसी जिम्मेदारी या झंझट से उसे कभी किसी तरह का वास्ता नहीं पड़ा था। इसीलिये पिता की अनुपस्थिति में माँ के बीमार पड़ जाने से वह बहुत ही घबरा गया था। अगल-बगल के मुहल्लों से बहुत से लोग देखने आये थे। उन लोगों की सहायता से माँ की चिकित्सा व सेवा-शुश्रूषा में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई थी। ढाका मेडीकल कालेज के डा० घोषाल ने भी आश्वासन दिया था कि कुछ ही दिनों में पूर्णतया स्वस्थ हो जायेंगी। पर तब भी उसका मुँह ज़रा सा निकल आया था।

माँ की उस बीमारी में भी तरुण को जरा भी भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ी थी। मुंशी मदन बाबू डाक्टर के पास जाते-आते थे और पड़ोस की कोई ताई, कोई बुआ दिन भर में दसियों चक्कर लगातीं, दवा-दारू देतीं।

और फिर इन्द्राणी तो थी ही। सारा दिन मौसी के सिरहाने बैठी सिर, पैर दबाती। शाम के बाद घर का काम निपटाकर इन्द्राणी को

माँ आतीं और रात को नौ साढ़े नौ के करीब उसके पिता आते। एक डेढ़ घंटे बाद दस-ग्यारह बजे तीनों जने अपने घर जाते।

लेकिन तब भी तरुण को डर लगता रहता। पिताजी को तार दे दिया था उसने कि काम छोड़कर जल्दी लौट आयें!

उन्हीं दिनों एक दिन पिताजी की स्टडी में टेबिल पर सिर रक्खे आकाश-पाताल की जाने क्या-क्या सोच रहा था। अचानक सिर पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस हुआ। कोई और दिन होता तो चौंक उठता वह, पर उस दिन मन बड़ा भाराक्रान्त था। हिला तक नहीं, ज्यों का त्यों बैठा रहा। बड़ा अच्छा लगा। अपने समस्त अन्तर द्वारा उसे एक और व्यक्ति की समवेदना की उपलब्धि हुई। प्यार के निर्भर-शील स्पर्श का अनुभव हुआ।

'इतना क्या सोच रहे हो?' मृदु स्वर में इन्द्राणी ने पूछा था।

कोई उत्तर नहीं दिया तरुण ने। वैसे ही टेबिल पर सिर रक्खे बैठा रहा।

'बताओ ना, क्या सोच रहे हो?'

'कहाँ, कुछ भी तो नहीं।' छोटा सा उत्तर दिया तरुण ने।

'तो फिर इस तरह अकेले क्यों बैठे हो?'

'ऐसे ही'—

'मुझे भी नहीं बताओगे?'

इस वार टेबिल से सिर उठाकर तरुण ने इन्द्राणी की ओर देखा और ओठों पर मुस्कुराहट लाने का प्रयत्न करते हुए बोला, 'बस ऐसे ही चुपचाप बैठा था।'

हँस पड़ी इन्द्राणी यह सुनकर। बोली, 'तुम क्या सोचते हो कि मैं अभी तक तुम्हें नहीं समझ पाई?'

बातों-बातों में कितनी ही बातें कहने न कहने की मुँह पर आ जाती हैं।

मज़ाक़ करते हुए इन्द्राणी बोली, 'अच्छा अगर मैं बहुत बीमार पड़ जाऊँ तो?'

'अच्छे डाक्टर को दिखाने व इलाज की व्यवस्था हो जायेगी।'

'वह तो हो जायेगी, पर तुम भी कुछ करोगे या इसी तरह बैठे-बैठे सोचोगे?'

कुछ ही दिनों में माँ ठीक हो गईं और पिताजी भी कलकत्ता से लौट आये। इन्हीं दिनों तरुण को एक नई उपलब्धि हुई।

वह थी इन्द्राणी के प्यार की। दुःख-विषाद के दिनों में एक निश्चित निर्भय आश्रय का इंगित मिला था उसे।

बहुत दिन बाद तरुण को फिर उस दिन की याद आ गई थी। जब घर-द्वार से दूर माँ की मृत्यु हुई थी तब उसने निदारुण रूप से इन्द्राणी की अनुपस्थिति का अनुभव किया था। और आज फिर इतने दिन बाद हंसा क्वार्टर के अपने अपार्टमेंट में अकेले बैठे-बैठे वह इन्द्राणी का अभाव बहुत ही अधिक महसूस कर रहा था।

यों तो डिप्लोमेट को अपने जीवन की बातें सोचने का अवकाश बहुत कम मिलता है। बहुत कुछ मिलता है बस एक नहीं मिलता तो स्वयं के निकट स्वयं को पाने का सुयोग। कभी प्रकट में तो कभी एकान्त में उसे निरन्तर राजनैतिक संवाद संग्रह करने में व्यस्त रहना पड़ता है। दिन में आफिस, रात को पार्टी। वहाँ भी छुट्टी नहीं मिलती। ग्लास पर ग्लास शराब के पीने पड़ते हैं—कभी अपनी इच्छा से तो कभी किसी के आग्रह पर। पर तब भी नशे में चूर नहीं हो सकता वह, अपने देश का स्वार्थ नहीं भूल सकता।

क्षण भर को भी तो मुक्ति नहीं मिलती। हाँ, कभी-कदाच् यदि कर्त्तव्य के इस जंजाल से कुछ देर को मुक्ति मिल जाती है तो फिर अपनी याद उसे विकट रूप से आने लगती है। आधुनिक विश्व राजनीति के प्रत्येक पृष्ठ पर बर्लिन का उल्लेख होते हुए भी लंदन, न्यूयार्क, वाशिंगटन, मास्को की तरह यहाँ कूटनैतिक चांचल्य नहीं है। एक-आध हवा का झोंका आता अवश्य है, पर कभी-कभी। शायद यही कारण है कि बर्लिन आने के बाद तरुण को अपने जीवन की ओर देखने का सुयोग अधिक मिलने लगा है : अतीत की स्मृतियाँ, वर्त्तमान की वेदना एवं भविष्य की अनिश्चितता का ऐसा 'कोरस' सुनने का अवसर पहली बार आया है उसके जीवन में।

कमरे में चारों ओर दृष्टि घुमाते ही नजर राइटिंग डेस्क पर रक्खी मिश्र की फोटो पर जा पड़ी। बहुत ही चाहता है तरुण मिश्र को, अन्तर से श्रद्धा करता है। विभिन्न देशों में हजारों लोगों से मिला है वह, परन्तु ऐसा ग्लानिविहीन, कालिमामुक्त स्वच्छ अन्तःकरण वाला कोई व्यक्ति

दिखाई नहीं दिया। उसी डेस्क के दूसरे कोने में इन्द्राणी की फोटो थी। दोनों तस्वीरें इस तरह पास-पास रखने की भी एक कहानी है।

यूनाइटेड नेशन्स में रहते समय तरुण के फ्लैट में मिश्र ने पहली बार जिस दिन इन्द्राणी की फोटो देखी थी, तरुण से पूछा था, 'इज़ दिस द इनोसेन्ट गर्ल यू लव ?'

'वह इनोसेन्ट है, यह आपने कैसे जाना ?'

मिश्र साहब का बात करने का ढंग निराला ही था।...बोले, 'लुक हियर ईडियट यंगमैन ! आँखें देखो अच्छी तरह !'

जरा हँसते हुए इन्द्राणी की आँखों पर नज़र डालकर तरुण ने जवाब दिया....'कहाँ, मुझे तो इनोसेन्स दिखाई नहीं दे रही है।'

'कैसे दिखाई देंगी ? लगता है मन पूरी तरह विषाक्त हो गया है।'

आगे जाने क्या तो कहना चाहा था तरुण ने, पर कह नहीं सका था। एक तरह से चीखकर मिश्र ने कहा था, 'अब आगे और बकवक की तो पूरी बोतल स्काच की पिलाकर भी मुझे शान्त नहीं कर सकोगे ! समझे ?'

दो-एक राउंड ड्रिंक के लेकर तथा बातचीत के पश्चात् मिश्र ने कहा था, 'देखो तरुण, आइ एम ए फादर, वट आइ हैव मदर्स माइन्ड ! मदर्स फीलिंग्स !'

और खट से करीब आधा ग्लास ह्विस्की एक घूंट में गले से नीचे उतारकर बोले, 'और फिर उस हतभागिनी लड़की के चले जाने के बाद से तो जैसे मैं उस तरह की लड़कियों के बारे में सब कुछ जान जाता हूँ। उनके अन्तर की भावनाओं का अनुभव कर सकता हूँ। उस होपलेस लड़की से भले ही ठगा गया पर अब कोई लड़की मुझे धोखा नहीं दे सकती।'

तरुण हाथ में ग्लास पकड़े चुप बैठा रहा था।

आज बहुत दिन पश्चात् उस रात की बातें भी याद आ गई थीं। मिश्र ने कहा था—

...'इसकी आँखें देखकर ही मैं समझ गया कि यह लड़की कभी किसी को धोखा नहीं देगी, दे ही नहीं सकती। शी मस्ट बी वेटिंग फॉर यू।'....

अपनी एकमात्र लड़की के चले जाने की याद करके व्यथा व वेदना

से मिश्र का हृदय भर उठा था उस दिन।....'मेरी उस होपलेस लड़की जैसी इस दुनिया में और भी बहुत सी लड़कियाँ होती हैं जो दप से एक बार जलकर बुझ जाती हैं। पर तुम्हारी यह इन्द्राणी वैसी नहीं है। यह तो चिरकाल तक अँधेरे मन को प्रकाश से प्रदीप्त करने वालों में से है।'

राइटिंग डेस्क के दोनों ओर दोनों फोटो देखकर तरुण के मन में स्वप्नों के छोटे-छोटे मेघ जमने लगे और बढ़ते-बढ़ते मेघालयों का प्रासाद खड़ा हो गया। एक झोंका हवा का आया कमरे में और तरुण को जैसे इन्द्राणी दिखाई पड़ने लगी। कुछ क्षणों के लिये एकाकीपन की यवनिका उठ गई जैसे।....

...'क्या सोच रहे हो बैठे-बैठे ?'

चौंक उठा तरुण। 'कौन ? इन्द्राणी !'

मुँह से कुछ नहीं बोली इन्द्राणी। वह तो सदा की कम बोलने वाली थी। कृष्णचूड़ा की तरह सिर ऊँचा करके अपना प्रचार उसने कभी नहीं चाहा, सूर्यमुखी जैसा औद्धत्य भी उसके स्वभाव में नहीं था। उसके रजनीगंधा जैसे विनम्र माधुर्य पर ही तरुण मोहित था। आज भी आहिस्ता कदमों से आगे आकर उसने जैसे तरुण के दोनों हाथ पकड़ लिये। मुख से एक शब्द नहीं कहा, पर हंसा क्वार्टर से बाहर रेडियो टावर से भी आगे दूर असीम आकाश की क्रोड़ में घूमती उसकी दृष्टि में मधुर तृप्ति का इंगित स्पष्ट दिखाई दे रहा था उसे।

मंत्रमुग्ध सा हो गया तरुण ! कृष्ण पक्ष की दीर्घ अमावस्या के बाद दूज के चाँद की पतली सी रेखा से जैसे उसके मन-प्राण झिल-मिला उठे।

फिर एक झोंका हवा का आया और इन्द्राणी अदृश्य हो गई। साथ ही साथ स्वयं को लेकर बनाया कल्पनाओं का महल भी ढह गया तरुण का।

न जाने कब से टेलीफोन बज रहा था। झट से भागकर रिसीवर उठाया—यस, मित्रा स्पीकिंग।

ऐम्बैसेडर ! बॉन से ? तो क्या इन्द्राणी की कोई खबर मिल गई ? नहीं ! जर्मन इलेक्शन समीप होने के कारण तीनेक महीने उसे बॉन रहना पड़ेगा। चांसलर कोनार्द आदेनुर की विजय होगी क्या ?

अथवा....इलेक्शन के संबंध में दिल्ली एक स्पेशल पोलिटिकल रिपोर्ट भेजनी पड़ेगी।

मना करने का कोई बहाना या सुयोग ही नहीं था। ऐम्बैसेडर ने स्वयं टेलीफोन किया था। सी०जी० भी तैयार हो गये थे। अतः केवल इतना पूछा, 'व्हेन शुड आई रिपोर्ट सर ?'

'कम बाई नेक्स्ट वीक एंड।'

धन्यवाद जताकर तरुण ने टेलीफोन नीचे रख दिया। सोफे पर न बैठकर कमरे में ही धीरे-धीरे चहलकदमी करते हुए उसने सोचा, अब इन्द्राणी को निर्वासन में भेजना होगा। अब तो तन-मन से उस वृद्ध आद्येनुर की बात सोचनी होगी। बहत्तर वर्ष की आयु में जिनका जीवन-सूर्य पृथ्वी के महाकाश पर झलका है, दुश्चिन्ता ग्रस्त होने पर जो दोनों पाँव ठंडे पानी में डुबोकर सिर में ताजे रक्त का प्रवाह पहुँचाते हैं और कैबिनेट की मीटिंग में सभापतित्व करते हुए ढेर सी चाकलेट खाते हैं, दिन-रात ऐसे व्यक्ति के लिये काम करना पड़ेगा।

अत्यन्त दुखित होते हुए भी आद्येनुर की बात सोचकर हँसी आ गई तरुण को। उस विचित्र वृद्ध की हर सभा में साथ-साथ घूमना होगा जो रोयेनडुर्फ के अपने घर की सीढ़ियाँ चढ़ने से थक जाने पर एक बोतल राइन वाइन की पीकर पुनः ताजा कर लेता है स्वयं को !

# पन्द्रह

व्यक्ति को पद व वेतन के अनुसार महत्त्व कल-कारखानों, सरकारी गैर-सरकारी दफ़्तरों में तो दिया जाता है—परन्तु सर्वत्र यह लागू नहीं होता। विशेष कर जासूसी विभाग व कूटनीतिक जगत् में तो ऐसा नहीं ही है। एक वार परीक्षा में उत्तीर्ण होकर दो-चार प्रमोशन मिलने के वाद कुछ ऊपर उठते ही इन दोनों विभागों में व्यक्ति का महत्त्व नहीं बढ़ जाता। पुलिस के एस०पी० या डी०एस०पी० की अपेक्षा जासूसी विभाग के सब इंस्पेक्टर व इंस्पेक्टर का महत्त्व व प्राधान्य अधिकांश क्षेत्रों में कहीं अधिक होता है। डिप्लोमेटिक मिशनों में भी यही होता है।

बिग पावर्स की तो वात ही अलग है। अधिकतर देखा जाता है कि ऐम्वैसेडर की अपेक्षा प्राय: अज्ञात थर्ड सेक्रेटरी का महत्त्व कहीं अधिक होता है। अनेक क्षेत्रों में इस थर्ड सेक्रेटरी की गुप्त रिपोर्ट पर ही ऐम्वैसेडर का भाग्य निर्धारित होता है। भारतवर्ष विग पावर्स में नहीं आता, इसीलिये शायद अभी भी कान्फिडेन्शियल रिपोर्ट पर ऐम्वैसेडर के हस्ताक्षरों की आवश्यकता होती है! तब भी भारतीय मिशनों में मात्र वेतन और पद के अनुसार डिप्लोमेट्स को महत्त्व देना बहुत बड़ी भूल होगी।

बॉन में इंडियन एम्वैसी के पोलिटिकल काउन्सिलर होते हुए भी राजनैतिक मामलों में मिस्टर आहूजा का कोई विशेष महत्त्व या प्राधान्य नहीं है। जिन दिनों रातोंरात इंडियन फॉरेन सर्विस का जन्म हुआ था, मिस्टर आहूजा डी० ए० वी० कॉलेज की दर्शन शास्त्र की प्रोफेसरी छोड़कर अचानक डिप्लोमेट बन गये। प्लूटो, सॉक्रेटीज या भगवान बुद्ध से नाता तोड़ देने पर आहूजा साहब के सिर पर आसमान नहीं टूटा कोई; वरन् प्रतिवर्ष वेतन बढ़ा है और नियमित पदवृद्धि भी हुई है।

तब भी उन पर पूर्ण रूप से निर्भर नहीं किया जा सकता और महत्त्व
पूर्ण विषयों में तो खासतौर पर नहीं।

प्रत्येक शुक्रवार को आहूजा साहब अपनी पोलिटिकल रिपोर्ट ऐम्बै
सेडर को देते हैं और ऐम्बैसेडर उस पर एक नज़र डालकर ड्राअर
बन्द कर देते हैं। सेकेन्ड सेक्रेटरी की रिपोर्ट ही थोड़ी-बहुत काट-छाँ
कर दिल्ली भेजते हैं।

इस बार के पश्चिम जर्मनी के चुनावों का महत्त्व बहुत ही अधिक
था। सन् उनचास के बाद से अब तक के चुनावों में जो हुआ है, इस
बार भी वही होगा कि नहीं, कोई नहीं जानता! बहुतों के मन में तरह-
तरह के सन्देह हैं। बर्लिन को लेकर दो सुपर पावर्स में जो शीतयुद्ध
चल रहा है उसकी वजह से इस निर्वाचन की ओर लोगों की और भी
उत्सुक दृष्टि है। इसीलिये ऐम्बैसेडर ने तरुण को बुलाया है।

तरुण को टेलीफोन करने के अगले दिन सुबह की कान्फ्रेन्स में
ऐम्बैसेडर ने कह भी दिया कि, 'आवर वेस्ट योरोपियन डेस्क वांट डिफ-
रेन्ट स्टडीज़ अबाउट इलेक्शन और इसीलिये मैंने बर्लिन से तरुण को
भी बुलाया है।'

इस निर्वाचन के केन्द्रबिन्दु कोनार्द आद्येनुर थे। डिप्लोमेट तरुण
मित्र के लिये आद्येनुर नाम अपरिचित नहीं है। बल्कि उसे मालूम है
कि रसिक कूटनीतिज्ञ प्यार से उन्हें जॉन फास्टर आद्येनुर कहते हैं।

अरण्य में भी दिन और रात चिरंतन सत्य होते हैं पर आद्येनुर
के लिये उसका कोई महत्त्व नहीं है। विश्व के तृतीयांश में समाजवाद
की स्थापना के बाद भी यह महापुरुष रशिया को स्वीकृति देने के लिये
तैयार नहीं हैं! इन्द्राणी की सारी यादें, सारी बातें मन से हटाकर तरुण
आद्येनुर की चिन्ता में लीन हो गया।

उन्नीस सौ चौदह में जब प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ था तब
आद्येनुर की उम्र इकतीस वर्ष की थी। कोलोन के लार्ड मेयर ये उसके
भी दस साल बाद बने थे। नाजियों के राज्य में इन्हें बनवास के लिये
जाना पड़ा। युद्ध के बाद अमेरिका ने फिर इन्हें मेयर बना दिया था,
परन्तु ब्रिटिश सेना के आंचलिक प्रधान ने अकर्मण्यता का दोषारोपण
करके पदच्युत कर दिया। काल का चक्र घूमा। और तिहत्तर वर्ष के
वृद्ध पश्चिम जर्मनी के सर्वेसर्वा—चांसलर बन गये। उसके बाद से

उनका राजत्व वरकरार है। एकछत्र आधिपत्य ! इस बार भी क्या उसी की पुनरावृत्ति होगी ?

तरुण जानता है कि कभी वह भी दिन थे जब लोग आयेनुर से डरते थे, उनपर श्रद्धा रखते थे, लेकिन आज प्रकट में मुक्तकंठ से उनकी निंदा करते हैं।

निर्वाचन की भागदौड़ व उत्तेजना में कुछ सप्ताह कैसे निकल गये, तरुण को पता भी नहीं चला। पन्द्रह दिनों में दस प्रदेशों का चक्कर लगाकर अनगिनत लोगों से मिलकर वातचीत करनी पड़ी है। बहुत ही थकान महसूस कर रहा था वह। उसकी रिपोर्ट से ऐम्बैसेडर बहुत खुश थे। अतः सब कुछ निपट जाने पर उससे बोले, 'बड़ा परिश्रम करना पड़ा है तुम्हें। टेक सम रेस्ट रिटर्निंग टु बर्लिन !'

'थैंक यू वेरी मच सर !' धन्यवाद जताया तरुण ने।

शुरू के दो-तीन दिन तो कोलोन में ही बीत गये। दिन में म्यूजियम और रात को नाइट क्लब रोमांटिका चला जाता। यद्यपि रोज-रोज जाना अच्छा नहीं लगता था पर चटर्जी के हाथ आने पर जाना ही पड़ता और दूसरी मंजिल के कोने की टेबिल पर बैठे-बैठे राइन वाइन पीते हुए उसकी इन्डोनेशिया की कहानी सुननी पड़ती।

तरुण को यह सब कभी भी पसन्द नहीं आया। विशेषकर जो लोग अपने अधःपतन की कहानी सुनाने में गर्व का अनुभव करते हैं, उनसे तो वह मन ही मन तीव्र घृणा करता है। लेकिन तब भी चटर्जी को वह दूर नहीं रख पाता। कुछ भी हो आखिर तो किसी समय का सहकर्मी व समसामयिक है। दिल्ली में रोज दोनों ने साथ लंच खाया है, शाम को कनाट प्लेस साथ-साथ घूमे हैं, सप्रू हाउस में ओडिसी नाच देखा है। उन दिनों तो हर प्रोग्राम का वह साथी था।

चटर्जी की प्रथम फारेन पोस्टिंग इंडोनेशिया हुई थी। निष्ठावान, आदर्शवान, धर्मभीरु चटर्जी यह सोचकर बहुत खुश था कि भारतवर्ष से दूर जाने पर भी पुरानी भारतीय संस्कृति के स्पर्श का अनुभव होगा उसे प्रति पदक्षेप पर। प्रायः दो हजार वर्ष पहले भारतीय सौदागरों का दल अपने साथ जो हिन्दू सभ्यता-संस्कृति इस देश में लाये थे, उनके चिह्न आज भी विद्यमान होंगे। बंगला कीर्तन व रवीन्द्र संगीत के रिकार्ड और धूपबत्ती के दर्जनों बंडल लेकर जो संताप चटर्जी एक दिन

बम्बई से पी० एंड ओ० कम्पनी के जहाज पर चढ़कर इन्डोनेशिया गया था, वह फिर लौटकर नहीं आया। होटल इन्डोनेशिया के जावा रूम एवं केवजोरान मॉडेल टाउन की उस छोटी सी कॉटेज के बेडरूम में अगणित अस्थायी, क्षणिक बांधवियों के उष्ण सान्निध्य में उस चटर्जी की मृत्यु हो गई।

रोमान्टिका में बैठकर उसके सर्वनाश की यही कहानी सुन रहा था तरुण। मन विरक्ति से भर उठा था, परन्तु सौजन्यता की खातिर उठकर जा भी नहीं पा रहा था। अब उसके पास केवल तीन दिन का समय रह गया था, पर तब भी सेकेन्ड सेक्रेटरी हबीब को साथ लेकर ब्लैक फॉरेस्ट की तरफ निकल गया वह।

निर्वाचन के परिश्रम और तदुपरांत चटर्जी के सान्निध्य से तरुण बहुत ही क्लांति का अनुभव कर रहा था—अतः ब्लैक फॉरेस्ट की निर्जन कॉटेज में दो दिन बड़े ही अच्छे लगे। और फिर बहुत दिन बाद उस निर्जनता में बैठकर हबीब के गाने सुने तो जैसे सारी थकान उतर गई। हबीब ने स्वयं संगीत साधना नहीं की थी पर हाँ उसके घर संगीत की महफ़िलें अवश्य जुड़ती थीं। आखिर था तो रामपुर के खानदानी वंश का लड़का! रक्त में तो संगीत बस ही गया था। उसका दरबारी कानड़ा सुनने के लिये कोई सारी रात नहीं जागना पड़ता था। संध्या के बाद सपर खाकर कॉटेज के बराम्दे में बैठकर हबीब गाता और तरुण सुनता। घड़ी की सुई आठ पर ही पहुँचती पर ब्लैक फॉरेस्ट की उस निर्जनता में ऐसा लगता जैसे आधी रात हो गई हो। मध्यरात्रि की सी उस गम्भीरता में तरुण के मन में जैसे पीछे छूटे बंगाल की स्मृतियाँ सजग हो जातीं।

और साथ ही साथ मन बुरी तरह हाहाकार कर उठता। दरबारी कानड़ा के मधुर स्वर कानों को अत्यन्त मधुर लगते हुए भी हृदय को झकझोर देते।

हबीब का गाना रुक जाता पर तरुण तब भी जैसे खोया रहता, आत्मलीन रहता।

कुछ पल चुप रहकर हबीब घुमा-फिरा कर पूछता, 'क्या दादा, कोई कष्ट हो रहा है ?'

एक दबी आह निकल पड़ती मुख से पर प्रकट में तरुण झट से कहता, 'नहीं नहीं, कष्ट क्यों होगा ?'

ब्लैक फॉरेस्ट की निर्जनता फिर दोनों को घेर लेती। कोई कुछ नहीं बोलता, निःशब्द बैठे रहते दोनों।

थोड़ी देर बाद जेब से सिगरेट का पैकेट निकाल कर आगे बढ़ाता, 'दादा हैव ए सिगरेट।'

'सिगरेट ?'

स्वयं ही जैसे स्वयं से प्रश्न करता। सिर झुकाकर खुद ही खुद को देखता और फिर एक दबी आह निकाल पड़ती ! कहता, 'हबीब, बेटर गिव मी राम ड्रिंक्स !'

तरुण मित्र ड्रिंक माँग रहा है ? स्तंभित हो जाता हबीब। किसी पार्टी में, रिसेप्शन या काकटेल में एक-दो पेग अवश्य ले लेता है पर ड्रिंक के प्रति उसका कभी कोई विशेष आग्रह या दुर्बलता नहीं है। यह बात फॉरेन सर्विस का हर व्यक्ति जानता है, हबीब भी जानता है।

'यू वांट ड्रिंक ?'

'क्यों, खत्म हो गई है क्या ?'

'नहीं नहीं, खत्म क्यों होती, बट....।'

'तो फिर संकोच क्यों कर रहे हो ?'

जरा हँसते हुए हबीब ने कहा—'कुछ नहीं, बस यों ही ! आपको कभी ड्रिंक माँगते नहीं देखा ना....।'

हँसी आ गई तरुण को भी ! बोला, 'जो कभी नहीं किया, वह क्या भविष्य में भी नहीं कर सकता ?'

इन्द्राणी के सम्बन्ध में जो मेसेज दिल्ली गया था वह हबीब ने ही भेजा था। और इसके अलावा जब कान्सल जनरल बॉन आये थे तो उनके मुँह से भी सब सुना था। अतः इसके बाद अन्यथा तर्क नहीं किया उसने।

कमरे से वाइन की बोतल लाकर दो ग्लासों में ढाल ली।

'चियर्स।'

'चियर्स।'

कुछ देर और अनमना बैठा रहा तरुण। फिर पूछा, 'अच्छा हबीब, तुम्हारे घर में तो सब लोग हैं न ?'

'हाँ, माँ-बाप, भाई-बहन....।'

'तुम शादी नहीं करोगे ?'

'हाँ कराची शादी करके ही जाऊँगा।'

पाकिस्तान का नाम सुनते ही तरुण बेचैन हो उठा। बोला, 'तुम कराची जा रहे हो ?'

'हाँ दादा।'

'कब ?'

'बस, यही तीन हफ्ते बाद आइ विल सेल फार बाम्बे। उसके बाद छह हफ्ते स्वदेश रहकर कराची चला जाऊँगा।'

वाइन का ग्लास मुँह से लगाते-लगाते फिर नीचे रख दिया तरुण ने। और जैसे खुद ही से बोला, 'तुम कराची जा रहे हो ?'

हबीब ने भी ग्लास नीचे रख दिया। सिगरेट जलाकर एक कश खींचा और एक-दो मिनिट चुप रहकर पूछा, 'दादा, कराची में कोई काम है ?'

'काम ? हाँ, एक वहुत ही जरूरी काम है !' जैसे उतावला हो उठा तरुण।

'टैल मी ह्वाट आइ विल हैव टु डू।' इतना कहकर हबीब ने तरुण की ओर देखा और फिर बोला, 'अगर मुझसे नहीं होगा तो आई विल आस्क माई अंकल टु हैल्प मी।'

'हू इज़ योर अंकल ?'

'वह पाकिस्तान फॉरेन मिनिस्ट्री के एडीशनल सेक्रेटरी हैं।'

'रियली ?' उल्लसित हो उठा तरुण।

अब अपने को नहीं रोक पाया तरुण। हबीब के दोनों हाथ पकड़कर दबाते हुए बोला, 'यू मस्ट हेल्प मी, हबीब।'

'नो कोयश्चेन आफ हैल्प दादा, आपका काम करना मेरा कर्त्तव्य है।'

हबीब का यह आश्वासन तरुण के अँधेरे मन में आलोक जगा गया।

जलप्रपात की जलधारा जिस प्रकार प्रबल वेग से गिरती है, उसी प्रकार तरुण भी एक साँस में हबीब को सब बता गया।

'यह सब बताने की आवश्यकता नहीं है दादा। थोड़ा बहुत तो मैं भी जानता हूँ, बिकाज़ आई सेण्ट द एम्बैसेडर्स मैसेज टु फॉरेन ऑफिस।'

इस जगत् में मनुष्य को जाने क्या-क्या सहन करना पड़ता है।

जरा, दारिद्र्य, व्याधि से तो लड़ा जा सकता है, मन को भी समझाया जाता है। लेकिन प्रियहीन निःसंग मनुष्य जैसा असहाय कोई नहीं होता। उसका दुःख कोई नहीं बँटा पाता। जब तक काम में डूबा रहता है, समय का पता नहीं चलता कि कैसे बीत गया, पर जब काम का दबाव नहीं होता, ब्लैक फॉरेस्ट जैसे शान्त स्निग्ध वातावरण में अकेला होता है, जब मन की उस शून्यता में हृदय की हर धड़कन सुनाई देती है, तब हबीब जैसे अधीन कर्मचारी के समक्ष भी आत्म-समर्पण करने में संकोच नहीं होता।

हबीब के दोनों हाथ उसी तरह पकड़े-पकड़े तरुण बोला, 'यू मस्ट डू समथिंग हबीब। मैं बहुत ही अकेला हूँ।'

बॉन लौटने पर ऐम्बैसेडर से एक और शुभ समाचार मिला।

'देयर इज़ ए गुड पीस ऑफ न्यूज फॉर यू।'

मुँह से कुछ भी नहीं कहा तरुण ने, बस अधीर आग्रह आँखों में लिये ऐम्बैसेडर की ओर अपलक देखता रहा।

'पाकिस्तान फॉरेन ऑफिस ने हमारे फॉरेन ऑफिस को सूचना दी है कि रायट विक्टिम्स की लिस्ट चेक अप करने पर इन्द्राणी का नाम उसमें नहीं मिला।'

'रियली सर ?' तरुण की आँखों में एक चमक आ गई।

दाहिना हाथ तरुण के कंधे पर रखकर ऐम्बैसेडर ने कहा, 'तुम फाइल देखना चाहते हो ?'

उसके मुख के भावों से ऐम्बैसेडर के मन को ठेस तो नहीं पहुँचा दी कहीं, यह सोचकर झट से तरुण बोला, नहीं, नहीं, सर ! फाइल देखकर क्या करूँगा ? आपके मुँह की बात ही मेरे लिये यथेष्ट है !'

आगे ऐम्बैसेडर ने बताया, 'पाकिस्तान फॉरेन ऑफिस ने बताया है कि तब भी इन्द्राणी को ढूँढ़ निकालने में थोड़ा समय तो लगेगा ही।'

समय ? वह तो लगेगा ही। पुलिस की फाइलें घोंटने के बाद बार्डर के चेकपोस्टों का रिकार्ड देखना पड़ेगा कि सीमा पार करके इन्द्राणी भारतवर्ष चली गई या नहीं। बार्डर के चेक पोस्टों के रिकार्ड से भी कुछ पता नहीं चला तो फिर नये सिरे से खोज करनी पड़ेगी। समय तो लगेगा ही।

....'और फिर हबीब इज़ गोइंग टु कराची एंड हिज़ अंकल इज़ द

राइट पर्सन टु हेल्प अस ।'

'हाँ सर, हबीब ने बताया था ।'

'तो फिर तुम फिक्र क्यों करते हो ? बाइ द टाइम यू लीव बर्लिन, इन्द्राणी विल ज्वाइन यू ।'

मन ही मन तरुण ने कहा—आपके मुँह में घी-शक्कर सर ।

दुख या खेद के कारण नहीं, गुप्त खबरों के संग्रह के लिये भी नहीं—केवल आनन्द व खुशी में भरकर उस रात हबीब के साथ बोतल पर बोतल राइन वाइन की खाली की तरुण ने ।

# सोलह

टेलीफोन पर ऐम्बैसेडर का आदेश पाकर तरुण बिना किसी को खबर दिये ही बर्लिन से चला गया था। और बॉन रहते समय किसी को पत्र डालने की फुर्सत ही नहीं मिली। वन्दना को भी पत्र नहीं लिख सका था। लौटने पर ढेर सी चिट्ठियों को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। एक लिफाफे पर पाकिस्तानी स्टैम्प्स देखकर चौंक उठा। ढाका से मणिलाल देसाई की थी क्या ?

सबसे पहले वही चिट्ठी खोली। चंद पंक्तियाँ थीं, झटपट पढ़ डालीं। एक मिनिट बाद फिर से पढ़ी....पाकिस्तान गवर्नमेन्ट ने केस को सीरियसली लिया है, ऐसा प्रतीत होता है। सुना है पार्टिशन के समय ढाका में जितने सरकारी कर्मचारी थे, उनको सर्कुलर भेजकर इन्द्राणी की खबर जानने का प्रयत्न किया जायेगा। माइनॉरिटी कमीशन ने ऐसे बहुत से लोगों का पता लगाया है, अतः लगता है इस क्षेत्र में भी कुछ न कुछ पता अवश्य लगेगा। पर तब भी इन मामलों में वक्त तो लगता ही है।

तरुण को यह पता नहीं था कि देसाई ढाका के हमारे डिप्टी हाई कमीशन में हैं। गुजराती होते हुए भी मणिलाल का जन्म कलकत्ता, भवानीपुर में हुआ था। शिक्षा-दीक्षा भी कलकत्ते में ही हुई। सौराष्ट्र में सुविधापूर्वक जीवनयापन न हो सकने के कारण मणिलाल के पिता अपनी जवानी में ही कलकत्ता चले आये थे। नगण्य पूँजी तथा सामान्य विद्या-बुद्धि से व्यापार शुरू किया था; लेकिन परिश्रम व लगन से कुछ ही वर्षों में उन्होंने अपना भाग्य बदल दिया था।

मणिलाल के पिता ने लड़के को व्यवसाय में नहीं आने दिया। उससे कहा था, 'तुम पढ़-लिख कर आदमी बन जाओ। मेरी तरह दुकानदारी मत करो।'

और मणिलाल ने अपने पिता को निराश नहीं किया। कलकत्ते की सड़कों पर, ट्राम-बस में, होटल-रेस्टोरेंट में हर जगह उसने गैर बंगालियों के प्रति बंगालियों की उपेक्षा व वितृष्णा का भाव देखा था, पर कभी बुरा नहीं माना। वह कोई बम्बई, सूरत, बड़ौदा या अहमदाबाद का गुजराती तो था नहीं। सूरत के नाते-रिश्तेदार तो उन लोगों को बंगाली ही कहते थे और बंगाली कहे जाने से मणिलाल एक गर्व का अनुभव करता था। स्वदेश जाने पर कभी बहस होती तो वह बंगालियों का पक्ष लेकर उनसे झगड़ता भी।

मणिलाल के साथ तरुण ने दिल्ली में करीब साल भर काम किया था। उसके बाद कभी उससे मिलना नहीं हुआ। उसी मणिलाल देसाई ने चिट्ठी लिखी थी!

मुग्ध विस्मित तरुण ने राइटिंग डेस्क पर रखी इन्द्राणी की फोटो पर एक नजर डाली और फिर मन ही मन पूछा, इतने लोगों की कोशिशों को भी क्या तुम व्यर्थ कर दोगी?

देसाई की चिट्ठी पर फिर एक बार दृष्टि घुमाकर राइटिंग डेस्क के पास गया और इन्द्राणी की फोटो हाथ में उठा ली—

....'बहुत दिन बाद देखा ना मुझे?' और अपने प्रश्न की कैफियत खुद ही देते हुए कहा—'क्या करूँ बताओ? तुम तो जानती ही हो कि डिप्लोमेट का जीवन कैसा होता है!'

पल भर को रुका, जरा हँसा और फिर बोला, 'मेरे जैसा घरघुस्सा लड़का क्या आसानी से ऐसे ही कहीं जाना चाहता है? अकेले-अकेले रहना अच्छा लगता है क्या? इस इतने बड़े अपार्टमेन्ट में बिल्कुल अकेले रहने में मन में हूक सी उठती है, दिल जलता है, तुम्हारी बड़ी याद आती है....'

आँखें फिर भर आईं। जल्दी से फोटो टेबिल पर रखकर वापस आकर सोफे पर बैठ गया और आये हुए पत्रों को उठा लिया।

वन्दना की दो चिट्ठियाँ थीं।...'कैसे अजीब आदमी हो तुम भला? इतने दिनों से कोई खबर ही नहीं है। दो-तीन चिट्ठियाँ लिखीं, पर एक का भी जवाब नहीं मिला। तुम्हारी ओर से कितनी फिक्र रहती है, तुम क्या समझोगे या विश्वास करोगे? अगर समझते तो मुझे इतना दुःख थोड़े ही देते...'

अब तक तो जो भी शिकायत-शिकवे, उलाहने थे सब ठीक थे; उचित थे पर आगे तो वह बहुत ही कठोर हो गई थी—

....'माना मैं माँ जाई बहन नहीं, पर इसका यह मतलब तो नहीं कि तुम मुझे इतना सताओ ? मेरे प्यार की यह अवहेलना क्यों ?...'

पगली लड़की ने दूसरी चिट्ठी में सिर्फ दो लाइनें लिखीं थीं, 'दया करके बस इतनी खबर दे दो कि तुम ठीक-ठाक हो, स्वस्थ हो। सम्भव होता तो बर्लिन आकर तुम्हारी खोज-खबर ले लेती। लेकिन तुम जानते हो कि उतनी सामर्थ्य मेरी नहीं है।'

बड़ा अपराधी महसूस करने लगा स्वयं को। बॉन जाने के बाद अत्यन्त व्यस्तता में दिन गुज़रे थे, कई हज़ार मील घूमना पड़ा था। सारे दिन के अविराम परिश्रम के बाद रात को लम्बी-लम्बी रिपोर्टें लिखनी पड़ती थीं। पर तब भी वन्दना को तो चिट्ठी लिखनी ही चाहिये थी। बड़ा अन्याय हो गया उस बेचारी के साथ !

एक अन्याय और भी हुआ है। वन्दना की नौकरी कोई बहुत बड़ी नहीं, साधारण है। फिर उसे हर महीने भारत घर भी खर्च भेजना पड़ता है। विकास का भी यही हाल है। अतः बर्लिन घूमने आना उनके लिये संभव नहीं है। तरुण को ही चाहिये था कि एक बार उन्हें बुला लेता। उनके अलावा तरुण का और है भी कौन ?

बहुत ही क्लांत अनुभव कर रहा था तरुण स्वयं को। किसी तरह कपड़े बदल कर दो-तीन सैंडविच खाये और एक कप कॉफी पी। तदुपरान्त वन्दना को लम्बी सी चिट्ठी लिखी।

चिट्ठी के अंत में लिखा, कुछ दिनों के लिये तुम दोनों मेरे पास अवश्य आ जाओ। विकास से कहना कि डिप्टी हाई कमिश्नर से मेरा नाम लेकर कहेगा तो छुट्टी मिलने में असुविधा नहीं होगी। और तुम्हारी छुट्टी का तो कोई झमेला है ही नहीं। एप्लीकेशन नहीं लिखती, इसीलिये छुट्टी नहीं मिलती। पैन अमेरिकन ऑफिस से अपने दोनों 'ओपेन' टिकिट ले लेना।

चिट्ठी खत्म करने से पहले दो लाइनें और जोड़ दीं, अगर मेरा यह अनुरोध न रख सको तो इस चिट्ठी का जवाब मत देना और मुझे भैया भी मत कहना कभी।

अगले दिन सुबह ऑफिस जाकर पैन अमेरिकन के ऑफिस में उन

दोनों का किराया भेज दिया।

चिट्ठी का जवाब नहीं आया, चार दिन बाद तार आया, 'रीचिंग फ्राइडे पैन ऐम फ्लाइट फाइव-सेवेन-सिक्स—वन्दना-विकास।'

तरुण जानता था कि ऐसा ही कुछ होगा। चाहे जितनी नाराज़ हो वन्दना, उसकी चिट्ठी मिलते ही सारा गुस्सा काफूर हो जायेगा। तार देखकर तरुण का दिल खुशी से भर गया।

हाथ में तार पकड़े-पकड़े सीधा कान्सल जनरल टंडन के कमरे में गया और बिना किसी भूमिका के बोला, 'हैव आइ टोल्ड यू अबाउट वन्दना?'

'कितनी बार कहा है, इसकी कोई गिनती है?' हँसते हुए टंडन ने जवाब दिया।

'वन्दना और विकास यहाँ आ रहे हैं।'

'दैट इज़ व्हाइ यू लुक लाइक ए मैड चैप।'

खड़ा-खड़ा हँसता रहा तरुण।

'कब आ रहे हैं वह लोग?'

'इसी शुक्रवार को।'

'तब तो समय बहुत कम है। घर-वर भी तो ठीक करना पड़ेगा तुम्हें।'

'हाँ, थोड़ा बहुत तो करना ही पड़ेगा।'

'तो फिर तुम घर जाओ। ऑफिस में मैं हूँ।'

'नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है?' कृतज्ञता भरे स्वर में तरुण ने कहा।

'आइ से गो होम! अब आगे बहस की तो डाँट खाओगे।'

और बिना एक शब्द कहे चुपचाप अपने कमरे में चला गया तरुण। थोड़ा बहुत काम था, उसे निपटाकर ऑफिस से चल दिया वह।

अपार्टमेन्ट का चक्कर लगाते हुए हर कमरे को बारीकी से देख रहा था कि उनके लिये स्पेशल कुछ किया जा सकता है क्या? दूसरा चक्कर लगाते समय राइटिंग डेस्क पर रक्खी इन्द्राणी की फोटो ने बर-बस अपनी ओर खींच लिया। आहिस्ता से हाथ में उठा ली तरुण ने तस्वीर और अन्यमनस्क सा हो उठा। अचानक मुँह से निकल पड़ा, 'सुनती हो, वन्दना-विकास आ रहे हैं। तुम भी आओगी ना?'

ऐसा लगा जैसे इन्द्राणी ने कहा हो—आऊँगी क्यों नहीं। तुम्हें छोड़ कर और कब तक रहूँगी।....

टेलीफोन बज उठा उसी क्षण और इन्द्राणी फिर जाने कहाँ खो गई। फोटो रखकर तरुण ने रिसीवर उठा लिया, 'तरुण हियर....कौन भाभी जी ? क्या बात है ?'

अचानक इस समय मिसेस टंडन का टेलीफोन !

'वन्दना आ रही है ?

'इसी बीच खबर भी पहुँच गई आपके पास ?'

'हाँ, उन्होंने अभी-अभी ऑफिस से टेलीफोन करके बताया।'

'वह तो समझ ही रहा हूँ।'

'शुक्रवार—यानी परसों आ रही है ?'

'हाँ भाभी जी।'

अब भूमिका छोड़कर काम की बात पर आ गईं भाभी जी, 'तुम्हारा अपार्टमेन्ट छोटा होते हुए भी हमारे यहाँ तो तुम उन्हें ठहरने नहीं दोगे। खैर, यह तो छोड़ो, सारा दिन तो तुम लोग घूमोगे-फिरोगे और शाम के बाद रोज किसी होटल-रेस्टोरेंट में बैठोगे....।'

'नहीं, नहीं, भाभी जी, वन्दना को यह सब अच्छा नहीं लगता।'

'भले ही न लगता हो। असली बात यह है कि रोज रात को तुम तीनों यहाँ आओगे और खा-पीकर लौटोगे, समझे ?'

बड़े संकोच भरे स्वर में हिचकिचाते हुए तरुण ने कहा, 'रोज क्या यह सम्भव होगा ?'

'तो क्या एक दिन डिनर खा-खिला कर भद्रता निभाना चाहते हो ?'

अब इसका क्या जवाब देता तरुण ? 'अच्छा भाभी जी, आपकी आज्ञा सिर आँखों पर। आपके साथ तर्क करने का साहस तो है नहीं मुझमें।'

शाम के समय मिस्टर दिवाकर आये तो व्यग्र होकर तरुण ने पूछा, 'क्या बात है ? कोई जरूरी खबर है क्या ?'

'नहीं खबर तो कोई नहीं है। पर सी० जी ने भेजा है कि आपके बहन-बहनोई आ रहे हैं, इसलिये अगर किसी काम के लिये आवश्यकता हो तो....।'

'थैंक यू वेरी मच ।'

'सी० जी ने पूछा है कि आपको ड्राइवर चाहिये क्या ? यदि चाहिये तो—'

'नहीं, नहीं ! मैं तो खुद ही ड्राइव करता हूँ । ड्राइवर की क्या जरूरत है ?' बीच में ही दिवाकर की बात काटकर तरुण ने कहा ।

वन्दना-विकास के आने की खबर सुनकर मिस्टर व मिसेस टंडन बहुत खुश हुए । अपना कहने को तो तरुण का कोई है नहीं—माँ-बाप, भाई-बहन कोई भी तो नहीं है । और जो लोग बड़ी सरलता से जीवन के प्रथम प्रेम को भूल जाते हैं, उनमें भी तरुण नहीं आता । इन्द्राणी के अलावा और किसी लड़की को वह अपना नहीं समझ सका । वन्दना-विकास के आने से कम-से-कम कुछ दिनों के लिये तो उसका एकाकीपन दूर होगा, यही सोचकर टंडन दम्पति को इतनी खुशी हुई थी ।

दो दिन किस तरह निकल गये, पता भी नहीं लगा तरुण को । शुक्रवार को सुबह ऑफिस का काम करके लंच के समय ही निकल गया वह । आनन्द व उत्तेजना के कारण भूख-प्यास भी खत्म हो गई उसकी, अतः लंच भी नहीं खाया । प्लेन का लैंडिंग टाइम सवा तीन बजे का था । वह जानता था कि वन्दना-विकास तो प्लेन में ही लंच खा चुके होंगे । पर तब भी सोचा कि उन लोगों के आने पर साथ ही खायेगा ।

प्लेन आने से पहले ही एयरपोर्ट पहुँच गया । देखभाल कर ऐसी जगह गाड़ी पार्क की जहाँ से जल्दी निकला जा सके । एक क्षण भी व्यर्थ न जाये ।

एयरपोर्ट के लाउंज में चहलकदमी करते-करते एक बार फिर मन-ही-मन दुहरा लिया कि उन लोगों के आने पर क्या करेगा । और इस बीच कब फ्रैंकफर्ट से पैन अमेरिकन का प्लेन आ गया, उसे होश ही नहीं रहा । उस भीड़-भाड़ में ही जब वन्दना के हाथों का स्पर्श पाँवों को लगा तो होश आया ।

दोनों हाथों से उसके हाथ पकड़कर बोला, 'अरे बस-बस, यहाँ नहीं ।'

लेकिन कौन किसकी बात मानता वहाँ ? तरुण की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि विकास ने भी झुककर पाँव छू लिये ।

सामान लेकर एयरपोर्ट से निकलते-निकलते तरुण ने विकास से पूछा, 'कोई तकलीफ तो नहीं हुई ?'

जवाब दिया वन्दना ने—'इसे भला किस बात की तकलीफ होती ? बिना पैसे के बर्लिन घुमा रही हूँ, उसमें भी तकलीफ होगी क्या ?'

'ओह वन्दना ! क्या जो मुँह में आता बक रही है—!'

पर विकास ही कौन-सा इतनी आसानी से हार मानने वाला था—बोला, 'तो तुम्हारे टी बोर्ड के पैसे से बर्लिन देख रहा हूँ क्या ?'

बीच में ही रोकते हुए तरुण बोला, 'घर पहुँचकर सारी रात लड़ना, अब इस वक्त तो जल्दी से चलो ।'

घर पहुँचते-पहुँचते साढ़े चार बज गये । लिविंग रूम में ही सामान रखकर तरुण ने कहा, 'चलो चलो, झटपट हाथ-मुँह धो लो; बड़ी जोर से भूख लगी है ।'

विस्मय भरे स्वर में विकास बोला, 'यह क्या दादा, हम लोगों ने तो आज दो-दो बार लंच खाया है ।'

कान्टिनेन्टल फ्लाइट चाहे कितनी भी क्षणस्थायी हो, खाने की व्यवस्था होती ही है—यह तरुण जानता है । पर तब भी उन लोगों को लेकर एक साथ खाने का इन्तज़ाम कर रक्खा था उसने । वह कुछ कहता इससे पहले ही वन्दना बोल पड़ी, 'तुम भी कैसे आदमी हो दादा । सारे दिन से भूखे-प्यासे बैठे हो ?'

'फिर वही बकबक शुरू कर दी तूने । हाथ-मुँह धो लो तो मिलकर थोड़ा-बहुत खा लेंगे ।'

और बहस नहीं की वन्दना ने । 'कहाँ क्या है, जरा दिखा तो दो दादा' तरुण से पूछा उसने और फिर विकास की ओर देखकर बोली, 'जरा जल्दी करो, देखते नहीं दादा भूखे बैठे हैं ।'

घर-गृहस्थी की बातें समझने में लड़कियों को देर नहीं लगती, वन्दना को भी नहीं लगी । लिविंग रूम में ही सोफे पर बैठकर सेन्टर टेबिल खींचकर खाना-पीना निपटाया । वन्दना के आते ही तरुण अचानक महा आलसी बन गया, खाकर हाथ धोने भी नहीं गया ।

'वन्दना, जरा हाथ धोने को पानी....।'

ऐसे स्वर में तरुण ने पानी माँगा कि वन्दना स्नेह से भर उठी ।' 'तुमसे कौन उठने को कह रहा है ?'

और वहीं सोफे पर बैठे-बैठे गप्पबाजी शुरू हो गई।

'सबसे पहले तो यह बताओ कि तुम लोगों की छुट्टियाँ कितने दिन की हैं ?'

तरुण का यह प्रश्न सुनते ही वन्दना और विकास ने परस्पर दृष्टि विनिमय किया। उन लोगों ने तो सोचा था कि एयरपोर्ट पर ही इस प्रश्न का सामना करना पड़ेगा। इसलिये लंदन से चलने से पहले ही सलाह-मशविरा करके उत्तरदाता एवं उत्तर निश्चित कर लिया था।

शब्दों को जैसे चबाते-चबाते विकास बोला, 'अगले हफ्ते से हम लोगों का ऑडिट है !'

चिकोटी काटकर तरुण ने पूछा, 'तीन-चार दिन तो हो ?'

'नहीं-नहीं दादा, तीन-चार दिन के लिये क्या इतना खर्च करके इतनी दूर आया जाता है ?'

वन्दना चुप बैठी मन ही मन मुस्कुरा रही थी। अब तरुण ने उससे पूछा, 'वन्दना, तुम्हारा ऑडिट क्या इसी हफ्ते शुरू हो रहा है ?'

'अच्छा दादा, ऐसी बातें क्यों कर रहे हो ? मैंने कहा है क्या ....?'

और आगे नहीं कहना पड़ा वन्दना को। तरुण बोला—'नहीं, तुम्हारी तरफ से मैं खुद ही कह रहा हूँ।'

प्रसन्नता से भरकर वन्दना बोली, 'उसे जाना है जाये। मैं इतनी आसानी से जाने वाली नहीं।'

फॉरेन सर्विस के कर्मचारी फॉरेन सेक्रेटरी की अपेक्षा ऑडिट पार्टी के निम्नतम कर्मचारी से कहीं अधिक डरते हैं, यह तरुण जानता है। इसके अलावा विकास के सेक्शन पर ही ऑडिट कराने की जिम्मेदारी है, यह भी तरुण को मालूम है। 'तो फिर छुट्टी कैसे मिली ?'

'डिप्टी हाई कमिश्नर से आपका नाम लिया तब एक हफ्ते की छुट्टी मिली है। अदरवाइज़—!'

एक दीर्घश्वास छोड़कर तरुण बोला, 'ठीक है। क्या किया जा सकता है !'

साथ ही साथ वन्दना बोली, 'लेकिन मैं दादा, एक महीना रहूँगी।'

'विकास के खाने-पीने का क्या होगा ?'

'यह भी कोई सवाल है ?' अत्यन्त सहज भाव से वन्दना ने उत्तर दिया, 'क्यों ? दिन में इंडिया हाउस की विख्यात कैन्टीन और रात को

स्वहस्त निर्मित सात्विक आहार या इटालियन काफे ?'

'इतने दिन होटल-रेस्टोरां में खायेगा ?'

'तो उसमें क्या हुआ ?' विकास ने कहा।

मुफस्सिल फौज़दारी कोर्ट के वकील की तरह वन्दना के पास भी अकाट्य तर्क मौजूद था—

'अब तक कैसे खाया था ?'

जरा डाँटते हुए तरुण ने कहा—'शादी के बाद बहुत बोलने लगी हो वन्दना।'

छुट्टी को लेकर बहस चल रही थी कि टेलीफोन की घंटी बज उठी।

'देखो तो वन्दना कौन है ? शायद भाभी जी होंगी।'

'कौन भाभी जी ?'

'हमारे कान्सल जनरल की पत्नी।'

ठीक ही अनुमान लगाया था उसने। तड़ाफड़ उठकर तैयार होने भागे तीनों के तीनों।

# सत्रह

खाना क्या पूरी दावत थी टंडन साहब के यहाँ। खाने के बाद सब लोग पोस्ट डिनर महफ़िल के लिये ड्राइंग रूम में आ बैठे।

'अच्छा भाभी जी, आपने मेरी तो कभी ऐसी दावत नहीं की!'

तरुण को जवाब न देकर वन्दना से कहा भाभी जी ने, 'देख रही हो तुम्हारे भैया की मनोवृत्ति कितनी हीन है? कहाँ तो उसे खुश होना था कि उसके बहन-बहनोई को खिलाया है। पर उसे खुशी की अपेक्षा ईर्ष्या हो रही है!'

मिसेस टंडन की बात पर वन्दना, विकास, मिस्टर टंडन सभी हँस पड़े। कोई कुछ नहीं बोला।

मिसेस टंडन ने ही फिर शुरू किया, 'शादी हो जाने के बाद लड़की लड़के की इज़्ज़त बढ़ जाती है। तुम्हारी शादी हो जायेगी तो तुम्हें भी यही आदर-सम्मान मिलेगा।'

कुछ कहते-कहते रुक गई वन्दना। बस, एक बार कनखियों से विकास की ओर देखकर मुस्कुरा दी।

'शादी नहीं करूँगा तो खाने को भी नहीं मिलेगा?' चकित होकर तरुण ने पूछा।

'नहीं।' भाभी जी ने स्पष्ट कहा।

'शुड आई मैरी टुमारो?'

अब भाभी जी सचमुच गंभीर हो गईं। एक दीर्घश्वास छोड़कर बोलीं, 'आई विश यू कुड, तरुण!'

भाभी जी के भावान्तर ने, उस छोटे से दीर्घश्वास ने कमरे की आबोहवा ही बदल दी। ऑटम के बर्लिन का आकाश हठात् मेघाच्छन्न हो गया।

'जानती हो वन्दना, मुझे अच्छा नहीं लगता, सच अच्छा नहीं

लगता। अपने बच्चे, सगे-सम्बन्धी तो कोसों दूर हैं। इन्हीं लोगों को लेकर ही तो मेरी गृहस्थी है।'

टंडन, तरुण और विकास मुँह दूसरी ओर किये चुप बैठे थे। वन्दना बोली, 'यह तो है ही!'

फिर एक निःश्वास। 'और अगर इन्हीं लोगों के मुँह पर हँसी दिखाई न दे तो कैसा लगेगा भला बताओ तो?'

आगे नहीं बोल पाईं भाभी जी। गला भर आने के कारण स्वर अटक गया। बिना देखे ही सबने समझ लिया कि मिसेस टंडन की आँखें भीग गई हैं।

सिच्युएशन सेव करने की चेष्टा करते हुए मिस्टर टंडन ने कहा—'अब दुखी क्यों होती हो? इन्द्राणी विल बी विद अस वेरी सून।'

और मिसेस टंडन एकदम से भड़क उठीं—'बेकार की बातें मत करो। वेरी सून वेरी सून करते हुए रिटायर होने को आ गये!'

प्रथम दिन के ही परिचय व व्यवहार से भाभी जी ने वंदना-विकास को मुग्ध कर दिया। दादा को इतना चाहते हैं यह लोग?

हाँ।

बहुतों का सारा जीवन फेयरली प्लेस या राइटर्स बिल्डिंग में ही बीत जाता है। अगल-बगल बैठकर जीवन भर काम करते-करते आपस में वैमनस्य ही उत्पन्न होता है! लेकिन जिनके जीवन में वह स्थायित्व कभी नहीं आता या कभी नहीं आ सकता, उनका मन भी विषाक्त नहीं हो पाता। होने का अवकाश भी नहीं होता। विष शिराओं में प्रविष्ट होकर फैलना आरम्भ करता ही है कि ट्रांसफर के आर्डर आ जाते हैं। कनाडा से अल्जीरिया, लंदन से कोलम्बो, पीकिंग से पेरिस। आठ-दस साल बाद जब दुबारा मिलना होता है तो उस विष का चिह्न तक नहीं मिलता।

विगत दिनों की तिक्तता यदि कोई याद रख सकता होता तो ओबेराय आज फॉरेन सर्विस में नहीं होता!

रात को घर लौटने पर तीनों यही सब बातें कर रहे थे। बड़े सोफे पर तरुण और वन्दना बैठे थे और विकास सामने के छोटे सोफे पर था। ओबेराय की कहानी सुना रहा था तरुण उन लोगों को।

ओबेराय उन दिनों अफ्रीका के सीमान्त राज्य मोरक्को में पोस्टेड

था। चवालीस साल तक फ्रांसीसी शासन के अन्तर्गत रहकर उन्हीं दिनों मोरक्को ने स्वाधीनता प्राप्त की थी। सारे देशवासी आनन्द से, खुशी से मतवाले हो रहे थे। मरक्कश स्क्वेयर पर दिन-रात लोगों का हुजूम रहता। ओबेराय घूम-घूम कर सब देखा करता।

रबात में इंडियन मिशन खुल तो गया था, लेकिन फुलटाइम एम्बैसेडर तब तक नहीं आया था। ओबेराय तथा दूसरे दो-तीन जने मिलकर ही सारा काम करते थे। भारत मोरक्को से थोड़ा सा फास्फेट अवश्य खरीदता था परन्तु इसके अलावा दोनों देशों के बीच किसी विशेष व्यापार का लेन-देन नहीं था। इसी कारण कमर्शियल काउन्सलर का पद भी मंजूर नहीं हुआ था। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का थोड़ा-बहुत छोटा-मोटा काम भी ओबेराय को ही करना पड़ता। इसी सन्दर्भ में उसे कैसाब्लांका, मरक्कश, फेज़, तंजिया वगैरह जाना पड़ता।

एक सिगरेट जलाते-जलाते आगे तरुण ने कहा कि वह घूमना-फिरना ही उसका काल बन गया।

बड़े-बड़े होटलों में जल्दी-जल्दी जाना-आना शुरू हुआ। कभी 'ग्रानादा' में तो कभी 'होटेल टूर हसन' में, तो कभी 'कॉन्सुलात' में। उसके साथ ही नाचना-गाना, खाना-पीना भी शुरू हो गया।

एक लम्बा कश खींचकर तरुण बोला, 'मोरक्को में नाइट क्लब सस्ते हैं, इसलिये और भी सर्वनाश हुआ।'

'सस्ते हैं मतलब ?' छोटा-सा प्रश्न किया विकास ने।

'क्यों, तुम जाओगे क्या ?' जवाब में उल्टा प्रश्न किया वन्दना ने।

जरा डाँटते हुए तरुण ने कहा, 'अब चुप भी रहो वन्दना।' फिर बोला 'रियली दे आर वेरी चीप। दो डालर देकर किसी बड़े नाइट क्लब में जाया जा सकता है।'

····दो साल बाद उसी ओबेराय का जब बेरुत ट्रांसफर हुआ तब तो पतन के सारे मार्ग खुल गये। मेडिटेरेनियन की मस्ती भरी हवा उसे उड़ा ले गई। संगी-साथी मजाक में उसे ईव्स ऐम्बैसेडर कहने लगे।

लेबनान में वहाँ के राजनैतिक महत्त्व की अपेक्षा नाइट क्लबों का प्राधान्य अधिक है। लेकिन तब भी बेरुत में हमारी बड़ी अच्छी चान्सरी है। फॉरेन सर्विस का क्लास वन ऐम्बैसेडर भेजा जाता है इस मध्य प्राच्य के पेरिस में! दर्जनों डिप्लोमेट्स और सैकड़ों कर्मचारी हैं इस

चान्सरी में। इसके अलावा पूर्व-पश्चिम के यातायात में बेरुत में रात न बिताये ऐसा कोई इंडियन डिप्लोमेट नहीं मिल सकता।

उन सबसे ओबेराय ऐंठता। किसी से दस-बीस पाउंड, किसी से पचास तो किसी से सत्तर-अस्सी-सौ—जैसा मौका होता।

कई साल बाद की बात है। ओबराय उन दिनों जेनेवा में था। बम्बई से खबर आई कि उसकी माँ को कैन्सर हो गया है। ओवेराय का आधा वेतन तो अतीत के पापों के प्रायश्चित्त में ही निकल जाता था। किसी के सामने हाथ फैलाने का भी साहस नहीं था। प्रयोजन व इच्छा होते हुए भी बम्बई जाने की बात सोचना असम्भव था उसके लिये।

सिगरेट का आखिरी कश खींचकर तरुण बोला, 'वी हैड लिटिल डिप्लोमेसी विद आवर डिप्लोमेट कलीग। ओवेराय को तो कुछ पता नहीं चला पर खबर चारों ओर फैल गई।'

'अच्छा!' आश्चर्य से वन्दना की आँखें फैल गईं और आगे की कहानी सुनने के लिये सीधी सजग होकर बैठ गई।

केवल खबर ही नहीं फैली, बल्कि योरोप के पाँच-सात इंडियन मिशनों के पन्द्रह-बीस डिप्लोमेटों के बीच टॉप सीक्रेट कान्सल्टेशन हुआ। निश्चित हुआ कि उसकी माँ को चिकित्सा के लिये जेनेवा बुला लिया जाये। डिसीज़न के साथ-साथ ऐक्शन! एयर इंडिया के लंदन ऑफिस में पन्द्रह-बीस चेक पहुँच गये। दिल्ली से बम्बई ओवेराय के बहन-बहनोई के पास खबर पहुँच गई—कान्टैक्ट एयर इंडिया इमि-डियेटली फॉर योर मदर्स जर्नी टु जेनेवा फॉर इमिडियेट ट्रीटमेन्ट।

यह सारी बात बताते हुए तरुण हँस पड़ा। बोला, 'एयर इन्डिया से माँ के आने की खबर पाकर ओबेराय आश्चर्यचकित रह गया था।'

'भद्रमहिला अच्छी हो गई थीं?' विकास ने जानना चाहा।

'नहीं!'

बीते दिनों की बातें फॉरेन सर्विस में कोई याद नहीं रखता। रख भी नहीं सकता। यह उनका धर्म नहीं है। बीते दिनों की बातों को मन में रखकर डिप्लोमेसी की जा सकती है क्या भला? असम्भव!

जब ओबेराय को वह लोग इतना प्यार कर सकते हैं तो तरुण के

लिये व्यथित नहीं होंगे ?

एक दीर्घश्वास छोड़कर तरुण ने कहा, 'इन लोगों जैसे आदमी नहीं मिलते तो मैं शायद पागल हो गया होता अब तक। इस विश्व में अकेले रहने जैसा अभिशाप और दूसरा नहीं है।'

कमरे का वातावरण भारी हो गया। वन्दना व विकास ने एक दूसरे की ओर देखा।

'तुम कहाँ अकेले हो ? हम लोग क्या तुम्हारे कोई नहीं हैं दादा ?' आहत स्वर में कहा वन्दना ने।

दाहिने हाथ से वन्दना का सिर अपने कंधे पर रखकर बालों पर हाथ फेरते हुए तरुण बोला, 'मैंने क्या यह कहा है ? तुम लोगों से अधिक अपना और मेरा कौन है ?'

विकास तरुण से डरता तो नहीं पर उसके सामने कम ही बोलता है। लेकिन आज जैसे थोड़ी हिम्मत आ गई, बोला—'इसे इतना सिर पर मत चढ़ाइये दादा।'

तरुण के कंधे से सिर उठाकर, भवें सिकोड़ते हुए वन्दना ने विकास की ओर देखा।

और तरुण ने पूछा, 'क्यों ?'

दबे-दबे मुस्कुराते हुए विकास ने जवाब दिया, 'आप उसे इतना प्यार करते हैं, इसका इसे बड़ा अहंकार है और यह कह-कह कर मुझसे बात-बात में झगड़ती है।'

'यह क्या वन्दना ? इससे झगड़ती हो तुम मेरा नाम ले-लेकर ?'

'नहीं दादा, यह बिल्कुल झूठ बोल रहा है।'

'ईवेन इफ दे आर रांग, आई डोन्ट लाइक टु हियर सच सीरियस एण्ड डैमेजिंग एलीगेशन्स् !'

इसके खिलाफ़ कोई सफाई देकर पति को नीचे नहीं गिराना चाहा वन्दना ने। बात बदलकर बोली, 'कॉफी पियोगे दादा ?'

'कॉफी पीना बहुत ही पसन्द है तरुण को। जाने कब से वह स्वप्न देखता आ रहा है कि डिनर के बाद ब्लैक कॉफी का कप हाथ में लेकर पीते हुए इन्द्राणी के साथ बात किया करेगा।

'कॉफी ? ह्वाट ए वंडरफुल आइडिया !'

'तुम पियोगे ?' वन्दना ने विकास से पूछा।

हाथ की घड़ी पर नजर डालकर विकास ने जवाब दिया, 'नहीं नहीं, एक बज गया, मैं इस समय नहीं पियूँगा !'

और अचानक परेशान होकर तरुण बोला, 'अरे सच ! रात बहुत हो गई है। रहने दे वन्दना, अब कॉफी मत बना। तुम लोग सोने जाओ वरन् ! सफर करके आये हो, थके होगे !'

'मैं अभी नहीं सो रही।' वन्दना ने कहा।

'जाओ विकास, तुम सो जाओ जाकर।'

विकास को हिचकते देखकर वन्दना ने कहा, 'शादी के बाद पहली बार भाई के पास आई हूँ। तुम जाओ तो हम जरा अपनी प्राइवेट बातें करें।'

'वन्दना !' फिर डाँटा तरुण ने।

और वन्दना ने मुस्कुरा कर जबर्दस्ती ठेल-ठाल कर विकास को सोने के लिये भेज ही दिया।

दो कप कॉफी खत्म हो जाने के बाद भी कितनी ही देर तक दोनों भाई-बहनों में बातें होती रहीं।

'अच्छा दादा, तुम नियमित रूप से चिट्ठी क्यों नहीं डालते भला ?'

'चिट्ठी-पत्री लिखना अच्छा नहीं लगता। और फिर चिट्ठी-पत्री लिखकर मन थोड़े ही भरता है ? तुम लोग पास हो तो कितना अच्छा लगता है।'

दाहिने हाथ की हथेली पर ठोड़ी टिकाये मुग्ध-भाव से वन्दना तरुण की बातें सुन रही थी।

'अच्छा वन्दना, मेरा ट्रांसफर अगर लंदन हो जाये और सब साथ रहें तो कितना अच्छा हो, क्यों ?'

लंदन आने की बात सुनते ही वन्दना चंचल हो उठी, 'तुम लंदन आ रहे हो ?'

'नहीं। पर आ सकता तो मजा रहता।'

'तो आ जाओ ना दादा। हमलोग बड़ा फ्लैट ले लेंगे।'

घड़ी देखकर तरुण बोला, 'माई गॉड ! सवा तीन बज गये।'

'बस ?' वन्दना के लिये जैसे अभी इतनी रात नहीं हुई थी।

'जाओ जाओ, जल्दी से सोने जाओ।'

तरुण के बिस्तर का बेडकवर उठाकर कम्बल ठीक करके वन्दना

अपने कमरे में सोने चली गई।

छोटा नाइट लैम्प जलाकर वन्दना ने विकास का सूट तह करके ड्राअर में रक्खा और फिर शीशे के सामने खड़े होकर जूड़ा खोलकर बालों में कंघी की। तदुपरान्त कपड़े उतार कर नाइटी पहनी और स्विच बंद करके रजाई में घुस गई।

इधर-उधर करवट बदलने में विकास की आँख खुल गई।

'तुम सोये नहीं ? वन्दना बोली।

'मैं तो अच्छा खासा सो रहा था, तुम्हीं ने तो जगा दिया।'

'कितना सफेद झूठ बोल लेते हो तुम।'

'झूठ कह रहा हूँ ? तुम रोज़ मेरी नींद नहीं तोड़ देतीं ?'

'कभी नहीं। तुम्हीं जागते रहकर सोने का बहाना बनाते हो।'

'बहाना नहीं, कर्त्तव्य कहो। माई सेक्रेड ड्यूटी टु माई बिलवेड एंड एक्साइटिंग वाइफ !'

अँधेरे में भी जैसे दोनों एक दूसरे को स्पष्ट देख पा रहे थे। पूर्णता का सन्तोष उभर आया था दोनों की आँखों में।

और गम्भीरता का बाना ओढ़कर होशियार किया वन्दना ने, 'जितनी भी फ्लैटरी करो, पर आज कोई मतलब निकलने वाला नहीं।'

'मुझे कोई अपने मतलब की फिक्र थोड़े ही है, मुझे तो तुम्हारी चिंता है।'

'आज लगता है तुम पर भूत सवार है, लेकिन भगवान् के लिये अब मुझे तंग मत करो।'

और एक मिनिट बाद फिर से वन्दना ने कहा, 'जानते हो क्या बजा है ?'

'क्या ?'

'चार बजे हैं।'

'सो ह्वाट ?'

'सुबह देर से उठने पर दादा के सामने जाने में शर्म नहीं आयेगी। वह क्या सोचेंगे·····!'

'कुछ नहीं सोचेंगे, बल्कि समझेंगे कि सुख में हैं।····'

और सचमुच सुबह उठने में बहुत देर हो गई। तरुण ऑफिस जाने के लिये तैयार हो गया था और पैन्ट्री में चाय व ब्रेकफास्ट का आयोजन

करके लिविंग रूम में बैठा पाक्षिक व मासिक पत्रिकाएँ उलट-पुलट रहा था।

उधर उठ जाने पर भी दोनों एक दूसरे से पहले बाहर जाने को कह रहे थे पर कोई भी पहले कमरे से निकलने को तैयार नहीं हो रहा था। अंत में दोनों साथ-साथ बाहर निकले।

'क्यों, नींद अच्छी आई ?' तरुण ने पूछा।

पल भर के लिये दोनों की आँखें मिलीं; फिर वन्दना बोली, 'इतनी देर से उठने के बाद भी जानना चाहते हो कि नींद अच्छी आई या नहीं ?'

'कल रात तुम लोग बहुत थके हुए थे। इतनी देर से सोना ठीक नहीं हुआ।'

'ऑफिस जाने की फिक्र नहीं होती तो नींद जैसे टूटना ही नहीं चाहती !' किसी तरह सफाई देते हुए विकास ने कहा।

'जरूर सोओ। खाओ-पियो और सोओ ! दो-चार दिन ही तो हैं, रिलैक्स कर लो।'

'तुमने चाय पी ली दादा ?' विषय बदला वन्दना ने।

'रोज तो अकेला पीता ही हूँ। अब तुम लोगों के आने के बाद भी अकेले पियूँगा क्या ?'

झटपट चाय वगैरह ले आई वन्दना। नाश्ता करके उठते समय तरुण बोला, 'सुन लो विकास, जब तक वन्दना है, मैं घर का कोई काम नहीं करूँगा।'

और साथ ही साथ जोर देकर विकास ने कहा, 'बिल्कुल नहीं करियेगा।'

'मांस-मछली सब खरीदा हुआ है। देख लिया है ना ?'

'कल ही देख लिया था।' वन्दना ने जवाब दिया।

'खूब अच्छा खाना बनाना, मैं रोज लंच खाने आया करूँगा, समझ लो !' हँसते-हँसते तरुण ने कहा।

और हँसते हुए ही वन्दना ने जवाब दिया, 'न आने की कौन सी बात है दादा ?'

हाथ में बँधी घड़ी की ओर देखकर तरुण एक दम से उठ खड़ा हुआ और बोला, 'ओफ ! बड़ी देर हो गई !'

निकलने से पहले उसने ऑफिस में कान्सल जनरल को फोन किया,

'सर, मैं अभी आ रहा हूँ।'

टंडन साहब ने जवाब दिया, 'तुमसे आने को कहा किसने है ? वी हैप्पी विद योर सिस्टर एंड विकास।'

'थैंक यू वेरी मच सर। आइ ऐम कमिंग विदिन हाफ ऐन आवर।'

इसके बाद तरुण से कुछ कहना बेकार समझा टंडन साहब ने। बोले, 'वन्दना को दो तो जरा टेलीफोन।'

'गुड मार्निंग।'

'गुड मार्निंग। कैसी हो वन्दना ?'

'खूब खुश।'

'कल रात को तो देर तक बैठक जमी होगी ? क्यों....?'

'हाँ, जमी तो थी।'

'अपने भैया को ऑफिस क्यों आने दे रही हो ?'

'ऑफिस जाये बिना चल जायेगा ?'

'बिल्कुल चलेगा।'

टेलीफोन रखकर वन्दना ने तरुण की ओर देखा तो उसे हँसते पाया।

'तुम्हें ऑफिस नहीं जाना पड़ेगा।'

'ऐसा भी कभी हो सकता है ? टंडन साहब तो यों ही कहते रहते हैं।'

कुछ देर इसी तरह भाई-बहन में जाने, न जाने को लेकर बहस चलती रही। अंत में समस्या का समाधान विकास ने किया—

'ठीक है, चलो हमलोग भी दादा के साथ ही ऑफिस चलें। थोड़ी देर रहकर सब साथ ही चले आयेंगे।'

दोनों हाथों से ताली बजाकर वन्दना एकदम से बोली—'वाह। क्या आइडिया दिया तुमने भी विकास ! मजा आ गया।'

# अठारह

दु:ख के दिन बिताये नहीं बीतते, लेकिन सुख के दिनों को जैसे पर लग जाते हैं। वन्दना-विकास के साथ तरुण के दिन भी देखते-देखते निकल गये और विकास की छुट्टी खत्म हो गई।

गिनती के दिन थे, पर कितना कुछ किया उन लोगों ने, कितना घूमे-फिरे। रविवार की सुबह विकास को जाना था। शनिवार की शाम को दोनों को साथ लेकर मार्केटिंग के लिये निकला।

'तुम लोग तो लंदन में हस्पॉपी के जूते पहनकर ही सोचने लगते हो कि विश्व का सर्वश्रेष्ठ जूता पहन लिया है। यहाँ के बने जूते पहन कर देखो—सब भूल जाओगे।'

'मेरे पास तो तीन-चार जोड़ी अच्छे जूते हैं। और जूतों की क्या ज़रूरत है!' विकास ने जूते खरीदने से इन्कार करते हुए कहा।

पर तरुण ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। घूमते-घूमते एक छोटी गली में किसी एजेन्सी हाउस पर पहुँच गया।

'हाउ आर यू मिस्टर नोएल ?'

'फाइन, थैंक यू सर!'

'यही हैं मेरी बहन एवं ब्रदर इन लॉ। इनकी चीज़ तैयार है न ?'

विकास और वन्दना ने कुछ न समझ कर एक दूसरे की ओर देखा।

'आपकी चीज़ तैयार कैसे नहीं रखता भला ?' नोएल साहब ने उत्तर दिया।

और एक मिनिट में अन्दर से लाकर टेबिल पर ब्राउन का टूरिस्ट मॉडेल टी०वी० सेट खोल दिया नोएल साहब ने।

'यह क्या दादा ? टी० वी० सेट क्यों खरीदा तुमने ?' वन्दना बोली।

'चुप खड़ी रह।'

'पर आप यह कर क्या रहे हैं दादा ।' अब विकास बोला ।

करते क्या । कुछ भी तो नहीं कर रहे । करीब तीन-चार महीने पहले सेट देखा था । बहुत ही पसन्द आया था । उसके बाद इन लोगों के आने की खबर मिलने पर नोएल को कीमत अदा करके रिजर्व करा गया था तरुण ।

तरुण के साथ तर्क करने का साहस न होते हुए भी दोनों ने बार-बार आपत्ति की थी ।

अंत में तंग आकर तरुण ने कहा था, 'जीवन में कभी किसी को भी कुछ देने का सौभाग्य तो आया नहीं । लोग अपने माँ-बाप, भाई-बहन, स्त्री-पुत्र को कितना कुछ देते हैं । और कुछ नहीं तो तुम लोग इतने से सौभाग्य का ही प्रथम अवसर दे दो ।'

इसके बाद दोनों के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला ।

कुछ क्षण चुप रहकर बोला, 'बड़े भाई से छोटे भाई-बहन न जाने कितने आग्रह अनुरोध करते हैं, पर तुम लोगों ने कभी किसी चीज के लिये आग्रह नहीं किया ?'

इस दुनिया में प्यार पाने के लिये भी सौभाग्य चाहिये; लेकिन वह प्यार-स्नेह दूसरे पर न लुटा पाने जैसा दुर्भाग्य भी और कुछ नहीं होता । मनुष्य को प्यार करने में ही मनुष्यत्व की सार्थकता, पूर्णता व परितृप्ति है । तरुण के जीवन में वह पूर्णता, वह परितृप्ति कभी नहीं आई यह बात वन्दना व विकास जानते तो थे पर मर्म में उपलब्धि उस दिन पहली बार हुई ।

कुछ देर चुप रहने के उपरान्त वन्दना बोली, 'यह महीने भर जब तक रहूँगी, इतना तंग करूँगी दादा कि तुम्हें इस बात का अफसोस या दुख नहीं रहेगा ।'

विषण्ण तरुण के मुख पर शुष्क हास्य की रेखा उभर आई, 'बस महीना भर ही तो तंग करेगी, उसके बाद तो नहीं ।'

अगले दिन विकास को 'सी आफ' करते समय तरुण का मन और भी खराब हो गया । बोला, 'वन्दना तुम भी चली जाती । उस बेचारे को अकेले बड़ी तकलीफ होगी ।'

'और तुम्हें अकेले छोड़कर जाऊँगी तो शायद आराम मिलेगा तुम्हें ?'

साथ ही साथ विकास ने कहा, 'आप चिंता मत करिये दादा, मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी। और फिर वन्दना को भी चेंज हो जायेगा। कब से एकरस जीवन व्यतीत कर रही है।'

विकास चला गया और तरुण वन्दना को लेकर घर लौट आया।

लौटकर एक अल्यूमूनियम की डेक चेयर लेकर वह तो वालकनी में बैठ गया और वन्दना अन्दर चली गई।

कुछ देर बाद दोनों हाथों में दो कप कॉफी के पकड़े वह भी वालकनी में आ गई।

हँस कर तरुण ने पूछा, 'क्या ले आई? कॉफी?'

'हाँ!'

'ठहरो। बैठने ले लिये कुछ के आऊँ।

'तुम कप पकड़ो। मैं लाती हूँ।'

'नहीं नहीं, मैं लाता हूँ।'

और झट से अन्दर जाकर एक ईजिप्शियन मूढ़ा उठा लाया।

काफी का घूंट भरके वन्दना वोली, 'एक महीना खूब मज़ा रहेगा, नहीं दादा?'

'हाँ, क्यों नहीं रहेगा,' प्रसन्नवदन मुस्कुराते हुए तरुण ने जवाब दिया।

'जानते हो दादा, मैंने तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मेरा भाग्य इस तरह बदल जायेगा।'

आत्मस्मृति के समस्त अध्यायों की मन ही मन पर्यालोचना करके मानो वन्दना इस निष्कर्ष पर पहुँची थी।

'इस बीच भाग्य कहाँ बदल गया?'

भँवें उठाकर, आँखें घुमाकर वन्दना वोली, 'भाग्य नहीं वदलता तो तुम्हारे जैसा भाई मिलता? हंसा क्वार्टर में रहना.....'।

अब तरुण अपनी हँसी नहीं रोक पाया। खिलखिला कर वोला, 'लगता है तेरा दिमाग खराब हो गया है। नहीं तो कोई कभी ऐसी बात भी कहता है?'

अचानक डोर वेल बज उठी।

दरवाजा खोलते ही खुशी से भरकर वोली, 'आप आ गये। आइये;

जल्दी से उठकर तरुण आया दरवाजे पर टंडन साहब को खड़े पाया।

अन्दर आकर मुस्कुराते हुए टंडन साहब बोले, 'मैं देखना चाहता था कि दोनों भाई-बहन कैसे मजा कर रहे हो ?'

मज़ाक करते हुए वन्दना ने कहा, 'बस अभी-अभी तो कॉफी का कप लेकर शुरू किया है। कुछ दिन प्रतीक्षा करिये फिर देखियेगा।'

वन्दना के कंधे पर हाथ रखकर जरा पास खींचकर कान में फुस-फुसा कर टंडन साहब ने कहा, 'इस बूढ़े भाई को भी थोड़ा सा शेयर दे देना, भूल मत जाना।'

तरुण खड़ा-खड़ा हँस रहा था। अब बोला, 'पहले बैठ तो जाइये, फिर हिस्सा-बाँट करियेगा।'

तरुण और टंडन साहब अन्दर लिविंग रूम में सोफे पर जाकर बैठ गये और पक्की गृहस्थिन की तरह वन्दना ने खड़े-खड़े पूछा, 'ह्वाट विल यू हैव ? टी ऑर कॉफी ?'

'बस खाली चाय या कॉफी ? और कुछ नहीं खिलाओगी ?'

'आप जैसे सीनियर डिप्लोमेट को इतनी जल्दी धीरज नहीं खोना चाहिये। यू शुड वेट एंड सी।'

वन्दना के शासन करने का अन्दाज़ देखकर दोनों हँस पड़े।

माथे पर हाथ मार कर टंडन साहब बोले, 'बाप रे ! लड़की है कि आफ़त !' और फिर तरुण की ओर देखकर बोले, 'शी शुड हैव बीन इन डिप्लोमेटिक सर्विस !'

'नाउ यू गो आन पौन्डरिंग, मैं तो चली।'

और कार्डीगन की बाँहों में हाथ डालते-डालते वन्दना पैन्ट्री की ओर चल दी। उसके मुँह घुमाते ही चीत्कार करते से टंडन साहब बोले, 'तरुण ! आउटस्टैंडिंग डिप्लोमेट्स की तरह शी कैन इग्नोर टू !'

मुँह से तो कुछ नहीं कहा तरुण ने पर वन्दना के लिये ऐसे प्रशंसा भरे शब्द सुनकर मन ही मन गर्व का अनुभव किया उसने।

टंडन साहब ने आगे कहा, 'बहुत ही अच्छी लड़की है ! देखते ही प्यार हो आता है !'

'सचमुच वन्दना बहुत ही अच्छी लड़की है।' समर्थन किया तरुण ने।

'तुम बहुत लकी हो।'

'जहाँ तक वन्दना की बात है, यह ठीक है कि मैं लकी हूँ।'

'एंड शी इज़ वेरी प्राउड आफ यू!' मुस्करा कर टंडन साहब ने कहा।

'अच्छा! ऐसी बात है ?' हँसते हुए तरुण ने उलट कर प्रश्न किया।

कुछ देर बाद ही वन्दना ट्राली ट्रे लिये उपस्थित हुई। ताजे पकौड़े और कॉफी के अलावा और भी जाने क्या-क्या था।

मजाक करते हुए टंडन साहब बोले, 'यह वक्त भी कोई पकौड़ों और कॉफी का है ? मैंने तो सोचा था लंच खिलाओगी।'

'आज हम लोगों का खाना-पीना जरा स्पेशल है। सो यू मस्ट एक्स-क्यूज़।'

और वन्दना की बात व बात कहने का ढंग देखकर दोनों खिल-खिला कर हँस पड़े।

× × ×

दिन अच्छे गुज़र रहे थे। इससे पहले तरुण महाशून्य में गोते लगाता फिरता था। और आजकल ? समस्त शून्यता जैसे वन्दना ने भर दी थी। एक क्षण के लिये भी तरुण को निःसंगता की वेदना का अनुभव नहीं होता।

एक दिन तरुण चुप बैठा था तो दोनों हाथों में उसका मुँह उठाकर बोली, 'तुम चुपचाप बैठे क्या सोच रहे हो दादा ? मैं खाना बना रही हूँ, चलो न; तुम वहाँ चलकर पास बैठना।'

इसके बाद तरुण अकेला चुप नहीं बैठ सका। वन्दना खाना बनाने लगी और वह वहीं पास इजिप्शियन मूढ़ा खिसका कर बैठ गया। बस, शुरू हो गईं बातें।

'अच्छा दादा, तुम रसोई में बैठ कर मौसी के साथ बातें करते थे ?'

बहुत छोटा था तब तक तो माँ के साथ-साथ ही रहता था, लेकिन बड़े हो जाने के बाद फिर वह मौका ही नहीं मिलता था।'

'क्यों ?'

उदास शून्य दृष्टि खिड़की से बाहर को गई और फिर लौट आई।

विगत दिनों की स्मृति में फिर मन डूब सा गया। एक निःश्वास छोड़-कर तरुण बोला, 'बाद को इन्द्राणी के बिना माँ एक मिनिट नहीं रह सकती थीं। उसके आते ही माँ की बातें शुरू हो जातीं।'

'मौसी उसे बहुत ही प्यार करती थी।' मन ही मन कहा जैसे वन्दना ने।

बातों-बातों में ही वन्दना की मछलियाँ तल गईं। एक अच्छी भुनी मछली प्लेट में डालकर तरुण की ओर बढ़ा कर बोली—'यह लो दादा।'

'यह क्या ? यह भी कोई मछली खाने का समय है ?'

'अब मैं दे रही हूँ, खा लो ना।'

इसी तरह हँसी-खुशी में दिन बीतने लगे। एक दिन तरुण फिल्हार-मोनिक आर्केस्ट्रा के दो टिकिट खरीद लाया। वन्दना से जरा अच्छे कपड़े पहनकर चलने को कहा और अपने कपड़े बदलने चला गया।

वन्दना अन्दर के कमरे में तैयार हो रही थी और तरुण सिगरेट पीते-पीते चहलकदमी कर रहा था।

'दादा, जरा इधर आओ तो !'

'क्या हुआ ?'

'पहले आओ तो !'

उस कमरे में जाते ही वन्दना को देखकर पहले तो ठगा सा खड़ा रह गया; फिर बोला, 'बाप रे बाप ! बर्लिनर्स तो सोचेंगे कि कोई इन्डियन क्वीन आई है !'

'भले ही क्वीन न होऊँ, पर एक प्रमुख इंडियन डिप्लोमेट की बहन तो हूँ ही।'

ओठ बिचका कर तरुण ने कहा, 'यह साज-सज्जा देखकर कौन विश्वास करेगा ?'

एक तो वैसे ही देखने में वन्दना अच्छी है और फिर आज तो और भी निखरी हुई लग रही थी। नाक-नक्श उसके तीखे हैं। ऊपर से नाक हल्की सी चपटी है पर चेहरे की बनावट ऐसी है कि आँखों में चुभती नहीं। आज उसने एक काली जरी के बार्डर की बनारसी साड़ी पहनी थी, आई लैशेज़ लगाने से आँखें और भी सुन्दर लगने लगी थीं। ब्यूटी ट्रीटमेंट के द्वारा चेहरा भी निखर आया था।

'दादा, जरा इस नेकलेस का कुंडा तो लगा दो, लग ही नहीं रहा है !'

'बस, हो गया तब तो, मुझसे क्या लगेगा, जब तुझसे ही नहीं लग रहा ?'

पर इतना कहने से वन्दना छोड़ने वाली थी क्या ! आखिर लगाना ही पड़ा तरुण को ।

वन्दना को समीप पाकर नये सिरे से जीने की आशा मिल गई जैसे तरुण को । आनन्द व उल्लास से लबालब भर गया हृदय । जीवन का ढंग भी बदल गया । अब केवल कॉफी और सैंडविच खाकर ही दिन नहीं बिताना पड़ता । रोज-रोज नई-नई चीजें बनाती वन्दना ।

'इतना खाया जा सकता है क्या, जो तू रोज-रोज बना डालती है ? खाने का सामान देखकर तरुण कहता । और बस एकदम से बड़ी-बूढ़ी बन जाती वन्दना, 'तुम बेकार की बहस बहुत करते हो, दादा । कम से कम खाने-पीने के मामले में तो मत बोला करो, उसका भार तो मेरे ऊपर छोड़ दो ।'

इसके आगे तर्क नहीं करता तरुण । हार स्वीकार करके भी जैसे वह जीत जाता ।

रात को खाने-पीने के बाद देर तक बैठे गप्पें मारते रहते दोनों । भूत की स्मृति एवं भविष्य की कल्पनाओं में रात गहराती चली जाती ।

और एकदम से जैसे कुछ याद करके कहती वन्दना, चलो, 'उठो दादा, अब सोओ जाकर ।'

तरुण समझ जाता कि यह अनुरोध नहीं आदेश है । कहता, 'बस अभी जा रहा हूँ ।'

'अभी जा रहा हूँ नहीं, चले जाओ ।

इसके बाद बैठे रहने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता था । बिस्तर तो पहले से ही बिछा होता था । तरुण के लेटते ही वन्दना ठीक से कम्बल उढ़ा देती !

'मैं क्या छोटा बच्चा हूँ कि कम्बल भी अपने आप नहीं ओढ़ सकता ?'

'इतने लाड़-प्यार में पले हो कि यह सब सीखने का मौका ही कहाँ मिला ?'

सुबह जल्दी उठ जाती वन्दना। झाँक कर तरुण को देख लेती। अगर कम्बल गिर गया होता तो धीरे से उठाकर उढ़ा देती। फिर निपटने को चली जाती।

दुःख-कष्टों में पली है वन्दना। बहुत से बड़े-बड़े तूफानों का सामना करना पड़ा है उसे। तरुण की स्नेह-छाया में आकर पहली बार उसने साफ आसमान देखा है। अतः सुबह उठते ही उसका मुँह देखने से उसे एक विशेष अनुप्रेरणा व आनन्द मिलता है। उसके उपर आधिपत्य जमाने में आत्मतृप्ति मिलती है।

सुख के दिन फिर हवा के झोंके की तरह आकर चले गये। वन्दना के जाने का समय आ गया।

'सारी आदतें बिगड़ गईं। अब कैसे अकेला रहूँगा और सैंडविच खाऊँगा, यही सोच रहा हूँ।'

उसी दिन दोपहर को वन्दना ने विकास को लिखा, 'दादा को छोड़-कर आना बहुत ही खराब लग रहा है। तुम अगर नाराज न होओ तो और दो हफ्ते रुक जाऊँ।'

विकास का जवाब आने में देर नहीं हुई, 'तुम जरूर दो हफ्ते रह लो। दादा की ओर देखकर भला नाराज होने की बात मन में कैसे आ सकती है ? भूलो मत, उनसे ज्यादा अपना हमारा और कोई नहीं है।'

दूसरे दिन सुबह आफिस जाते समय तरुण बोला, 'आज तुम्हारा टिकिट मँगवा लूँगा।'

'नहीं-नहीं दादा। अभी मेरा टिकिट मत मँगाना। थोड़े दिन और तुम्हें तंग कर लूँ जरा।'

'यह क्या ? विकास बेचारा कब तक अपने हाथ जलावेगा ?'

'उसी ने मुझे और थोड़े दिन रहने को लिखा है।'

एक शुष्क हँसी आ गई तरुण के होंठों पर। 'मेरे साथ स्वयं को इतना मत जोड़ो तुम लोग। नहीं तो मेरे पापों के कारण तुम लोगों को भी दुःख भोगना पड़ेगा।'

'यह सब फिक्र करने की तुम्हें जरूरत नहीं है, समझे ?'

# उन्नीस

वन्दना चली गई। कुछ अनुभूतियाँ ले गई और कुछ स्मृतियाँ छोड़ गई।

बूँद-बूँद से जैसे समुद्र बन जाता है, उसी तरह प्रतिपल की अभिज्ञता के संचय से वह अनुभूतियाँ जन्मो थीं। इससे पहले कभी उसे इस तरह की अनुभूति नहीं हुई थी। और अपने पीछे जो छोटी-छोटी यादें छोड़ गई थी, तरुण के लिये अनन्य सम्पदा बन गई थीं। इतने सालों से इतनी बड़ी दुनिया में फिर रहा था पर ऐसा अपनत्व कहीं नहीं मिला था। प्यार, समवेदना तो बहुतों से मिले लेकिन सामीप्य नहीं मिला। यद्यपि इन्द्राणी का अभाव वन्दना नहीं मिटा पाई और न ही मिटा सकती है, लेकिन तब भी जो कुछ वह दे गई है, वह और किसी से पाने की तरुण आशा नहीं कर सकता।

वन्दना के सिवाय कौन इतने अपनेपन से कह सकता है, 'दादा, तुम मेरी साड़ी की प्लेटें नीचे से ठीक करो तो जरा—सँभल ही नहीं रही।'

कभी किसी पार्टी में जाते समय विचित्र-सी केश-सज्जा करके दोनों हाथों से जूड़ा पकड़ कर बुलाती, 'दादा, जरा इस कमरे में आना।'

'क्यों, क्या हुआ ?'

और तरुण के कमरे में घुसते ही कहती, 'वो वहाँ जो काँटे पड़े हैं पकड़ा दो ज़रा।'

काँटे पकड़ाते हुए तरुण कहता, 'इतना सजने-सजाने की क्या जरूरत है भला ?'

'जीवन में ऐसे तो अपने लिये कभी कुछ करने का मौका मिला नहीं, अब तुम्हारे पास आकर भी लाइफ एन्ज्वॉय नहीं करूँ ?'

कौन इस तरह स्पष्ट रूप से किसी गैर पर अधिकार जमा सकता है ?

वन्दना सचमुच अनन्या है।

वन्दना को विदा करके घर लौटने पर बड़ा ही बुरा लगा। चुपचाप सोफे पर बैठा-बैठा ही सो गया। बाद के कुछ दिन मन को वन्दना का अभाव और भी खला, घर का एकाकीपन खाने को दौड़ता जैसे।

ऑफिस नियमित रूप से जाता पर काम-काज में मन ही नहीं लगता। टंडन साहब उसके मन की व्यथा को समझते थे अतः कुछ नहीं कहते।

और कुछ दिन बीते। जीवन जैसे और बदरंग हो गया। दिल्ली, लंदन, न्यूयार्क में तो समय कट भी जाता था पर बर्लिन में तो समय जैसे बीतना ही नहीं चाहता, वहीं का वहीं ठहर गया है। और एक दिन बातों-बातों में टंडन साहब से कह ही डाला उसने, 'अब मन नहीं लग रहा यहाँ, सोचता हूँ प्रयत्न करके ट्रांसफर करा लूँ।'

'जहाँ ट्रांसफर होगा, वहाँ जाकर मन लग जायेगा ?'

अब इस तर्क का क्या जवाब दे तरुण, जवाब था भी नहीं। मन की जो अवस्था थी उसमें तो वह स्वयं को कोई आश्वासन नहीं दे सकता था, फिर उन्हें क्या देता !

मिस्टर टंडन ही बोले, 'तुम अगर ट्रांसफर के लिये कहोगे तो यह तो निश्चय है कि मिनिस्ट्री मना नहीं करेगी, पर उससे तुम्हें क्या लाभ होगा ? बल्कि इससे तो अच्छा है समय की प्रतीक्षा करो।'

काम काज कम होने के कारण तरुण का मन और भी नहीं लग रहा था—मन भटकता रहता, जाने कहाँ-कहाँ की उड़ानें भरता। न्यूयार्क, लंदन, मास्को, पीकिंग में डिप्लोमेटों में जो एक दबी हुई उत्तेजना होती है, बर्लिन में वह भी नहीं थी। क्या लेकर दिन बिताये तरुण, कैसे जिये वह ?

करीब महीने भर बाद दो-तीन जनरल असिस्टेंट कम स्टेनो टाइपिस्टों का इन्टरव्यू ले रहा था तरुण। पाँच छह लड़कियाँ इन्टरव्यू देने आई थीं।

'इससे पहले आपने कहीं काम किया है ?' मिस हेरमैन का इन्टरव्यू लेते समय तरुण ने पूछा।

'कुछ महीने पहले ही यूनिवर्सिटी से निकली हूँ—नौकरी करने का मौका प्रथम ही है।' लड़की ने प्रत्युत्तर में कहा।

'इन बीच के महीनों में क्या करती रहीं ?'

'एफ़ बी के नार्थ लैंड सैनेटोरियम में एक पाकिस्तानी अफसर के पास काम करती रही बीच-बीच में ।'

'इज़ ही ए बिजनेसमैन ?' अनजान वन कर पूछा तरुण ने ।

'नहीं, बिजनेसमैन तो नहीं हैं। परहैप्स ही इज ऐन आर्मी आफीसर।'

'आपने कैसे जाना ?'

'क्योंकि वह केवल रावलपिंडी और पेशावर के आर्मी अफसरों को ही चिट्ठियाँ लिखते थे ।'

और इसके आगे कुछ नहीं पूछा तरुण ने । समझ गया था कि अफसर बीमारी के कारण सैनेटोरियम में भर्त्ती नहीं हुआ था, वह तो बस कवर था । गुप्त रूप से काम करने का बहाना मात्र था । बीमार होकर सैनेटोरियम में भर्त्ती होने पर कोई इतना काम नहीं करता, स्टेनो टाइपिस्ट से चिट्ठियाँ नहीं लिखवाता ।

मिस हेरमैन का अपाइंटमेंट लेटर टाइप होने से पहले ही वॉन इंडियन एम्वैसी में मैसेज चला गया; वहाँ से दिल्ली और दिल्ली से अविलम्ब कराँची ।

दो दिनों में बर्लिन खबर आ गई कि मात्र कुछ दिन पहले कराची में पाकिस्तान व कनाडा के मध्य एक संधि हुई है, जिसमें दो वर्षों के अन्दर दोनों देशों के नेशनल डिफेन्स अकेडमो के डेलीगेशनों के एक्सचेंज की बात कही गई है । डिफेन्स मिनिस्ट्री के जो एडीशनल सेक्रेटरी इस तरह की अन्तर्राष्ट्रीय संधियों पर हस्ताक्षर किया करते थे, इस बार उन्होंने नहीं किये । सुनने में आया है कि वह अस्वस्थ हैं और चिकित्सा के लिए जेनेवा गये हुए हैं ।

पाकिस्तान आब्जर्वर, डान, पाकिस्तान टाइम्स इत्यादि अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में संधि पर हस्ताक्षर होने के वाद उस खवर के साथ उन ऐडीशनल सेक्रेटरी की फोटो भी छपा करती थी। इस वार भी छपी थी । वर्लिन खबर भेजने, साथ इन अखवारों की प्रतियाँ भी आई थी ।

किसी वहाने से वह तस्वीरें मिस हेरमैन को जैसे ही दिखाई गई, वह बोल उठी कि इन्हीं सज्जन के पास काम किया था उन्होंने ।

इसी वीच रोम की एक पत्रिका में खवर प्रकाशित हुई कि पुराने

नैटो आर्म्स की बिक्री के लिये इटली मिडिल ईस्ट व फार ईस्ट के कुछ देशों से बातचीत कर रहा है।

एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर कनाडा, पश्चिम जर्मनी व पुर्तगाल के समाचार पत्रों में भी तदनुरूप खबर छपी।

और इस पटभूमिका में पाकिस्तान की डिफेन्स मिनिस्ट्री के ऐडीशनल सेक्रेटरी के बर्लिन में उपस्थित होने का तात्पर्य समझने में भारतीय कूटनीतिज्ञों को देर नहीं लगी। दिल्ली और जरा तत्पर व जागरूक हो गई।

चारों ओर मैसेज चले गये—वाशिंगटन, लंदन, बॉन, रोम, पेरिस व दूसरे नैटो कन्ट्रीज़ में। और साथ ही साथ भारतीय राजदूतों ने उन देशों की फॉरेन मिनिस्ट्री के साथ सम्पर्क स्थापित किया। कोई-कोई देश तो साफ मुकर गया, वी हैव नो इन्फरमेशन अवाउट सेल आफ नैटो आर्म्स।

वाशिंगटन ने कहा—नैटो आर्म्स का नियमित रूप से आधुनिकीकरण होता रहता है। इट इज़ ए रेगुलर प्रोसेस। लेकिन उन हथियारों को बेचने से पहले हमारी अनुमति लेनी पड़ती है। सो डोन्ट वरी!

इंडियन ऐम्बैसेडर को तो आश्वासन देते हुए इतना तक कहा गया कि, वी विल थिंक ट्वाइस बिफोर वी आथोराइज़ एनी सच सेल टु पाकिस्तान।

सबसे अंत में कराची! इंडियन हाई कमिश्नर ने पाकिस्तान फॉरेन सेक्रेटरी से कहा, 'आप लोगों के हथियार खरीदने से हमारे दोनों देशों के संबंधों पर बुरा असर पड़ेगा।'

पाकिस्तान के फॉरेन सेक्रेटरी बोले—'हमारे फॉरेन एक्सचेंज़ की पोजीशन बहुत ही खराब है। कोरिया का युद्ध बंद हो जाने के कारण हम अपना माल नहीं बेच पा रहे; इसलिये फॉरेन एक्सचेंज नहीं मिल रहा। फॉरेन एक्सचेंज के अभाव में हम आवश्यक खाद्य सामग्री एवं 'इन्डस्ट्री' के लिये अत्यन्त आवश्यक वस्तुओं तक का तो इम्पोर्ट कर नहीं पा रहे हैं, नैटो आर्म्स भला कैसे खरीदेंगे? इट वुड बी ए विब्लीकल ड्रीम फॉर अस।'

इंडियन हाई कमिश्नर के साथ थोड़ी देर हँसी-मज़ाक करने के बाद पाकिस्तान के फॉरेन सेक्रेटरी बोले, 'इतनी मुश्किल से तो दोनों

देशों के रिलेशन्स जरा इम्प्रूव हुए हैं। और कुछ नहीं तो हम लोग अब कम से कम लखनऊ के अपने पुराने घर तो जा सकते हैं, बूढ़ी नानी से तो मिल सकते हैं, साली की वार्म कम्पनी में दो-चार दिन बिता सकते हैं। डू यू थिंक हम लोग कोई ऐसा काम करेंगे कि जिससे इतना सम्पर्क भी खत्म हो जाये ?'

'हम भी तो यह आशा नहीं करते।'

'भूल मत जाइये, यू आर शेयरिंग सेम ह्यूमन मिज़रीज़ ! अब वही देखिये...आपने जो इन्द्राणी का केस रिफर किया है...।'

'हाँ, हाँ....'

'सोचिये तो क्या ट्रेज़ेडी है !....आइ ऐम पर्सनली लुकिंग द मैटर ···मेरा ख्याल है कि एक दो महीनों में ही लड़की को ढूंढ़ लेंगे।'

'वी विल बी ग्रेटफुल....'

'ग्रेटफुल होने की कोई बात नहीं है। पर हाँ, उनकी शादी की दावत का निमन्त्रण देना मत भूलियेगा।'

'मैं खुद आकर आपको निमन्त्रण देकर जाऊँगा।' हँसते हुए हाई कमिश्नर ने कहा।

करीब महीना भर तीव्र उत्तेजना के मध्य काटने के पश्चात् दिल्ली से पाकिस्तानी फॉरेन सेक्रेटरी के मन्तव्य की रिपोर्ट मिलने पर सबने चैन की साँस ली। दिल से एक भारी बोझ उतर गया जैसे। बहुत दिन बाद फिर इन्द्राणी को लेकर स्वप्न देखने शुरू कर दिये तरुण ने।

तीन-चार दिन बाद ही मिस्टर टंडन ने तरुण को बुला भेजा।

'बैठो तरुण।'

'मामला क्या है ?' बैठते हुए तरुण ने पूछा !

'देयर इज़ ए गुड पीस आफ न्यूज़ फार यू !'

चौंक उठा तरुण। तो क्या इन्द्राणी की कोई खबर मिल गई ? मुँह से तो कुछ नहीं कहा उसने पर उद्ग्रीव होकर उत्सुक दृष्टि से टंडन साहब की ओर देखता रहा।

'पहली बात तो यह है, तुम्हें प्रमोशन मिल रहा है····।

हँस दिया तरुण।

'और दूसरी बात, तुम्हारा ट्रांसफर हो रहा है।'

'कहाँ ?'

'शायद लंदन।'

'लंदन ?'

'लगता तो यही है।'

इसके बाद धीरे-धीरे मिस्टर टंडन ने बताया कि नैटो आर्म्स की सेल के मामले के बाद मिनिस्ट्री तुम्हें बर्लिन रखना उचित नहीं समझती।'

'यह तो मैं भी फ़ील कर रहा था।'

'ऐम्बैसेडर के कहने के मुताबिक तो यही लगता है कि तुम्हें फर्स्ट पोलिटिकल सेक्रेटरी बनाकर लंदन भेजा जायेगा। पर...।'

'पर क्या ?'

'शायद इन बिटवीन दो-एक महीने के लिये दिल्ली जाना पड़ सकता है।'

शालिग्राम शिला का क्या सोना क्या बैठना ? पत्नी की राजी गैर-राज़ी, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई जैसी समस्या जब नहीं हैं क्या लंदन क्या दिल्ली ?....सब एक जैसे हैं।

और प्रमोशन ? अपने कृतित्व की उन्नति से दूसरे खुश होते हैं इसीलिये स्वयं को भी खुशी होती है। पर तरुण की उन्नति से कौन खुश होने वाला बैठा है ? हाँ, वन्दना-विकास अवश्य खुश होंगे, लेकिन....

यह लेकिन तरुण के जीवन के साथ इस तरह जुड़ गया है कि इससे मुक्ति नहीं है।

दो-चार दिन बाद ही ढाका से देसाई की चिट्ठी आई कि नहीं आ रहा, क्या बात है। पाकिस्तान सरकार अचानक इ ढूँढ़ निकालने के लिए बहुत ही तत्पर हो उठी है। लगता है दबाव पड़ा है।

वह चिट्ठी तो यहीं खत्म हो गई थी, पर साथ में एक उस पर लिखा था, आज ऑफिस आते ही खबर मिली इन्द्राणी के माँ-बाप मारे गये। घर में आग लगने से छो ही अन्दर जल कर मर गया था। इसके बाद इन्द्राणी को मुसलमान परिवार ने आश्रय दिया।

अंत में देसाई ने लिखा था, ईस्ट पाकिस्तान के डी०

(सी० आई० डी०) स्वयं केस डील कर रहे हैं तथा हफ्ते भर के अन्दर-अन्दर पूरी खबर देने का वायदा किया है।

बार-बार चिट्ठी पढ़ी तरुण ने। एक दबी उत्तेजना तन-मन को चीरे डाल रही थी। चिट्ठी हाथ में लिये दौड़ता हुआ सा टंडन साहब के कमरे में पहुँचा।

टंडन साहब ने भी कई बार चिट्ठी पढ़ी और हँसकर बोले, 'यह तो सचमुच अच्छी खबर है।'

कुछ क्षण बाद बोले, 'लगता है पाकिस्तान इस बार अपनी आनेस्ट इन्टेन्शन प्रमाणित करना चाहता है।'

'हाँ, मुझे भी यही लगता है।'

अपने कमरे में आते ही तरुण ने देसाई को केवल भेजा, 'थैंक्स योर काइंड लेटर स्टाप ऐसेन्शली एक्सपेक्टिंग फरदर डेवेलपमेन्ट स्टाप लव तरुण।

आशा-निराशा के झूले में झूलता हुआ तरुण पागल-सा हो उठा। देश के दो टुकड़े होने के बाद पूर्व बंगाल की बहुत-सी हिन्दू लड़कियों का मुसलमानों के साथ विवाह हो गया था। इच्छा से भी और अनिच्छा रहते हुए भी अनेकों कारणों से उन्हें विवाह करना पड़ा था। कोई सुखी थी तो कोई दुखी, पर मजबूरी थी।

ऐसी बहुत सी लड़कियों के बारे में तरुण जानता है। मुसलमान पति होते हुए भी आज तक मन से उनके हिन्दू होने की बात उसे मालूम है।

दिल्ली में रहते समय इस तरह के बहुत से केस उसने स्वयं डील किये थे। नाटक-उपन्यास को मात करती हैं वे घटनाएँ, ये कहानियाँ। डाकू-गुंडों के हाथों से बचाने के लिए बहुत से मुसलमान परिवारों ने उन्हें अपने यहाँ शरण दे दी थी। बहुत से प्रगतिशील युवकों ने धर्म-परिवर्त्तन कराये बिना उनसे सिविल मैरिज कर ली थी।

बंगालियों के जीवन की इस दुर्योग रात्रि में और भी न जाने क्या-क्या हुआ था। किसी ने साँप की तरह डँसा था तो किसी ने पशुराज सिंह की तरह हाथ में आया शिकार भी छोड़ दिया था।

इन्द्राणी के अदृष्ट में तो ऐसा कोई विपर्यय नहीं घटा ?

सोच नहीं पाता तरुण।

'शायद लंदन ।'

'लंदन ?'

'लगता तो यही है ।'

इसके बाद धीरे-धीरे मिस्टर टंडन ने बताया कि नैटो आर्म्स की सेल के मामले के बाद मिनिस्ट्री तुम्हें बर्लिन रखना उचित नहीं समझती ।'

'यह तो मैं भी फ़ील कर रहा था ।'

'ऐम्बैसेडर के कहने के मुताबिक तो यही लगता है कि तुम्हें फर्स्ट पोलिटिकल सेक्रेटरी बनाकर लंदन भेजा जायेगा । पर···।'

'पर क्या ?'

'शायद इन बिटवीन दो-एक महीने के लिये दिल्ली जाना पड़ सकता है ।'

शालिग्राम शिला का क्या सोना क्या बैठना ? पत्नी की राजी गैर-राज़ी, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई जैसी समस्या जब नहीं हैं क्या लंदन क्या दिल्ली ?....सब एक जैसे हैं ।

और प्रमोशन ? अपने कृतित्व की उन्नति से दूसरे खुश होते हैं इसीलिये स्वयं को भी खुशी होती है । पर तरुण की उन्नति से कौन खुश होने वाला बैठा है ? हाँ, वन्दना-विकास अवश्य खुश होंगे, लेकिन····

यह लेकिन तरुण के जीवन के साथ इस तरह जुड़ गया है कि इससे मुक्ति नहीं है ।

दो-चार दिन बाद ही ढाका से देसाई की चिट्ठी आई कि समझ में नहीं आ रहा, क्या बात है । पाकिस्तान सरकार अचानक इन्द्राणी को ढूँढ़ निकालने के लिए बहुत ही तत्पर हो उठी है । लगता है कराँची से दबाव पड़ा है ।

वह चिट्ठी तो यहीं खत्म हो गई थी, पर साथ में एक स्लिप थी । उस पर लिखा था, आज ऑफिस आते ही खबर मिली है कि दंगे में इन्द्राणी के माँ-बाप मारे गये । घर में आग लगने से छोटा भाई पहले ही अन्दर जल कर मर गया था । इसके बाद इन्द्राणी को एक स्थानीय मुसलमान परिवार ने आश्रय दिया ।

अंत में देसाई ने लिखा था, ईस्ट पाकिस्तान के डी० आई० जी०

(सी० आई० डी०) स्वयं केस डील कर रहे हैं तथा हफ्ते भर के अन्दर-अन्दर पूरी खबर देने का वायदा किया है।

बार-बार चिट्ठी पढ़ी तरुण ने। एक दबी उत्तेजना तन-मन को चीरे डाल रही थी। चिट्ठी हाथ में लिये दौड़ता हुआ सा टंडन साहब के कमरे में पहुँचा।

टंडन साहब ने भी कई बार चिट्ठी पढ़ी और हँसकर बोले, 'यह तो सचमुच अच्छी खबर है।'

कुछ क्षण बाद बोले, 'लगता है पाकिस्तान इस बार अपनी आनेस्ट इन्टेन्शन प्रमाणित करना चाहता है।'

'हाँ, मुझे भी यही लगता है।'

अपने कमरे में आते ही तरुण ने देसाई को केबल भेजा, 'थैंक्स योर काइंड लेटर स्टाप ऐसेन्शली एक्सपेक्टिंग फरदर डेवेलपमेन्ट स्टाप लव तरुण।

आशा-निराशा के झूले में झूलता हुआ तरुण पागल-सा हो उठा। देश के दो टुकड़े होने के बाद पूर्व बंगाल की बहुत-सी हिन्दू लड़कियों का मुसलमानों के साथ विवाह हो गया था। इच्छा से भी और अनिच्छा रहते हुए भी अनेकों कारणों से उन्हें विवाह करना पड़ा था। कोई सुखी थी तो कोई दुखी, पर मजबूरी थी।

ऐसी बहुत सी लड़कियों के बारे में तरुण जानता है। मुसलमान पति होते हुए भी आज तक मन से उनके हिन्दू होने की बात उसे मालूम है।

दिल्ली में रहते समय इस तरह के बहुत से केस उसने स्वयं डील किये थे। नाटक-उपन्यास को मात करती हैं वे घटनाएँ, वे कहानियाँ। डाकू-गुंडों के हाथों से बचाने के लिए बहुत से मुसलमान परिवारों ने उन्हें अपने यहाँ शरण दे दी थी। बहुत से प्रगतिशील युवकों ने धर्म-परिवर्त्तन कराये बिना उनसे सिविल मैरिज कर ली थी।

बंगालियों के जीवन की इस दुर्योग रात्रि में और भी न जाने क्या-क्या हुआ था। किसी ने साँप की तरह डँसा था तो किसी ने पशुराज सिंह की तरह हाथ में आया शिकार भी छोड़ दिया था।

इन्द्राणी के अदृष्ट में तो ऐसा कोई विपर्यय नहीं घटा?

सोच नहीं पाता तरुण।

# बीस

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसे चरम मुहूर्त्त आते हैं, जिनके हर क्षण का एक अर्थ, एक तात्पर्य, एक महत्त्व होता है।

तरुण के जीवन में आज फिर ऐसा मुहूर्त्त उपस्थित था।

इससे पहले भी ऐसे मुहूर्त्त आये थे। परीक्षा हाल में प्रश्न-पत्र मिलने से पहले, रिजल्ट निकलने के दिन, फॉरेन सर्विस का इन्टरव्यू देते समय हृदय की हर धड़कन साफ सुनाई दी थी। और ढाका के उन अंतिम दिनों में ? पर आज तो जैसे सुप्रीम कोर्ट की फुल बेंच का फैसला सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था। इसके बाद तो जैसे और कोई गति ही न थी।

देसाई की चिट्ठी मिलने के अगले दिन ही दिल्ली से एक मैसेज मिला था तरुण को। देसाई ने जो खबर दी थी, वही खबर पाक पर-राष्ट्र मन्त्रालय ने दिल्ली भेजी थी और उसी की कॉपी दिल्ली से तरुण को मिली थी।

समय जैसे बीतना ही नहीं चाहता, हृदय की धड़कनें और तेज़ी से सुनाई देने लगी हैं उसे आजकल। यह भी एक विचित्र अनुभूति है। जाने क्या-क्या सोचता रहता है चौबीसों घंटे। इधर-उधर की हजारों चिन्ताएँ मन को परेशान कर डालती हैं। बहुत सी लड़कियों को शुरू में आश्रय देकर बाद को लाहौर की अनारकली की अँधेरी गलियों में भेज दिया गया था। वहाँ उन्हें नाच-गाना सिखाया गया, बलूचिस्तान की निष्प्राण मरुभूमि के हृदयहीन लोगों को लुभाना सिखाया गया। इन्द्राणी के अदृष्ट में भी अगर....।

सिर चक्कर खा जाता है तरुण का। सारा शरीर पसीने से भीग उठता है। हृदय की धड़कन तेज होकर जैसे अचानक रुक जाती है।

प्रियजनों के संबंध में किसी अनिश्चयता की सम्भावना दिखाई देते

ही दुनिया भर की बुरी चिन्ताएँ मन को सताने लगती हैं।

और सताएँ कैसे ना ? क्या नहीं हुआ उन दिनों में ? स्वस्थ स्वाभाविक मनुष्य भी रातोंरात अस्वाभाविक बन गये थे। स्नायु जैसे सितार के तारों की तरह झंकृत हो उठे थे। सुप्त पशु-प्रवृत्तियों का ही राज्य हो गया था। अपने आदिम युग के अंधकार में पहुँच गया था मनुष्य।

ऐसे लोगों के हाथों से क्या इन्द्राणी बच पाई थी ? लाहौर, पेशावर, रावलपिंडी के किसी हरम में तो उसे जगह नहीं मिली थी ?

शायद मिली हो और यह भी हो सकता है कि न मिली हो। बंगालियों के जीवन की उस चरम अंधकारपूर्ण रात्रि में कुछ महाप्राण व्यक्ति ऐसे भी थे जिन्होंने अपने जीने-मरने की परवाह न करके असहाय शिशुओं को आश्रय दिया था, विपद्ग्रस्त युवतियों के सम्मान की रक्षा की थी, निःसम्बल स्त्रियों को जीवनदान दिया था। बहुत से छात्र, अध्यापक, प्रगतिशील युवकों ने अपना जीवन दाँव पर लगा दिया था। पूर्व बंगाल के ऐसे महान, महाप्राण, मध्यवित्त मुसलमान परिवारों में बहुत सी हिन्दू लड़कियों को सन्तानवत् स्नेह मिला है, बहनों की तरह प्यार व माँ जैसा सम्मान मिला है।

इन्द्राणी को क्या ऐसे ही किसी परिवार में आश्रय मिला है ?

ढाका के कितने ही मुसलमान परिवारों के साथ उनकी मैत्री थी, प्यार-प्रीति का संबंध था। ईद के दिन जाने कितने घरों में जाकर मिठाई खाया करती थी वह। इन्द्राणी को देखकर क्या उनमें से किसी का मन नहीं रोया ? क्या किसी ने उसे गोद में उठाकर उसकी आँख के आँसू नहीं पोंछे ?

जरूर किया होगा।

सोचते-सोचते तरुण जैसे पागल हो उठता है। ढाका से किसी चिट्ठी, कराँची से हबीब की किसी खबर के आने की हर क्षण उत्सुकता से प्रतीक्षा करता रहता है।

उस दिन शाम को अचानक ख्याल आया कि वन्दना की दो-दो चिट्ठियाँ आ गई थीं, पर उसने अभी तक जवाब नहीं दिया था। इन्द्राणी की चिन्ता में और किसी के बारे में सोचने का मौका ही नहीं मिला। वन्दना के बारे में भी नहीं ?

नहीं।

यद्यपि अपार्टमेन्ट में अकेला बैठा था; पर तब भी ऐसा लगा जैसे सब लोगों को पता चल गया है कि वह वन्दना को भूल गया है।

छिः छिः।

खुद ही अपने को धिक्कार उठा तरुण। और कुछ न सही; लेकिन अपने प्रमोशन की, लंदन ट्रांसफर होने की खबर तो उसे देनी ही चाहिये थी। और देसाई की चिट्ठी के बारे में नहीं लिखना चाहिये था क्या भला?

और देर नहीं की उसने। सब लिख दिया वन्दना को, सब कुछ बता दिया। अंत में लिखा, पता नहीं क्या-क्या लिख गया हूँ। मन की इस समय जो अवस्था है उसमें कुछ पता नहीं क्या कर रहा हूँ। बड़ा भाई होकर छोटी बहन को यह सब लिखना उचित था या नहीं, यह भी नहीं समझ पा रहा हूँ। यह सोचने-विचारने लायक मानसिक अवस्था मेरी नहीं है। पर बहन, तुम्हारे अलावा और कौन है जिसे यह सब लिख सकूँ? तुम केवल मेरी बहन नहीं; माँ, मित्र सभी कुछ तो हो।

आगे लिखा, लगता है तुम्हारे पास पहुँचने के बाद ही विधाता मुझे अन्तिम निर्णय सुनायेंगे। शायद मेरे साथ तुम लोगों को भी भाग्य का कुछ दुर्भोग भोगना बदा है। यदि सचमुच ही कोई बुरी खबर मिली तो फिर अपने दादा को ढूंढ़े भी नहीं पाओगी। तुम लोगों की आँखों के दो बूँद आँसुओं से ही मेरी आत्मा को शान्ति मिल जायेगी। इससे अधिक कुछ करने पर ऋण का बोझ वहन नहीं कर पाऊँगा मैं।

वन्दना का जवाब लौटती डाक से आ गया। लम्बी चिट्ठी के अन्त में उसने लिखा, दादा, तुम्हारा किसी भी तरह का अकल्याण हो ही नहीं सकता। और किसी को भले ही न पता हो पर मुझे मालूम है कि तुम किस धातु के बने हो, कितने औदार्य से भरे हो। मेरे जैसी निराश्रय असहाय लड़की का जिसने चरम सर्वनाश से उद्धार किया हो उसका रंचमात्र भी अकल्याण करने का साहस तो भगवान में भी नहीं हो सकता।

सबसे अंत में नीचे लिखा था, बस एक अनुरोध है तुमसे! रक्खोगे? तुम जैसे भी हो अपना दिल्ली जाना रुकवा दो। मेरा मन कहता है कि इस समय तुम्हारा मेरे पास रहना ही उचित है। जितनी जल्दी हो सके,

यहाँ चले आओ ।

टंडन साहव भी यही सोच रहे थे। तरुण की मानसिक अवस्था देखकर उसका दिल्ली जाना ठीक नहीं समझ रहे थे वह। इसी बीच एक दिन टेलीफोन पर बात करते हुए ऐम्वैसेडर से इस वारे में भी जिक्र करते हुए उन्होंने कहा था, 'सर, इन दिनों वह ऐसी टेन्शन में है कि दिल्ली अगर न जाये तो अच्छा है।'

'आई डू रियलाइज़ दैट।'

'आप अगर कुछ कर सकें तो.....'

'जरूर-जरूर।'

महत्त्वपूर्ण डिप्लोमैट्स का ट्रांसफर होने पर उन्हें दिल्ली वुलाकर वहुत से विषयों में ब्रीफिंग किया जाता है। इसकी आवश्यकता भी होती है और महत्त्व भी। लेकिन दो-चार दिनों की ब्रीफिंग के लिये जाने का सरकारी अर्थ दो-एक महीने का भारत-भ्रमण एवं आत्मीय स्वजनों से मिलना ही चलताऊ रिवाज है। इसमें कोई आपत्ति नहीं उठाता। क्योंकि आपत्ति उठाने वाले स्वयं इस सुयोग से वंचित नहीं होना चाहते।

ऐम्वैसेडर ने दिल्ली से इस संवंध में वात अवश्य की होंगी, तभी तो ट्रांसफर आर्डर की प्रचलित रीति का व्यतिक्रम दिखाई दिया—ऐज़ सून ऐज़ ही कम्प्लीट्स हिज़ राउंड आफ ब्रीफिंग हियर ही शुड प्रोसीड टु लंडन टु जॉयन हिज़ न्यू पोस्ट। अर्थात् ब्रीफिंग खत्म होते ही लंदन चले जाओ।

इसके वाद एक दिन ऐम्वैसेडर ने स्वयं ही तरुण को टेलीफोन किया 'दिल्ली में तुम्हें कितने दिन लगेंगे ?'

'तीन-चार दिन। वहुत हुआ तो एक हफ्ता।'

'उसके वाद क्या तुम वहाँ घूमो-फिरोगे ?'

'नहीं सर' ऐसा कोई प्लान नहीं है।'

'तो फिर तुम मेरा एक उपकार करोगे ?'

'अवश्य सर। यह भी कोई पूछने की वात हैं ? हुकुम करिये।'

'मेरी छोटी लड़की यमुना को तो पहचानते हो ?'

'वहुत अच्छी तरह सर।'

यमुना ऐम्वैसेडर के छोटे भाई के पास रहकर वम्वई यूनिवर्सिटी

में पढ़ रही थी। उसे लंडन स्कूल आफ इकॉनॉमिक्स में प्रवेश दिलाने की कोशिश चल रही थी, यह भी तरुण जानता था।

ऐम्बैसेडर ने आगे कहा, 'पिछले महीने मेरे छोटे भाई की बदली मद्रास हो गई है। वह तो चला गया है पर अभी उसके बच्चे बम्बई ही हैं। यमुना का ऐडमिशन फाइनल हो गया है पर आने से पहले मेरे बूढ़े सास-ससुर उसे देखना चाहते हैं।'

'सर वह लोग तो दिल्ली में ही रहते हैं ?'

'हाँ। यही कह रहा था कि तुम जाते समय अगर बम्बई होकर चले जाते तो····'

'क्यों नहीं ? अवश्य सर।'

'और लौटते समय यमुना को साथ लेकर यहाँ चले आने से····'

'आप चिन्ता मत करिये सर ! सब हो जायेगा।'

सारी बात तय हो जाने पर ऐम्बैसेडर ने यमुना को चिट्ठी लिख दी कि तुम तरुण अंकल के साथ दिल्ली चली जाना और वहाँ से उन्हीं के साथ यहाँ चली आना।

तरुण ने वन्दना को लिखा कि दिल्ली तो उसे जरूर जाना पड़ेगा पर केवल एक हफ्ते के लिये। इसके बाद दो-चार दिन यहाँ ठहरकर लंदन चला आऊँगा। केन्सिंगटन गार्डेन में अपार्टमेंट मिलेगा। रंगस्वामी के साथ सम्पर्क स्थापित करके विकास अपार्टमेंट ठीक करा दे।

आजकल असह्य अशांति पहले की तरह नहीं सता रही थी तरुण को। इस ट्रांसफर आर्डर के कारण कुछ दिन तो व्यस्तता में कट गये। पर फिर वही दुश्चिंता ! दिन तो फिर भी ऑफिस में निकल जाता। लेकिन जैसे ही हंसा क्वार्टर के अपने निर्जन अपार्टमेंट में पहुँचता, अजीब अजीब चिन्ताएँ आकर मन में भीड़ लगानी शुरू कर देतीं। ढाका के पुराने दिन, पुरानी बातें याद आने लगतीं।

और फिर सिर घूम जाता, बदन के रोएँ खड़े हो जाते।

इसी बीच हबीब की एक चिट्ठी आई थी कि फॉरेन सेक्रेटरी स्वयं केस डील कर रहे हैं तथा मेरे चाचा ने बताया है कि आगामी कुछ सप्ताहों में पूरी जानकारी मिल जायेगी।

अच्छी खबर है। पर इससे क्या मन भरता है ? दुश्चिंता जाती है ?

इसके दूसरे ही दिन देसाई की चिट्ठी आई।···डी० आइ० जी० की

रिपोर्ट की प्रतिलिपि हमें आज ही मिली है। लम्बी रिपोर्ट है। उसे आज ही डिप्लोमेटिक वैग से दिल्ली भेजना था इसलिये कापी करके नहीं भेज सका। पर उसकी मेन समरी में कहा गया है कि लेट वीरेन्द्र-नाथ गुह की कन्या कुमारी इन्द्राणी गुह ने माडर्न हिस्ट्री में एम० ए० करने के लिये ढाका यूनिवर्सिटी में एडमिशन लिया, लेकिन सिक्स्थ इयर में पहुँचने के वाद ही उसने पढ़ना छोड़ दिया।....

एम० ए० क्लास में भर्ती होने के लिये इन्द्राणी का आवेदन पत्र ढूँढ़ने पर मिला नहीं। परन्तु यूनिवर्सिटी के ऐडमिशन रजिस्टर में वहुत से महत्त्वपूर्ण तथ्य मिले हैं।....

देसाई की चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते उत्तेजित हो उठा तरुण। क्या खवर मिली?

....पहली बात पता चली कि उसके पिता जीवित नहीं थे। दूसरी बात वह अविवाहित थी।....

अविवाहित ? तरुण को जैसे प्रकाश की किरण दिखाई दी।

....तीसरी बात उसके अभिभावक का नाम अजीजुल इस्लाम, प्लीडर लिखा हुआ है।...

अजीजुल इस्लाम ? अतीत की स्मृतियों के पन्ने जल्दी-जल्दी पलटना शुरू करता है तरुण। चिट्ठी वीच में ही छोड़कर मन ही मन वार-वार दुहराता है....

अलीजुल इसलाम....अजीजुल इस्लाम !

....रिलेशनशिप विथ द गार्जियन के खाने में अंकल लिखा हुआ है।...

नीचे का ओठ जोर से काट लिया तरुण ने। ओटों ही में वुदवुदाया, अंकल ? तो क्या इन्द्राणी को कोई आश्रय मिल गया था ?

....बार लायब्रेरी में जाँच-पड़ताल करने पर पता चला है कि मिस्टर अजीजुल इसलाम की हार्ट अटैक से मृत्यु हो गई। लेकिन उनकी मृत्यु का ठीक समय पता नहीं चल सका। मिस गुह ने एक साल एम० ए० पढ़कर आगे पढ़ना क्यों छोड़ दिया ? यह भी मालूम नहीं हो सका। पहले तो यही संदेह हुआ कि शायद विवाह...

मन काँप उठा तरुण का। विवाह ? तो क्या अंत में....।

चिट्ठी हाथ में पकड़े उदास दृष्टि से वाहर की ओर ताकता रहा। मानों अपना अस्तित्व ही भूल गया हो। काफी देर वाद फिर से पढ़ना शुरू किया।

···विवाह हो गया हो। लेकिन अनुसंधान करने पर पता चला है कि ठीक उसी समय मिस गुह के नाम एक इन्टरनेशनल पासपोर्ट इश्यू किया गया। किस कारण से वह किस देश को गई उसकी छानबीन की जा रही है। अजीजुल इस्लाम साहव की मृत्यु के बाद उनके एकमात्र लड़के ने ढाका का मकान बेच दिया और कुछ ही दिनों के अन्दर पाकिस्तान फॉरेन सर्विस ज्वाइन कर ली। मिस गुह भी उन्हीं के साथ विदेश गई कि नहीं, इसका कोई रिकार्ड ढाका एयरपोर्ट या इमिग्रेशन अथवा पुलिस के पास नहीं है। कराची में छानबीन करने से इन सब बातों के बारे में पूरी जानकारी मिल सकती है।

चिट्ठी के अंत में देसाई ने लिखा था, लगता है ढाका में और विशेष कुछ करणीय नहीं है। तव भी यदि कुछ करने वाला हो तो लिखने में संकोच मत करियेगा। इसके अलावा डी० आई० जी० की पूरी रिपोर्ट पढ़कर देख लीजियेगा ! ढाका के बहुत से व्यक्तियों का मन्तव्य एवं रेफरेंस है उसमें और हो सकता है कइयों को आप पहचानते हों।

डी० आई० जी० की रिपोर्ट का मूल वक्तव्य पढ़कर नये-नये सन्देहों के मेघ जमने लगे तरुण के मन में। पर तव भी काफी हद तक आश्वस्त हुआ वह । मन ही मन देसाई के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। तार से धन्यवाद भेजा, काइंडली ऐक्सेप्ट सिन्सियरेस्ट थैंक्स।

लेकिन कौन थे यह अजीजुल इस्लाम ? प्लीडर ? तरुण के पिताजी भी तो वकालत करते थे। वहुत से वकीलों से परिचय था उनका भी, पर अजीजुल इस्लाम ?

नहीं।

उयाड़ी के उधर हवीवुर इस्लाम नाम के एक वकील थे। और भी कोई इस्लाम नाम के वकील थे ?

वहुत देर सोचता रहा। अचानक याद आया ओवेदुर इस्लाम साहव तो उसके पिताजी के पास कभी-कभी आया करते थे।

पर अजीजुल इस्लाम नाम के किसी वकील की याद कैसे भी नहीं आई। आस-पास ढाका का कोई आदमी भी नहीं था जिससे पूछ-ताछ कर लेता। वर्लिन में वंगाली नहीं के वरावर थे। लंदन-न्यूयार्क में तो ढाका के कितने ही लोग मिल जाते। ऐसी खराव जगह है यह वर्लिन भी कि पूछो मत।

दूसरी जगह तो पाकिस्तान मिशन में ढाका के बहुत से लोग मिल जाते हैं। यहाँ वह भी नहीं है।

अजीजुल इस्लाम की चिन्ता में मग्न रहते-रहते ही दिल्ली जाने का दिन आ पहुँचा।

प्लेन में बैठा-बैठा भी बस एक ही धुन थी मन में—कौन थे यह अजीजुल इस्लाम ! तेहरान एयरपोर्ट के लाउंज में बैठा सिगरेट पीते-पीते भी दिमाग के घोड़े उसी दिशा में दौड़ा रहा था। सोचते-सोचते अचानक बाल्य-बंधु मैनुल इस्लाम का ध्यान आया ! हाँ, उसी के पिता का नाम तो था अजीजुल इस्लाम !

किन्तु ?

किन्तु वह तो मुन्सिफ थे, वकील नहीं। कहीं डी० आई० जी० ने भूल से मुन्सिफ को वकील तो नहीं लिख दिया ?

क्या मैनुल के परिवार में ही इन्द्राणी को शरण मिली थी ? मैनुल की माँ को तरुण भी अम्माजान कहकर बुलाया करता था। भद्रमहिला के बाल सन जैसे सफेद हो गये थे। बड़े अच्छे लगते थे देखने में। कितना सताया करते थे वह लोग अम्माजान को।

× × ×

बहुत दिन बाद शान्ताक्रुज़ एयरपोर्ट पर उतरा तो मन को बड़ा अच्छा लगा। कुछ भी हो, आखिर तो भारतवर्ष था ! अपना देश ! लम्बे अरसे तक विदेशों में घूमकर अपने देश लौटने पर सभी को अच्छा लगता है।

केबिन के अन्यान्य यात्रियों के चले जाने पर धीरे-धीरे तरुण उठा। ऊपर के रैक से ओवरकोट उठाया। दूसरे हाथ में ब्रीफकेस पकड़ा।

गैंग-वे के द्वार पर खड़ी एयर होस्टेस ने सारी रात जागने की थकान के बावजूद मुँह पर मुस्कुराहट लाकर कहा—'गुडबाई सर !'

'बाई।' अन्यमनस्क भाव से उत्तर दिया तरुण ने।

यमुना आई थी एयरपोर्ट पर।

कस्टम्स एन्क्लोजर के बाहर ही खड़ी थी वह, पर तरुण पहचान नहीं पाया। पहचानता भी कैसे ? वह छोटी-सी यमुना अब इतनी बड़ी हो गई होगी, यह तो उसने सोचा ही नहीं था।

यमुना ने ही दौड़ते हुए आकर कहा, 'अंकल, आई ऐम हियर।'

'तुम यमुना हो ?'

हँसते हुए यमुना ने पूछा, 'क्यों, सन्देह हो रहा है ?'

'नहीं। पर तुम कितनी बड़ी हो गई हो !'

जिन युवक-युवतियों को बचपन में खेलते-कूदते देखा हो, आइसक्रीम व चाकलेट के लिये लड़ते-झगड़ते देखा हो, बहुत अरसे के बाद उन्हें अचानक बड़े होने पर देखो तो बड़ा अच्छा लगता है। एक पुराना छोटा सा सपना जैसे साकार हो उठा हो, नन्ही सी कली फूल बन गई हो।

यमुना को देखकर तरुण के मुख पर सन्तुष्टि की, तृप्ति की आभा मुखरित हो गई।

'कितनी छोटी थी तुम, जब तुम्हें देखा था।'

'नहीं अंकल, आइ वाज़ नॉट ए किडी व्हेन यू सॉ मी लास्ट। आठवीं क्लास में पढ़ती थी उस समय मैं।'

केवल दोपहर बम्बई में बिता कर आफ्टरनून की फ्लाइट से तरुण यमुना को साथ लेकर दिल्ली आ गया। पालम से सीधा पूसा रोड यमुना के नाना के घर गया। नातनी को देखकर बूढ़े नाना-नानी खुशी से फूल उठे। धन्यवाद देते हुए तरुण से वहीं रहने के लिये बार-बार अनुरोध करने लगे।

'देखिये, आप लोग इतना अनुरोध मत करिये। आइ ऐम कमिटेड टु स्टे विथ ए फ्रेंड ऑफ माइन।'

बिदा लेने से पहले यमुना से बोला, 'नाना-नानी को बहुत ज्यादा तंग मत करना। जरूरत हो तो मुझे टेलीफोन कर देना।'

और यह कहकर तरुण बड़ुआ के यहाँ चल दिया। पहले ही काफी देर हो गई थी।

बहुत पुराना मित्र है बड़ुआ। बर्लिन में ही उसके एक्सीडेंट की खबर सुनी थी। बस, उत्कंठा प्रकट करते हुए चिट्ठी भर लिखने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाया था वह।

लान में गार्डेन चेयर पर बैठा तरुण की ही प्रतीक्षा कर रहा था बड़ुआ। टैक्सी के गेट पर रुकते ही चिल्लाकर बोला, 'रानी, आ गया।'

दौड़ते हुए अन्दर से आकर रानी बोली, 'माई गॉड ! इतनी देर कर दी ?'

'इतनी देर कहाँ ? यमुना को छोड़कर सीधा तो चला आ रहा हूँ।'

जल्दी से दौड़कर तरुण बड़ुआ से लिपट गया और बोला, 'अब कैसे हो ?'

'थोड़ा बहुत चल-फिर लेता हूँ।'

रानी बोली, 'इन्होंने तो एयरपोर्ट जाने की जिद पकड़ ली थी ···'

'जाने तो नहीं दिया ना ?' तरुण ने पूछा।

'मेरी बात कौन सुनता है ? बट डॉक्टर स्टॉप्ड हिम गोइंग।'

'पम्पी कहाँ है ?'

'एक्सकर्शन को गई है, तीन-चार दिन में लौट आयेगी। बड़ुआ ने जवाब दिया।

रात को डिनर के बाद बहुत देर तक बैठे बातें करते रहे तीनों। कल्हण, मिश्र, टंडन, हबीब, देसाई—जाने किस-किस की बातें !

कुछ देर बाद बड़ुआ बोला, 'इस समय तो तुम्हीं सबसे अधिक वाइडली डिस्कस्ड डिप्लोमेट हो।'

'इसका मतलब ?'

'सच दादा, सारी मिनिस्ट्री जैसे आपको लेकर पागल हो गई है।' बीच में रानी ने अपना मन्तव्य प्रकट किया।

बड़ुआ बोला, 'हैट्स आफ टु इन्द्राणी ! एक बंगाली लड़की ने दो-दो गवर्नमेन्टों को नचा दिया।'

'ह्वाट डू यू मीन ?'

'अब ह्वाट डू यू मीन का वक्त नहीं है। गेट रेडी फॉर ए ग्रेट सेलिब्रेशन।'

इतना आशावादी कैसे हो सकता है तरुण ! 'बोला, डोन्ट बी ओवर आप्टिमिस्टिक।'

दाहिना पाँव धीरे-धीरे उठाकर एक मूढ़े कर रखता हुआ बड़ुआ बोला, 'तरुण, आई नो पाकिस्तान बेटर दैन यू।'

'यह तो ठीक है।'

'इन्द्राणी के बारे में यदि कोई बुरी खबर होती तो पाकिस्तान इतने झमेले में पड़ता ही नहीं···'

उत्सुक होकर तरुण ने पूछा—'इसका मतलब ?'

'इफ इट वाज़ ए होपलेस केस, तो वह सीधे कह देता कि इंडिया

चली गई । दैन द बॉल वुड हैव बीन इन आवर कोर्ट ।'

'बहुत से कारणों से वह लोग इन्द्राणी के केस में इन्टरेस्ट ले रहे हैं, लेकिन...'

'यू हैव नो आइडिया हाउ स्विफ्टली दे कैन ऐक्ट इन सम केसेस ।'

'उससे क्या हुआ ?'

'मुझे लगता है कि उन लोगों को इन्द्राणी के बारे में पूरी जानकारी मिल गई है और अब वह लोग धीरे-धीरे हमें पूरी खबर देंगे ।'

'उससे क्या लाभ होगा ?'

'वह यह दिखायेंगे कि हमारे एक डिप्लोमेट के लिये उन्होंने कितना किया ।'

'डू यू थिंक सो ?'

'सौ बार क्या हजार बार ।'

दूसरे दिन सुबह जब तरुण साउथ ब्लाक में मिनिस्ट्री में गया तो वहाँ भी पाकिस्तान डेस्क के कई लोगों ने यही बात कही ।

वेस्टर्न यूरोपियन डेस्क पर अपने काम को लेकर व्यस्त होने के बावजूद उसे कई कारणों से पाकिस्तान डेस्क पर जाना पड़ता था । बहुत से महत्त्वपूर्ण विषयों पर जॉयेन्ट डिस्कशन भी होता था ।

एक दिन ऐसे ही एक डिस्कशन में जॉयेन्ट सेक्रेटरी ने कहा, 'इन्द्राणी के मिलते ही अपनी बोनाफाइडी प्रमाणित करने के लिये पाकिस्तान जरूर जोरशोर से प्रोपेगंडा शुरू करेगा ।'

और ऐसी सम्भावना को उपस्थित अफसरों में से कोई भी अस्वीकार नहीं कर पाया ।

उन लोगों की बातचीत से तरुण को थोड़ा आश्चर्य भी हुआ । मिनिस्ट्री के सब लोगों को यह विश्वास हो गया था कि इन्द्रानी मिल ही जायेगी ।

लेकिन ?

तरुण के मन में तो अनेकों प्रश्न, अनेकों संशय हैं । इन्द्राणी के मिलने के बाद भी क्या उसे ग्रहण करना संभव होगा ? तरुण के ग्रहण करना चाहते हुए भी अगर उसके लिये यह असंभव हुआ तो ?

जॉयेन्ट सेक्रेटरी की तो बात ही अलग है, यह बातें तो और किसी से भी नहीं कही जा सकती । न किसी को बताई जा सकती हैं, न सम-

झाई जा सकती हैं। बस, चुपचाप उन लोगों की बातें सुनता रहता है वह, मुँह से एक शब्द नहीं बोलता।

मन में नाना शंकाओं, संदेहों, दुविधाओं के होते हुए भी तरुण का मन दिल्ली आकर जैसे जड़तामुक्त हो गया, आश्वस्त हो गया।

कैसे नहीं होता? कुछ भी हो कितने आदमी इन्द्राणी को ढूंढ़ने के लिये तत्परता से काम कर रहे थे। कम से कम कुछ न कर सकने का मलाल तो नहीं रहेगा मन में। बहुत दिनों तक बहुत से लोगों की सेवा-शुश्रूषा के उपरांत भी यदि कोई रोगी रोगमुक्त नहीं होता, पृथ्वी का मोह त्याग कर चला जाता है, तब भी मन को थोड़ी सान्त्वना रहती है। उसी प्रकार इतने लोगों के इतने दिनों के प्रयत्नों के बाद भी अगर इन्द्राणी....

नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। दलील देकर दूसरे को तो समझाया जा सकता है, सांत्वना दी जा सकती है। पर जब अपने ऊपर पड़े तो नैव च-नैव च।

इसी बीच कराची से एक मैसेज और आया दिल्ली।... 'वी हैव चेक्ड अप ऑवर रेकार्ड्स ....। पासपोर्ट तथा इमिग्रेशन डिपार्टमेन्ट में छानबीन से पता चला है कि आज तक मैनुल इस्लाम नाम के सात व्यक्तियों को पासपोर्ट इश्यू किया गया है और उनमें से पाँच विदेश गये हैं। मैनुल इस्लाम नाम के दो व्यक्ति पाकिस्तान फॉरेन सर्विस में हैं जिनमें से एक ऐडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस का है पर आजकल फॉरेन सर्विस में काम कर रहा है। वी आर कॉन्टेक्टिंग ऑल ऑफ देम।...'

इसी मैसेज के साथ एक और खबर थी।...'मिस गुह के पासपोर्ट के रिकार्ड से पता चला है कि उनके पाँव के तलवे में स्टिच करने का चिह्न है। काइंडली चेक आप विथ मिस्टर मित्र और जल्दी से उत्तर दीजिये कि यह ठीक है या नहीं।'

डिसाइफर होकर मैसेज कोई शाम के समय पाकिस्तान डेस्क पर आया था। मैसेज मिलने के साथ-साथ डिप्टी सेक्रेटरी ने मिनिस्ट्री में तरुण को ढुंढ़वाया पर वह मिला नहीं। वहाँ न मिलने पर उन्होंने बड़ुआ के घर फोन किया।

'तरुण, हियर इज़ ऐन अर्जेन्ट मैसेज़ फ्रांम करांची और आज रात को ही जवाब देना है।'

करॉंची से अर्जेन्ट मैसेज की बात सुनते ही तरुण अस्थिर हो उठा। शिरा-उपशिराओं में रक्त का प्रवाह तीव्र हो गया। लेकिन जबरन मनोभावों को दबाये रहा। डिप्टी सेक्रेटरी के पूछने पर बताया, 'हाँ उसके दाहिने पाँव में स्टिच करने का चिह्न था।'

'थैंक यू वेरी मच।'

'नॉट ऐट आल। वरन् थैंक्स तो मुझे आपको देना चाहिये कि आपने मुझे फोन करने की तकलीफ की।'

मैसेज सुनने के बाद फिर पुराने दिनों की याद ताजा हो आई। तस्वीर की तरह सारे दृश्य आँखों के सामने जैसे स्पष्ट होने लगे।

उन दिनों वह दसवीं क्लास में पढ़ती थी। नई-नई साड़ी पहननी सीखी थी। ब्लेड से पाँव के नाखून काटते-काटते हठात् हवा से साड़ी का पल्ला उड़कर शायद सामने की ओर आ गया था। एक झटके से पल्ला हटाया ही था कि ब्लेड तलवे को चीरता चला गया था। ओफ! कितना खून निकला था। पाँच कि छह टाँके लगाने पड़े थे।

बिस्तर पर थी उन दिनों इन्द्राणी। चलना-फिरना बिल्कुल बंद था। एक दिन तरुण ने कहा था, 'तुम्हें साड़ी पहनने की क्या जरूरत है भला?'

'अब यह बात तुम्हें समझानी पड़ेगी?' पलट कर प्रश्न किया था इन्द्राणी ने।

'मुझे नहीं तो किसे समझाओगी?'

'तुम्हें कभी यह सब समझना नहीं पड़ेगा।'

इतने दिन बाद आज फिर सारी बातें याद आ गईं तरुण को। विरक्ति से भर उठा मन!

उसकी ओर देखकर रानी ने बड़ुआ को इशारा किया।

'किसका फोन था?' बड़ुआ ने पूछा।

'डी-एस (पाकिस्तान)।'

'आइडेन्टिफिकेशन मार्क वैरीफाई कर रहे थे शायद?'

'हाँ।'

'हँस पड़ा बड़ुआ। और जैसे खुद से ही बोला, 'पाकिस्तानियों का ढंग देखकर हँसी आती है।'

'मतलब?'

'सारी खबर जान लेने के बाद भी इन बहानेबाजियों का भला क्या अर्थ ?'

कुछ क्षण चुप रहकर मुस्कुराते हुए बड़ुआ फिर बोला, 'ब्रदर, गेट रेडी। केवल प्रॉविडेन्ट फंड से कुछ हजार रुपये एडवांस लेकर काम नहीं चलेगा। और भी निकालना पड़ेगा। नहीं तो कोई छोड़ेगा नहीं तुम्हें।'

सिर्फ बड़ुआ या रानी ने नहीं, मिनिस्ट्री के और लोगों ने भी तरुण से कहा था, 'तरुण हम लोगों को धोखा देने की कोशिश मत करना, देखो।'

'नहीं, नहीं, धोखा क्यों दूँगा ?'

'डोंट प्रॉमिस लाइक ए प्रॉमिसिंग डिप्लोमेट।'

केवल अफसरों ने ही नहीं, मिनिस्ट्री के अन्य विभागों के बहुत से परिचित कर्मचारियों ने भी कहा था, 'दादा, आपका काम है इसलिये हम इतनी मेहनत कर रहे हैं।'

'थैंक यू।'

'खाली थैंक यू से काम नहीं चलेगा, दादा।'

सबके मुँह पर वही एक बात ! सुनने में बड़ी अच्छी लगती।

कामकाज निपटाते-निपटाते दिन कैसे निकल गये, पता ही नहीं चला। यमुना को देखने भी नहीं जा सका। बस, दो दिन रह गये दिल्ली छोड़ने में। उस दिन मिनिस्ट्री से ही यमुना को फोन किया कि शाम को तैयार रहे, वह आकर ले जायेगा।

लंच के समय रानी से बोला, 'आज शाम को यमुना को ले आऊँगा। थोड़ा घुमा-फिराकर डिनर खिलाकर छोड़ आऊँगा।'

'ठीक है।' रानी ने कहा।

'मैं तुम लोगों की गाड़ी छोड़े जा रहा हूँ। तुम पम्पी को लाने के बाद ऑफिस चली आना। वहाँ से दोनों साथ यमुना को लेने चलेंगे।'

रानी किसी भी तरह गाड़ी रखने को तैयार नहीं हुई। बड़ुआ ने भी मना करते हुए कहा, 'नहीं, नहीं, तुम गाड़ी ले जाओ। यमुना को लेने जाओ तब यहाँ से रानी को लेते जाना या वह टैक्सी से साउथ ब्लाक पहुँच जायेगी।'

वह दिन यमुना के साथ और अगला दिन मिनिस्ट्री में सबसे विदा

लेने में निकल गया। फॉरेन सेक्रेटरी से भी मिला। उस रात बड़ुआ व रानी ने तरुण के ऑनर में बड़ा भारी डिनर दिया।

दिल्ली छोड़ते समय बड़ा बुरा लग रहा था तरुण के मन को। इतने मित्रों, शुभाकांक्षियों, सहकर्मियों को छोड़कर जाने में बड़ा दुःख हो रहा था। इसके अलावा इन कुछ दिनों में ही उसने अंतर से अनुभव किया था कि वह लोग इसे कितना चाहते हैं।

बड़ुआ तक एयरपोर्ट उसे छोड़ने आया था। बहुत मना किया पर किसी तरह नहीं माना। तर्क देते हुए बोला था, 'मैं तो ड्राइव नहीं कर रहा, रानी करेगी, फिर मेरे चलने में क्या आपत्ति है?'

भावावेश में तरुण ने बड़ुआ के दोनों हाथ पकड़ लिये। पम्पी को स्नेह से हृदय से लगाया और रानी के सिर पर हाथ फेरकर इतना कहा, 'अच्छा चल दिया। चिट्ठी लिखना।'

सबकी आँखें छलछला आई थीं। भावावेग के कारण किसी के मुँह से बात नहीं निकल रही थी।

पास खड़ी यमुना चुपचाप सब देख रही थी। पालम छोड़कर प्लेन के काफी दूर चले आने पर भी तरुण उदास दृष्टि से बाहर आकाश की ओर देख रहा था। केबिन होस्टेस ने कॉफी का कप लाकर दिया तो दीर्घश्वास छोड़कर दृष्टि अन्दर ले आया।

यमुना बोली, 'आप उन लोगों को बहुत चाहते हैं न? क्यों?

सिर हिलाकर तरुण बोला, 'नहीं, वही लोग मुझे इतना अधिक चाहते हैं।'

कॉफी खत्म करके यमुना ने पूछा, 'अंकल, आप तो लंदन ट्रांसफर हो रहे हैं न?'

'हाँ।'

'तो मैं वीक एंड पर आपके पास चली आया करूँगी।'

'तुम्हारे आने से तो मैं खुश होऊँगा।'

'पर आप ज़रा पिताजी से कह दीजियेगा।'

हँसकर तरुण बोला, 'कह दूँगा।'

पम्पी, यमुना की तरह मित्रों व सहकर्मियों के बच्चों के समीप होते

ही तरुण के मन में न जाने कितनी बातें आती हैं, कितने स्वप्न जागने लगते हैं। इन्द्राणी मिली होती तो उसके बच्चे भी बड़े हो गये होते, लिखते-पढ़ते होते। सोचता है, इन्द्राणी की लड़की होती तो वह भी यमुना, पम्पी जैसी सुन्दर होती, बुद्धिमती होती।

स्वप्न देखते-देखते मन सीमाहीन अंधकारपूर्ण भविष्य की ओर उड़ गया। प्लेन तेहरान की ओर भागा जा रहा था। फ्रैंकफर्ट से पहले बस यही एक स्टॉपेज था।

वह तेहरान भी निकल गया। और भी कितने देश-देशांतर पीछे छूट गये।

फ्रैंकफर्ट पर ऐम्बैसेडर सपत्नीक यमुना को लेने आये थे। दोनों ने बार-बार धन्यवाद दिया तरुण को।

'यह कहकर क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं सर! दिल्ली में ऐसा फँसा रहा कि यमुना को घुमा-फिरा भी नहीं सका।'

अचानक बीच में ही यमुना बोल उठी, 'बट अंकल, दैट डे वी ऑल एन्जॉयेड वेरी मच।'

हँसते हुए ऐम्बैसेडर बोले, 'तरुण, डिप्लोमेट होते हुए भी हार गये तुम। कैट इज़ आउट ऑफ द बैग।'

थोड़ी देर बाद ही बर्लिन के लिये पैन अमेरिकन की फ्लाइट थी। उसी प्लेन से तरुण को जाना था। ऐम्बैसेडर का पर्सनल असिस्टेन्ट तरुण का लगेज़ ट्रांसफर चेक करने एवं बोर्डिंग कार्ड लेने चला गया। इसी बीच तरुण व ऐम्बैसेडर ने एक ओर जाकर कामकाज की कुछ बातें कीं।

तरुण का प्लेन छूटने से पहले ऐम्बैसेडर ने कहा, 'यमुना को छोड़ने शायद मैं खुद ही लंदन आऊँ। आई माइट स्टे विद यू।'

'आइ विल बी ग्रेटफुल इफ यू प्लीज़।'

बर्लिन वास की मियाद बस दो दिन की थी। फेयरवेल लंच व डिनर के लिये ही तरुण ने दो दिन यहाँ के लिये रक्खे थे—और कोई काम नहीं था। कुछ कपड़े-लत्ते, किताब कापी और एक मूवी के अलावा और कुछ नहीं था उसका। वह सब पहले ही मिस्टर दिवाकर ने लंदन भेज दिया था।

पहले दिन दोपहर को सहकर्मियों का लंच और रात को टंडन

साहब का डिनर हुआ । दूसरे दिन तरुण ने सारे सहकर्मियों के घर जाकर बिदा ली । रात को उसने कान्सुलेट में ही टंडन दम्पति व दूसरे कलीग्स को डिनर दिया ।

अब तक के कर्म-जीवन में जिस दृश्य का बार-बार सामना करना पड़ा था, फिर आ पहुँचा । सभी का मन भारी था, आँखें भर आई थीं, मुँह से बात नहीं निकल रही थी । बिल्कुल ही अंतिम क्षण में तरुण के कंधे को जरा दबाकर मिस्टर टंडन ने बस 'बेस्ट ऑफ लक' कहा ।

'थैंक यू वेरी मच सर ।' और फिर सहकर्मियों की ओर देखकर बोला, 'थैंक यू ऑल ।'

ब्रिटिश यूरोपियन एयरवेज़ के प्लेन के लंदन एयरपोर्ट पर घूमते समय विकास वन्दना की याद आई तरुण को । बड़ा अच्छा लगा मन को । घने जंगल में जाकर भी जिस तरह सूर्यकिरण लौट आती है, उसी प्रकार इस खुशी में भी दिल्ली व बर्लिन एयरपोर्ट का दृश्य तरुण के मन को कचोट जाता बार-बार ।

टर्मिनल बिल्डिग में पाँव रखते ही ऊपर विजिटर्स गैलरी की तरफ नजर पहुँची तरुण की । वन्दना और विकास दोनों ही खुशी में भरकर जोर-जोर से हाथ हिला रहे थे । हाई कमिश्नर के कुछ मित्र व कर्मचारी भी आये थे ।

जैसे ही हाई कमीशन के एक स्टाफ मेम्बर ने कस्टम एन्क्लोज़र में जाकर 'फर्स्ट सेक्रेटरी-डेजिगनेट आये हैं' कहा, तरुण का सामान बिना देखे ही अविलम्ब निकाल दिया उन्होंने ।

बाहर निकलते ही वन्दना ने झट से झुककर पाँव छुए और बोली, 'देखा दादा, अंत में मेरी बात ही ठीक निकली ना ।'

पुराने मित्र मिस्टर मणि बोले, 'तुम लौट आये, चलो जान छूटी ।'

'क्यों ?'

'अब बच्चों को तुम्हें सौंपकर मजा करेंगे ।'

हँसते हुए तरुण ने जवाब दिया, 'जीवन भर क्या तुम लोगों की आयागीरी करता रहूँगा ?'

हाई कमीशन के एक स्टाफ ने पूछा, 'सर, लगेज़ गाड़ी में रख दिया

है। आप इस समय अपने अपार्टमेन्ट ही जायेंगे ना?'

'हाँ।'

और साथ ही साथ वन्दना ने प्रतिवाद किया, 'यह क्या दादा? पहले हमारे यहाँ चलो ना।'

'इससे तो तुम लोग मेरे साथ चलो। जरा देख-भाल कर फिर तुम्हारे यहाँ चला चलूँगा।'

'हाँ यह ठीक है।' समर्थन करते हुए विकास ने कहा।

सहकर्मियों से विदा लेकर तरुण विकास व वन्दना के साथ गाड़ी में बैठ गया।

लंदन में जीवन अच्छा ही शुरू हुआ। काम का दवाव यद्यपि अधिक था, तब भी अच्छा लग रहा था। इसके अलावा इन्ट्रेस्टिंग भी बहुत था। शुरू के तीन-चार दिन तो साँस लेने की भी फुर्सत नहीं मिली। लंच के लिये भी नहीं जाता, ऊपर के रेस्टोराँ से ही कुछ मँगाकर खा लेता। शाम को भी ऑफिस से निकलते-निकलते काफी देर हो जाती। साढ़े सात-आठ वज जाते।

छोटी-मोटी चीजें खरीदनी थीं। उस दिन सोचा ऑफिस से जरा जल्दी निकल जायेगा। लेकिन निकलने से पहले ही अचानक टेलीफोन की घंटी वज उठी, 'तरुण, मैं ओवेदुर हूँ।'

ओवेदुर अभी तक लंदन में ही है, यह तो उसने सोचा भी नहीं था। अप्रत्याशित रूप से उसका टेलीफोन पाकर बहुत ही खुश हुआ तरुण। वोला, 'अरे, मैं तो सोच भी नहीं सका कि तुम अभी तक लंदन में हो।'

'सालों ने ट्रांसफर करने की कोशिश तो की थी।'

'इतने दिन वाद भी वह लोग पूर्व वंगाल के लड़कों को नहीं पह-चान पाये?'

'अरे, साले पहचान गये हैं, तभी तो हमें जरा दूर-दूर रखते हैं।'

जरा रुककर ओवेदुर वोला, 'आज हम लोगों के एक दोस्त के यहाँ गाने-वजाने का प्रोग्राम है। तुम जरूर आना। [illegible] ऑफिस ऑर आई विल कम डाउन टु पिक यू अप।'

'भाई, आज माफ करो। आज मुझे जरा जल्दी काम है, कई दिनों से समय ही नहीं मिला जरा भी।'

'मैंने तो अभी-अभी जैसे ही किसी से सुना कि तुम यहाँ हो, तुरन्त

फोन किया। और तुम मेरी फर्स्ट रिक्वेस्ट ही…'

बीच में ही उसकी बात काटकर तरुण बोला, 'ऐसी वातें क्यों कर रहे हो ? तुम्हारे साथ क्या मेरा वैसा संवंध है ?'

इस बार सीधे हुकुम देते हुए ओवेदुर ने कहा, 'देन प्लीज़ डोन्ट आर्ग्यू एनी मोर। तुम ठीक सात बजे मेरे यहाँ पहुँच रहे हो न ?

ओबेदुर रहमान मैमनसिंह का रहने वाला है। पर तरुण का ही समसामयिक है। काफी दिनों से पाकिस्तान इन्टरनेशनल एयर लाइन्स के लंदन ऑफिस का मैनेजर है। वंगाली लड़के-लड़कियों को इकट्ठा करके हो-हुल्लड़ मचाने में उसकी बराबरी नहीं है सारे लंदन में। पिछली बार तरुण के साथ अच्छी दोस्ती हो गई थी। उस जैसा वंधुवत्सल उदार मनुष्य टेम्स के किनारे मिलना दुर्लभ है। किसी भी तरह मना नहीं कर सका तरुण। और फिर इतने दिन बर्लिन में रहकर तो जैसे वंगालियों की अड्डेबाजी भूल ही गया था।

एक तो अड्डे का लोभ और उस पर ओबेदुर का अनुरोध। राजी हो गया तरुण।

'ठीक है।'

ऑफिस से चलने से पहले वन्दना को टेलीफोन कर दिया तरुण ने, 'मैं ओबेदुर के साथ एक घरेलू जलसे में जा रहा हूँ। रात हो जायेगी। कुछ खाने-पीने को रख देना मेरे लिये।'

'कहाँ जा रहे हो दादा ?'

'ठीक पता नहीं। ओबेदुर के किसी दोस्त के घर जाना है।'

निकलते-निकलते अचानक एक काम आ गया। निपटा कर चलते-चलते सात बज गये। जैसे ही ओबेदुर के यहाँ पहुँचा उसने चिल्लाना शुरू कर दिया, 'अड्डेबाजी के लिये भी कोई देर करता है ?'

और एक क्षण की भी देर नहीं की ओबेदुर ने। 'चलो-चलो, गाड़ी में बैठो। फिर किसी दिन आकर कॉफ़ी पीना।'

गाड़ी में बैठते ही ओवेदुर की ऑस्टिन-केम्ब्रिज ने टॉप गियर में भागना शुरू कर दिया। अगल-बगल की गाड़ियों को ओवरटेक करता हुआ इस तरह वह गाड़ी भगा रहा था कि उसके साथ बात करने का कोई मौका ही नहीं मिला तरुण को। टेटनहम कोर्ट पीछे छूटने के बाद तरुण ने बस इतना पूछा, 'कहाँ जा रहे हैं हमलोग ?'

'यह सामने ही तो है, होवर्न ।' छोटा-सा जवाब दिया ओवेदुर ने ।

होवर्न ट्यूब स्टेशन निकलने के बाद गाड़ी दाहिनी ओर घूम गई । साँझ का धुँधलका और ऊपर से लंदन का आसमान ! सड़क पहचान नहीं पाया तरुण । करीब सौ गज आगे चलने पर बहुत सी गाड़ियाँ दिखाई दीं । उन्हीं के बीच में गाड़ी घुसा कर जोर से ब्रेक लगाये ओवेदुर ने ।

दोनों जने उतर पड़े । गाड़ी बंद करके चाबी जेब में डाली ओवेदुर ने और सिगरेट का पैकेट निकाल लिया । एक मिनिट के लिये ठहरकर दोनों ने सिगरेट जलाई और चल दिये। दो-चार कदम चलते ही कोने के एक मकान के सामने पहुँचे । सामने के ही कमरे में बहुत से बंगाली बैठे दिखाई दिये । दरवाजे में खड़े-खड़े ही अन्दर की ओर मुँह किये कोई सज्जन किसी से बात कर रहे थे। दूर से ही चिल्लाकर ओवेदुर ने कहा, 'ओ, मैनुल, देखो मैं तुम्हारे ढाका का एक और लड़का पकड़ लाया·····'

ढाका का मैनुल···तरुण की नसों में जैसे बिजली दौड़ गई ।

अपना नाम सुनकर जैसे ही मैनुल इधर घूमा, उसका मुँह देखकर तरुण चिल्लाया, 'मैनुल···।'

और ठगा सा रह गया मैनुल । अपनी आँखों पर, अपने कानों पर जैसे विश्वास नहीं हो रहा था उसे । पर दूसरे ही क्षण सारे लंदन को गुँजाता हुआ जोर से चिल्लाकर बोला, 'अम्माजान, इन्द्राणी तरुण आया है ।'

दोनों ने एक दूसरे को जकड़ लिया दौड़कर ।

मैनुल की चीख सुनकर ओवेदुर से लेकर कमरे में बैठे सभी लोग कुछ क्षणों के लिये तो निष्प्राण प्रस्तर मूर्तियों की तरह स्तब्ध रह गये। अम्माजान और इन्द्राणी भी अन्दर से भागी-भागी बाहर आई ।

इन्द्राणी !

अम्माजान !

तरुण से लिपट कर दहाड़ मारकर रोने लगीं अम्माजान । रोते-रोते बोलीं, 'मैंने तो तुम्हारे मिलने की उम्मीद ही छोड़ दी थी बेटा । लड़की को लेकर सारी दुनिया का चक्कर लगा डाला तुम्हारे लिये । कहाँ नही ढूंढ़ा तुम्हें । पर तुम तो जैसे पाताल में समा गये थे ।'

अचानक स्वयं को तरुण से अलग करके अम्माजान ने इन्द्राणी को खींचकर तरुण के पाँवों में ढकेल दिया और बोली, 'बेटा, सँभालो लड़की को। अब उसका दुख नहीं देखा जाता।'

खड़े-खड़े जहाँ का तहाँ बैठ गया तरुण और इन्द्राणी से लिपट कर जोर-जोर से रोने लगा।

चंद मिनटों में कितना कुछ घट गया। कल्पनातीत !

अचानक मैनुल चिल्लाया, 'अरे, तुम सब चुप क्यों बैठे हो ? गाना शुरू करो ! मिठाई लाओ जल्दी से कोई। आज मेरी इन्द्राणी का विवाह होगा।